UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180499

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—68—11-1-68—2,000.

**OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY**

Call No. H83 S28R Accession No. H4028

Author सी नकीविक्ज, हेनरिक

Title जब रोम जल रहा था · 1958 ·

This book should be returned ~~on or before the~~ date last marked below.

# जब रोम जल रहा था !

( प्रसिद्ध उपन्यास 'Quo Vadis ?' का हिन्दी अनुवाद )

लेखक

हेनरिक सीन्कीविक्ज़

अनुवादक

श्रीकान्त व्यास

प्रकाशक

किताब महल

इलाहाबाद, बम्बई, दिल्ली

प्रथम संस्करण, १९५८

मूल्य ६)

प्रकाशक—किताब महल, ५६ ए, जीरो रोड इलाहाबाद ।
मुद्रक—राम प्रिंटिंग प्रेस, ७७ बाई का बाग, इलाहाबाद ।

# पहला भाग

## १

पेट्रोनियस देर से लगभग एक पहर दिन चढ़े जागा, हमेशा की तरह बहुत थका हुआ और सुस्त, क्योंकि पिछली रात वह राजमहल में एक भोज में शरीक हुआ था। बड़ी मुश्किल से तो वह उठ पाया, और उठने के बाद भी देह भारी और मन उदास रहा। लेकिन स्नान और ढंग से मालिश कराने के बाद हमेशा वह इतना स्वस्थ और प्रफुल्ल हो जाता था कि जब हम्माम के आखिरी कमरे से बाहर आता तो बिल्कुल तरो-ताजा मालूम होता, स्फूर्ति से आँखें चमकती होतीं और देखने में इतना सुन्दर लगता कि उसके आगे सौन्दर्य के देवता ओथो का रंग भी फीका पड़ जाता। शायद इसीलिए लोग ठीक ही उसे 'सौंदर्य का आदर्श' कहा करते थे।

पिछली रात भोज में वह काफी देर तक सम्राट नीरो, ल्यूकान और सेनेका के साथ इस प्रश्न पर बहस करता रहा कि नारी में आत्मा होती है या नहीं। रात की थकावट मिटाने के लिए वह इस समय मालिश के उस चबूतरे पर पैर फैलाये पड़ा था जिस पर मिस्र का बना एक बढ़िया रोएँदार आसन बिछा था। स्नानागार के दो हृष्ट-पुष्ट सेवक हाथ में तेल लेकर उसकी पेशियों की हौले-हौले मालिश कर रहे थे।

वह आँखें मूँदे इस तरह पड़ा था जैसे इसकी प्रतीक्षा कर रहा हो कि मालिश-घर की गरमाहट और मालिश की रगड़ से उसकी देह की थकान कब दूर होती है। कुछ देर में उसने आँखें खोलीं, और मौसम का हाल पूछा तथा उन हीरे-जवाहरातों के बारे में पूछताछ की जिन्हें जौहरी दिखाने के लिए लाने को कह गया था। उसे बताया गया कि आज मौसम बहुत अच्छा है, अल्बान पर्वत की ओर से हलकी हवा बह रही है, और यह कि जौहरी अभी तक नहीं आया। पेट्रोनियस ने फिर से आँखें मूँद लीं, और उसे उठाकर स्नानागार में ले जाने की तैयारी हो ही रही थी कि इतने में द्वारपाल ने पर्दा उठाया और मार्कस् विनिसियस के आने की घोषणा की।

पेट्रोनियस ने उसे स्नानागार के पहले कमरे में बैठाने को कहा, और फिर दासों को आज्ञा दी कि मुझे भी वहीं ले चलो। यह विनिसियस उसकी सबसे बड़ी बहन का लड़का था। इसका पिता, जिसे मार्कस् की पदवी मिली हुई थी और जिसका नाम भी यही था, तिबेरिअस के काल में राजदूत रहा था। यह युवक अब तक कोर्बुलो के नेतृत्व में पार्थिअनों से मोर्चा ले रहा था और युद्ध समाप्त होने पर

हाल में ही रोम लौटा था। पेट्रोनियस एक तरह से उसे बहुत पसन्द करता था, क्योंकि मार्कस् तगड़े और सुन्दर शरीर का तथा प्रखर बुद्धिवाला युवक था, जो स्त्रियों से अपने अवैध सम्बन्धों में भी बहुत संयम से काम लेता था, और पेट्रोनियस इस चीज को सबसे अधिक महत्व देता था।

"हेल, पेट्रोनियस ! पेट्रोनियस का जय हो !" उसने कहा, "देवगण तुम पर प्रसन्न रहें।"

"स्वागत, रोम आगमन का स्वागत ! युद्ध के परिश्रम के बाद अब तुम्हें खूब आराम मिले, इसकी कामना करता हूँ !" पेट्रोनियस ने उस कीमती वस्त्र से अपना हाथ बाहर निकालते हुए कहा, जिसे वह लपेटे था। "आर्मेनिया की क्या खबर है ? क्या एशिया में तुम लोग बिथीनिया तक पहुँच पाये थे ?"

पेट्रोनियस, जो अब अपनी नारी सुलभ कोमल वृत्तियों और सुख-लोलुपता के लिए प्रसिद्ध था, किसी समय बिथीनिया का गवर्नर रह चुका था। यही नहीं, यह बड़ा योग्य और न्यायप्रिय गवर्नर था। उन दिनों की याद दोहराना उसे बहुत पसन्द था जब उसने हमेशा के लिए यह सिद्ध कर दिया था कि उसने जब जो चाहा प्राप्त किया है और अब भी कर सकता है।

विनिसियस ने बताया कि वह कार्बुलो के लिए रसद इकट्ठी करने हेराक्लिया तक गया था और फिर वह उसे युद्ध के बारे में बताने लगा। लेकिन पेट्रोनियस ने जब आँखें मूँद लीं तो उसने बातचीत का विषय बदल दिया और अपने मामा से उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। उसका स्वास्थ्य ?—बिल्कुल गिरा हुआ है। अभी विनिसियस ने स्वास्थ्य के देवता और प्रेम की देवी की उस पर कृपा चाही थी। लेकिन पेट्रोनियस को स्वास्थ्य के देवता एस्क्लेपिअस में विश्वास नहीं था। भला कोई जानता भी है कि इस देवता का पिता कौन था ? और उसकी तो माँ के बारे में ही शक है, फिर पिता की बात तो दूर रही और आज भी कौन अपने पिता के बारे में ठीक से कह सकता है कि मेरा पिता यही है ? यह कहकर पेट्रोनियस हँस पड़ा और फिर बोला—

"जहाँ तक प्रेम की देवी की बात है, शायद उसी की कृपा से मेरे दाहिने पैर में दर्द हो रहा है। खैर, फिर भी प्रेम की देवी बड़ी दयावान है, और मुझे विश्वास है कि तुम भी देर-अबेर से उसकी पूजा में पहुँचोगे !"

"ठीक कह रहे हो," विनिसियस ने कहा, "युद्ध में पार्थिअनों के तीर तो मुझे न छू सके, लेकिन अपने शहर में घुसते-घुसते ही मैं अचानक रति के बाणों से घायल हो गया।"

"सच ? कामदेव कृपा करें ! तुम फौरन मुझे पूरी कहानी कह सुनाओ। आओ, हम लोग मालिश-घर में चलें।"

वहाँ पहुँचने पर विनिसियस का ध्यान वहाँ की सुन्दर दासियों पर जम गया। उनमें दो सुन्दर नीग्रो दासियाँ पेट्रोनियस के शरीर पर पूर्वी देशों के सुगन्धित तेल और इत्र मलने लगीं और दूसरी दासियाँ जो फ्रीजी से पकड़कर लायी गयी थीं, और जो बाल सँवारने में निपुण थीं, अपनी सुन्दर उँगलियों में लोहे के चमचमाते हुए दर्पण और कंघी लेकर आ खड़ी हुईं। दो और यूनानी लड़कियाँ, जो कोस से लायी गई थीं, अपने स्वामी के टोगा ( लबादे ) को इस तरह लहराते हुए सजाने के लिए तैयार खड़ी थीं जिस तरह मूर्तियों में लहराया जाता है।

"वाह, कैसी परियाँ इकट्ठी कर रखी हैं तुमने भी!" मार्कस् विनिसियस ने कहा, "उस बकरे-सी दाढ़ी वाले नीरो के महल में भी ऐसी सुन्दरियाँ न होंगी!"

पेट्रोनियस ने उसे अपनी दासियों के उपभोग के लिए जैसे आमंत्रित करते हुए कहा, "तुम तो मेरे अपने ही हो, और मैं न तो बारसस की तरह स्वार्थी हूँ और न ओलस प्लोतिअस की तरह सख्त ही हूँ।"

"ओलस प्लोतिअस कैसे याद आ गया तुम्हें?" विनिसियस ने तुरन्त सिर उठाकर पूछा। "तुम्हें मालूम है कि नगरद्वार पर जब मेरी कलाई में मोच आ गयी थी तो मैं एक पखवारे भर उसके घर में रहा था। वहाँ डाक्टर मेरिओन नाम के उसके एक दास ने मेरा इलाज किया था। इसी के बारे में तो मैं तुमसे कुछ कहना चाहता था।"

"अच्छा! अरे, कहीं तुम बीबी पोम्पोनिया से तो आँखें नहीं लड़ा बैठे? अगर ऐसा है तो मुझे तुम्हारे लिए बड़ा अफसोस है। वह तो जवान नहीं रही अब। इसके अलावा वह बड़ी चरित्रवान है। यह तो बड़ा बुरा हुआ।"

"नहीं, नहीं, बदकिस्मती से वह पोम्पोनिया नहीं है।"

"फिर कौन है?"

"काश, मैं जानता कि कौन है। लेकिन मैं उसका नाम तक ठीक से नहीं जानता, लीजिया है या कैलीना। वे लोग उसे लीजिया ही कह कर बुलाते हैं, क्योंकि वह लीजिया देश की रहने वाली है। लेकिन उसका अपना नाम कैलीना है। प्लोतिअस का मकान भी कैसा अजीब है। उसमें ढेरों लोग रहते हैं फिर भी वहाँ इतनी शान्ति रहती है जैसे कोई जंगल हो। दस दिन तो मुझे इसका पता ही नहीं लगा कि वहाँ कोई देवकन्या भी रहती है। लेकिन एक दिन मैंने उसे पेड़ों की छाँह में बने एक फौव्वारे के हौज में नहाते देख लिया और सुबह के सुनहले सूरज की किरणें जैसे उसको पार कर रही थीं। बानस की कसम, सच कहता हूँ मुझे ऐसा लगा जैसे उगते हुए सूरज की किरणें उसे मेरे सामने से कहीं कुहरे की तरह गायब न कर दें। मैंने उसके बाद दो बार उसे और देखा है, और तब से मुझे चैन नहीं है—

मुझे अब जैसे सिवा उसके और किसी चीज में रुचि ही नहीं रह गई है। अब मुझे किसी चीज में दिलचस्पी नहीं—औरतें हों या सोना और हीरे-मोती हों या शराब और दावत किसी चीज में दिलचस्पी नहीं है। बस, मैं लीजिया को चाहता हूँ। पेट्रोनियस, उसके लिए मेरा दिल तड़प-तड़पकर रह जाता है। दिन-रात जी को उसके बिना चैन नहीं।"

"अगर वह कोई दासी हो तो खरीद लो उसको।"

"न, वह गुलाम नहीं है।"

"तब क्या है? प्लोतिअस की कोई आजाद की हुई दासी तो नहीं है?"

"वह कभी गुलाम थी ही नहीं, इसलिए आजाद गुलाम नहीं हो सकती।"

"तब, फिर?"

"मुझे कुछ पता नहीं। किसी राजा की शायद लड़की—"

"यह तो बड़ी दिलचस्प बात है, विनिसिअस।"

"हाँ, लेकिन कोई लम्बी कहानी नहीं है। शायद तुम सूबी के राजा बानिअस के बारे में जानते हो। जब वह अपने देश से खदेड़ दिया गया तो काफी लम्बे अरसे तक रोम में रहा था। यहाँ उसने जुए में और रथों की दौड़ के सिलसिले में बड़ा नाम कमाया था। इसके बाद ट्रूसस ने उसे उसका राज वापस कर दिया। पहले तो वह कुछ दिनों तक बड़े मजे में राज करता रहा और कुछ लड़ाइयाँ भी उसने जीतीं। लेकिन फिर वह अपनी प्रजा और अपने पड़ोसियों को बुरी तरह चूसने लगा। इसलिए उसके दो भतीजों ने उसके खिलाफ बगावत कर दी और तय किया कि उसे फिर से रोम भगा देना चाहिए, जहाँ वह जुए के अड्डे में अपनी तकदीर आजमाता रहे।"

"ओह, याद आया—यह क्लोदिअस के जमाने की बात है, बहुत दिन नहीं हुए।"

"हाँ। तो, फिर लड़ाई छिड़ गयी। बानिअस ने अपनी मदद के लिए लाज़ीजिया के लोगों को बुलाया और उसके भतीजों ने लीजियनों की ही मदद ली। क्लोदिअस इन लोगों के झगड़े में फँसना नहीं चाहता था लेकिन उसने डेन्यूब नदी के आस-पास के इलाके के अपने सेनानायक आतेलिअस को आगाह कर दिया था कि वह इन लोगों पर नजर रखे और साम्राज्य की शान्ति खतरे में न पड़ने दे। आतेलिअस ने लीजियनों से प्रतिज्ञा करा ली कि वे सीमा को नहीं लाँघेंगे। यही नहीं उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा के सिलसिले में कुछ लोगों को उसके पास बन्धक के रूप में भी रखा था, जिनमें उनके सरदार की स्त्री और लड़की भी थी। तुम तो जानते

ही हो कि ये बर्बर जाति के लोग युद्ध में अपने साथ स्त्रियों और बच्चों को भी ले जाते हैं। तो, यह लीजिया उसी सरदार की लड़की है।"

"यह सब तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"खुद ओलस प्लोतिअस ने मुझे बताया था। लीजियनों ने सीमा नहीं पार की लेकिन बर्बर लोग तो जैसे आँधी की तरह उठते हैं और उसी की तरह बैठ भी जाते हैं। इसी तरह लीजियन लोग भी बैठ गये। उन्होंने वानिअस और उसके साथियों को हराया लेकिन लड़ाई में उनका राजा मारा गया इसलिए लूट का माल लेकर वे वापस लौट गये। जिन्हें उन्होंने बन्धक में रखा था उन्हें आतेलिअस के हाथ में ही छोड़ते गये। लड़की की माँ तो जल्दी ही मर गई। लड़की को आतेलिअस ने जर्मनी के गवर्नर पोम्पोनिअस के पास भेज दिया। चाती के युद्ध के बाद पोम्पोनिअस रोम लौटा तो तुम जानते ही हो कि क्लोदिअस ने उसका कैसा राजसी सम्मान किया था! उस दिन यह लड़की विजेता के रथ के पीछे-पीछे चली थी। लेकिन बन्धक में रखे हुए व्यक्ति को दास नहीं बनाया जा सकता, इसलिए समारोह के बाद उसने इसे अपनी बहन पोम्पोनिया ग्रेसीना को सौंप दिया। तब पोम्पोनिया का विवाह प्लोतिअस से हो चुका था। तब से वह इस घर में है, जहाँ के सब लोग, मालिक और मालकिन से लेकर घर की मुर्गियाँ तक सब कोई बड़े चरित्रवान हैं!"

"अच्छा तो फिर अब?"

"मैं कह ही चुका हूँ कि जब से मैंने उसे देखा है, तभी से मुझे उससे प्यार हो गया है।"

"मैं ओलस प्लोतिअस को जानता हूँ, और हालाँकि वह मेरे रहन-सहन को पसन्द नहीं करता फिर भी मुझे चाहता है। उसे मालूम है कि मैं नीरो के अन्य मित्रों की तरह किसी की चुगली नहीं करता। इसलिए अगर तुम समझते हो कि मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूँ तो कहो, मैं तैयार हूँ।"

"यह कैसा रहे कि तुम उससे इस बारे में बात कर लो? तुम्हारा उस पर असर है और योजना बनाने में तो तुम किसी से पीछे रहते नहीं।"

"तुम मेरे असर का कुछ ज्यादा अन्दाज लगा रहे हो, फिर भी ज्यों ही प्लोतिअस लौटेगा मैं उससे इस सिलसिले में बात करूँगा।"

"दो दिन हुए वह लौट आया।"

"ठीक है, तो चलो, भोजन-घर में चलो, नाश्ता तैयार है। खा-पीकर हम लोग प्लोतिअस के यहाँ चलेंगे।"

"मैं तुम्हें बहुत चाहता रहा हूँ, लेकिन अब तो मैं अपने घर के देवताओं के साथ तुम्हारी मूर्ति भी रख लूँगा, ठीक ऐसी ही मूर्ति," उसने पेट्रोनियस की उस

मूर्ति की ओर संकेत करके कहा, जिसमें उसे हाथ में छड़ी लिये हुए देवदूत की तरह चित्रित किया गया था। "मैं उसकी पूजा भी किया करूँगा। भगवान कसम, अगर पेरिस तुम्हारी ही तरह रहा होगा तो हेलेन के व्यवहार का रहस्य समझना आसान है।"

उसके इस कथन में खुशामद के अलावा सच्चाई भी थी, क्योंकि पेट्रोनिअस हालाँकि उम्र में उससे अधिक था और फुर्तीला भी वह कम था फिर भी उससे ज्यादा खूबसूरत था। रोम की स्त्रियाँ उस "सौंदर्य के आदर्श" की प्रशंसा करती थीं और उसकी बुद्धि की विशेषता और उसके शारीरिक गठन पर लट्टू थीं। यह तथ्य उन दोनों युवतियों के चेहरों से भी स्पष्ट था, जो पेट्रोनियस का टोगा ठीक कर रही थीं। उनमें से एक, यूनिस, तो मुग्धा की भाँति उसके चेहरे को देख रही थी। पेट्रोनियस ने हालाँकि उसकी भावुकता का ओर कोई ध्यान नहीं दिया, लेकिन मुसकराकर उसने विनिसियस के सामने सेनेका का यह कथन दोहरा दिया—"नारी एक धृष्ट प्राणी है!"

फिर विनिसियस के कन्धे पर हाथ रख कर वह उसे भोजन-गृह की ओर ले चला।

उधर इत्र-लेपन के कमरे में दोनों यूनानी, दोनों नीग्रो और फ्रीजियन दासियाँ इत्र और सुगन्धित तेल आदि की शीशियाँ तथा बर्तन वगैरह को यथास्थान सजाकर रख रही थीं, इतने में स्नान-गृह के सेवकों का प्रधान ठंडे पानी के कमरे से इधर आया और पर्दा थोड़ा-सा उठाकर उसने दबे ओठों से आवाज की, जिसे सुनते ही एक यूनानी दासी को छोड़कर बाकी सभी दासियाँ वहाँ से गायब हो गईं। यही वह समय था जब स्नान के कमरों में दास-दासियाँ खेल-कूद करते थे और आनन्द मनाया करते थे। घर का रखवाला खुद भी इन चीजों को पसन्द करता था, इसलिए कोई आपत्ति नहीं करता था। उधर पेट्रोनिअस को ठीक से इस सब की खबर नहीं थी, और उदारहृदय व्यक्ति होने के कारण वह इधर से आँख मूँदे रहता था।

सब दासियाँ चली गयीं लेकिन यूनिस वहीं रह गयी। सिर झुकाकर वह थोड़ी देर तक स्नान के कमरों से आती हुई हँसी और कहकहों की आवाज सुनती रही। फिर वह गयी और सोने और अम्बर की उस कुरसी को उठा लाई, जिस पर पेट्रोनियस अभी बैठा था। कुरसी को उसने अपने स्वामी की मूर्ति के सामने रख दिया।

फिर कुरसी पर खड़े होकर उसने मूर्ति के गले में अपनी बाहें डाल दीं। उसके सुनहरे बाल उसकी पीठ पर फैले हुए थे। उसने संगमरमर की उस मूर्ति

को कसकर दबा रखा था, और उसका मुँह मूर्ति के ठंडे ओठों पर जोर से चिपका हुआ था।

## २

दोनों मित्र पालकी में अपनी-अपनी जगह बैठ गए और दासों को आदेश मिला कि ओलस के घर ले चलो। विशालकाय नीग्रो दासों ने पालकी कन्धे पर लादी और चलना शुरू किया। कुछ दास आगे-आगे चल रहे थे। पेट्रोनियस अपने हाथों में लगा इत्र सूँघ रहा था और कुछ सोच रहा था।

"मैं तुम्हारे ही मसले पर सोच रहा था," वह बोला। "क्या तुमने अपनी उस अप्सरा से बात भी की थी? क्या तुमने उसे बताया कि तुम उससे प्यार करते हो?"

"हाँ, जैसा कि मैं तुम्हें बता चुका हूँ, मैंने उसे नहाते हुए देखा है और दो बार देखा है। मैं जब ओलस के यहाँ था तो मुझे मकान के उस हिस्से में ठहराया गया था, जो मेहमानों के लिए ही था। मेरी कलाई में मोच थी, इसलिए मैं उन लोगों के साथ खाने की टेबुल पर नहीं बैठ पाता था। सिर्फ जिस दिन मैं वहाँ से चलनेवाला था उसके एक दिन पहले शाम के भोजन के समय लीजिया से मेरी मुलाकात हुई, और मैं उससे बात ही नहीं कर सका। ओलस मुझे ब्रिटेन की अपनी विजयों के बारे में बता रहा था और इटली की छोटी जमींदारियों के पतन पर चिन्ता प्रकट कर रहा था। मैं उसकी बातें सुनने के लिए मजबूर था।

"इसके बाद दूसरी बार मैं बाग में लीजिया से मिला। तब वह पौधों को पानी दे रही थी। मेरे इन घुटनों को देखो, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि युद्ध में जब पार्थिअनों के झुंड के झुंड चीखते हुए हम लोगों पर टूटते थे, तब भी कभी मेरे घुटने नहीं काँपे। लेकिन लीजिया के पास आते ही मेरे घुटने काँपने लगे। काफी देर तक मैं एक छोटे बच्चे की तरह घबराया हुआ रहा और मैं एक शब्द भी नहीं बोल सका। सिर्फ मेरी आँखें उससे याचना कर रही थीं।"

पेट्रोनियस ने कुछ ईर्ष्या से उसकी ओर देखा और कहा, "तो तुमने उससे कोई बात ही नहीं की?"

"हाँ, बात की मैंने। उस घर में चलने के कुछ समय पहले मैं अपने पर

काबू पा सका और फिर मैंने उससे कहा कि इस घर में पीड़ा का सहन करना बाहर के अनेक सुखों से अधिक सुखकर है, यहाँ की बीमारी अन्यत्र के स्वास्थ्य से कहीं अधिक मीठी और प्रिय है। वह भी कुछ विचलित हुई और सिर झुकाकर मेरी बातों को सुनती रही, और एक पौधे की सूखी टहनी से पीली बालू पर कुछ रेखाएँ खींचती रही। फिर उसने अपनी आँखें उठायीं, और एक बार फिर उस आकृति की ओर देखा, जो उसने बालू पर बना दी थी। एक बार फिर उसने मेरी ओर आँखें उठायीं, जैसे मुझसे कुछ पूछना चाहती हो, और फिर अचानक वह उठकर वहाँ से भाग गयी।"

"बालू पर उसने क्या बनाया था?"

"मछली।"

"क्या?"

"कह रहा हूँ न कि एक मछली खींची थी उसने। इसका क्या मतलब हुआ, जरा बताओ तो मुझे। मेरी समझ में नहीं आया।"

"मेरे दोस्त, तुम इसके बारे में प्लिने से पूछना। वही जानता है यह सब।"

यहाँ आकर बात कुछ देर के लिए रुक गई, क्योंकि अब पालकी भीड़भाड़-वाली गलियों से होकर गुजर रही थी और थोड़ी ही देर में वे लोग अपोलिनिस मार्ग से होते हुए फोरम[१] के करीब पहुँच गये।

यहाँ बड़ी भीड़ थी। कुछ लोग आसपास मन्दिरों की सीढ़ियों पर बैठे थे, और उन संगमरमर की सीढ़ियों पर ऐसे लग रहे थे, जैसे तितलियों के झुंड बैठे हों। जुपितर के मन्दिर की विशालकाय सीढ़ियों से बहुत बड़ी तादाद में लोग उतर रहे थे। एक जगह मंच के समीप लोग इकट्ठे होकर लोकप्रिय वक्ताओं के भाषण सुन रहे थे।

बाजार में फेरीवाले जोर-जोर से आवाज लगाते हुए घूम रहे थे। कुछ फल बेच रहे थे, कुछ शराब और अंजीर का शरबत बेच रहे थे। नीम-हकीम और ठग वैद्य अपनी-अपनी दवाओं की तारीफ के पुल बाँध रहे थे। ज्योतिषी, भविष्यवक्ता और गड़े हुए धन का पता बतानेवाले, तथा सपनों का अर्थ समझानेवाले अलग अपनी कला दिखा रहे थे। इसके अलावा बाजे-गाजे का भी शोर था।

धनी-मानी और धर्मप्राण व्यक्ति मन्दिरों में पूजा और नैवेद्य की सामग्री ले जा रहे थे। आने-जानेवालों के पैरों के बीच से कबूतर मन्दिर की सीढ़ियों पर

---

१. प्राचीन रोम का एक सार्वजनिक स्थल, जहाँ भाषण और वाद-विवाद होते थे, मुकदमे सुने जाते थे।

बिखरा चढ़ावे का अनाज चुग रहे थे। लोगों के पास आते ही वे पंख फड़फड़ाकर उड़ जाते और फिर खाली जगह देखकर उतर आते। लोग इधर-उधर हटकर पालकियों के लिए रास्ता छोड़ देते थे। इन पालकियों में कभी किसी सुन्दरी का चेहरा दिखाई देता तो कभी किसी बूढ़े सैनिक सरदार या किसी चिन्तित सिनेटर[१] का उतरा हुआ चेहरा दिखाई दे जाता। कभी कुछ सिपाहियों या सैनिकों की कोई टुकड़ी परेड करती हुई आ निकलती और जानबूझकर भीड़ जमा करने वालों और दंगाइयों को छितर-बितर कर जाती। रास्ते में हर तरफ लैटिन की तरह ही यूनानी बोली भी सुनाई देती थी। इधर रोम में यूनानियों की तादाद काफी हो गई थी।

विनिसियस बहुत दिनों से अपना शहर नहीं देख पाया था, इसलिए वह उत्सुकता से इस रोमन फोरम को देख रहा था, जो विभिन्न जातियों के इस जन-सागर के बीच सिर उठाये खड़ा था। पेट्रोनियस ने अपने मित्र के विचारों का आभास पाकर कहा, "प्राचीन रोमनों का केन्द्र—लेकिन सच्चे रोमन अब यहाँ कहाँ रहे!" और सचमुच इस भीड़-भाड़ में असली रोमन तत्व जैसे बिल्कुल खो गए थे। इसमें इथिओपिया के नीग्रो थे, उत्तरी प्रदेशों के सुनहरे बालों और बलिष्ठ शरीरों के लोग थे, अंग्रेज, जर्मन, और तिरछी आँखों वाले सीरियाई थे, दजला और फरात के किनारे के लोग थे और सिंधु नदी के तटवासी भूरी दाढ़ियों वाले भारतीय थे, अरब के रेगिस्तान के लोग थे और पिचकी छातियों वाले यहूदी थे, हमेशा मुसकराते रहनेवाले मिस्री और अफ्रीकी थे, और यूनानी थे, जो रोमनों के साथ इस शहर पर राज करते थे और जो विज्ञान और कला में अत्यन्त विकसित थे तथा चालाकी में भी आगे बढ़े हुए थे। इस भीड़ में पुजारियों और पुरोहितों की भी कमी नहीं थी। इनके अलावा पूर्वी देशों के पेशेवर नर्तक और तावीज़ बेचनेवाले तथा साँप का खेल दिखानेवाले मदारी भी भीड़ में चक्कर काट रहे थे। इस भीड़ में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं थी, जिन्हें कोई काम-धन्धा नहीं था, जो निठल्ले थे और खाने की तलाश में नदी पार से हर हफ्ते यहाँ आया करते थे तथा इनामी टिकटों के लिए 'सर्कस' में धक्का-मुक्की किया करते थे—और जो अपने दिन नदी पार गरीब लोगों की बस्तियों में, टूटे-फूटे मकानों में और रातें मिलविअस पुल पर अथवा अमीरों की कोठियों की सीढ़ियों पर बिता देते थे, जहाँ उन्हें पेट भरने के लिए कुछ जूठन मिल जाया करता था।

पालकी एवीरेनस की किताबों की दूकान के आगे रुकी और पेट्रोनियस दूकान में जाकर एक खूबसूरत जिल्द वाली किताब खरीद लाया। किताब उसने विनिसिअस को दे दी और कहा, "यह तुम्हारे लिए एक भेंट है।"

---

१. रोमन लोकसभा, सिनेट का सदस्य।

"धन्यवाद !" विनिसियस ने किताब का नाम पढ़ते हुए कहा, "भई है क्या यह ? किसने लिखी है ?"

"मैंने, लेकिन किसी को इसका पता नहीं है, इसलिए बताना मत किसी को।"

"लेकिन इसमें तो गद्य के साथ बहुत-सी कविताएँ भी हैं !"

"इसमें तुम जरा ट्रिमाल्शिओ के भोज का वर्णन पढ़ना और कविताओं की कुछ न पूछो, जब से नीरो ने कविता लिखना शुरू किया है, मुझे भी मजबूर होकर तुकबंदी में फँसना पड़ा है—मेरा तो जी ऊब जाता है। जब लोगों को कै करने की जरूरत पड़ती है तो कुछ हाथी दाँत का चम्मच इस्तेमाल करते हैं, और कुछ लोगों को इस काम के लिए चिड़िया के पंख की जरूरत होती है, लेकिन मुझे कै करने के लिए नीरो की कविताएँ पढ़ लेना ही काफी होता है, और इसका असर फौरन होता है। सच, उसकी कविताओं से ऊबकाई आती है। इसके बाद मैं साफ दिल से नहीं तो कम से कम साफ पेट से उसकी तारीफ कर सकता हूँ !"

फिर उसने एक सुनार की दूकान के आगे पालकी रुकवायी और कुछ गहने और जवाहरातों का सौदा तय करके दासों को हुक्म दिया कि ओलस के मकान की ओर चलो।

सामने का फाटक एक तगड़े दरबान ने खोला और दरवाजे पर पिंजरे में बन्द एक चिड़िया ने खुशी से चहक कर उनका स्वागत किया।

आगे के बड़े कमरे में प्रवेश करते समय विनिसियस ने कहा, "देखा तुमने, दरबान का काम करनेवाला यह दास जंजीरें नहीं पहने है ?"

"अजीब घर मालूम होता है यह," पेट्रोनियस ने दबी जबान से कहा, "शायद तुमने सुना होगा कि पोम्पोनिया के बारे में यह शक किया जाता है कि वह किसी क्राइस्ट की पूजा करती है और उसके अजीब से धर्म की समर्थक है।"

"मैंने यहाँ क्या सुना है और क्या देखा है, यह फिर कभी विस्तार से तुम्हें बताऊँगा।"

वे लोग अब उस विशाल कमरे के बीच में खड़े थे। वहाँ के दासों ने प्रतिहारों को अतिथियों के आने की सूचना देने के लिए भेजा और फिर वे उन दोनों के लिए कुरसियाँ और पाँवदान ले आये।

पेट्रोनियस, जो इस घर को बिल्कुल जीवनहीन और उदासी से भरा मानता था और इसीलिए यहाँ कभी नहीं आता था, इस समय बड़े अचरज से आसपास देख रहा था, क्योंकि इस समय उसे प्रकाश से भरे इस बड़े कमरे में उदासी या मनहूसियत का कोई निशान नजर नहीं आ रहा था। ऊपर छत पर एक बड़ा-सा रोशनदान था, जिससे होकर प्रकाश का विशाल स्तंभ नीचे बने फौव्वारे के उछलते

हुए पानी पर पड़कर असंख्य किरणों में चारों ओर फैल रहा था। यह फौव्वारा एक बड़े से चौकोर कंडाल में बना था और उसके आसपास पौधों के गमले रखे थे। देखने से यह स्पष्ट था कि यहाँ के लोगों को लिली ज्यादा पसन्द है, क्योंकि उसके ढेरों लाल और सफेद फूल इधर-उधर गुलदस्तों में रखे थे। वहाँ नीलम के रंग के आइरिस भी थे, जिनकी कोमल पत्तियों पर धूल के रजतकण चमक रहे थे। वहाँ एक विचित्र प्रकार का शांत और सुखमय वातावरण था, विलासिता के प्रभाव से दूर लेकिन अपने एक विशेष गौरव और सुरुचि से पूर्ण।

तभी एक दास ने पर्दा उठाया और ओलस प्लोतिअस ने कमरे में प्रवेश किया।

यह व्यक्ति अपने जीवन की संध्या में पहुँच चुका था, लेकिन फिर भी हृष्ट-पुष्ट था। चेहरा उसका कुछ सख्त और बाज की आकृति का था। उस समय उसके चेहरे पर आश्चर्य का भाव था और सम्राट नीरो के एक अन्तरंग और विश्वसनीय मित्र को अपने यहाँ अचानक उपस्थित देखकर वह कुछ परेशान भी लग रहा था।

पेट्रोनियस बड़ा व्यवहारकुशल और अनुभवी आदमी था, उससे यह छिप न सका। इसलिए आरंभिक अभिवादन वगैरह के बाद बड़े स्वाभाविक ढंग से उसने अपने आने का कारण प्रकट करना शुरू कर दिया। उसने बताया कि वह उसे धन्यवाद देने आया है क्योंकि उसने उसके भानजे की इतनी अच्छी तरह देखभाल की और यह कि अपनी पुरानी मित्रता का ख्याल करके उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना उसने आवश्यक समझा।

"स्वागत है आप लोगों का!" प्लोतिअस ने कहा, "कृतज्ञता की बात खूब कही, उल्टे मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ, हालाँकि शायद तुम्हें इसका कारण नहीं मालूम है।"

नहीं; पेट्रोनियस ने अपनी हल्की भूरी आँखें ऊपर उठायीं और तेजी से सोचना शुरू किया—नहीं, उसे ऐसा कुछ याद नहीं आया।

"तुमने मेरे उस वेस्पेसियाई दास की जान बचा दी थी, जिसे मैं बहुत चाहता हूँ," ओलस ने कहा, "उस दिन दुर्भाग्यवश वह सीज़र (सम्राट) की कविता सुनते-सुनते सो गया था।"

"दुर्भाग्य से नहीं, यों कहो सौभाग्य से," पेट्रोनियस ने कहा, "कम से कम उसे वह बेकार की चीज सुननी तो नहीं पड़ी। लेकिन हाँ, यह मैं मानता हूँ कि उसके इस सौभाग्य का अंत बहुत बुरा होता। नीरो इस पर तुल गया था कि एक सैनिक अधिकारी को भेजकर तुम्हारे नौकर को यह मित्रतापूर्ण राय दे दी जाय

कि वह खुद अपने हाथों अपनी नस काट कर खून बहा दे और इस तरह अपनी जान दे दे।"

"क्या तुम भी, पेट्रोनियस, सीज़र का मजाक उड़ा रहे थे?"

"न, कतई नहीं। मैंने इस बात पर जोर दिया था कि अगर ओर्फिअस अपने संगीत से खूंखार जानवरों को सुला सकता था तो नीरो के लिए तो यह गर्व की बात थी कि उसकी कविता तुम्हारे नौकर जैसे आदमी को सुला सकती है।"

"हाँ, ठीक है। जमाना बुरा है आजकल," ओलस ने कहा। "एक अंग्रेज ने इधर मुझ पर पत्थर फेंक दिया था, जिससे मेरे सामने के दो दाँत टूट गये और अब जब मैं बोलता हूँ तो मेरी आवाज एक सिसकारी की तरह निकलती है। खैर, फिर भी मैं ब्रिटेन में बीते अपने समय को आज भी अपने जीवन का सब से अच्छा समय मानता हूँ।"

"क्योंकि उन्हीं दिनों आपने इतनी जीतें हासिल की थीं," विनिसिअस ने कहा। लेकिन पेट्रोनियस घबरा रहा था कि अब कहीं यह वृद्ध सैनिक अपने जीवन के किस्से सुनाना न शुरू कर दे। इसलिए उसने बातचीत का विषय बदल दिया और प्लोतिअस के घर की और उसके सुरुचिपूर्ण रहन-सहन की प्रशंसा करना शुरू किया।

"पुराना घर है यह," प्लोतिअस बोला, "और जब से मुझे यह मिला है, मैंने इसमें कोई तब्दीली नहीं की।"

इस कमरे और भीतर के शानदार खुले कमरे के बीच जो पर्दा था उसे हटाने पर पूरा मकान इस ओर से उस ओर तक खुला नजर आता था। पास के एक दूसरे विशाल कमरे की खिड़की से बाहर के बाग का दृश्य काले चौखटे में जड़े किसी चित्र की भाँति लगता था। उधर नीचे कहीं से किसी बच्चे की खुशी से किलकारियाँ भरने की आवाज आ रही थी।

"आह, जनरल!" पेट्रोनियस ने गद्गद होकर कहा, "चलो, हम लोग इस हँसी को जरा पास चलकर सुनें, ऐसी मुक्त हँसी बहुत कम सुनने में आती है।"

"हाँ, हाँ, जरूर चलिये," प्लोतिअस ने उठते हुए कहा, "यह मेरा छोटा बच्चा लीजिया के साथ गेंद खेल रहा है। लेकिन पेट्रोनिअस, इसमें संदेह नहीं कि इसी भाँति हँसते-खेलते तुम जिन्दगी के मजे ले रहे होगे?"

"जिन्दगी हँसने के ही काबिल है, इसलिए मैं हँसता हूँ," पेट्रोनियस बोला, "लेकिन यह हँसी बिल्कुल दूसरी चीज है।"

इसी तरह बात करते हुए उन्होंने मकान पार किया और दूसरी तरफ बाग में पहुँचे। पेट्रोनियस ने फुर्ती से एक नजर डालकर लीजिया को देखा। बच्चा

विनिसियस को देखकर उसकी ओर लपका। विनिसियस ने झुककर उस तरुणी का अभिवादन किया, जो हाथ में गेंद लिये स्तब्ध खड़ी थी। उसके बाल बिखर गये थे और वह दौड़-भाग से कुछ हाँफ भी रही थी तथा उसके कपोलों की लालिमा बढ़ गयी थी।

लेकिन पोम्पोनिया बरामदे के समीपवाले उद्यान में कुछ छोटे वृक्षों और अंगूर की लता की छाँह में बैठी थी, वे लोग उसे नमस्कार करने के लिए आगे बढ़ गये। पेट्रोनियस उसे जानता था और उससे कई बार अपने मित्रों के घर मुलाकात कर चुका था। पेट्रोनियस यह देखकर आश्चर्य किये बिना न रह सका कि उस महिला में एक विशेष गौरवपूर्ण गाम्भीर्य था और उसके बोलने के ढंग में और उसके शब्दों में एक अजीब शान थी।

जब पेट्रोनियस ने विनिसियस की देखभाल के लिए उस महिला को धन्यवाद दिया तो उसने उन आदरपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया, जिन्हें वह अपनी परिचित अन्य अधिक प्रतिष्ठित महिलाओं से बातचीत करते समय भी कभी काम में नहीं लाता था।

विनिसियस जब इस घर में था तो यह बच्चा उससे बड़ा हिल गया था। उसने विनिसियस को अपने साथ गेंद खेलने के लिए बुलाया। लीजिया भी उसके साथ बरामदे की फुलवारी में चली आयी थी। जब वह पेड़ों की छाँह में खड़ी थी और सरपेंचे की सदाबहार पत्तियों से छनकर सूरज की किरणें उसके चेहरे पर पड़ रही थीं तब पेट्रोनियस को वह एकबारगी बहुत ही खूबसूरत लगी—लगभग कोई अमानवीय सुन्दरी-सी। चूँकि अब तक वह उससे एक शब्द भी नहीं बोला था, इसलिए वह उठा और झुककर उसका अभिवादन करने के साथ ही उसने यूनानी महाकवि होमर के प्रसिद्ध महाकाव्य 'ईलियड' की कुछ पंक्तियाँ दोहरा दीं, जिनसे यूलिसिस नौसिका का अभिवादन करता है—

"तुम मानवी किंवा किन्नरी जो हो, चरणों में हूँ तुम्हारे;
यदि मानवी तुम इस वसुंधरा की हो वासिनी,
धन्य हैं वे भाग्यशाली जननी, जनक तुम्हारे!"

यहाँ तक कि पोम्पोनिया ने भी उस सुरुचिसम्पन्न व्यक्ति के इस साहित्यिक अभिवादन पर प्रसन्नता प्रकट की। लीजिया तो कुछ घबरायी-सी कुछ शरमायी-सी, आँखें जमीन में गड़ाये चुपचाप सुनती रही। लेकिन तभी उसके गुलाबी ओठों के कोनों में मुसकराहट खेल गयी और उसके सुन्दर अंग धीरे से एक बार काँप गये और उसने नौसिका के ही शब्दों में, बिना कोई भाव प्रकट किये बिल्कुल रटे हुए पाठ की भाँति जवाब दिया—

"ओ अज्ञात पथिक, इंगित है कथन से तुम्हारे,
तुम कोई कुलशील और प्रखर बुद्धि हो—"

और फिर वह एक भयभीत चिड़िया की भाँति वहाँ से भाग गई।

पेट्रोनियस चकित रह गया। उसे इसकी आशा नहीं थी कि बर्बर जाति की एक लड़की होमर के ही शब्दों में उसे जवाब दे सकेगी। उसने अचरज से पोम्पोनिया की ओर देखा, जो अपने पति के चेहरे पर गर्व की रेखाएँ देखकर मुसकरा रही थी।

प्लोतिअस पुराने ख्याल के रोमनों की भाँति यूनानी भाषा और उसके बढ़ते हुए प्रयास का विरोधी था, लेकिन इस समय वह इस बात से प्रसन्न था कि एक साहित्यिक रुचि के सुसंस्कृत व्यक्ति को उसके परिवार का सदस्य उसी भाषा में और होमर के ही शब्दों में उत्तर दे सका।

उसने पेट्रोनियस की ओर घूमकर कहा, "बच्चे को पढ़ाने के लिए हमने एक यूनानी अध्यापक रखा है, और यह लड़की पढ़ाई के समय हमेशा बच्चे के पास ही रहती है।"

पेट्रोनियस इस समय पेड़ों की पत्तियों के बीच से उधर बाग में उन दोनों को गेंद खेलते हुए देख रहा था। विनिसियस लीजिया की ओर गेंद फेंक रहा था और लीजिया एक खास अन्दाज से गेंद को झेलने की कोशिश कर रही थी। पहले वह पेट्रोनियस को कुछ पतली-दुबली-सी लगी थी, लेकिन इस समय पूरे प्रकाश में वह जैसे खेले हुए चाँद-सी सुन्दर लग रही थी। उसके कपोलों पर गुलाबी ललाई छिटक रही थी और ओंठ जैसे चुम्बनों के लिए ही गढ़े गये थे, आँख गहरी नीली थीं और गोरे ललाट पर काले बालों के गुच्छे खेल रहे थे। जैसे वसन्त की सारी श्री-सुषमा उस अलौकिक आकृति में मूर्तिमान हो उठी थी। एक अधखिली कली-सी वह तरुणी पेट्रोनियस को कुछ क्षणों के लिए मन्त्रमुग्ध कर गयी।

खेलना बन्द करके अब वे दोनों मछलियों से भरे एक छोटे से तालाब के पास जा बैठे थे। बच्चा मछलियों को छेड़ने में लगा था और विनिसियस उस सुन्दरी से वार्तालाप में मग्न था।

वह धीमी, काँपती हुई आवाज में कह रहा था, "हाँ, एशिया में लड़ने के लिए जब मैं सेना में भरती हुआ तो एक बच्चे की तरह भयभीत था।...मुझे जीवन को या प्यार को करीब से जानने का मौका ही नहीं मिला था। बहुत छुटपन में ही मैं मदरसे जाने लगा था, जहाँ शिक्षक हमें पढ़ाता था कि देवताओं की इच्छा का पालन ही सुख और आनन्द का आधार है। लेकिन मुझे लगता है कि इससे भी बड़ा और इससे भी मूल्यवान एक और आनन्द है—और वह प्रेम ही दे सकता है। स्वयं देवगण भी इसी की खोज में रहते हैं—लीजिया, मैं उसी युवती की तलाश में हूँ जो मुझे यह आनन्द दे सके..."

वह सुनती ही रही, जैसे किसी वंशी की मादक स्वर-लहरी कहीं दूर से आ रही हो। यह संगीत उसके हृदय में एक विचित्र प्रकार का भय और शिथिलता भर रहा था और साथ ही एक अलौकिक आनन्द का अनुभव भी दे रहा था। विनिसियस के शब्द उसी बात को प्रकट कर रहे थे, जो स्वयं उसके मन में थी, लेकिन जिसे शायद वह कभी प्रकट न कर पाती। इस समय वह उसे संसार का सबसे सुन्दर व्यक्ति लग रहा था। विनिसियस ने आहिस्ते से उसकी कलाई थाम ली और कहा, "लीजिया, क्या तुम मेरे इस तरह कहने का अर्थ नहीं समझ रही हो?"

"ना," वह बहुत धीरे से बोली। लेकिन विनिसियस ने उसके कहने का विश्वास नहीं किया। उसने उसके हाथ को धीरे से दबाया और उसे अपनी ओर खींचना ही चाहता था कि तब तक ओलस पेड़ों की आड़ से उधर आ निकला और विनिसियस से बोला, "सूरज डूबनेवाला है। ठंडक बढ़ रही है, कहीं तुम्हें सर्दी न लग जाय।"

विनिसियस ने कहा, "नहीं, मैंने अपना टोगा उतार दिया है, लेकिन फिर भी मुझे ठंडक नहीं लग रही है।"

फिर उन दोनों में बातें होने लगीं और वह वृद्ध सैनिक युद्ध के अपने अनुभव विनिसियस को सुनाने लगा।

पेट्रोनियस पोम्पोनिया के पास बैठा उस सुहावनी संध्या का दृश्य देख रहा था। पश्चिम में क्षितिज बैंजनी और सिंदूरी आभा में रंगा था। चारों ओर संध्या-कालीन नीरवता फैली थी, पूरा बाग और बाग के पेड़ और मनुष्य सभी जैसे उसमें खो गये थे। इस शान्ति से वह चकित था। पोम्पोनिया, ओलस, उनके बच्चे और लीजिया के चेहरों को देखकर वह आश्चर्य कर रहा था कि कितना सन्तोष और शांति है यहाँ, इस घर में। वह सौन्दर्य और आकर्षण का प्रेमी था और उनके हलके से संकेत को भी अनदेखा नहीं जाने देता था। लेकिन यह नीरव सौन्दर्य और यह गौरव से भरा आकर्षण उसके लिए नया था, अनोखा था। वह पोम्पोनिया के सामने इसे प्रकट करने से न रह सका, "ओह, तुम्हारा यह संसार उस ससार से कितना भिन्न है, जिस पर नीरो राज करता है!"

संध्या के प्रकाश में अपने शांत और आत्मसन्तोष से भरे चेहरे को ऊँचा उठाते हुए वह बोली, "संसार पर नीरो राज नहीं करता, ईश्वर करता है।"

दोनों चुप हो गये। बाग से उन लोगों के लौटने की आवाज आने लगी, लेकिन जब तक वे लोग पास आये उसके पहले ही पेट्रोनियस ने पूछ लिया, "तो तुम देवताओं में विश्वास करती हो, पोम्पोनिया?"

"मैं देवताओं में नहीं सिर्फ एक ईश्वर में विश्वास करती हूँ, उस ईश्वर में जो न्यायप्रिय है और सर्व-शक्तिमान है," उसने उत्तर दिया।

## ३

"इस चुनाव पर तुम्हें बधाई देने का मन होता है," लौटते समय पालकी में पेट्रोनियस ने विनिसियस से कहा। "सचमुच बड़ी सुन्दर है वह। जानते हो उसे देखकर मुझे किसकी याद हो आयी ? वसन्त की। हमारे यहाँ का इतालियन बसन्त नहीं, जिसमें यहाँ-वहाँ कुछ सेब के दरख्तों में फूल आ जाते हैं, बल्कि ऐसा वसन्त जैसा कि मैंने हल्वेशिया में देखा है, कोमल हरीतिमा से भरा और यौवन के आवेग से पूर्ण।"

विनिसियस सिर झुकाये यह सब सुनता रहा। कुछ देर तक वह चुप रहा। फिर बोला, "मैं उसे चाहता हूँ, और अब तो और भी चाहने लगा हूँ। जब मैंने उसका हाथ दबाया तो जैसे मेरे खून में एक अजीब किस्म की गर्मी दौड़ गई। वह मुझे मिलनी ही चाहिए। मैं तुम से कोई रास्ता पूछने आया था, लेकिन अगर तुम कोई रास्ता नहीं बता सकते हो मुझे खुद ही उसे ढूँढ़ना पड़ेगा। ओलस उसे अपनी बेटी की तरह मानता है, इसलिए मैं क्यों उसे दास श्रेणी की मानूँ ? अगर उसे पाने का कोई आसान रास्ता नहीं निकलेगा तो मैं जबरदस्ती उसे ले आऊँगा और उससे शादी कर लूँगा। वह मेरे घर के दरवाजे पर भेड़िये की चर्बी पोतकर और माला टाँगकर मेरी पत्नी बन जायगी।"

"जरा शान्ति से काम लो। बर्बर जाति के लोगों से हम इस तरह पेश नहीं आते कि उन्हें गुलाम बनाने और गले में रस्सी बाँधकर अपने रथों के पीछे घसीटने के बाद उनकी लड़कियों से शादी करने को उतावले हो जायँ। हद कर दी तुमने तो, जरा अपने मन को काबू में करो ! हाँ, इतना तय समझो कि अगर वह उन लोगों को छोड़कर तुम्हारे पास आना चाहती है, तो उसे कोई रोक नहीं सकेगा। मैं वादा करता हूँ कि मैं भी इस पर सोचूँगा और कोई न कोई उपाय खोज ही निकालूँगा।"

"धन्यवाद, पेट्रोनियस। भगवान तुम्हारा भला करे ! अच्छा, अब तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"और कहाँ जाऊँगा। क्राइसोथेमिस के यहाँ जा रहा हूँ।"

"बड़े भाग्यवान हो तुम, अपनी प्रेमिका से तुम मिल तो लेते हो !"

"मैं और भाग्यवान् ? मालूम नहीं तुम्हें कि उसकी कौन-सी बात मुझे बड़ी मजेदार लगती है ? यह कि वह मुझे धोखा देती है, और मेरे मुक्त किये हुए दास उस

बाँसुरी वाले थिओक्लीज से मुहब्बत करती है, और समझती है कि जैसे मुझे कुछ मालूम ही नहीं है !"

इसलिए पालकी क्राइसोथेमिस के घर की ओर मुड़ गई। मकान की बरसाती में पहुँचने पर पेट्रोनियस ने विनिसियस के कंधे पर हाथ रखा और कहा, "सुनो, मुझे लगता है कि एक रास्ता निकल आयेगा।"

"सच ? देवताओं की कृपा हो तुम पर !"

"सुनो तो, कुछ दिनों में लीजिया तुम्हारी हो जायगी।"

"मेरे लिए तो तुम सीज़र से भी बड़े हो, पेट्रोनियस !"

## ४

क्राइसोथेमिस के यहाँ से लौटने के बाद पेट्रोनियस दिन भर सोता रहा। लेकिन शाम को उसने राजमहल जाकर सम्राट नीरो से भेंट की। दूसरे दिन पन्द्रह सिपाहियों को साथ लेकर एक अफसर प्लोतिअस के घर जा पहुँचा।

आतङ्क और अनिश्चितता के उन भयानक दिनों में किसी के घर सिपाहियों का इस तरह पहुँचना जैसे मौत के हरकारे का पहुँचना ही होता था। जब सिपाहियों ने दरवाजा खटखटाया और दरबान ने उनके आने की सूचना दी तो घर भर में सनसनी फैल गयी। पूरा परिवार बूढ़े जनरल को घेर कर खड़ा हो गया, क्योंकि सबने यही समझा कि सिपाही उसे ही लेने आये हैं। पोम्पोनिया उसके गले में बाहें डाल-कर उससे चिमट गयी और सूखे हुए ओठों और काँपती आवाज में कुछ कहने लगी। लीजिया बिल्कुल पीली पड़ गयी और उसके हाथ चूमने लगी, और बच्चा अपने पिता के पैरों से लिपट गया। दास-दासियाँ घबराकर इधर-उधर मकान में इकट्ठे होने लगे और परेशानी से चीखने-चिल्लाने लगे। कुछ दास-दासियाँ तो रोने लगीं।

ओलस बाहर आया, जहाँ सिपाही उसका इंतजार कर रहे थे। इस दारोगा को वह पहचानता था। यह ब्रिटेन में उसकी सेना में रह चुका था।

उसने बूढ़े जनरल को सलाम करते हुए कहा, "जय हो, जनरल ! मैं आपके पास सम्राट् का एक सन्देश और आपके लिए उनकी शुभकामनाएँ लाया हूँ। यह आज्ञापत्र लीजिये।"

"शुभकामना के लिए सम्राट् का कृतज्ञ हूँ, उनकी आज्ञा सिर आँखों पर है। लाओ, हेस्ता, क्या संदेश है सम्राट् का ?"

"श्रीमान, सम्राट् को मालूम हुआ है कि लीजिया के राजा की लड़की आपके घर में रह रही है, वही लड़की जो बंधक के रूप में रोम को मिली थी। अब तक उसकी देखभाल करने के लिए सम्राट् ने आपको धन्यवाद दिया है। लेकिन अब वे यह भार आप पर नहीं रहने देना चाहते और साथ ही उनका विचार है कि चूँकि यह लड़की एक बंधक के रूप में मिली है इसलिए अब इसका उनका और सिनेट की देख रेख में रहना ही ठीक होगा। इसलिए उनकी आज्ञा है कि आप उसे उनके पास भेज दें।"

ओलस बड़ा पुराना सिपाही था और बड़ा साहसी आदमी था, इसलिए घबराहट में राजाज्ञा का विरोध करने की गलती उससे नहीं हो सकती थी। उसने आज्ञापत्र और राजकीय मुहर देख लेने के बाद बहुत शान्ति से अपनी आँखें ऊपर उठायीं और कहा, "अच्छा, तुम यहाँ कुछ देर ठहरो, मैं उसे लेकर आता हूँ।"

यह कहकर वह अन्दर आया और उस कमरे में पहुँचा जहाँ उसकी पत्नी अपने बच्चे और लीजिया को लेकर दुबकी बैठी थी।

"हम में से किसी के लिए भी मौत या कालेपानी का आदेश नहीं है, पोम्पोनिया, लेकिन फिर भी इतना तय है कि सीज़र के दूत बड़ा बुरा संदेसा लेकर आये हैं—और लीजिया ! वह तुम्हारे बारे में है।"

"लीजिया के बारे में ?" पोम्पोनिया चीख पड़ी।

"हाँ !" फिर लड़की की ओर घूमकर उसने कहा, "लीजिया, तुम इस घर में पलकर बड़ी हुई हो और हम लोग तुम्हें अपनी बेटी की तरह चाहते हैं। लेकिन सीज़र को इसका अधिकार है कि वह तुम्हें अपनी देखरेख में रखे, और उसने तुम्हें माँगा है।"

"ओलस !" उसकी पत्नी ने चीखकर कहा, "इससे तो अच्छा है कि यह अपनी जान दे दे !"

लीजिया उसे चिपटकर रो पड़ी, "माँ, ओ माँ !"

ओलस के चेहरे से भी उसका गुस्सा और दुख प्रकट हो रहा था। वह काँपते हुए दुखी स्वर में बोला, "अगर इस संसार में मैं अकेला होता तो अपने प्राण रहते मैं कभी इसे उसके हाथ में नहीं सौंपता। आज पहले मेरी लाश ही यहाँ से उठती। लेकिन क्या करूँ ! मैं सम्राट् के पास जाऊँगा, उससे एक बार फिर इस पर विचार करने की प्रार्थना करूँगा। लेकिन मैं नहीं जानता कि वह मेरी बात सुनेगा भी या नहीं। लेकिन फिलहाल, लीजिया, विदा ! याद रखना कि हमने उस दिन

अपना भाग्य सराहा था जिस दिन तुम हमारे घर आयी थीं। तुम हमारी खुशी और हमारी आँखों की रोशनी हो—लेकिन अलविदा!"

वह फौरन बाहर लौट आया, ताकि कहीं वह दुःख में व्याकुल न हो उठे, क्योंकि एक रोमन के लिए और एक सैनिक के लिए यह शर्म की बात होती।

लेकिन पोम्पोनिया लीजिया को उस कमरे में ले आयी जहाँ ओलस अपने पारिवारिक देवताओं की पूजा किया करता था। पोम्पानिया जो कुछ कह रही थी, वह उस पूजाघर की परंपरा के वातावरण में बहुत विचित्र मालूम हो रहा था।

"बेटी, तुम्हारी परीक्षा का समय आ गया है। पुराने जमाने में एक बाप ने अपनी बेटी को अपमान से बचाने के लिए मार डाला था और लूक्रेसी ने भी अपने प्राण देकर अपने मान की रक्षा की थी। सीज़र के घर में जाने का मतलब है अपनी इज्जत से हाथ धोना। अगर धर्म हमें अपने हाथों अपने प्राण लेने से मना करता है तो वह इसका आदेश भी देता है कि हमें चाहे प्राण भी देने पड़ें लेकिन फिर भी अपने सम्मान को नष्ट नहीं होने देना चाहिये और उसकी रक्षा करनी चाहिये।"

लड़की उसके पैरों के पास घुटने के बल बैठ गयी और उसके कपड़ों में मुँह छिपाकर कुछ देर तक चुप बैठी रही। जब वह उठकर खड़ी हुई तो उसका चेहरा शान्त था। वह बोली, "मुनो माँ, तुमसे और पिताजी से और अपने इस छोटे भाई से अलग होते मुझे बड़ा दुख हो रहा है, लेकिन मैं जानती हूँ कि इसका विरोध करना बेकार होगा और तुम सब लोगों की बरबादी का कारण होगा। लेकिन सीजर के महल में पैर रखने के बाद से बराबर मैं तुम्हारे शब्दों को याद रखूँगी।"

फिर उसने सबसे विदा ली, ओसल के बच्चे से और उस यूनानी अध्यापक से जो उन दोनों को पढ़ाता था, उस नौकर से जो उसकी देखभाल करता आया था और घर के सब दास-दासियों से वह अंतिम बार मिली।

उन दासों में एक भीमकाय लीजियाई भी था, जिसे घर में यूर्सस कहकर पुकारते थे और जो लीजिया और उसकी माँ के साथ पकड़ा गया था। वह पोम्पोनिया के पैरों में गिर पड़ा और बोला, "देवी जी, मुझे अपनी मालकिन के साथ जाने दीजिये! मैं उसकी सेवा करूँगा और सीज़र के घर में उसकी रक्षा करूँगा।"

"तुम मेरे दास नहीं, लीजिया के ही हो, लेकिन क्या वे लोग तुम्हें महल में जाने देंगे और फिर तुम वहाँ उसकी रक्षा कैसे कर सकोगे!"

"यह सब मैं नहीं जानता। लेकिन इतना जानता हूँ कि एक लोहे की छड़ को लकड़ी की तरह आसानी से तोड़ सकता हूँ। इतनी ताकत मुझमें है।"

लेकिन ओलस ने इस पर आपत्ति नहीं की, उल्टे उसने कहा कि लीजिया का सारा सामान और उसका नौकर भी उसके साथ महल में जायगा।

नीरो के महल में एक्ते नाम की एक दासी थी, जिसे नीरो ने मुक्त कर दिया था और अब जो उसकी नौकरानी के रूप में उसके महल में रहती थी। पोम्पोनिया ने बाद में एक चिट्ठी लिखकर उससे आग्रह किया कि महल में वह लीजिया की हिफाजत करे। ईसाइयों के समारोहों में तो पोम्पोनिया की मुलाकात कभी उससे नहीं हुई थी, लेकिन उसने सुन रखा था कि एक्ते ईसाइयों की मदद करने से कभी इन्कार नहीं करती और वह ईसाई धर्म-प्रचारकों की पुस्तकों को बड़े चाव से पढ़ा करती थी।

जो नायक सिपाहियों को लेकर आया था वही एक्ते को पोम्पोनिया का पत्र देने के लिए तैयार हो गया। पोम्पोनिया ने पत्र उसी के हाथ भेज दिया। ओलस का बच्चा चीख-चीखकर रोने लगा और अपनी बहन को बचाने के लिए सिपाहियों को मुक्की दिखाता रहा। सिपाही लीजिया को लेकर चले गये। जनरल ने एक पालकी लाने की आज्ञा दी और जब तक वह आये तब तक के लिए वह पोम्पोनिया को साथ लेकर अन्दर एक कमरे में चला गया था।

"सुनो पोम्पोनिया," वह बोला, "मैं खुद सीज़र के पास जाना चाहता हूँ, लेकिन मैं जानता हूँ कि इसका कोई असर नहीं होगा और हालाँकि सेनेका का अब नीरो पर कोई असर नहीं है, लेकिन मैं उससे भी मिलूँगा। आजकल तो सोफोनिअस, तिजेलिनस, पेट्रोनिअस और वेतिनियस का असर है नीरो पर और जहाँ तक सीजर का सम्बन्ध है, उसने अपनी जिन्दगी में कभी लीजियनों के बारे में सुना भी नहीं होगा, और उसने लीजिया की जो माँग की है यह भी किसी के सिखावे में आकर ही की है। वह कौन हो सकता है इसका अन्दाज लगाना भी मुश्किल नहीं है।"

"पेट्रोनियस ?"

"बिल्कुल, और पेट्रोनियस ने लीजिया को हमसे सीज़र के लिए नहीं छीना होगा, क्योंकि इससे महारानी पोपिया के नाराज होने का डर है। इसलिए या तो वह खुद लीजिया को रखना चाहता है या विनिसियस को देना चाहता है। मैं आज ही सारी बात का पता लगा लूँगा।"

कुछ देर बाद एक पालकी में बैठकर वह राजमहल की ओर चल पड़ा।

## ५

ओलस को इस बात का ठीक ही अन्दाज था कि उसे नीरो के महल में घुसने की इजाजत नहीं मिलेगी, क्योंकि वहाँ पहुँचते ही उसे बताया गया कि सीज़र

इस समय गाना गा रहे हैं। इसके अलावा वे सिर्फ उन लोगों से ही मिलते हैं, जिन्हें वे स्वयं मिलने के लिए बुलाते हैं।

सेनेका जरूर उससे मिला, हालाँकि वह बुखार में पड़ा था।

"मेरे परम आदरणीय मित्र, मैं सिर्फ एक काम कर सकता हूँ," उसने कड़वाहट से हँसते हुए कहा, "और वह यह कि किसी भी तरह नीरो को न मालूम होने दूँ कि तुम्हारे साथ मेरी हमदर्दी है!"

वह इसके भी विरुद्ध था कि प्लोतिनस जाकर तिजेलिनस या वेतिनिअस या वितेलिअस से मदद माँगे। क्योंकि हो सकता है कि पैसे का कुछ असर उन पर हो जाय, या संभव है वे लोग पेट्रोनियस को एक चोट पहुँचाना चाहें, जिसकी बढ़ती हुई प्रतिष्ठा को नष्ट करने के मौके की तलाश में वे लोग हर वक्त लगे रहते हैं, लेकिन ज्यादा सम्भावना इस बात की थी कि कहीं वे लोग सीजर को यह न बता दें कि लीजिया प्लोतिनस को कितना प्यारी है और सीजर उसे चिढ़ाने के लिए लीजिया को अपने पास ही रख ले।

"प्लोतिनस तुम चुप रहते हो, तुम बरसों से चुप हो और सीजर ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करता जो चुप रहते हैं। तुम्हें इसकी हिम्मत कैसे हुई कि तुमने नीरो के सौन्दर्य की और उसके बड़प्पन की, उसके संगीत की, उसकी भाषण-कला की, उसकी कविता की और रथ दौड़ में उसकी असाधारण योग्यता की प्रशंसा में आगे बढ़कर भाग नहीं लिया? तुमने ब्रिटेनिकस की मौत पर खुशी क्यों नहीं मनायी, और उसकी माँ की हत्या पर प्रसन्न क्यों नहीं हुए? जब उसने ओक्टाविया को कत्ल किया तो तुमने उसे बधाई क्यों नहीं दी?"

लेकिन जनरल ने उसे बीच में ही रोककर कहा, "मेरे दोस्त, असल में पेट्रोनियस ने मेरी बच्ची को मुझसे छिनवाया है। अब बताओ कि मैं क्या करूँ, उस पर किस तरह असर डलवाऊँ? तुम भी मेरी पुरानी मित्रता का ख्याल करके उसे किसी तरह समझाने की कोशिश करो।"

सेनेका कहने लगा, "पेट्रोनियस और मैं आपस में एक दूसरे के बड़े विरोधी हैं, बल्कि दुश्मन ही समझ लो। वह नीरो के इर्द-गिर्द मँडरानेवाले चापलूसों में दूसरों से अच्छा है, लेकिन उसे यह बताना कि उसने कोई गलती की है, बिल्कुल फिजूल होगा। आजकल भलाई-बुराई दोनों उसके लिए बराबर है। लेकिन अगर किसी तरह कोई उसे यह बता दे कि उसका काम कला से बिल्कुल शून्य है तो वह लजा जायगा। जब मेरी उससे मुलाकात होगी तो मैं कहूँगा कि तुम्हारा यह काम किसी आजाद गुलाम से भी बदतर है।"

"खैर, हर हालत में मैं तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा," बूढ़े जनरल ने कहा।

फिर वह विनिसियस के यहाँ पहुँचा। एकान्त पाकर उसका क्रोध उमड़ पड़ा

और वह उसे बुरी तरह फटकारने लगा। लेकिन इस खबर को सुनकर विनिसियस का चेहरा बिल्कुल सफेद हो गया। इस हालत में ओलस उस पर शक नहीं कर सका। उसके माथे पर पसीने की बूँदें छलक आयीं। आँखें गुस्से से चमकने लगीं, और काँपते हुए ओठों से बोलना मुश्किल हो गया। द्वेष और क्रोध की आग में वह जलने लगा। उसे लगा कि जहाँ लीजिया ने एक बार महल का दरवाजा पार किया कि वह हमेशा के लिए हाथ से गई। लेकिन ओलस ने पेट्रोनियस का नाम लिया तो विनिसियस के मन में एक सन्देह उठा कि पेट्रोनियस ने उसे मूर्ख बनाया है। वह शायद सीज़र को लीजिया, तोहफे के रूप में देकर उसकी नजर में उठना चाहता है, या फिर यह हो सकता है कि वह खुद लीजिया को उड़ाना चाहता है!

विनिसियस का परिवार अपने गुस्से के लिए प्रसिद्ध था। वह गुस्से से काँपते हुए बोला, "जनरल, पेट्रोनिवस मेरा कोई भी क्यों न हो, लीजिया के साथ की गयी इस ज्यादती के लिए उसे जवाब देना होगा! आप घर लौट जाइये और मेरा इंतजार कीजिये। न पेट्रोनियस ही उसे ले सकेगा और न सीजर ही। मैं उसे भी मार डालूँगा और अपनी भी जान दे दूँगा!"

यह कहकर वह पेट्रोनियस की तलाश में निकल पड़ा।

ओलस कुछ आश्वस्त होकर घर लौट आया और पोम्पोनिया को धीरज बँधाने लगा। फिर वे लोग विनिसियस से खबर पाने की प्रतीक्षा करने लगे। कई घंटे बीत गये लेकिन कोई संदेश नहीं आया। शाम को जाकर कहीं दरवाजे पर किसी की दस्तक सुनाई दी। एक नौकर ओलस को एक चिट्ठी दे गया। उसमें लिखा था :

"ओलस प्लोतिअस की सेवा में,

जो कुछ हुआ है वह सम्राट की आज्ञा से हुआ है, और उसके सामने आपको भी पेट्रोनियस और मेरी तरह सिर झुकाना चाहिये—मार्कस् विनिसियस।"

## ६

पेट्रोनियस उस समय घर में ही था और दरबान, विनिसियस को रोकने की हिम्मत नहीं कर सका। विनिसियस तेजी से एक के बाद एक कमरा पार करता हुआ पुस्तकालय में पहुँचा, जहाँ पेट्रोनियस बैठा कुछ लिख रहा था। विनिसियस ने उसके हाथ से कलम छीनकर तोड़ डाली। फिर उसने अपने मामा का हाथ कसकर पकड़ लिया और तीखी आवाज में कहा, "क्या किया तुमने उसका? कहाँ है वह?"

पेट्रोनियस हालाँकि देखने में बहुत कोमलांग था लेकिन उसने उस युवक का हाथ पकड़ लिया और एक हाथ पीछे से ले जाकर उसका दूसरा हाथ भी अपनी गिरफ्त में कर लेने के बाद बोला, "तुम जानते हो कि सिर्फ सवेरे ही मुझे कमजोरी सताती है, शाम को तो मेरी ताकत लौट आती है।" फिर उसने विनिसियस के हाथ छोड़ दिये।

विनिसियस शर्म और गुस्से से काँपता हुआ उसके सामने खड़ा रहा। वह दांत पीसकर बोला, "तुम्हारा हाथ फौलादी है, लेकिन मैं कसम खाकर कहता हूँ कि अगर तुमने मुझे धोखा देने की कोशिश की तो याद रखना मैं तुम्हारा गला काट दूँगा, भले ही तब तुम सीज़र के दरबार में क्यों न बैठे हो।"

"अच्छा, अब बैठ जाओ, जरा शान्ति से बात करो," पेट्रोनियस ने कहा, "तुम्हारी यह रुखाई मुझे अच्छी नहीं लगती और मुझे किसी की कृतघ्नता पर आश्चर्य होगा तो तुम्हारी कृतघ्नता पर।"

"बको मत, बताओ लीजिया कहाँ है?"

"किसी कसबखाने में या सीज़र के महल में।"

"पेट्रोनियस!"

"बैठ जाओ और जरा ठंडे हो लो। मैंने सीजर से दो विनती की थीं और उसने दोनों को पूरा करने का वादा किया है। एक तो यह है कि लीजिया को ओलस से ले लिया जाय, और दूसरी यह कि उसे तुम्हें दे दिया जाय।"

वहाँ कुछ देर की चुप्पी रही। फिर विनिसियस ने आश्चर्य से पेट्रोनियस की ओर देखा और कहा, "माफ करना मुझे। मैं उसे इस बुरी तरह चाहता हूँ कि मेरे लिए अपने को रोकना मुश्किल हो गया।"

"मार्कस्, अब बताओ मैंने कितनी सफाई से सब कुछ तय करा दिया? मैंने परसों सीजर से कहा कि मेरा भाञ्जा ओलस की पाली हुई एक तीन कौड़ी की छोकरी पर जान दे रहा है, और दिन रात उसी के ख्याल में बावले की तरह घूमता रहता है। आप सीजर, और मैं, जो सच्चे सौन्दर्य को पसन्द करते हैं, ऐसी लड़की की ओर देखना भी पसन्द नहीं करेंगे, लेकिन इस लड़के के दिमाग में तो भूसा भरा है।"

"पेट्रोनियस!"

"अच्छा भई, अगर तुम्हारी समझ में नहीं आता तो सुनो। मैंने ऐसा इसलिए कहा ताकि लीजिया हिफाजत से रह सके और उस पर नीरो की नजर न पड़े। मैंने नीरो को समझा दिया कि उसके जैसा परिष्कृत रुचि का आदमी ऐसी बदसूरत लड़कियों में रुचि नहीं ले सकता। इसलिए अब वह लीजिया को कोई महत्व नहीं देगा, क्योंकि एक सुरुचिपूर्ण व्यक्ति कहलाने की उसकी बड़ी आकांक्षा है। उस

मूर्ख को इसी तरह काबू में रखा जा सकता है। मैंने उससे कहा कि लीजिया को वहाँ से मँगवा लीजिये और उसे विनिसियस को सौंप दीजिये। इस तरह आप अपने अधिकार का ही प्रयोग करेंगे, बल्कि ओलस को कुछ चिढ़ा भी सकेंगे और वह राजी हो गया। अब तुम राज्य की ओर से उसके संरक्षक नियुक्त होगे। अब यह लीजियाई खजाना तुम्हारी रखवाली में सौंप दिया जायगा और इसे व्यर्थ फेंकने के बजाय तुम इसकी पूरी कोशिश करना कि यह कई गुना बढ़ जाय। बड़े भाग्य-वाले हो तुम!"

"तो यह सही है कि सीजर के महल में वह सुरक्षित है?"

"अगर उसे ज्यादा दिन वहाँ रहना पड़ा तो मैं अपनी बहन से कहकर उसकी हिफाजत का इंतजाम कर लूँगा। लेकिन वह ज्यादा दिन वहाँ नहीं रहेगी। कल महल में एक भोज है और मैं इस कोशिश में हूँ कि भोज में तुम्हारी जगह लीजिया के पास ही रखी जाय।"

"लेकिन तुमने लीजिया को सीधे मेरे पास क्यों नहीं भिजवा दिया?"

"इसलिए कि सीजर को लोगों पर कृपा करने का शौक है। इसके अलावा रोम में कुछ दिनों तक इसका शोर रहेगा और लोग बात करते रहेंगे। सीजर को यह सब पसन्द है। चूँकि लीजिया एक बन्धक के रूप में महल में रखी जायगी, और तब तक रखी जायगी जब तक लोग उसके बारे में बातें करते रहें। इसके बाद उसे चुपचाप तुम्हारे पास भेज दिया जायगा।"

"तो कल मैं उसे देख सकूँगा और फिर वह हमेशा के लिए मेरी हो जायगी।"

"हाँ, लीजिया तो तुम्हें मिल जायगी, लेकिन ओलस जिन्दगी भर मुझे शाप देता रहेगा।"

"ओह, ओलस अभी मुझसे मिलने आया था, और मैंने उससे वादा किया है कि जल्दी ही मैं उसे लीजिया के बारे में सूचना भेजूँगा।"

"लिख भेजो कि ईश्वरावतार हमारे सम्राट की इच्छा ही हमारे लिए सबसे बड़ा कानून है, और यह कि तुम अपने बेटे का नाम ओलस ही रखोगे। जरा बूढ़ा चिढ़ेगा तो! अच्छा, यह कैसा रहे अगर कल उसे भी भोज के लिए निमंत्रण भिजवा दिया जाय? वह तुम्हें लीजिया के पास बैठा हुआ देखेगा तो और भी जल-भुन जायगा।"

"न, यह मत करो। मुझे बड़ा अफसोस है उन दोनों के लिए, खास तौर से पोम्पोनिया के लिए।"

फिर बैठकर उसने वह पत्र लिखा, जिसने बूढ़े जनरल की आखिरी आशा पर भी पानी फेर दिया।

## ७

एक जमाना था, जब सबसे दंभी और अभिमानी आदमी भी एक्ते के आगे सिर झुकाया करते थे। तब वह नीरो की प्रेयसी थी।

उस जमाने में उसने बहुतों को अपना शुक्रगुजार बनाया था और किसी से भी दुश्मनी मोल नहीं ली थी। यहाँ तक कि नीरो की पत्नी ओक्तेविया उससे घृणा नहीं कर पाती थी और अब वह इतनी महत्वहीन मानी जाती थी कि किसी को उससे जलने की कोई जरूरत ही नहीं थी। वह मन में अब भी नीरो से प्यार करती थी और उन सुखमय घड़ियों की याद में अपने दिन गुजार रही थी जो कभी उसने नीरो के साथ बितायी थीं और नीरो की नई रानी उसे इतना भी महत्व नहीं देती थी कि उसे महल से निकाल बाहर करे।

कभी-कभी उसे सम्राट नीरो की टेबुल पर भोजन के लिए आमंत्रित किया जाता था और वह अपनी खूबसूरती से शाही दावत की शान बढ़ाया करती थी।

लेकिन अब सीजर ने अपने अतिथियों के चुनाव में विशेष रुचि लेना बन्द कर दिया था। अब उसकी टेबुल के आस-पास ऐसे सिनेटरों की भीड़ लगी रहती थी जो जी-हजूरी के लिए उतावले रहते थे और हर उम्र के ऐसे अमीर-उमरा उसके आस-पास मंडराया करते थे, जो अत्यन्त विलासी, अनैतिक और दुश्चरित्रतापूर्ण जीवन के कारण बिल्कुल खोखले हो चुके। वहाँ ऐसी प्रतिष्ठित महिलाएँ होती थीं जो दिन में तो अपनी प्रतिष्ठा के गर्व में अकड़ी रहती थीं लेकिन अँधेरा होते ही नकली बाल लगाकर और भेस बदलकर अँधेरी गलियों में नये शिकारों की तलाश में निकल जाती थीं और वहाँ ऐसे पुरोहितों और धर्मगुरुओं का जमघट लगा रहता था जो रात-दिन पाप करते थे और अपने देवताओं की आँखों में धूल झोंका करते थे। कभी-कभी वहाँ नर्तकों और नर्तकियों, गवैयों और संगीतज्ञों, अभिनेताओं और ऐसे कवियों का जमघट लगता जो अपनी कविताएँ सुनाते समय भी इस बात का जोड़-तोड़ बैठाने में लगे रहते कि सीजर की कविताओं की किस तरह प्रशंसा की जाय कि वह खुश होकर कुछ दक्षिणा दे दे, और वहाँ ऐसे भुखमरे फिलासफर इकट्ठे हुआ करते थे जिनकी ललचायी आँखें हमेशा खाने की थालियों पर ही लगी रहती थीं और ऐसे अवसरों पर सीजर के आसपास रथों की दौड़ के पुराने माहिर, नट और बाजीगर, किस्से सुनानेवाले, पुराने गप्पी और न मालूम कौन-कौन अल्लम-गल्लम वहाँ आ इकट्ठे होते थे, जिन्होंने किसी तरह तिकड़म करके या लोगों को उल्लू बनाकर

कामचलाऊ प्रसिद्धि हासिल कर ली थी और जिनमें से कई अपने लम्बे-लम्बे बालों के नीचे अपने फटे हुए कान छिपाये रहते थे जो इस बात के प्रमाण थे कि वे कभी गुलाम रह चुके हैं।

इनमें जो सबसे बदमाश और चालाक थे वे तो नीरो की टेबुल पर अपने लिए जगह बना लेते थे और जो इनसे कम चालाक थे वे पीछे बैठे-बैठे इसका इन्तजार किया करते थे कि कब उनकी बारी आये और नौकर बचे हुए गोश्त और शराब को उनकी ओर बढ़ा दें। इस कोटि के लोगों की भीड़ आमतौर से तिजेलिनस, ओतिनि-अस और विटेलिअस जैसे लोग इकट्ठी किया करते थे और उनमें से कई को उन्हें महल में पहनने लायक कपड़े तक देने पड़ते थे, और सीजर इस तरह की भीड़-भाड़ को पसन्द करता था, क्योंकि इससे दरबार की शान बढ़ती थी।

आज भोज में लीजिया भी शरीक होनेवाली थी। चिन्ता और क्षोभ से वह मरी जा रही थी। वह सीजर से डरती थी, इन आदमियों से डरती थी, महल के इस शोर-शराबे और यहाँ तक कि इन दावतों से भी खौफ खाती थी, क्योंकि इनके बारे में उसने ओलस और पोम्पोनिया से बहुत कुछ सुन रखा था। हालाँकि अभी उसकी उम्र कच्ची थी लेकिन फिर भी वह नादान नहीं थी। इन बुरे दिनों में छोटे-छोटे बच्चों तक को पाप के किस्से मालूम थे। इसलिए वह जानती थी कि ये सब लोग मिलकर महल में उसकी बरबादी के मनसूबे बाँध रहे हैं। लेकिन एक महान् धर्म की शिक्षाएँ उसे प्रेरणा दे रही थीं और अन्याय के आगे न झुकने की उसने कसम खायी थी।

चूँकि यहाँ वह अकेली थी और अपने व्यवहार के लिए स्वयं ही उत्तरदायी थी। एक विचार उसे यह भी आया कि चूँकि अब वह अकेली है उसके व्यवहार के लिए ओलस या पोम्पोनिया को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, इस-लिए क्यों न वह सीजर की आज्ञा मानने से इन्कार कर दे और भोज में शरीक न हो। यातना और मृत्यु के मुकाबले में अपने साहस का प्रदर्शन करने की उसे उस समय बहुत इच्छा हो रही थी। उसे याद आया कि ईसा ने भी यही किया था, ऐसी परिस्थिति में आदमी को क्या करना चाहिए इसका उदाहरण पेश किया था और पोम्पोनिया ने भी तो उसे बताया था कि एक सच्चे ईसाई के लिए इससे बढ़कर और कोई सौभाग्य नहीं हो सकता कि वह अपने धर्म-पिता का अनुकरण करते हुए अपने जीवन का बलि कर दे।

लेकिन जब उसने एक्ते को अपने विचार बताये तो वह आश्चर्य से उसकी ओर देखती ही रह गई। भला यह कैसी नादानी कि वह पहले दिन से ही सीजर को नाराज कर लेना चाहती है? यह तो निरा बचपना होगा। उसी की बतायी हुई कहानी से यह मालूम होता है कि वह सच्चे अर्थों में अपने देश के बंधक के रूप में भी नहीं

मानी जा सकती, बल्कि उसे अपने देशवासियों द्वारा भूल से छोड़ दी गई लड़की के रूप में ही माना जा सकता है। इसलिए वह सीजर की मर्जी पर ही रह सकती है। उसे हक है कि वह उसके साथ जो चाहे सो करे। इस मामले में अन्तर्राष्ट्रीय कानून उसकी कोई मदद नहीं कर सकेगा। उसे इस हालत में सीजर के सामने झुकना ही पड़ेगा।

"इसके अलावा," उसने कहा, "मैंने भी ईसाई धर्म सम्बन्धी किताबें पढ़ी हैं और मैं जानती हूँ कि इस धरती से ऊपर ईश्वर का राज है। लेकिन इस धरती पर तो सीजर का राज है और यहाँ उससे बढ़कर कोई नहीं है। और फिर तुम बेकार ही इतना घबरा रही हो। क्योंकि मैं इस महल के रंग-ढंग से परिचित हूँ और तुम्हें सीजर से इस तरह डरने की जरूरत नहीं है। अगर उसने खुद अपने लिए तुम्हें माँगवाया होता तो वह तुम्हें यहाँ महल में लाने की आज्ञा नहीं देता। यहाँ महारानी पोम्पिया का एक-छत्र राज है, और जब से उसे बच्चा हुआ है तब से तो नीरो पर उसका रोब और भी जम गया है। पेट्रोनियस ने मुझसे तुम्हारी देखभाल करने को कहा है और पोम्पोनिया ने भी मुझे लिखा है, इसलिए लगता है कि उन दोनों ने मिलकर ही कुछ तय किया होगा। पेट्रोनियस के अलावा और भी कोई तुम्हारी मदद कर सकता है? क्या नीरो के दूसरे अन्तरंग मित्रों से भी ओलस के घर तुम्हारी भेंट हुई है?"

"मैंने विस्पासिअन और तितूस को वहाँ आते-जाते देखा है।"

"सीजर इन लोगों को पसन्द नहीं करता।"

"और सेनेका को?"

"उसे भी नहीं। जब वह किसी बात की राय देता है तो सीजर बिलकुल उसका उलटा करता है।"

लाज से लीजिया के सुन्दर गाल लाल हो उठे और उसने कहा, "विनिसियस से भी मेरी मुलाकात हुई है।"

"मैं उसे नहीं जानती।"

"वह पेट्रोनियस का कोई सम्बन्धी है, और हाल में ही आरमीनिया से लौटा है।"

"क्या नीरो उसे पसन्द करता है?"

"विनिसियस को? हाँ, उसे सब कोई पसन्द करते हैं।"

"और क्या वह तुम्हारे लिए सिफारिश करेगा?"

"हाँ!"

एक्ते मुस्कुरा दी। बोली, "हो सकता है, भोज में उससे तुम्हारी भेंट हो। इसलिए तुम्हें वहाँ जाना ही चाहिए। अगर तुम ओलस के यहाँ वापस लौटना

चाहती हो तो तुम्हें इस मौके से लाभ उठाना चाहिए और पेट्रोनियस से और विनिसियस से मिलकर अपनी मदद के लिए कहना चाहिये। आओ, महल में लोग इकट्ठे होने लगे, कुछ देर में मेहमान लोग आते ही होंगे। शाम होने आई।"

"ठीक कह रही हो, एक्ते तुम। मैं तुम्हारे कहने के अनुसार करूँगी।"

अगर लीजिया से इस समय पूछा जाता तो वह स्वयं भी नहीं बता सकती थी कि वह पेट्रोनियस और विनिसियस से मिलने के लिए उत्सुक थी या इस समय उसमें एक नारी की यह स्वाभाविक उत्सुकता काम कर रही थी कि जीवन में वह भी एक शाही दावत को अपनी आँखों से देख ले, नीरो और उसके दरबारियों को देखे, रानी पोप्पिया और दूसरी सुन्दरियों को देखे, उस सारी शान-शौकत को अपनी आँखों से देखे जिसके बारे में उसने इतनी कहानियाँ सुनी थीं।

एक्ते उसे अपने निजी शृंगार-गृह में ले गई, ताकि उसे इत्र-फुलैल वगैरह लगा सके और भोज के लिए सजा-धजा सके।

एक्ते उसे इतर-फुलेल वगैरह लगाने और शाही भोज के लिए कपड़े पहनाने के लिए अपने खास कमरे में ले गई। सीजर के महल में दासियों की कमी नहीं थी, लेकिन फिर भी एक्ते ने अपने हाथों से इस सुन्दर युवती का शृङ्गार करने का निश्चय किया। जब उसने लीजिया को सजाने के लिए उसके वस्त्र उतारे तो उसके अनुपम सौन्दर्य को देखकर चकित रह गई। उस पूर्ण विकसित शरीर में मोती की आभा और गुलाब की पंखुड़ियों-सी कोमलता थी। एक्ते को लगा जैसे उसके सामने बसन्त की श्री-सुषमा अपने पूर्ण यौवन में खड़ी हो।

"लीजिया," अन्त में वह कहे बिना न रह सकी, "तुम तो महारानी पोप्पिया से भी सौ गुना अधिक सुन्दर हो!"

लीजिया, जिसका पालन-पोषण पोम्पोनिया के घर कड़े अनुशासन में हुआ था जहाँ स्त्रियाँ भी अपने बीच एक-दूसरे का लिहाज करती थीं, शरम से लाल हुई उसके सामने वस्त्रहीन खड़ी थी। उसके घुटने सटे हुए थे और हाथ गले के पास थे और काली बरोनियों के नीचे उसकी आँखें धरती पर टिकी हुई थीं।

फिर अचानक उसने अपनी सुडौल बाहें ऊपर उठायीं और जूड़े को खोलना शुरू किया और सिर को जरा-सा झटका देकर उसने अपने लम्बे बाल सिर से लेकर पैरों तक लहरा लिये।

उसकी घनी लटों पर हाथ फेरते हुए एक्ते बोली, "ये तो वैसे ही इतने सुनहले हैं, इन पर सुनहली बुकनी छिड़कने की कोई जरूरत नहीं है। तुम्हारा देश सचमुच बड़ा सुन्दर होगा जहाँ तुम्हारे जैसी लड़कियाँ पैदा होती हैं!"

"मुझे अब तो कुछ याद नहीं रहा," लीजिया ने कहा, "लेकिन यूर्सस बताता है कि मेरे देश में जंगल ही जंगल है।"

सुवासित तेल को अपनी उँगलियों में लेकर उसके बालों में लगाते हुए एक्ते ने कहा, "और वे जंगल फूलों से लदे होंगे !" फिर उसने लीजिया के शरीर पर हल्के हाथों इत्र की मालिश की और बिना बाँहों की एक अंगरखानुमा पोशाक पहना दी जो कीमती कपड़े की बनी थी और जिस पर जरी का सुनहला काम किया हुआ था। फिर ऊपर से उसने दूध-सा सफेद दुपट्टा ओढ़ा दिया।

ज्यों ही मेहमानों की पालकियाँ आने लगीं दोनों एक खिड़की के पास जा खड़ी हुईं, जहाँ से प्रवेशद्वार, गलियारे और दरबार का विशाल कमरा दिखाई देता था।

सूरज अभी-अभी ही डूबा था, उसकी सिन्दूरी किरणें संगमरमर के खंभों पर पड़ रही थीं। खंभों के बीच और देवताओं तथा महापुरुषों की मूर्तियों के आसपास भड़कीले और कीमती कपड़ों में रोबीले पुरुषों और सुन्दर स्त्रियों की भीड़ मँडराने लगी। एक्ते संकेत से लीजिया को बताने लगी कि उनमें से कौन प्रसिद्ध कलाकार है और कौन युद्ध में वीरता के लिए सम्मान प्राप्त कर चुका है। उसने रोमन और यूनानी पोशाकों में इठलाती हुई प्रतिष्ठित महिलाओं को पहचनवाया जो तरह-तरह के जवाहरातों से लदी थीं और जिनमें से किसी ने कुंडली मारकर बैठे हुए साँप की शक्ल में अपने बाल बाँध रखे थे तो किसी ने जूड़े में फूल खोंस रखे थे और कुछ ने लटों को सामने माथे पर गिरा रखा था।

लीजिया के लिए यह बिल्कुल एक नया संसार था। जिसकी शान-शौकत से उसकी आँखें चौंधिया रही थीं। इस संध्याकालीन धुंधलके में विशालकाय खंभों की कतारों के बीच घूमते हुए ये लोग शान्ति और सुख से भरे जीवन के प्रतीक से लग रहे थे। लेकिन एक्ते ने धीरे-धीरे करके उसे इस महल की और इसमें आने-जानेवाले लोगों की भयंकरता का भी परिचय कराया। उसने बताया कि यह सुन्दर महल अनेक नृशंस हत्याओं और हीनतम अत्याचारों को देख चुका है। वहाँ उस बरसाती के बड़े-बड़े खंभे और खपरैलों की उसकी छत आज भी उन दिनों की याद दिलाती हैं जब कासिअस ने कालिगुल की तलवार के घाट उतारा था, उसी जगह उसकी स्त्री का गला काटा गया था और उसके बच्चे को पछाड़-पछाड़कर मारा गया था। उधर महल की बाजू में एक तहखाना है जहाँ ब्रूसस को भूखों तड़पा-तड़पाकर मारा गया था, यहाँ तक कि वह अपने हाथ का मांस चबा जाने के लिए मजबूर हुआ था। वहीं उसके बड़े भाई को जहर पिलाया गया था। वहीं यातना और आतंक से गेमेलस चीखा करता था और क्लोदिअस ने तड़प-तड़पकर जान दी थी और जर्मेनिकस की दर्दभरी कराह यहाँ तक सुनाई देती थी।

एक्ते चुप हो गई और लीजिया की आँखें लोगों की भीड़ में किसी को खोजती ही रहीं। अचानक उसके गालों पर सुर्खी दौड़ गई। अब पोम्पोनिया और

घर की याद उसे भूल गई, विनिसियस से बात करने और उसकी आवाज सुनने की लालसा के सामने अब उसे सब कुछ फीका लगने लगा। अब वह भोज में शरीक होने के लिए तैयार ही नहीं थी, बल्कि बहुत उत्सुकता के साथ वहाँ पहुँचने की प्रतीक्षा करने लगी।

एक्ते ने उसका हाथ अपने हाथ में लिया और उसे उस कमरे की ओर ले चली जहाँ भोज की तैयारी थी। लीजिया जैसे नशे में चल रही थी, उसकी आँखें धुँधली थीं और कानों में जैसे कोई मधुर संगीत उड़ेल रहा था। जैसे वह सपने में हो, इस तरह उसने उन टेबुलों की ओर देखा जो उस विशाल भवन में भोज की सामग्रियों से लदी हुई थीं। उसने सुना कि लोगों ने चिल्लाकर सीजर का स्वागत किया। उसने आज पहली बार सम्राट् को इतने पास से देखा था। वह उस शाही ठाट-बाट में इस तरह भूली हुई थी कि उसने इस ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया कि एक्ते उसे टेबुल पर बैठाकर खुद वहीं उसकी दाहिनी ओर आड़ में छिपकर लेट गई थी।

अपनी बायीं ओर से उसने एक परिचित मधुर स्वर सुना, "संसार की अन्यतम सुन्दरी लीजिया को नमस्कार! सौन्दर्य की देवी को नमस्कार!"

रिवाज के अनुसार विनिसियस ने अपना टोगा उतार दिया था। वह लाल रंग का बिना बाँहों का कुरता पहने था और अपनी भुजाओं और कलाइयों पर सोने के भुजबंद और पहुँची बाँधे हुए था। उसकी वे बलिष्ठ भुजाएँ तलवार और ढाल के प्रयोग के लिए ही बनी थीं। उसने गुलाब की एक माला अपने सिर पर पहन रखी थी। उसकी भौंहें मिली हुई थीं और आँखें चमक रही थीं, उस समय वह शक्ति और यौवन का मूर्तिमान प्रतीक लग रहा था। लीजिया तो उसके सौंदर्य पर ऐसी मुग्ध हुई कि उसके मुँह से ठीक से आवाज ही नहीं निकल सकी।

"नमस्कार, मार्कस्," उसने उत्तर दिया।

"तुम्हें देखकर आज इन आँखों को कितना सुख मिल रहा है! तुम्हारी वाणी में जैसे संगीत घुला है। अगर सौंदर्य की देवी वीनस भी तुम्हारे मुकाबले में आ जाय तो मैं तुम्हें ही चुनूँगा। मैं जानता था कि यहाँ तुमसे मुलाकात होगी, लेकिन फिर भी तुम्हें यहाँ पाकर मेरी खुशी की सीमा नहीं है।"

उसकी आँखें खुशी से चमक रही थीं और वह एक टक उस सुन्दरी को देखे जा रहा था। लीजिया को लगा कि इस महल में और इस पूरी भीड़-भाड़ में वही एक ऐसा है जो उसके इतना समीप है, इसलिए वह उससे उन घटनाओं के बारे में पूछने लगी जिन्हें वह समझ नहीं सकी थी और जिनसे वह बुरी तरह डरी हुई थी। उसे कैसे यह मालूम हुआ कि वह उसे सीजर के महल में मिलेगी? उसे सीजर के महल में क्यों लाया गया है? सीजर ने उसे पोम्पोनिया से क्यों छीना है? उसे महल की हर चीज से डर लगता है। वह अपनी माँ के पास वापस लौट जाना चाहती है।

अगर उसे इस बात का विश्वास न होता कि पेट्रोनियस और विनिसियस उसके लिए सीजर से प्रार्थना करेंगे तो वह दुख और चिन्ता से अब तक कभी की मर गई होती।

विनिसियस ने उसे बताया कि उसके जाने की खबर उसे ओलस से ही मिली थी। उसे खुद यह नहीं मालूम कि वह यहाँ क्यों लायी गयी है। सीजर अपने काम के बारे में किसी को कोई जवाब देना पसन्द नहीं करता। फिर भी उसे डरना नहीं चाहिए, क्योंकि वह उसके पास ही है उसके पास ही रहेगा। वह अपने प्राण की तरह उसकी रक्षा करेगा। अगर सीजर के महल में उसे डर लगता है तो वह उसे विश्वास दिलाना चाहता है कि वह अधिक दिन यहाँ नहीं रहने पायेगी। हालाँकि वह बात को टालने की कोशिश कर रहा था लेकिन फिर भी उसकी आवाज से इसका शक करना संभव नहीं था।

उसे लीजिया की स्थिति पर दया आ रही थी। इसलिए जब वह उसे इस सांत्वना के लिए धन्यवाद देने लगा तो विनिसियस अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख सका। उसके आनन्द की इस समय कोई सीमा नहीं थी।

लीजिया की सुन्दरता का नशा उस पर बुरी तरह छाया जा रहा था और वह उसे अपनी बाहों में भर लेने के लिए बेचैन हो रहा था, लेकिन साथ ही वह यह भी जानता था कि वह अपने हृदय में उसकी पूजा करता है और दावत के शोरगुल का लाभ उठाकर वह उसकी ओर झुक आया और उसके कानों में प्यार से भरे शब्द कहने लगा, जो सीधे उसके हृदय से उठकर आ रहे थे और अच्छे से अच्छे संगीत से भी अधिक मादक थे।

लीजिया पर भी उसके शब्दों का नशा छाने लगा। इन अनजान लोगों के बीच वही उसका अपना था, जिस पर वह विश्वास कर सकती और जो उसके लिए सब कुछ करने को तैयार था। पहले ओलस के घर तो वह प्रेम और उससे मिलने-वाले आनन्द के बारे में ही बातें करता रहा था। लेकिन आज, ओह आज! उसके गाल सुर्खी में चमकने लगे, हृदय उछलने लगा और अचरज में उसके ओंठ फटे के फटे रह गये।

विनिसियस के इन शब्दों को सुनकर उसके दिल में एक तरह की घबराहट होने लगी लेकिन फिर भी वह उसका एक भी अक्षर अनसुना नहीं जाने देना चाहती थी। वह बार-बार अपनी आँखें झुका लेती थी और फिर अचानक विनिसियस की ओर देखने लगती थी। तब उसकी आँखों में एक विचित्र प्रकार की चमक होती थी। विनिसियस यौवन और शक्ति से पूर्ण, काम और इच्छा की जलन से पीड़ित उसके पास ही अध-लेटा पड़ा था। लीजिया लाज से सकुचाई जा रही थी, लेकिन फिर भी उसके आनन्द की सीमा नहीं थी।

लीजिया के इतने समीप होने के कारण विनिसियस अपने पर काबू खोता जा रहा था। एक विचित्र प्रकार की प्यास उसके दिल में उठ रही थी जिसे वह शराब के घूँट से बुझाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन शराब ने उसे और भी अंधा बना दिया। लेकिन शराब से भी अधिक मादक था लीजिया का सुन्दर चेहरा, उसकी नंगी बाँहें और सब से अधिक उत्तेजक थे उसके वे कुँवारे उरोज जो उसकी कुरती में मचल रहे थे।

अचानक उसने उसकी कलाई पकड़ ली, जिस तरह कि उसने उस दिन ओलस के बगीचे में किया था और फिर काँपते हुए ओंठों से कहा, "मैं तुम्हें चाहता हूँ, लीजिया ! तुमसे प्यार करता हूँ !"

"छोड़ो भी मुझे, मार्कस्," लीजिया ने परेशान होकर कहा।

लेकिन विनिसियस की आँखों में पागलपन छाया हुआ था।

"प्रिये, डरो मत, आओ हम प्यार करें !"

लेकिन तभी एक्ते ने नीचे से कहा, "सीजर तुम लोगों को देख रहे हैं !"

विनिसियस यह सुनकर क्रोध में पागल हो उठा। इस समय वह किसी का हस्तक्षेप सहन नहीं कर सकता था। उसे लगा कि एक्ते उसके प्रेमालाप में बाधा डालना चाहती है। कुछ उठकर और लीजिया के कँधों पर से नीरो की उस पुरानी रखैल की ओर देखते हुए उसने दाँत पीसकर कहा, "एक्ते, वे दिन अब नहीं रहे, जब तुम दावतों में सीजर की बगल में लेटी रहती थी, अब तुम्हारी क्या कीमत है ? फिर मैंने तो सुना है कि आजकल तुम्हें कम दिखाई देता है, तब कैसे तुमने यह देख लिया कि सीजर इधर देख रहा है ?"

दुखी स्वर में एक्ते ने उत्तर दिया, "हाँ, फिर भी मैंने ठीक ही देखा है। नीरो भी दूर की चीजें साफ नहीं देख पाता। वह एक नीलम में से तुम्हारी ओर देख रहा है।"

लीजिया ने सिर्फ दावत के शुरू में एक नजर सीजर की ओर देखा था और फिर वह विनिसियस की बातों में लग गई थी। अब फिर उसने घबराकर सीजर की ओर देखा।

हाँ, एक्ते ठीक कह रही थी। सीजर अपनी टेबुल पर झुका हुआ था और एक आँख सिकोड़े दूसरी आँख के आगे एक बड़ा-सा नीलम लगाये उनकी ओर देख रहा था।

लीजिया से उसकी आँख मिल गई और उसका खून जम गया। जब वह बच्ची थी तो ओलस के घर मिस्र से लायी गयी एक दासी उसे ऐसे दैत्यों की कहानियाँ सुनाया करती थी, जो गुफाओं में रहते हैं। ऐसे ही एक दैत्य की आँख इस समय उस पर लगी हुई थी। एक छोटी बच्ची की तरह घबराकर उसने

विनिसियस का हाथ पकड़ लिया और उसके दिमाग में तरह-तरह के विचार उठने लगे। तो यह है नीरो—अत्याचारी नीरो, सर्वशक्तिमान नीरो? उसने उसे पहले कभी नहीं देखा था, और उसके बारे में उसकी कल्पना भी भिन्न थी। उसने अपने दिमाग में एक ऐसे आदमी का चेहरा सोच रखा था जिसके ऊपर कुछ पागलपन की छाप लगी हो। लेकिन यहाँ उसे एक मोटी-सी गर्दन पर एक बड़ा भारी सिर दिखाई दे रहा था, जो डरावना तो था लेकिन साथ ही दूर से ऐसा लगता था जैसे किसी बच्चे का हो। जो नीली पोशाक वह पहने था, और जिसे पहनने की साधारण आदमियों को मनाही थी वह उसके चौड़े चेहरे पर एक नीली-सी झाईं डाल रही थी। उसके काले बाल जिन्हें ओथो के ढंग पर सँवारा गया था घुँघराले लच्छों की चार कतार में सँवरे हुए थे।

उसने दाढ़ी नहीं रखी थी, क्योंकि हाल में ही उसने अपनी दाढ़ी जुपिंतर के मन्दिर में चढ़ा दी थी। इसके लिए रोमवासियों ने उसे धन्यवाद दिया था, हालाँकि इसके लिए कहा यह जाता था कि उसकी दाढ़ी अपने परिवार के अन्य लोगों की तरह लाल रंग की थी और इतना होने पर भी उसके चौड़े ललाट में कुछ ऐसी बात थी जो उसके देवत्व को प्रकट करती थी और उसकी उठी हुई भौंहों से यह प्रकट होता था कि उसे अपने सर्वशक्तिमान होने का गर्व है। लेकिन देवताओं के योग्य इस ललाट के साथ उसके चेहरे पर कुछ बन्दर जैसी भावना थी। उसका चेहरा हालाँकि अभी जवान था फिर भी चर्बी से भरा हुआ था, जिसमें वासनाकी झुर्रियाँ स्पष्ट थीं। देखने में यह चेहरा एक शराबी और कामुक का चेहरा लगता था।

पेट्रोनियस की ओर घूमकर उसने पूछा, "क्या इसी मेहमान के साथ विनिसिअस का प्रेम है?"

"हाँ," उसने उत्तर दिया।

"उसके घर के लोग क्या बोले जाते हैं?"

"लीजियन।"

"क्या विनिसियस को यह खूबसूरत लगती है?"

"जी हाँ। लेकिन उसके बारे में हुजूर का क्या ख्याल है यह मैं आपके चेहरे से ही समझ रहा हूँ, आपके ऐसा सौन्दर्य का पारखी गलती नहीं कर सकता—इसके नितम्ब कुछ सँकरे हैं।"

"हाँ, बहुत सँकरे," नीरो ने अपनी आँखों को आधा मूँदते हुए कहा।

अब दावत अपने पूरे जोर पर आ गई थी। शराब के बड़े-बड़े बर्तनों से, जिनमें बर्फ पड़ी हुई थी, प्याले पर प्याले भरे जा रहे थे। छत से गुलाब की पंखुड़ियाँ बरस रही थीं।

मेहमानों के शराब पीकर नशे में चूर होने के पहले ही नीरो अपना संगीत

सुनाकर दावत को और शानदार बना दें इसकी प्रार्थना पेट्रोनियस ने की, और वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति ने इस प्रार्थना को दुहराया। पहले तो उसने इनकार कर दिया। लेकिन लुकान ने कला और मानवता के नाम पर उससे गीत सुनाने का अनुरोध किया। हर आदमी जानता था कि उस "दैवीशक्तिसम्पन्न" कवि और "अद्वितीय" गायक ने सौन्दर्य की देवी वीनस के नाम एक गीत की रचना की है, जिसके मुकाबले में कवि लुक्रेटियस के गीत बेकार मालूम होते हैं। इस दावत को सचमुच एक शानदार दावत का रूप मिलना चाहिए। वे लोग अनुरोध करने लगे कि उनके कृपालु सम्राट् अपने मौन से उन्हें और अधिक कष्ट न दें।

"ओ सीजर, हम पर कृपा कीजिये!"

"हम पर कृपा कीजिये!" लोगों ने दुहराया।

नीरो ने अपना हाथ फैलाकर यह संकेत किया कि उनका अनुरोध उसे स्वीकार है। हर चेहरा आभार की भावना से भर उठा और हर आँख अपने सम्राट् की ओर उठ गई। उसने अपनी रानी पोपिया से यह बताने को कहा कि वह क्या सुनाये। उसने हुक्म दिया कि पोपिया को बताया जाय कि सम्राट् गीत सुनानेवाले हैं। सम्राज्ञी तबियत खराब होने की वजह से दावत में शरीक नहीं हो सकी थी, और सीजर के गीत से उन्हें जितना आराम मिल सकता था उतना और किसी चीज से नहीं मिल सकता था। पोपिया फौरन चली आई। यह सही था कि नीरो के हृदय पर अब भी उसका एकछत्र राज्य था, लेकिन एक गायक, रथचालक, या कवि के रूप में उसके अभिमान को धक्का पहुँचाने का साहस अब भी उसके लिए खतरनाक था।

उसने भी पूरी सजधज के साथ प्रवेश किया, फीरोजी रंग की पोशाक, गले में मैसेनिसा की लूट से लाये गये ढेरों मोती। यह स्त्री हालांकि अब प्रौढ़ा थी और दो बार इसका तलाक हो चुका था, लेकिन अब भी इसके चेहरे पर कौमार्य की आभा थी। जय-जयकार से लोगों ने उसका स्वागत किया। लीजिया ने अपने जीवन में ऐसी सुन्दरी कभी नहीं देखी थी। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। क्या यही वह बदनाम पोपिया है जिसने सीजर को अपनी माँ और अपनी पत्नी की हत्या के लिए मजबूर किया था? जिसकी मूर्तियाँ रात के वक्त शहर में लोग चोरी से गिरा देते थे? और जिसके बारे में शहर की दीवारों पर भद्दे मजाक लिखे होते थे? लीजिया ने आज तक कभी अप्सराओं की इस रूप में कल्पना नहीं की थी।

नीरो ने गीत सुनाया और उसके खत्म होने पर चारों ओर खुशी के नारे गूँज उठे, लोग चिल्लाये, "क्या दैवी स्वर है!" कुछ औरतों ने हर्षातिरेक से अपने हाथ उठा दिये और गीत के खत्म होने पर भी वे उन्हें उठाये ही रहीं, कुछ औरतें अपने आँसू पोंछने लगीं। पूरा हाल शोर से भर गया। पोपिया ने अपना सुनहरा

सिर झुकाते हुए नीरो के हाथ को अपने ओठों से लगा लिया और एक क्षण तक उसे चुपचाप थामे रही। पिथेगोरस, जो कि एक अत्यन्त सुन्दर यूनानी युवक था और जिसका विवाह उस आधे पागल सीजर के साथ पंडितों की उपस्थिति में होनेवाला था, नीरो के चरणों में झुका हुआ था।

लेकिन नीरो की नजर पेट्रोनियस पर जमी हुई थी, जिसकी प्रशंसा की वह सब से अधिक क़दर करता था। पेट्रोनियस बोला, "इस गीत में जो संगीत है उसके बारे में मेरी राय यह है कि अगर आर्फियस ने इसे सुना होता तो वह भी यहां बैठे हुए हमारे मित्र लुकान की तरह शर्म से सिर झुका लेता और जहाँ तक इसके काव्य का प्रश्न है मेरी इच्छा होती है कि यह इतना श्रेष्ठ न होता कि मैं इसकी प्रशंसा के लिए शब्द भी नहीं खोज पाता।"

यह सुनकर नीरो फूला न समाया। उसने खुद उन पंक्तियों की ओर उसका ध्यान आकर्षित किया जिन्हें वह गीत में सर्वोत्तम समझता था। फिर वह पोपिया को पहुँचाने के लिए उठ खड़ा हुआ, जो सचमुच में बीमार थी और वहाँ से जाना चाहती थी।

थोड़ी ही देर बाद वह लौट आया, क्योंकि वह उस प्रदर्शन को देखने के लिए उत्सुक था जिसका उसने पेट्रोनियस और तिजेलिनस के साथ मिलकर आयोजन किया था।

सबसे पहले तो वाद-विवाद हुए, जो बिल्कुल निस्सार और अतिशयोक्ति-पूर्ण थे। फिर प्रसिद्ध अभिनेता पेरिस ने इनाकस की कन्या इयो का अभिनय किया। यह नृत्य नहीं था। लेकिन फिर भी इस अभिनय में प्रेम के गूढ़तम रहस्यों को प्रकट करने की क्षमता थी। फिर सीरिया की नर्तकियों के साथ कुछ लोगों ने प्रवेश किया और वंशी, मृदङ्ग और झाँझ और अन्य वाद्य-यन्त्रों के साथ खूब जोरों से शोर मचाते हुए उन्होंने एक लोक-नृत्य पेश किया। नर्तक इतना शोर मचा रहे थे कि लीजिया को लगा जैसे छत फट पड़ेगी और मेहमानों के सिरों पर आ गिरेगी।

अब भी लोगों के सिरों पर तनी हुई सुनहरी जाली से गुलाब की पंखुड़ियाँ बरस रही थीं। विनिसियस आधे नशे में लीजिया के पास लेटा था। वह बोला, "मैंने ओलस के घर तुम्हें जब फौव्वारे के पास देखा था, उसी क्षण से मैं तुम्हें प्यार करने लगा। सवेरे का समय था, तुम्हारा खयाल था कि कोई तुम्हें देख नहीं रहा है, और मैं देख रहा था! जैसा मैंने तुम्हें उस समय देखा था, वैसे ही मै तुम्हें हमेशा देखता हूँ, बावजूद तुम्हारी इस पोशाक के जिसने तुम्हें ढँक रखा है। अपनी इस पोशाक को क्रिस्पिनीला की तरह उतार फेंको। देखो न, देवता और मनुष्य सब प्रेम के भूखे हैं! इस दुनिया में प्यार के सिवा और कुछ नहीं है, कुछ नहीं है! मेरे सीने पर अपना सिर रख दो और आँखें मूँद लो!"

लीजिया ने अपनी कनपटी में खून की गर्मी का अनुभव किया और उसे ऐसा लगा जैसे वह अभी गश खाकर गिर पड़ेगी। विनिसियस भी बजाय इसके कि उसकी सहायता करे, उसे अन्धकार की ओर खींचे ले जा रहा है, वह भी जैसे आज उसका शत्रु हो गया है। उसे फिर से भय होने लगा, इस दावत से, विनिसियस से खुद अपने आप से।"

और अब भी इस चक्र का अन्त नहीं था।

दास ताजे पकवान परोसते रहे और हरे रंग के प्यालों को बराबर भरते रहे। टेबुलें एक अर्धवृत्त की शक्ल में लगी थीं। दो पहलवान कुश्ती दिखाने आये। आते ही वे भिड़ पड़े। तेल से चमकते हुए उनके शरीर ऐसे लगते थे जैसे एक-दूसरे में गुथ गये हों, उनकी लोहे की भुजाएँ जब कसती थीं तो हड्डियों की चटक सुनाई देने लगती थी और जब वे दाँत पीसते थे तो वह भी सुनाई देता था। अखाड़े का केसरिया मञ्च उनके नंगे पैरों की धमक से गूँज उठता था। एक क्षण के लिए वे आपस में गुँथे हुए स्थिर रह जाते थे। आसपास बैठे हुए रोमन उनकी जाँघों और भुजाओं की एक-एक हरकत को बड़े ध्यान से और खुशी के साथ देख रहे थे लेकिन कुश्ती अधिक देर नहीं चली। क्रोटन, जो मल्ल विद्यालय का प्रधान था बहुत बड़ा "ग्लेडियेटर"।समझा जाता था, वह अकारण ही साम्राज्य का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति नहीं माना जाता था। जैसे ही उसके विरोधी ने जरा-सा दम लिया कि उसने उसका गला दबाना शुरू किया, देखते-देखते उसका चेहरा नीला पड़ गया और वह खून थूकता हुआ जमीन पर आ गिरा।

कुश्ती के अन्त में खूब तालियाँ बजीं। क्रोटन अपने विरोधी की पीठ पर एक पैर रखे अपने सीने पर अपनी बलिष्ठ भुजाओं को बाँधे खड़ा था और एक विजेता की तरह गर्दन घुमाकर चारों ओर देख रहा था।

इस समय कई तरह के वाद्य-यन्त्र बज रहे थे और स्पष्ट कुछ सुनाई नहीं देता था। हवा में इतनी अधिक खुशबू भर गई थी कि दम घुटने लगा था। खूबसूरत लड़के मेहमानों के पैरों पर इत्र की मालिश कर रहे थे और चारों ओर केसर और तरह-तरह के फूल बिखरे पड़े थे। बत्तियाँ हल्की पीली रोशनी दे रही थीं और लोगों के माथे पर पसीना छलक आया था और सिर पर बँधी हुई माला खिसक रही थी।

विटेलियस टेबुल के पीछे गिर पड़ा। निजीदिया, जो शराब के नशे में धुत्त थी और कमर तक बिल्कुल नंगी हो रही थी, लुकान के सीने पर अपना नादान-सा चेहरा रखे लेटी थी और लुकान भी नशे में चूर उसके बालों पर छिड़के हुए सुनहरे कणों को फूँक से उड़ा रहा था।

पेट्रोनियस को नशा नहीं चढ़ा था, लेकिन नीरो पहले तो अपने सुरीले गले को बचाने के लिए शराब से इनकार करता रहा और फिर प्याले पर प्याले खाली

करता गया। वह अब नशे में चूर था। वह और कुछ कविताएँ सुनाना चाहता था, इस बार कुछ यूनानी गीत सुनाने की उसकी इच्छा थी, लेकिन वह उन्हें याद नहीं कर पा रहा था और गलती से कुछ और सुना गया। पिथेगोरस और दूसरों ने उसका साथ देना चाहा लेकिन नशे के मारे उनकी बोली ही नहीं निकल रही थी, वे सब चुप हो गये।

विनिसियस भी दूसरों की बजाय कुछ कम नशे में नहीं था, उत्तेजना के साथ-साथ उसमें झगड़ा करने की एक तीव्र इच्छा इस समय पैदा हो गई। उसका चेहरा पीला पड़ रहा था। उसने जोर से चीखकर लीजिया से कहा, "अपने ओठों को इधर बढ़ाओ! आज या कल, इससे कोई फर्क नहीं होता। मैंने बहुत इन्तजार किया है। सीजर ने तुम्हें ओलस के घर से इसीलिए मँगाया है कि वह तुम्हें मुझको सौंप दे, कुछ समझ में आया तुम्हारे? कल रात में मैं तुम्हें बुलाऊँगा, समझती हो न? सीजर ने तुम्हें मुझे देने का वादा किया है! तुम मेरी होकर रहोगी। अपने ओंठ बढ़ाओ, मैं कहता हूँ अपने ओठों को मेरी ओर करो! मैं कल तक का इंतजार नहीं कर सकता। आओ, इधर मुँह करो!"

उसने उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया, वह अपने को छुड़ाने की कोशिश करती रही, हालाँकि वह जानती थी कि वह अब अपने को अधिक रोक नहीं सकेगी। उसकी ताकत ने उसका साथ छोड़ दिया। उसका पीछे झुककर अपने सिर को बार-बार इधर-उधर मोड़ना बेकार रहा और वह उसे चूमता ही गया। उसने उचक कर उसके हाथों को पकड़ते हुए उसके सिर को अपने सीने पर झुका लिया और फिर हाँफते हुए अत्यन्त उत्तेजित होकर वह उसके रक्तहीन ओठों को चूमता रहा।

लेकिन इसी समय जैसे किसी लोहे के हाथ ने उसकी बाहों को ढीला कर दिया और उसे एक तिनके की तरह पीछे ढकेल दिया। यह क्या हुआ? विनिसियस बेवकूफ की तरह आँखें झपकाता रह गया और उसने देखा कि विशालकाय यूरसस उसके ऊपर झुका हुआ है।

यूरसस चुपचाप और स्थिर खड़ा था, लेकिन उसकी आँखों में कुछ ऐसा भाव था कि उसे देखकर विनिसियस का खून जम गया। उस दैत्याकार लीजियन ने लीजिया को अपनी बाहों में उठा लिया और फिर दृढ़ता से कदम रखते हुए वह हाल से बाहर हो गया।

विनिसियस एक क्षण के लिए तो जैसे स्तम्भित रह गया। फिर वह उछल कर खड़ा हो गया और दरवाजे की ओर भागा।

"लीजिया, लीजिया!" वह चिल्लाया।

लेकिन वह अधिक आगे नहीं बढ़ सका, कामुकता और आश्चर्य, गुस्से और नशे की हालत ने जैसे उसके पैरों को कमजोर बना दिया था। उसे चक्कर आ गया

और वह ठोकर खाकर जैसे ही गिरने जा रहा था कि उसने एक सीरियन दासी के नंगे कन्धे पकड़ लिये और आँखें झपकाते हुए उससे पूछा, "क्या हुआ ?"

वह औरत खुद नशे में थी। उसने मुस्कराकर एक प्याला शराब आगे बढ़ाते हुए कहा, "लो, पियो !"

विनिसियस फौरन पी गया और वहीं फर्श पर गिर पड़ा। अब तक ज्यादातर मेहमान टेबुल के नीचे फैले पड़े थे, कुछ लड़खड़ाते हुए हाल में घूम रहे थे और दीवारों से टकरा रहे थे। कुछ लोग टेबुल के आसपास गहरी नींद में सो गये थे और खर्राटे भर रहे थे, या जरूरत से ज्यादा पी हुई शराब को खाँसते हुए थूक रहे थे।

नशे में धुत्त इन सिनेटरों और राजनीतिज्ञों पर, नशाखोर दार्शनिकों कवियों और योद्धाओं पर, नाचनेवाली लड़कियों और भद्र महिलाओं पर, इस जमघट पर, जो अब भी रोम पर शासन करता था, लेकिन जो अब अपनी आत्मा को खो चुका था और जो पतन के गर्त में बड़ी शान से गिरा चला जा रहा था, छत में तनी हुई सुनहरी जाली बराबर गुलाब की पंखुड़ियाँ बरसाती रही। हाल के दरवाजों से बाहर सवेरा फूट रहा था।

## ८

किसी ने यूरसस को नहीं रोका और न किसी ने उससे कुछ पूछा। जो मेहमान नशे में टेबुल के नीचे गिर पड़े थे वे वहाँ से चले गये। पहरेदारों और नौकरों ने जब एक विशालकाय आदमी को एक सुन्दरी को अपनी बाहों में दबोचे भागते देखा तो उन्होंने सोचा कि कोई गुलाम अपनी प्रेमिका को, जो नशे में चूर है, घर ले जा रहा है। इसके अलावा एक्ते भी उनके साथ थी, इसलिए और भी किसी को शक नहीं हुआ।

दावत के हाल से निकलकर वे पास के एक गलियारे में होते हुए एक्ते के कमरों की तरफ निकल गये।

महल के इस हिस्से में कोई नहीं आता था, दावत का शोर-शराबा और संगीत की ध्वनि यहाँ तक बहुत हल्की सुनाई देती थी। यूरसस ने लीजिया को संगमरमर की एक कुर्सी पर लिटा दिया और एक्ते उसे शान्त करने और सुलाने की कोशिश करने लगी। वह उसे धीरज बँधाने लगी कि अब वह खतरे से दूर है, क्योंकि मेहमान अभी शाम तक सोते रहेंगे। लेकिन लीजिया काफी देर तक चुप नहीं हो सकी। वह हाथों से अपना सिर थामे हुए रोती रही, "मुझे घर पहुँचा दो ! मुझे ओलस के घर

पहुँचा दो !" यूरसस उसे ले जाने के लिए तैयार था। दरवाजे पर सिपाही पहरा दे रहे थे, लेकिन वे जाते हुए मेहमानों को नहीं रोकते थे। महल के बाहर अब भी पालकियाँ पड़ी हुई थीं, और लोग अपने मालिकों के लौटने का इन्तजार कर रहे थे।

लीजिया कहती रही, "यूरसस, चलो हम लोग भाग चलें !"

लेकिन एक्टे उन्हें रोकने के लिए मजबूर थी। वह उन्हें समझाने की कोशिश कर रही थी। इसमें कोई शक नहीं था कि वे बिना किसी रुकावट के वहाँ से जा सकते थे। लेकिन सीजर के महल से भागना एक अपराध था। वे जा तो सकते थे, लेकिन शाम होते होते सिपाहियों का एक दस्ता ओलस के घर पहुँच जाता और ओलस और पोम्पोनिया की मौत का परवाना ले जाता, और लीजिया को फिर से पकड़कर महल में ले आता। फिर उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। अगर ओलस फिर से उन्हें अपने घर में ले लेता तो उसकी मौत निश्चित थी। उसे अपने आप को बर्बाद करने या ओलस और उसके परिवार को बरबाद करने के बीच चुनाव करना था। दावत के पहले उसे उम्मीद थी कि पेट्रोनियस और विनिसियस उसकी मदद करेंगे और उसे घर भिजवा देंगे। लेकिन अब उसे मालूम हो चुका था कि उन्हीं दोनों के इशारे पर सीजर ने उसे मँगवाया था। अब इसके सिवा और कोई चारा नहीं था कि लीजिया विनिसियस की बीवी होना स्वीकार कर ले या अपना और ओलस के परिवार का नाश कराने के लिए तैयार हो जाय। एक्टे जानती थी कि वह दोनों में से क्या पसन्द करेगी।

"सीजर के महल में तुम उतनी हिफाजत से नहीं रह सकोगी, जितनी कि विनिसियस के यहाँ रह सकोगी।"

लीजिया इस पर गौर करने के लिए तैयार नहीं थी, हालाँकि वह जानती थी कि उसके कहने का मतलब क्या है। लेकिन उसके ओठ अब भी विनिसियस के क्रूर और निर्दय चुम्बनों से जल रहे थे और वह शर्म के मारे मरी जा रही थी। "कभी नहीं ! न तो मैं यहाँ रहूँगी और न विनिसियस के साथ ही। यह हो नहीं सकता !"

उसका यह रुख देखकर एक्टे चकित रह गई। उसने पूछा, "क्या तुम उससे इतनी नफरत करती हो ?

लीजिया बोली, "नहीं। मुझे इसकी मनाही है, मैं ईसाई हूँ।"

"यह मैं जानती हूँ, लीजिया और मुझे यह भी मालूम है कि सेन्ट पोल के उपदेशों के अनुसार तुम्हें अपमान के आगे सिर झुकाना चाहिए और मृत्यु की बजाय पाप से डरना चाहिये। लेकिन मुझे यह तो बताओ कि क्या तुम्हारा धर्म इस बात की सीख देता है कि तुम किसी दूसरे को मौत के मुँह में ढकेल दो ?"

"नहीं।"

"तो फिर तुम सीजर के क्रोध को ओलस के घर पर क्यों डालना चाहती हो?"

कुछ देर दोनों चुप रहीं। एक बार फिर लीजिया को लगा कि उसके सामने अँधेरी खाई मुँह फाड़े खड़ी है।

एक्ते कहती रही, "मैं तुमसे यह इसलिए कह रही हूँ कि मुझे तुम्हारे लिए और पोम्पोनिया, ओलस और उनके लड़के के लिए अफसोस है। मैं बहुत दिनों इस महल में रह चुकी हूँ और जानती हूँ कि सीजर के गुस्से का क्या मतलब होता है। नहीं, तुम भाग नहीं सकती। तुम सिर्फ एक ही बात कर सकती हो और वह यह कि विनिसियस से कहो कि वह फिर से तुम्हें पोम्पोनिया के घर भेजने का इन्तजाम करा दे।"

लेकिन तब तक लीजिया अपने घुटनों के बल बैठकर ईश्वर से सहायता की भीख माँगने लगी। यूरसस भी उसके पास घुटनों के बल बैठ गया। इस तरह उन दोनों ने सीजर के महल में ही ईश्वर से प्रार्थना शुरू की।

एक्ते लीजिया के चेहरे से अपनी आँखें नहीं हटा सकी, जो अपना सिर और अपने दोनों हाथ आसमान की ओर उठाये हुई थी, जैसे उसे वहाँ से सहायता मिलने की आशा हो। उगते हुए सूरज का प्रकाश उसकी आँखों में चमक रहा था और उसके घने काले बालों और सफेद पोशाक को और भी गहरा बना रहा था। सूर्य के इस पवित्र प्रकाश में वह जैसे पवित्रता की प्रतिमूर्ति-सी लग रही थी। उसका पीला चेहरा, उसके अधखुले ओंठ और उसकी याचना भरी आँखें सब कुछ जैसे अलौकिक-सा लगता था। अब एक्ते समझ गई कि लीजिया जबरदस्ती किसी भी पुरुष की नहीं हो सकती।

अन्त में वह उठी, अब उसका चेहरा बिल्कुल शान्त था। यूरसस भी उठ आया और उसके पास उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा में आ खड़ा हुआ। लीजिया की आँखें भर आईं और आँसू की दो बड़ी-बड़ी बूंदें धीरे-धीरे उसके गालों पर ढुलकने लगीं। वह बोली, "ईश्वर पोम्पोनिया और ओलस पर कृपा करे। उनका सर्वनाश करने का मुझे कोई हक नहीं है, और अब कभी मैं उनसे नहीं मिलूँगी।"

फिर यूरसस की ओर मुड़कर उसने कहा कि अब वही अकेला उसका अपना है, वही अब उसके संरक्षक और पिता की जगह है। अगर अब वे लोग ओलस के यहाँ शरण नहीं ले सकते तो सीजर और विनिसियस के यहाँ भी नहीं रहेंगे। यूरसस को चाहिए कि वह उसे वहाँ से ले जाय, शहर से बाहर कहीं ले जाय और ऐसी जगह छिपा दे जहाँ न विनिसियस और न उसका कोई आदमी पहुँच सके।

यूरसस फौरन तैयार हो गया उसकी आज्ञा स्वीकार करने के रूप में उसने

उसके पैरों को चूम लिया। लेकिन एक्ते राजी नहीं थी, क्योंकि उसे इस बात की आशा थी कि लीजिया की प्रार्थना का कोई नतीजा निकलेगा ही। क्या प्रार्थना बस इतने ही के लिए थी ? महल से भाग निकलना एक घोर अपराध था और इसके लिए उन्हें सजा मिल सकती थी और अगर लीजिया अपने को कहीं छिपा लेने में सफल भी हो जाती तो सीजर ओलस के परिवार से बदला लेता। इसलिए अगर उसे भागना ही है तो विनिसियस के घर से भागना चाहिए और तब सीजर विनिसियस की कोई भी मदद करने से इनकार कर देगा, क्योंकि वह दूसरों के आपसी झगड़ों में पड़ना पसन्द नहीं करता।

लीजिया को भी यह राय पसन्द आ गई। यही उसने सोचा भी था। वह ओलस या पोम्पोनिया को अपनी कोई खबर नहीं लगने देना चाहती थी। वह विनिसियस के घर से नहीं बल्कि रास्ते से ही भागना चाहती थी। विनिसियस ने नशे की हालत में अकड़ दिखाते हुए उससे कहा था कि वह उसे लाने के लिए शाम को अपने गुलामों को भेजेगा। इसलिए उसने तय किया कि यूरसस को फौरन पादरी जिनस के पास जाना चाहिए और उससे सलाह लेनी चाहिए। वह ईसाइयों को उसे बचाने के लिए भेज देगा और वे लोग ताकत के जोर से उसे भगा ले जायेंगे।

इस योजना से लीजिया के चेहरे पर थोड़ी-सी मुर्दा आ गई। उसने एक्ते की गर्दन में अपनी बाहें डाल दीं और अपना मुँह उसके गाल के पास ले जाते हुए धीमे से कहा, "एक्ते, तुम हमें धोखा तो नहीं दोगी ?"

"भगवान कसम, कभी नहीं। अपने ईश्वर से प्रार्थना करो कि यूरसस तुम्हें बचा ले जाने में सफल हो।"

## ६

दिन निकल आया था, दावतवाले हाल में धूप भर आई थी। एक्ते ने लीजिया से कहा, "सारी रात बिना सोये ही गुजार देने के कारण उसे कुछ आराम कर लेना चाहिए। लीजिया को इस पर कोई आपत्ति नहीं थी और दोनों सोने के कमरे में चली गईं। एक्ते का यह कमरा सजावट के बेशकीमती सामानों से भरा था, जो उन दिनों की याद दिलाता था जब एक्ते सीजर की एक रखेल थी। वे दोनों साथ-साथ सो गईं, लेकिन बहुत थकी होने के बावजूद भी एक्ते को नींद नहीं आई।

लीजिया पर जो मुसीबत आनेवाली थी उसे सोचकर उसका मन भर आता था। वह मातृत्व की भावना से भर उठी और उस लड़की के काले बालों को चूमने

लगी। लीजिया इस तरह आराम से सो रही थी जैसे वह घर में हो और पोम्पोनिया के स्नेह की छाया में हो। दोपहर में जाकर उसने अपनी आँखें खोलीं और एक्ते के सोने के कमरे को आश्चर्य से देखा। तभी उसे याद आया कि वह ओलस के घर में नहीं है।

"एक्ते, तुम हो ?" उसने एक्ते की छाया को देखकर पूछा।

"हाँ लीजिया, मैं ही हूँ।"

"क्या शाम हो गई ?"

"नहीं बेटी, अभी दोपहर है।"

"यूरसस लौटा ?"

"यूरसस ने लौटने का तो वादा नहीं किया था। वह कह गया है कि आज रात वह तुम्हारी पालकी के लौटने का रास्ते में इंतजार करेगा।"

"हाँ, मुझे याद आया।"

दोनों कमरे से निकलकर नहाने पहुँची। नहाने के बाद नाश्ता किया और फिर एक्ते लीजिया को लेकर महल के बाग में पहुँची, जहाँ किसी के आने का डर नहीं था, क्योंकि सीजर अभी तक अपने दोस्तों के साथ पड़ा सो रहा था। यह पहली बार लीजिया ऐसे शानदार बाग को देख रही थी। पेड़ों के झुरमुट से कई मूर्तियाँ झाँक रही थीं, फौव्वारे छूट रहे थे और तालाबों में बत्तखें तैर रही थीं। कुछ देर तक टहलने के बाद वे सनोवर के पेड़ों के एक झुरमुट में बैठ गईं और लीजिया के भागने की योजना के बारे में बातचीत करने लगीं।

इसी बीच उन्हें किसी के पैरों की आहट सुनाई दी और एक्ते को यह देखने का मौका ही नहीं मिला कि कौन आ रहा है, इतने में महारानी पोपिया अपनी कुछ दासियों के साथ उधर निकल आई। दो दासियाँ उसके सिर पर चंवर डुला रही थीं। इथियोपिया से पकड़कर लाई गई एक दासी नीले मखमल में लिपटे एक बच्चे को अपने हाथों में लिए हुए थी। उसके स्तन दूध से भरे थे। महारानी रुक गई और बोली, "एक्ते, तुमने गुड़िया पर जो छोटी-छोटी घंटियाँ सिली थीं उन्हें बच्ची ने तोड़ डाला और उनमें से एक को उसने मुँह में भी ले लिया, वह तो भाग्य से लीलिथ ने उसे देख लिया।"

एक्ते ने सिर झुका कर कहा, "महारानी, मैं माफी चाहती हूँ !"

तब तक पोपिया ने लीजिया को देख लिया और पूछा, "यह कौन-सी दासी है ?"

"देवी, यह कोई दासी नहीं है। यह पोम्पोनिया ग्रीसीना की गोद ली हुई लड़की है और लीजिया के राजा की बेटी है, जिसने इसे बन्धक के रूप में रोम को दे दिया है।"

"क्या यह तुमसे मिलने आई है ?"

"नहीं देवी। यह महल में रहने आई है, कल ही आई है यह।"

"क्या यह दावत में थी ?"

"जी हाँ।"

"किसके हुक्म से ?"

"महान सीज़र के।"

पोपिया ने उस लड़की की ओर गौर से देखा और उसकी भौंहों में एक हल्की-सी सिकुड़न आ गई। वह महल में अपना सर्वोच्च स्थान बनाये रखने के लिए बहुत सतर्क रहती थी और इसीलिए हमेशा उसे यह डर रहता था कि कहीं उससे भी अधिक भाग्यवान स्त्री उसका सर्वनाश न कर दे, जिस तरह उसने सीजर की पहली रानी ओक्तेविया का किया था। एक नजर में ही उसने देख लिया कि लीजिया कितनी अधिक खूबसूरत है। अपने मन में उसने कहा कैसी सर्वांग सुन्दरी है, जैसे सौन्दर्य की देवी वीनस ने खुद इसे जन्म दिया हो। हे भगवान, यह देखने में मुझ जैसी ही सुन्दर है, और मुझसे छोटी है!

उसकी सुनहरी बरौनियों के नीचे उसकी आँखों में एक सख्ती आ गई। उसने लीजिया की ओर मुड़कर पूछा, "क्या तुमने सीजर से बातचीत भी की है ?"

"नहीं देवी।"

"तुमने ओलस के घर की बजाय इस महल को क्यों पसन्द किया ?"

"मैंने पसन्द नहीं किया। पेट्रोनियस ने सीजर से कह कर मुझे वहाँ से पकड़ मँगवाया है। मैं अपनी मर्जी के खिलाफ यहाँ हूँ।"

"तो तुम वापस लौटना चाहती हो ?"

उसने यह सवाल कुछ मैत्रीपूर्ण ढंग से किया था। लीजिया के मन में आशा का ज्वार उमड़ आया। अपने हाथ फैलाकर वह बोली, "देवी, सीजर मुझे एक गुलाम की तरह विनिसियस को सौंपना चाहते हैं! तो आप मेरी मदद करेंगी और मुझे वापस घर भिजवा देंगी ?"

"तो पेट्रोनियस ने सीजर को कहकर इसलिए तुम्हें ओलस के यहाँ से मँगवाया है कि तुम्हें विनिसियस को सौंप दिया जाय ?"

"जी हाँ। विनिसियस ने कहा है कि वह आज ही मुझे यहाँ से मँगवा लेगा लेकिन आप मुझपर दया करेंगी न देवी ?" यह कहकर उसने पोपिया के आँचल का छोर पकड़ लिया और धड़कते हुए दिल से उसके उत्तर का इन्तजार करना शुरू किया। पोपिया ने शरारत से मुसकराकर उसकी ओर देखा और कहा, "हाँ, मैं इतना वादा करती हूँ कि तुम आज इसी वक्त विनिसियस की गुलाम बना दी जाओगी।"

यह कहकर वह आगे बढ़ गई। उसकी बच्ची नींद से जाग गई थी और रोने लगी थी। उसके जाने पर लीजिया की आँखों में आँसू आ गये। उसने एक्ते का हाथ थामकर कहा, "चलो, हम लोग अन्दर चलें। हमें मदद की वहीं से उम्मीद करनी चाहिए जहाँ से मदद मिल सकती है।"

वे लोग फिर से महल में अपने कमरे में लौट आईं और वहीं बैठी रहीं। बार-बार उन्हें शक होता कि कोई आ रहा है और उनकी बातचीत का सिलसिला टूट जाता। हर आहट पर उनके कान खड़े हो जाते।

अन्धेरा होने पर सोने के कमरे का पर्दा हिला और एक साँवले चेचक भरे चेहरे वाला आदमी वहाँ आया। लीजिया इस आदमी को पहचानती थी। यह विनिसियस का आजाद किया हुआ गुलाम ऐतासीनस था, जिसे उसने ओलस के घर देखा था। उसे देखकर एक्ते तो चीख ही पड़ी। उसने झुककर सलाम किया और कहा, "देवी लीजिया को मार्कस् विनिसियस ने अपना अभिवादन भेजा है। वे उनका इन्तजार कर रहे हैं। आपके स्वागत में दावत का इन्तजाम हो गया है और घर को खूब सजाया गया है।"

"मैं तैयार हूँ," लीजिया ने सूखे हुए ओंठों से जवाब दिया।

एक्ते के गले में बाहें डालकर उसने उससे विदा ली।

## १०

सचमुच विनिसियस का घर खूब सजाया गया था और उसमें हरे रंग की चीजों का अधिक प्रयोग किया गया था। दरवाजों और दीवारों पर बन्दनवार और मालाएँ टँगी हुई थीं। खम्भों पर भी माला लिपटी थी। तेज बत्तियों पर मिस्र के शीशे के कन्दील रखे थे। कुछ बत्तियों पर भारत की महीन मलमल टाँगकर गुलाबी और पीले, या नीले और बैंजनी रंग की रोशनी पैदा की गई थी। खाने के कमरे में चार मेहमानों की तैयारी की गई थी। पेट्रोनियस और क्राइसोथेमिस भी आनेवाले थे।

विनिसियस ने हर मामले में पेट्रोनियस की राय मानी थी और पेट्रोनियस ने उसे सलाह दी थी कि उसे खुद जाकर लीजिया को घर नहीं लाना चाहिए, बल्कि इस काम के लिए अपने नौकर को भेजना चाहिए, और सम्राट् के आज्ञापत्र के साथ भेजना चाहिए।

"तुम कल रात नशे में थे, मैं तुम्हें देख रहा था," उसने कहा, "तुम तो उस समय बिल्कुल मजनुओं का तरह बर्ताव कर रहे थे। इस तरह जल्दबाजी न करो, अच्छी शराब की खींचने में देर लगती है। यह भी याद रखो कि किसी

को चाहना अच्छा होता है, लेकिन किसी के द्वारा चाहा जाना उससे भी अच्छा होता है !" विनिसियस के कुछ गुलाम घर में धूप जलाने की तैयारी कर रहे थे। उन्होंने जलते हुए कोयलों पर कुछ धूप छिटका और पूरा कमरा उसकी मादक सुगन्ध से भर उठा।

"वे लोग अब तक कारीनी के मोड़ तक पहुँच चुके होंगे," विनिसियस ने जैसे अपने आप से बातें करते हुए कहा,

क्राइसो थेमिस ने मजाक में कहा, "इससे सब्र करते नहीं बनेगा ! इसका बस चले तो अभी यह उन्हें लेने पहुँच जाय, और बहुत मुमकिन है कि उससे हाथ धो बैठे।"

विनिसियस ने मूर्खता से हँसते हुए कहा, "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

पेट्रोनियस ने अपने कन्धे उचकाकर कहा, "इसमें जरा-सी भी दार्शनिकता नहीं है। मैं कभी इसे आदमी नहीं बना पाऊँगा।"

लेकिन विनिसियस ने उनकी कोई बात नहीं सुनी और फिर से कहा, "वे लोग अब तक कारीनी के पास तक तो पहुँच ही गये होंगे।"

सचमुच वे लोग उस समय कारीनी के पास ही थे। पालकी के आगे-आगे मशालची और दीयेवाले चल रहे थे और उसके पास कई दास घेरा बाँध कर चल रहे थे। ऐतासीनस सबसे आगे था। ये लोग धीरे-धीरे ही बढ़ रहे थे क्योंकि सड़क में जो बत्तियाँ जल रही थीं उनसे बहुत ही मन्दी रोशनी हो रही थी। महल के आसपास जो सड़कें थीं वे लगभग सूनी हो चुकी थीं। सिर्फ इक्का-दुक्का आदमी दिखाई दे रहा था। छोटी-छोटी गलियों से दो-चार आदमी लबादे ओढ़े हुए और हाथ में बिना बत्ती लिये निकल आते थे। उनमें से कुछ तो पालकी के साथ गुलामों के बीच चलने लगते थे और कुछ लोग उनका रास्ता काटने की कोशिश करते थे। कुछ लोग इस तरह से लड़खड़ा कर चल रहे थे जैसे नशे में हों और पालकी के साथ चलनेवाले गुलामों को बार-बार आवाज देकर उन्हें रास्ते से अलग करना पड़ता था।

"मार्कस् विनिसियस की पालकी के लिए रास्ता छोड़ो !"

पालकी के अधखुले पर्दों से लीजिया ने इन लोगों को इधर-उधर जत्थे बाँध-कर घूमते देखा और उसका हृदय आशा और भय से भरने लगा। उसने अपने मन में कहा-क्या यूरसस ईसाइयों को लेकर मुझे छुड़ाने आ पहुँचा ? लगता तो है कि अब समय आ गया है। उसने काँपते हुए ओंठों से प्रार्थना की, "प्रभु ईसा, हमारी मदद करो, हमारी रक्षा करो !"

इस अजीब-सी भीड़भाड़ की ओर पहले तो ऐतासीनस ने कोई ध्यान नहीं दिया, लेकिन फिर वह भी घबरा गया। मशालचियों को अब बार-बार लोगों से रास्ता

देने के लिए चिल्लाना पड़ता था और यह अजीब से लोग अन्धेरे में पालकी के इतने करीब मँडराने लगे थे कि अन्त में उसे मजबूर होकर अपने गुलामों को इन्हें भगा देने के लिए आदेश देना पड़ा। उन्होंने लाठियाँ तानी ही थीं कि पालकी के आगे कुछ हाथापाई हो गई। शोर हुआ और उनकी सारी बत्तियाँ और मशालें बुझा दी गईं। अब ऐतासीनस की समझ में आया कि यह तो कोई हमला हुआ! मारे डर के उसके प्राण सूख गये। रोम में हर कोई यह जानता था कि सीजर अक्सर अपने साथियों के साथ शहर के पिछड़े हुए मोहल्लों में रात के वक्त इस तरह के हमले करके अपना मनोरंजन करता है। कभी-कभी सीजर को इस तरह के हुल्लड़ में चोट भी आ जाती थी। लेकिन ऐसे मौके पर उसके हमले से बचने की अगर कोई कोशिश करता था, तो उसकी खैर नहीं थी, चाहे वह कोई हो। पालकी के आगे आसपास काफी भीड़ जमा हो गई थी और मारपीट तेजी पर थी। इसी समय ऐतासीनस को एक बात सूझी कि क्यों न वह लीजिया को उठाकर वहाँ से भाग निकले। बाकी लोगों को अपने तकदीर के भरोसे छोड़ दे। उसने झपट-कर पालकी से लीजिया को बाहर खींच लिया और उसे उठाकर अन्धेरे में भाग जाना चाहा।

लेकिन लीजिया चीखने लगी, 'यूरसस! यूरसस!"

अपनी सफेद पोशाक में वह अन्धेरे में भी आसानी से पहचानी जा सकती थी और ऐतासीनस उसे अपने लबादे में ढँकने की कोशिश कर रहा था, लेकिन इसी बीच जैसे किसी फौलादी मुट्ठी ने उसकी गर्दन दबोच ली और उसके सिर पर किसी भारी चीज से चोट हुई। वह चक्कर खाकर गिर पड़ा।

ज्यादातर गुलाम जमीन पर जा गिरे थे या भागने की कोशिश में दीवारों से टकरा रहे थे। लड़ाई में पालकी टूट चुकी थी। यूरसस लीजिया को उठाकर शहर के उस घने मुहल्ले की ओर भाग गया जहाँ छोटे लोग रहते थे और जिसे सुबरा कहा जाता था। उसके साथी भी वहाँ से चलते बने।

गुलाम किसी तरह जान बचा कर भागे और एक-एक करके विनिसियस के घर के आगे आ इकट्ठे हुए। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। अन्दर घुसने की उन्हें हिम्मत नहीं हो रही थी। कुछ देर सलाह-मशविरा करके वे लोग फिर से उस जगह पहुँचे जहाँ लड़ाई हुई थी। वहाँ उन्हें अपने साथियों में से एक मरा हुआ मिला और ऐतासीनस भी वहां पड़ा था। अब तक किसी तरह उसकी साँस चल रही थी लेकिन थोड़ी ही देर में वह भी ठंडा हो गया।

उसकी लाश को उठाकर एक बार फिर से वे अपने मालिक के दरवाजे पहुँचे। जो कुछ हुआ था उसकी खबर मालिक को देनी जरूरी थी। "गुलो ही मालिक

को बतायेगा," कुछ लोगों ने धीरे से कहा। "उसके चेहरे पर भी लड़ाई में खून लगा है और मालिक उसे पसन्द करते हैं। उस पर हमसे कम खतरा है।"

गुलो एक बूढ़ा जर्मन गुलाम था, जिसने बचपन से विनिसियस को पाला था और उसकी माँ की भी वह सेवा करता रहा था। वह बोला, "हाँ, मैं मालिक को बताऊँगा तो, लेकिन तुम सब लोगों को साथ चलना पड़ेगा, ताकि उनके गुस्से का शिकार सिर्फ मुझे ही न बनना पड़े।"

लेकिन अब तक विनिसियस अपना धीरज खो बैठा था। पेट्रोनियस और क्राइसोथेमिस उसकी बेचैनी देखकर हँस रहे थे और वह बरामदे में टहलता हुआ बार-बार कह रहा था, "अब तक तो उन लोगों को यहाँ आ जाना चाहिये! अब तक भी वे यहाँ नहीं पहुँचे!"

अगर उन लोगों ने उसे रोक न लिया होता तो वह सचमुच ही बाहर चला जाता। अचानक बाहर वाले बड़े कमरे में पैरों की आहट आई और गुलाम एक भीड़ बनाकर अन्दर आये। वे लोग आकर दीवार से सटकर खड़े हो गये और अपने हाथ ऊपर उठाकर कराहते हुए 'आह, आह' करने लगे।

विनिसियस उनकी ओर झपटा। वह जोर से चीखा, "लीजिया कहाँ है?"

गुलाम आह, आह करते रहे। गुलो एक कदम आगे बढ़ा और रोते हुए बोला, "मालिक, यह खून देखो! हमने उसे बचाने की पूरी कोशिश की है! मालिक देखो, हम लोग खून में सने हैं!"

लेकिन उसकी बात के खतम होने के पहले ही विनिसियस ने पीतल की एक समई से, जिसमें मोमबत्तियाँ लगाई जाती थीं, उसका सिर फोड़ दिया। फिर उसने अपने हाथों से अपना माथा थाम लिया और जल्दी-जल्दी बालों में उँगलियाँ चलाते हुए चीखना शुरू किया, "मेरा सर्वनाश हो गया!"

उसकी शक्ल बदल गई, आँखें जलने लगीं और वह जोर से चीखा, "इनको कोड़े लगाओ!"

"मालिक! मालिक! हाय, हम पर दया कीजिये!" गुलाम रोने लगे।

पेट्रोनियस का मन भी खट्टा हो गया। वह बोला, "आओ क्राइसोथेमिस, हम लोग चलें। अगर तुम कुछ गोश्त खाना पसन्द करो तो हम लोग कारीनी के मोड़ से थोड़ा-सा खरीदते चलें।"

वे लोग बाहर निकल गये। और विनिसियस का घर, जो दावत के लिए सजाया गया था, सबेरे तक गुलामों के कराहने और कोड़ों के सटाकों से गूँजता रहा।

## ११

रात भर विनिसियस सो न सका। नीचे की मंजिल में गुलामों पर कोड़े पड़ रहे थे और वे कराह रहे थे लेकिन इससे उसका दुःख और क्रोध कम न हो सका। काफी रात गये वह कुछ दूसरे गुलामों को साथ लेकर लीजिया की खोज में निकला। लीजिया जहाँ से गायब हुई थी उसके आसपास की सारी सड़कें उसने खोज डालीं। उसने पूरा शहर छान मारा और टाइबर नदी के पासवाली बस्ती को भी उसने अच्छी तरह देखा। लेकिन लीजिया कहीं नहीं मिली।

जब सवेरा होने लगा और लोग गाड़ियों और खच्चरों पर तरकारियाँ लाद कर निकले और दूकानें खुलने लगीं तब जाकर कहीं वह घर लौटा। आकर वह कोच पर फिर गिर पड़ा और अपने धुँधले दिमाग में लीजिया को फिर से प्राप्त करने की योजनाएँ बनाने लगा।

लीजिया को हमेशा के लिए अपने हाथ से निकल गई मान लेना उसके लिए असंभव था। उसके विचारमात्र से वह गुस्से की आग में जल उठता था। उसने आज तक कभी किसी चीज को इस तरह नहीं चाहा था, और वह अपनी माँग को पूरा किये बिना चैन नहीं ले सकता था। कभी-कभी उसे लीजिया पर बहुत गुस्सा आता था। उसकी इच्छा होती थी कि वह उसे खूब पीटे, और उसके बाल पकड़ कर घसीटे और उसे खूब यातना दे। मारे गुस्से के वह पागल हो रहा था।

साथ ही साथ उसे लीजिया की मधुर आवाज सुनने की, उसकी काली आँखों को और सुहावने चेहरे को देखने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई। वह चाहता था कि इस समय उसे पा ले, जिस तरह भी हो वह उसके पास पहुँच जाय। वह उसे पुकारने लगा और अपना सिर पीटने लगा। अचानक उसे ख्याल आया कि ओलस के सिवा और कोई नहीं हो सकता जो उसे इस तरह भगा ले जाय। अब वह समझा कि वह कहाँ मिल सकती है।

वह पैदल ही ओलस के घर दौड़ा गया। उसने सोचा कि अगर वह उसकी बात नहीं मानेगा और उसे वापस नहीं लौटा लेगा तो मैं सम्राट् से जाकर कहूँगा, मैं कहूँगा कि यह बूढ़ा जनरल गद्दार है और इस तरह उसकी मौत का परवाना ले लूँगा।

लेकिन फिर एकाएक उसके मन में एक भयानक सन्देह उठा और उसका दिल बैठ गया, अगर कहीं सीज़र ने खुद लीजिया को उड़ा लिया हो तो !

दुनिया जानती थी कि सीज़र अक्सर इस तरह रात में अपना मनोरंजन करने के लिए मज़ाक-मज़ाक में हमले किया था और खुद पेट्रोनियस कई बार इन हमलों में उसके साथ रहा। सीज़र अक्सर इन हमलों में खूबसूरत लड़कियों को पकड़ लेता था और उन्हें बहुत तंग करता था। वह कहा करता था कि मैं मोती की तलाश में जा रहा हूँ। सचमुच कभी-कभी वह बहुत ही खूबसूरत औरतों को खोज निकालता था। फिर या तो वह अपने खोजे हुए इन मोतियों को अपने महल में भेज देता था या छुट्टी मनाने के लिए अपने किसी बँगले में रख देता था, या कभी-कभी अपने साथियों को तोहफे के रूप में दे डालता था। विनिसियस ने सोचा कि हो सकता है वही लीजिया को उड़ा ले गया हो। वह जानता था कि दावत के वक्त सीज़र उसे बहुत गौर से देख रहा था और उसके सौन्दर्य से प्रभावित हुआ था। सीजर चाहता तो उसे महल में ही रोक सकता था, लेकिन जैसा कि पेट्रोनियस कहा करता था, सीजर में हिम्मत की कमी थी। इसके अलावा उसे अपनी रानी पोपिया को भी खुश रखने की कोशिश करना पड़ता था।

अगर यही बात है, तो लीजिया हमेशा के लिए हाथ से निकल गई। सीज़र के यहाँ से उसे लाना असम्भव था। अब विनिसियस को महसूस हो रहा था कि वह उससे कितना प्रेम करता है। बार-बार उसे लीजिया की याद आती थी। वह कल्पना में उसे देखता था और उसकी कही हुई हर बात को याद करता था। वह ओलम के घर फौव्वारे के पास या सीज़र की दावत में जैसी उसे दिखाई दी थी वैसे ही अब भी दिखाई दे रही थी। वह अब भी उसे अपने पास महसूस करता था, उसके खूबसूरत बालों की खुशबू अब भी उसे याद थी और उसे अच्छी तरह याद था कि उसने दावत के समय उसके मासूम ओठों को कितनी बेरहमी से चूमा था और जैसा कि उसे पहले लगता था कि वह लीजिया के बिना नहीं रह सकेगा, वैसे ही अब उसे लगता था कि वह उसका बदला लिये बिना अब चैन से नहीं रह सकता।

बदले की इसी भावना ने उसे थोड़ा-बहुत धीरज बँधाया। उसने फूल के गमलों में से थोड़ी-सी मिट्टी उठाकर अपने परिवार के देवताओं के नाम कसम खाई कि वह नीरो से बदला लेकर ही रहेगा। बदले की भावना ने जैसे उसकी जिन्दगी में एक नया जोश पैदा कर दिया था उसने फौरन अपने आदमियों को हुक्म दिया कि उसे राज-भवन पहुँचाया जाय। वहाँ वह एक्ते से मिलकर लीजिया के बारे में कुछ और जानना चाहता था। महल के फाटक पर पहुँचते ही उसने तय किया कि अगर सिपाही उसे रोकने की कोशिश करेंगे, या हाथियारों के लिए उसकी तलाशी लेना चाहेंगे तो इसका मतलब यह होगा कि लीजिया सीज़र के हुक्म से महल में कैद है। लेकिन

सिपाहियों के बूढ़े कप्तान ने आगे बढ़कर दोस्ताना ढंग से मुसकराते हुए कहा, "बहादुर सरदार मैं आपका अभिवादन करता हूँ, अगर आप सम्राट् की सेवा में जाना चाहते हैं हैं तो मुझे डर है कि आपको सफलता नहीं मिल पायेगी।"

"क्यों, क्या हुआ?"

"छोटी राजकुमारी की तबियत अचानक खराब हो गई है, और सम्राट् सम्राज्ञी वैद्यों के साथ उनके कमरे में गये हैं।"

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी। बच्ची के जन्म पर सीज़र मारे खुशी में पागल हो गया था। उसके जन्म के पूर्व सिनेट के सदस्यों ने बहुत गम्भीरता से ईश्वर से प्रार्थना की थी कि वे पोपिया के गर्भ की रक्षा करे। जब बच्ची का जन्म हुआ तो राज-भर में खुशियाँ मनाई गई थीं, बड़े-बड़े खेल-तमाशों का आयोजन किया गया और सौभाग्य की देवी के लिए एक मन्दिर की स्थापना की गई। नीरो किसी भी बात में संयम से काम नहीं ले पाता था और इसीलिए बच्ची के प्यार में भी वह अपने ऊपर रोक नहीं लगाता था। इसका नतीजा यह हुआ कि रानी पोपिया की स्थिति महल में और भी दृढ़ हो गई और पोपिया भी इसीलिए अपनी बच्ची को बहुत अधिक चाहने लगी।

उस छोटी राजकुमारी के स्वास्थ्य और जीवन पर ही सारे साम्राज्य का भाग्य निर्भर था। लेकिन विनिसियस अपनी चिन्ता में इतना उलझा हुआ था कि उसने सिपाही के जवाब पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह यह कहता हुआ आगे बढ़ गया कि मैं एक्ते मिलना चाहता हूँ।

लेकिन एक्ते भी राजकुमारी के पास थी। उसे इन्तजार करना पड़ा। वह दोपहर को लौटी। उसके आने पर विनिसिअस ने उसका हाथ पकड़कर उसे अन्दर कमरे में खींचते हुए कहा, "एक्ते! लीजिया कहाँ है?"

"यही तो मैं तुमसे पूछना चाहती हूँ," उसने उलाहना देते हुए कहा।

हालाँकि विनिसिअस ने बहुत शान्ति से उससे पेश आने का तय किया था। लेकिन वह अपने को नहीं रोक सका और दुःख और क्रोध में भरकर उसने कहा, "वह मेरे यहाँ नहीं है! वह रास्ते में ही उड़ा ली गई!" फिर उसने एक्ते के पास मुँह ले जाकर और दाँत पीसते हुए कहा, "एक्ते, अगर तुम्हें अपनी जान की परवाह हो, अगर तुम ऐसी विपत्तियाँ नहीं बुलाना चाहती हो, जिनकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकती तो बता दो, मुझे सही-सही बता दो—क्या सीज़र ने उसे उड़ाया है?"

"कल सीज़र राजमहल से बाहर ही नहीं निकले।"

"अपनी माँ की कसम खाओ, देवताओं की कसम खाकर बताओ कि वह महल में नहीं है।"

"मार्कस्, मैं कसम खाकर कह रही हूँ वह यहाँ नहीं है, और न सीज़र ने ही उसे उड़ाया है। कल से ही राजकुमारी की तबियत खराब है, और नीरो उसके पालने के पास से हटे ही नहीं।"

विनिसिअस ने कुछ साँस ली। फिर उसने बैठते हुए और मुट्ठियाँ भींजते हुए कहा, "तो फिर यह ओलस की करतूत है, और अब भगवान ही उसका मालिक है!"

"आज ओलस प्लोतियस सुबह यहाँ आये थे। वे मुझसे नहीं मिल पाये क्योंकि मैं राजकुमारी के पास थी, लेकिन उन्होंने यहाँ हर आदमी से पूछताछ की और कह गये हैं कि वे फिर मुझसे मिलने आयेंगे।"

"कुछ नहीं, वह इस तरह कोशिश करके अपने ऊपर से शक हटाना चाहता है! अगर उसे यह नहीं मालूम था कि उसका क्या हुआ है तो वह मेरे पास पूछताछ करने आता!"

"वे एक पटरी पर मेरे लिए अपना सन्देसा छोड़ गये हैं। उन्हें मालूम है कि पेट्रोनिअस और तुम्हारी इच्छा से ही लीजिया को उनसे छीना गया है और यह सोचकर कि अब उसे तुम्हारे यहाँ भेज दिया गया है, वे आज सुबह तुम्हारे यहाँ गये भी थे। वहाँ तुम्हारे आदमियों ने बताया कि क्या हुआ।" यह कहकर वह अपने सोने के कमरे में गई और वह पटरी उठा लायी जिसपर ओलस ने अपना सन्देश लिखा था। उसे पढ़कर विनिसिअस कुछ देर तक चुप रहा। एक्ते उसके उतरे हुए चेहरे को देखती रही। फिर वह बोली, "नहीं, मार्कस् जो कुछ हुआ है वह लीजिया की मरजी से ही हुआ है।"

"तब तुम जानती थीं कि वह भागना चाहती थी!" वह चीखा।

"मैं जानती थी कि वह तुम्हारे साथ रहना पसन्द नहीं करेगी। उसे तुम्हारी रखैल बनना पड़ता।"

उसकी आँसुओं से धुँधली आँखों में एक सख्ती आ गई और वह बोला, "और तुम···तुम अपनी जिन्दगी भर क्या कर रही हो?"

"हाँ, लेकिन मैं गुलाम थी।"

विनिसिअस का गुस्सा किसी तरह भी ठंडा नहीं हुआ। सीज़र ने लीजिया को उसे सौंपा था और वह उसे कहीं से भी खोज निकालेगा। अगर वह जमीन में जा छिपी होगी तो वहाँ से भी उसे खींच लायेगा और उसके साथ जो इच्छा होगी, सो करेगा। कोई उसे रोक नहीं सकता। हाँ, वह उसे अपनी नायिका बना कर रखेगा और जब उससे उसका मन भर जायगा तो वह उसे अपने सबसे नीचे दरजे के गुलामों को दे देगा, या अफ्रीका में अपनी किसी जमींदारी में उससे चक्की पिसवायेगा।

एक्ते ने घबराकर कहा, "और इसका ख्याल रखना कि कहीं सीजर उसे फिर से न पा जाय। वरना हमेशा के लिए उससे तुम हाथ धो बैठोगे।"

"क्या मतलब तुम्हारा ?"

"सुनो मार्कस्, कल बाग में मेरी और लीजिया की रानी पोपिया से मुलाकात हो गई गई। लिलिथ नाम की एक नीग्रो दासी राजकुमारी को अपनी गोद में लिए हुए थी। शाम को ही राजकुमारी की तबियत खराब हो गई और लिलिथ ने यह कहना शुरू कर दिया कि उस औरत ने बच्ची पर जादू कर दिया है। अगर राजकुमारी ठीक हो जाती है तब तो वे लोग इस किस्से को भूल जायेंगे और अगर नहीं होती है तो यह तय समझो कि महारानी लीजिया पर टोने-टोटके का आरोप लगायेगी और फिर उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं रहेगी।"

एक क्षण चुप रह कर विनिसिअस बोला, "शायद सचमुच ही उसने बच्ची पर जादू कर दिया है और मुझे भी नहीं छोड़ा है।"

"लिलिथ का कहना है कि उसे देखते ही बच्ची रोने लगी थी और यह सही है तो मार्कस् उसको तुम खोजो जरूर, लेकिन जब तक बच्ची फिर से ठीक नहीं हो जाती तब तक उसका नाम यहाँ न लेना। तुम्हारी वजह से वह बेचारी अब तक काफी परेशान हो चुकी।"

विनिसिअस ने दुखी स्वर में पूछा, "तो एक्ते, तुम उसे चाहती हो ?"

"हाँ, मैं उसे प्यार करने लगी हूँ।"

"तुम उसे प्यार करती हो और तुम्हारे प्यार का जवाब उसने उस तरह घृणा से नहीं दिया जिस तरह मुझे दिया है ?"

इस तरह अन्धे और मूढ़ बनने की कोशिश न करो, वह अब भी तुमसे प्रेम करता है।"

विनिसियस चौंका। कहने लगा कि यह गलत है। वह उससे नफरत करती है। आखिर एक्ते को यह उल्टी बात मालूम कैसे हुई ? क्या लीजिया ने एक दिन की ही दोस्ती में उसे अपने मन की सारी बातें बता दीं ? भला यह कैसा प्यार है जो हँसी-खुशी और आराम की जिन्दगी को लात मारकर इधर-उधर की ठोकरें खाना और गरीबी और भुखमरी को पसन्द करता है, जिन्दगी की बजाय जो मौत को और वह भी तकलीफदेह मौत को पसन्द करता है ! भला यह भी कैसा प्यार है, जो सुख से डरता है और दुःख के लिए प्यासा है ?

इस बार एक्ते, जो आमतौर से बहुत शान्त रहा करती थी, बिगड़ पड़ी। उसने उससे पूछा कि आखिर उसने लड़की का मन जीतने के लिए क्या किया ? बजाय इसके कि वह ओलस और पोम्पोनिया के पास विनम्रता से जाता और उनसे लड़की माँग लेता, उसने उसे वहाँ से जबरदस्ती छीन लाने की कोशिश की। वह उसे अपनी

पत्नी नहीं बल्कि नायिका बनाना चाहता है, जो एक राजा की बेटी है। उसने उसे नीरो जैसे व्यभिचारी के सामने खड़ा करके उसकी मासूमियत का अपमान किया है। क्या वह भूल गया कि ओलस के घर का वातावरण कैसा है और पोम्पोनिया, जिसने उसे गोद लिया है, कैसी है? शायद वह यह नहीं समझ सका कि वह पार्की जा लड़की अपमान के बजाय मौत को पसन्द करेगी। नहीं, लीजिया ने उसे अपने मन की बातें नहीं बताईं, लेकिन यह उसने जरूर बताया कि किस तरह उसने आशा की थी कि विनिसियस उसकी रक्षा करेगा। जब वह उसे उसके बारे में बता रही थी तो उसके चेहरे पर मुर्दनी आ गई थी। वह मन में उसे चाहती थी, लेकिन उसने उसका अपमान किया। उसे आतंकित किया, उसके साथ जबरदस्ती की।

"लेकिन अब तो बहुत देर हो गई।" वह जैसे कराहा। उसे लगा जैसे उसके सामने एक अँधेरी खाई मुँह खोले खड़ी है। वह कुछ समझ ही नहीं पा रहा था कि क्या करे, किधर जाय। तभी एक्ते ने जैसे उसकी बात को दुहरा दिया, "बहुत देर हो गई," और दूसरे के मुँह से यह शब्द उसे ऐसे लगे जैसे मौत का सन्देशा हो।

वह वहाँ से उठकर जाना ही चाहता था कि अचानक बरामदे का पर्दा उठा और उसने पोम्पोनिया का रंगीन चेहरा देखा। लीजिया के गायब होने की खबर उसे भी मिल गई थी और यह सोचकर कि ओलस की बजाय उसके लिए एक्ते के पास तक पहुँचना आसान होगा, वह आगे की खबरों को जानने के लिए आई थी। विनिसियस को वहाँ देखकर उसने अपना पीला और मुर्झाया हुआ चेहरा उसकी ओर फेरा और कहा, "मार्कस्, ईश्वर तुम्हें क्षमा करे, तुमने हमारे साथ, हमारे और लीजिया के साथ जो बुराई की है, ईश्वर तुम्हें उसके लिए क्षमा करे!"

विनिसियस चुपचाप सिर झुकाये खड़ा रहा, वह अपने दुर्भाग्य को जानता था और यह भी जानता था कि इसके लिए वही जिम्मेदार है। लेकिन उसकी समझ में यह नहीं आया कि ऐसा कौन-सा ईश्वर है जो उसे क्षमा कर देगा, और पोम्पोनिया ने क्यों उसके लिए क्षमा की प्रार्थना की, बजाय इसके कि वह उसके लिए दण्ड की कामना करती। आखिरकार वह बाहर निकल गया, हताश और चिन्ताओं से परेशान।

महल के आँगन और बरामदे में बहुत से लोग उत्सुकता से भीड़ लगाये खड़े थे। इनमें लगभग सभी सिनेटर और फौजी सरदार थे, जो राजकुमारी के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ करने आये थे और कुछ नहीं तो कम से कम सम्राट् के दास-दासियों के सामने ही सम्राट् के प्रति अपनी वफादारी का प्रदर्शन करने के लिए उत्सुक थे। विनिसियस को लौटते हुए देखकर कुछ लोग उसके पीछे लग गये और अन्दर के हाल पूछने लगे, लेकिन वह कोई जवाब दिये बिना ही आगे बढ़ गया। अचानक पेट्रोनियस ने उसे रोका।

विनिसियस इस आदमी के साथ बहुत गुस्से से पेश आ सकता था, जिसकी योजना का ऐसा बुरा नतीजा निकला था, लेकिन एक्ते से मिलने के बाद वह इतना निराश और मायूस हो गया था कि उसका स्वाभाविक क्रोध जाग ही न सका। फिर भी उसने पेट्रोनियस को परे हटा दिया और आगे बढ़ने की कोशिश की, लेकिन पेट्रोनियस ने उसकी बाँह थाम ली और पूछा, "हमारी परमादरणीय राजकुमारी कैसी हैं?"

विनिसियस ने दाँत पीसते हुए जवाब दिया, "वह और उसके साथ-साथ यह पूरा महल मेरी तरफ से भाड़ में जाय!"

"अरे-अरे, जरा धीरे बोलो, मूर्ख!" पेट्रोनियस ने कहा और फिर आस-पास देखने के बाद वह धीरे से बोला, "अगर तुम लीजिया के बारे में कुछ सुनना चाहते हो तो मेरे साथ आओ। नहीं, मै यहाँ तुम्हें कुछ नहीं बताऊँगा, मेरे साथ चलो। फिर हम लोग इस पर बातचीत करेंगे।"

वह विनिसियस की कमर में हाथ डालकर उसे अलग खींच ले गया। यही उसका उद्देश्य भी था, असल में बताने के लिए उसके पास कुछ नहीं था। लेकिन क्योंकि विनिसियस को जिन घटनाओं से तकलीफ पहुँची थी उसके लिए वह अपने को भी जिम्मेदार मानता था, इसलिए उसने भी कुछ कोशिश शुरू कर रखी थी। पालकी में बैठते ही वह बताने लगा, "मैंने शहर के सभी दरवाजों पर अपने गुलामों को तैनात कर दिया है और उन्हें लड़की की और उसके उस राक्षस जैसे नौकर की पूरी हुलिया बता दी है, जो उसे उस दिन दावत से उठा ले गया था। इसमें कोई शक नहीं कि वही कल उसे उड़ा ले गया है। अगर मेरे आदमियों को वह किसी दरवाजे पर नहीं दिखाई देती तो इसका मतलब यही होगा कि उसने शहर से बाहर निकलने की कोशिश नहीं की है, वह यहीं है। यह मालूम होने पर हम लोग फौरन उसकी तलाश शुरू कर देंगे।"

## १२

जब पेट्रोनियस के घर पहुँच कर वे लोग पालकी से उतरे तो एक नौकर ने आकर खबर दी कि शहर के किसी भी दरवाजे से किसी गुलाम ने आकर अब तक कोई खबर नहीं दी।

"देखा न तुमने, "पेट्रोनियस बोला, "वे लोग अब भी शहर की चहार-दीवारी के भीतर ही हैं और हम लोग उन्हें ढूँढ़ निकालेंगे।"

दोनों अन्दर गये और संगमरमर की एक चौकी पर बैठ कर बातचीत करने लगे। पेट्रोनिअस बोला, "यह सब कुछ बड़े रहस्यमय ढंग से हुआ। यह न तो सीजर की करतूत है और न ओलस की। फिर यह भी नहीं हो सकता कि उसका वह लीजियन नौकर अकेले ही यह सब कर गया हो, उन्हें जरूर कहीं से मदद ली है!"

"उन्हें कौन मदद दे सकता है?"

"उसके अपने मजहब के लोग।"

"कौन-सा मजहब? किस देवता को वह मानती है? और यह बात मुझे तुमसे ज्यादा अच्छी तरह मालूम होनी चाहिये!"

"रोम में शायद ही कोई औरत ऐसी हो जिसका अपना कोई अलग देवता न हो। पोम्पोनिया जिस देवता की पूजा करती है, लीजिया भी उसी की करती होगी और यह पूजा कैसी होती है वह भी मैं नहीं जानता। लेकिन एक बात निश्चित है, कि इसके माननेवालों में से किसी को भी आज तक किसी मन्दिर में हमारे किसी देवता को बलि चढ़ाते हुए नहीं देखा गया।"

"अच्छा, आज जब एक्ते के कमरे में पोम्पोनिया से मेरी मुलाकात हुई तो उसने कहा था कि तुमने हमारे साथ जो बुराई की है उसके ईश्वर तुम्हें क्षमा करे।"

"इससे तो लगता है कि उनका देवता कोई बड़ा भलामानुस है। चलो, मैं भी मनाता हूँ कि वह तुम्हें क्षमा कर दे और इसके सबूत के रूप में तुम्हें लड़की लौटा दे।"

"अगर वह देवता मुझे लीजिया को लौटा दे तो कल ही मैं उसे खूब बड़ा भोग लगाऊँगा। उसके बिना मुझे चैन नहीं, न मैं खा पाता हूँ, न मैं सो पाता हूँ। मैं तो कोई काला लबादा ओढ़कर या भेष बदलकर शहर में चक्कर काटना चाहता हूँ। शायद वह मुझे इस तरह मिल जाय। मेरी तबियत ही नहीं लगती।"

पेट्रोनियस को उस पर तरस आ गया, क्योंकि उसकी आँखें जल रही थीं और चेहरे पर दो दिन की दाढ़ी उग आई थी, बाल बिखर रहे थे। देखने में सचमुच लगता था कि उसकी तबियत ठीक नहीं है। पेट्रोनियस की दो खूबसूरत दासियाँ इरास और यूनिस पास ही खड़ी उसे देख रही थीं लेकिन विनिसियस ने उनकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया।

"तुम बुखार में हो!" पेट्रोनियस ने पूछा।

"हाँ!"

"तो सुनो, मैं नहीं जानता कि कोई वैद्य तुम्हारी क्या सहायता करेगा, लेकिन मैं अगर तुम्हारी जगह होता तो यही करता कि जब तक वह नहीं मिलती तो मैं दूसरी

के पास चला जाता। मैं जानता हूँ कि तुमने भी अपने घर में बहुत-सी सुन्दरियाँ पाल रखी हैं। देखो, तुम इससे इनकार नहीं कर सकते—हाँ, और मैं यह भी जानता हूँ कि प्यार क्या होता है। और यह भी मुझे मालूम है कि जब आदमी किसी एक औरत को चाहता है, तो कोई उसकी दूसरी जगह नहीं ले सकती। लेकिन इतना तो हो ही सकता है कि किसी खूबसूरत दासी के साथ थोड़ी देर मन बहला लिया जाय।"

"मुझे इच्छा नहीं है।"

"हो सकता है तुम अपनी औरतों से ऊब चुके हो," पेट्रोनियस कुछ देर सोचकर बोला। फिर उसने एक बार यूनिस और इरास की ओर गौर से देखा और यूनिस के नितम्बों पर हाथ रखते हुए बोला, "लेकिन इस खूबसूरत बला को देखो। कुछ दिन हुए केपिटो मे मैंने तीन खूबसूरतों औरतों की अदला-बदली की है। लेकिन इसके जैसी सर्वांग सुन्दरी मुश्किल से मिलेगी। पता नहीं, मैं क्यों अब तक इससे प्रभावित नहीं हो सका। लो, मैं इसे तुम्हें दे सकता हूँ, इसे ले जाओ।"

यह सुनकर यूनिस एकदम पीली पड़ गई और डरी हुई आँखों से विनिसियस की ओर देखती हुई उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी। लेकिन वह अपने सिर को थामकर जैसे चिढ़ते हुए बोला, "नहीं-नहीं, मुझे यह नहीं चाहिए। मुझे कोई नहीं चाहिए! शुक्रिया, लेकिन मैं इसे नहीं लूँगा। मैं उसे खोजने के लिए शहर के चक्कर लगाने जा रहा हूँ। इन लोगों से कहो कि मेरे लिए एक लबादा और नकाब ले आयें। मैं नदी के पार जाऊँगा। काश, मैं एक बार यूरसस को पकड़ पाता!"

वह फौरन बाहर निकल गया। पेट्रोनियस ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। लेकिन लीजिया को छोड़कर और किसी औरत को स्वीकार न करने की विनिसियस की जिद्द को उसने यह सोचकर टालना चाहा कि इस समय वह कोई चुनाव करने की हालत में नहीं है। इसलिए वह अपने दासी से बोला, "यूनिस, जाओ अच्छी तरह नहा-धो लो और फिर खूब अच्छी तरह से इत्र वगैरह लगाकर विनिसियस के घर चली जाओ।"

लेकिन यूनिस उसके घुटने पकड़कर बैठ गई और उसे अपने से दूर न भेजने की प्रार्थना करने लगी। वह विनिसियस के यहाँ जाने की बजाय यहीं रहना चाहती थी। भले ही उसे पेट्रोनियस की सब से प्रिय दासी के पद से हटा कर भट्ठी में लकड़ी झोंकने का काम दे दिया जाता। वह यहाँ से जा नहीं सकती! वह उससे दया की भीख माँगने लगी। वह हर रोज कोड़े खाने को तैयार थी, लेकिन उससे दूर नहीं जा सकती थी।

पेट्रोनियस आश्चर्य से इस दासी की बात सुन रहा था, जो उसकी आज्ञा न

मानने की हिम्मत दिखा रही थी और कह रही थी, "मैं नहीं जा सकती, मैं नहीं जाऊँगी !" एक दासी इस तरह की हिम्मत करे यह रोम में आज तक नहीं सुना गया था। पहले तो उसे लगा कि उसने ठीक से सुना नहीं है लेकिन फिर उसकी भौंहें चढ़ गयीं। वह इतना सुरुचिपूर्ण था कि क्रूरता से हमेशा दूर रहता था। उसके दास-दासियों को अन्यत्र की बजाय उसके यहाँ बहुत आजादी थी, लेकिन इसके लिए शर्त यह थी कि वे काम बहुत अच्छी तरह से करते थे। और अपने मालिक की आज्ञा को जैसे ईश्वर की आज्ञा मानते थे। अगर वे अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर पाते थे तो रिवाज के अनुसार पेट्रोनियस को भी उन्हें सजा देने का हक था। इसके अलावा वह अपनी बात का विरोध नहीं सह सकता था। इसलिए कुछ देर तक वह अपने पैरों के पास झुककर रोती हुई उस लड़की को देखता रहा और फिर बोला, "जाओ, और टाइरेसियस को बुला ले आओ !"

वह गई और उसे बुला ले आई। यह उसकी कोठी का चौकीदार था। पेट्रोनिअस ने उससे कहा, "यूनिस को ले जाओ और इसे पच्चीस कोड़े मारो, लेकिन देखना इसके चमड़े पर चोट न आये।"

यह कहकर वह अपने पुस्तकालय में चला गया और वहाँ गुलाबी संगमरमर की एक मेज पर बैठ कर अपनी किताब लिखने लगा।

लेकिन वह अधिक देर तक नहीं लिख सका, क्योंकि लीजिया के अचानक भागने का और राजकुमारी के अस्वस्थ हो जाने का उसके दिमाग पर बड़ा प्रभाव पड़ा था। कहीं अगर सीज़र ने यह मान लिया कि लीजिया के टोटके से राजकुमारी बीमार पड़ी हैं तो पेट्रोनियस भी मुसीबत में फँस सकता था, क्योंकि उसके कहने पर ही सीजर ने लड़की को महल में मँगवाया था। इसलिए वह मौका मिलते ही सीजर को यह समझाने की कोशिश करेगा कि यह बेकार की बात है। इसके अलावा वह महारानी पोपिया पर भी भरोसा रखता था। इधर पोपिया उसे कुछ चाहने लगी थी। इसलिए उसने इस तरह के डर की कोई परवाह नहीं की और भोजन के बाद राजमहल जाने की सोची।

जब वह भोजन के कमरे में पहुँचा तो उसे दूसरे नौकरों के साथ-साथ यूनिस भी दिखाई दी। उसे देखकर उसने पूछा, "तुमने कोड़े खाये ?"

वह फिर से उसके पैरों पर गिर पड़ी और उसका वस्त्र चूमकर बोली, "हाँ मालिक, मैंने कोड़े खा लिये।" उसकी आवाज जैसे खुशी और आभार से काँप रही थी। उसने यह समझा था कि कोड़े खा लेने का मतलब यह हुआ कि अब उसे इस घर में रहने दिया जायगा। पेट्रोनियस भी यह समझ गया, और उसके इस हठ पर आश्चर्य करने लगा। लेकिन वह मानव प्रकृति का इतना अच्छा ज्ञाता था

कि अच्छी तरह जानता था कि सिवा प्रेम के और कुछ इस तरह की जिद्द के पीछे नहीं हो सकता।

"तो यहाँ तुम किसी से प्यार करती हो?"

दासी ने आँसुओं से भरी आँखें उसकी ओर उठायीं और अस्पष्ट स्वर में कहा, "हाँ मालिक।"

उसकी आँखें, उसके बिखरे हुए सुनहरे बाल, और उसका दुःख भरा चेहरा सब कुछ इतना खूबसूरत लग रहा था कि पेट्रोनिअस को उससे कुछ सहानुभूति हो आई। उसने अपने गुलामों की ओर इशारा करके पूछा, "इनमें से कौन है तुम्हारा प्रेमी?"

यूनिस ने कोई जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप अपने मालिक के पैरों की ओर सिर झुकाये खड़ी रही। पेट्रोनिअस ने एक बार अपने गुलामों की ओर देखा, जिनमें से कुछ खूबसूरत भी थे। उनके चेहरे से कुछ भी जाहिर नहीं हो रहा था। हालाँकि सब अर्थपूर्ण ढंग से मुसकरा रहे थे। उसने अपने सामने झुकी हुई यूनिस की ओर एक क्षण देखा और फिर वह बिना बोले चुपचाप खाने के कमरे की ओर चला गया।

भोजन के बाद वह पालकी में बैठकर पहले राजमहल गया और फिर क्राइ-थोमिस के यहाँ पहुँचा, जहाँ वह काफी देर रह गया। लौटने पर उसने टाइरेसियस से पूछा, "क्या यूनिस पर कोड़े पड़े थे?"

"हाँ, मालिक। लेकिन मुझे हुक्म था कि उसकी चमड़ी पर निशान न बनने पाये।"

"क्या मैंने उसके बारे में और कोई हुक्म नहीं दिया था?"

चौकीदार कुछ घबराकर बोला, "नहीं मालिक।"

"खैर, ठीक है। यह बताओ, मेरे गुलामों में से उसका प्रेमी कौन है?"

"कोई नहीं, हुजूर।"

"तुम्हें उसके बारे में और क्या मालूम है?"

टाइरेसियास ने काँपती हुई आवाज में जवाब दिया, "हुजूर, यूनिस रात में कभी अपने कमरे से गायब नहीं होती। हुजूर, जब आप नहाकर निकल जाते हैं तब वह कभी हम लोगों के साथ गुसलखाने में नहीं रहती। दूसरी दासियाँ उसका मजाक बनाती हैं।"

"बस, इतना काफी है। देखो, विनिसिअस को मैंने उसे भेंट किया था, लेकिन उसने उसे स्वीकार नहीं किया। इसलिए वह यहीं रहेगी। अब तुम जा सकते हो।"

"हुजूर, उसके बारे में मैं कुछ और बताऊँ ?"

"मैंने तो तुमसे पहले ही कह दिया कि बताओ।"

"हुजूर, सभी गुलाम उस लड़की के बारे में बातचीत कर रहे थे, जिसके लिए लड़ाई चल रही है और जो सरदार विनिसियस के साथ रहने वाली थी। जब आप चले गये तो यूनिस मेरे पास आई और कहने लगी कि वह एक ऐसे आदमी को जानती है जो उसका पता बता सकता है।"

"अच्छा, कौन है वह ?"

"हुजूर, मैं उसे नहीं जागता।"

"अच्छा, तो कल उस आदमी को बुलाना और विनिसियस से मिला देना। जाओ विनिसियस से कहो कि कल सुबह मैं उससे मिलना चाहता हूँ, वह यहाँ आ जाय।"

## १३

विनिसियस ने जब टाइरेसियास से यह सुना कि एक आदमी है जो लीजिया का पता बता सकता है तो दूसरे दिन वह फौरन भागा-भागा पेट्रोनियस के पास पहुँचा और उससे सवाल करने लगा।

पेट्रोनियस बोला, "एक कोई आदमी है। हम लोग उसका इस्तेमाल कर सकते हैं। यूनिस उसे जानती है। वह अभी यहाँ मेरा टोगा ठीक करने के लिए आनेवाली है। वही हमें उसके बारे में बतायेगी।"

"यूनिस, वही लड़की, जिसे तुम कल मुझे दे रहे थे ?"

"वह लड़की जिसे लेने से तुमने इनकार कर दिया था, और इसके लिए मैं तुम्हारा आभारी हूँ। क्योंकि उसके जैसा टोगा सजानेवाला रोम भर में कोई दूसरा नहीं होगा।"

इतने में वह लड़की आ गई और टोगा खोलकर अपने मालिक के कन्धों पर सजाने लगी। जब वह उसका टोगा ठीक कर रही थी तो उसने उसके गुलाबी हाथों और उसकी गर्दन के मोतिया रंग को देखा और पूछा, "यूनिस, कोई आदमी है जिसके बारे में कल तुम टाइरेसियास को बता रही थी ?"

"हाँ, मालिक।"

"उसका नाम ?"

"हुजूर, चिलोन चिलोनीडिस।"

"क्या काम करता है वह ?"

"मालिम, वह साधू और वैद्य है और ज्योतिषी भी है। वह आदमी का भाग्य और भविष्य की बातें बता सकता है।"

"तो उसने तुम्हारा भी भविष्य बताया है ?"

यूनिस के चेहरे और गर्दन पर हल्की गुलाबी फैल गई। वह बोली, "हाँ मालिक।"

"और क्या बताया है उसने ?"

"यही कि मुझे तकलीफ सहनी होगी और यह कि मैं सुख से रहूँगी।"

"कल तुमने टाइरेसियास के हाथों तकलीफ सही, और सुख शायद तुम्हें मिलने वाला है ?"

"मालिक, सुख तो मुझे मिल गया।"

"कैसे ?"

वह धीरे से बोली, "मैं यहाँ रह जो गई।"

पेट्रोनियस ने उसके खूबसूरत बालों पर हाथ फेरते हुए कहा, "तुमने टोगा बहुत अच्छा सजाया, मैं तुमसे खुश हूँ।"

पेट्रोनियस के हाथ का स्पर्श पाकर यूनिस की आँखें नम हो गयीं। और गला भर आया।

पट्रोनियस और विनिसियस वहाँ से बाहर बरामदे में आये, जहाँ चिलन उनका इन्तजार कर रहा था। उन्हें आते देखकर उसने फर्शी सलाम किया।

यह आदमी देखने में कुछ अजीब-सा लगता था, इसे देखकर हँसी भी आती थी और तरस भी आता था। वह अभी बूढ़ा नहीं हुआ था, हालाँकि उसके घुँघराले बाल और उसकी गन्दी-सी दाढ़ी कुछ-कुछ सफेद हो चली थी। उसका पेट धँसा हुआ था और कन्धे एक तरफ गोल थे। लगता था जैसे वह कुबड़ा हो। उसके चेहरे में बन्दर और लोमड़ी जैसी कुछ आकृति थी। उसके चमड़े पर कुछ पीली-पीली-सी फुन्सियाँ थां और बहुत शराब पीने से उसके चेहरे का रंग कुछ काला पड़ रहा था। कपड़े-लत्ते से वह बहुत ही दरिद्र मालूम होता था, पता नहीं वह सचमुच गरीब था या गरीब होने का स्वांग रचता था। उसे देखकर पेट्रोनियस को होमर के महाकाव्य के एक पात्र थेरसिटीज की याद हो आई। वह कुछ कहने ही जा रहा था कि विनिसियस ने बीच में ही पूछा, "तुम्हें मालूम है कि तुम्हें यहाँ किस लिए बुलाया गया है।"

चिलन बोला, "हुजूर, कल एक लड़की जिसका नाम लीजिया है और जिसे ओलस ने पाला है, उड़ा ली गई। सीज़र के महल से आपके गुलाम उसे ला रहे थे। मैं उसे खोज सकता हूं और बता सकता हूँ कि वह कहाँ छिपी है।"

विनिसियस खुश होकर बोला, "बहुत अच्छा। तुम इसके लिए करोगे क्या ?"

चिलन शरारत से हँसकर बोला, "जो कुछ करना है वह तो आपके हाथ में है हुजूर, मेरे पास तो सिर्फ दिमाग है।"

पेट्रोनियस भी उसकी बात से खुश था। उसने पूछा, "तुम यूनिस को कैसे जानते हो ?,'

"हुजूर, मेरी शोहरत बढ़ रही है और वह भी मुझे अपना हाथ दिखाने आई थी।"

"क्या पूछा था उसने तुमसे ?"

"यही कुछ मोहब्बत का मामला था, हुजूर। वह जिसे प्यार करती है, उससे उसे जवाब नहीं मिलता। वह चाहती थी कि इसका कोई उपाय हो जाय।"

"और तुमने उपाय कर दिया ?"

"हाँ, मालिक। मैंने उसको एक तावीज दिया है, जिसकी वजह से उसका प्रेमी उसकी ओर जरूर आकर्षित होगा।"

"और इसके लिए तुमने उससे काफी इनाम लिया होगा ?"

"उसकी खुशी ही मेरा इनाम है, हुजूर। असल में बात यह है सरकार, कि मेरे दाहिने हाथ की दो उँगलियाँ कट गई हैं। अब मैं पैसा जमा करके किसी आदमी को नौकर रखना चाहता हूँ, जो मेरी विद्या को कागज पर उतार सके ताकि आगे आने-वाली पीढ़ी मेरी विद्या से लाभ उठा सके।"

"और तुम्हारा काम क्या है ?"

"जो कुछ होता है उसका ज्ञान द्वारा पता लगाना और लोगों को जो वे पूछना चाहते हैं वह बताना। जब कोई मँहगी कीमत में खरीदा हुआ गुलाम भाग निकलता है तो उसका पता कौन बताता है ? हुजूर का यह बन्दा ही तो ! जब दीवारों पर महारानी पोपिया के बारे में भद्दी बातें लिखी जाती हैं तो उन्हें लिखनेवाले का पता कौन बताता है ? सम्राट् के खिलाफ जो किताबें लिखी जाती हैं और जिन किताबों में उनकी हँसी उड़ाई जाती है उन्हें कौन खोजता है ? सिनेटरों और सरदारों के घरों में क्या कहा-सुना जाता है इसका पता कौन देता है ? कीमती खतों को, जिन्हें नौकरों के हाथ नहीं भेजा जा सकता कौन ठिकाने पर पहुँचाता है ? गुलामों के जरिये काम की बात कौन निकाल लेता है ? घर में क्या हो रहा है इसका रत्ती-रत्ती पता कौन बता सकता है ? शहर की हर गन्दी गली और छिपने की जगहों का पता किसे मालूम है ? आपके इस गुलाम ही को तो !"

पेट्रोनियस ने उसे टोकते हुए कहा, "बस-बस, काफी हो गया ! हम तो यही जानना चाहते थे कि तुम कौन हो।"

विनिसियस को उसकी बात सुनकर बड़ा सन्तोष था, क्योंकि वह जानता था कि अगर ऐसे आदमी को लीजिया के छिपने की जगह का पता लगाने का काम सौंपा गया तो वह तब तक चैन नहीं लेगा जब तक कि उसे खोज नहीं निकालेगा। उसने पूछा, "तो तुम्हें और कुछ इस मामले के बारे में जानने की जरूरत है?"

"नहीं हुजूर, बस मुझे तो मसाला चाहिए।"

"मसाला?"

उस यूनानी बूढ़े ने अपनी हथेली फैलाकर उस पर पैसे गिनने का संकेत किया और फिर एक आह भरकर कहा, "सरकार, क्या करूँ जमाना ही ऐसा है।"

"तो तुम्हें पैसा चाहिए?"

वह बोला, "हाँ सरकार, मैं एक गरीब फिनासफर हूँ, और आपके पास कमी किस बात की है!"

विनिसियस ने अपना बटुआ उसकी ओर फेंक दिया, जिसे उसने अपने दाहिने हाथ की तीन उँगलियों में पकड़ लिया। फिर वह बोला, "सरकार मैं इस मामले के बारे में आपसे ज्यादा जानता हूँ। मैं यहाँ खाली हाथ नहीं आया हूँ। मै जानता हूँ कि इस लड़की को ओलस के आदमी नहीं ले गये हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि वह राजमहल में नहीं है, यहाँ सब लोग राजकुमारी के पीछे लगे हैं और मैं यह भी जानता हूँ कि आप सिपाहियों और दूसरे लोगों की बजाय मुझसे क्यों मदद लेना चाहते हैं। मुझे पता है कि वह अपने ही देश के एक गुलाम की मदद से भागा है। उस आदमी को किसी और ने मदद नहीं दी है, क्योंकि कोई गुलाम इसकी हिम्मत नहीं कर सकता। उसे अगर मदद मिली है तो अपने मजहब के लोगों से मिली है।"

यह सुनकर पेट्रोनियस बीच में ही बोला, "विनिसियस सुन रहे हो न! मैंने कहा था न?"

"वह लड़की उसी देवता की पूजा करती है जिसकी कि पोम्पोनिया करती है। मैंने यह भी सुना है कि पोम्पोनिया को अपने मजहब के लिए मुकदमों में फँसाया जा चुका है लेकिन मैं अभी तक यह पता नहीं लगा पाया हूँ कि वह देवता कौन-सा है और उसे माननेवाले क्या कहलाते हैं। अगर मुझे उनका पता चल जाय तो मैं भी उन्हीं में जा मिलूँ और चुटकी बजाते हुए उनका विश्वास पा सकता हूँ। लेकिन साहब, आप तो एक पखवारे तक ओलस के घर रहे हैं क्या आप इस बारे में कोई राय नहीं दे सकते?"

विनिसियस बोला, "नहीं!"

"अच्छा हुजूर, आपने मुझसे कई सवाल पूछे और मैंने उनका जवाब भी दिया। अब मैं आपसे पूछना चाहता हूँ। यह बताइये कि आपने वहाँ रहते हुए क्या

कभी उनकी पूजा के सिलसिले में कोई मूर्ति या तावीज या किसी तरह की बलि वगैरह होते देखी है ? क्या अपने उन लोगों को कुछ ऐसे निशान बनाते कभी देखा है जिन्हें उन्हीं के मजहब के लोग समझ सकते हों ?"

"निशान ? जरा रुको। हाँ ! एक दिन मैंने लीजिया को देखा था कि वह बालू पर मछली की शक्ल बना रही थी।"

"मछली ? अच्छा अच्छा, ठीक है ! एक ही बार या एक बार से ज्यादा ?"

"एक बार।"

"और यह तो आपको ठीक से मालूम है न कि वह मछली ही थी ?"

विनिसियस ने कुछ उत्सुक होते हुए पूछा, "हाँ, इसका मतलब तुम कुछ जानते हो ?"

"जी हाँ, खूब अच्छी तरह !" फिर वह एक बार झुका और सलाम करके बोला, "सरकार, भगवान आपका भला करें, और आपको खुश रखें। मैं अब जाता हूँ।" यह कहकर वह वहाँ से चला गया।

"इस जोगी के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?" पेट्रोनियस ने पूछा।

विनिसियस ने खुश होकर कहा, "मुझे लगता है कि यह लीजिया को खोज लेगा। लेकिन साथ ही मुझे यह भी लगता है कि यह छँटा हुआ बदमाश है और धूर्तों का सरदार है।"

चिलन को पेट्रोनियस की ओर से एक लबादा इनाम मिला था जिसे ओढ़ कर और विनिसियस के बटुए को खनखनाता हुआ वह खुशी-खुशी चला जा रहा था। वह पेट्रोनियस के यहाँ से निकलते ही दूसरी ओर मुड़ गया, ताकि किसी को यह न मालूम हो कि वह कहाँ से आ रहा है। इधर-उधर घूमता-घामता वह सुबरा की ओर मुड़ गया। अपने मन में उसने कहा, "पहले मुझे किसी के साथ चलकर थोड़ा गला तर करना चाहिए। तो उसने मछली की शक्ल बनाई थी ? काश, मैं इसका मतलब जान पाता ! मैं इसका पता लगा ही लूँगा। इसी तरह रुपयों से भरा हुआ एक बटुआ मुझे और मिल जाय और मेरा काम बन जाय ! मैं किसी गुलाम को खरीद लाऊँ। लेकिन उस्ताद, किसी आदमी का बजाय किसी औरत को गुलामबाजार से क्यों न खरीद लाया जाय ? और कहीं वह यूनिस की तरह खूबसूरत निकली तो क्या कहना ! मैंने यूनिस को अपने पुराने कोट से एक सूत का टुकड़ा तावीज में बाँधने को दे दिया और कह दिया कि यह वीनस के मन्दिर से आया है। वह भी कैसी बेवकूफ है ! लेकिन पेट्रोनियस उसे मुझे इनाम में दे दे तो मैं उसे अपने यहाँ रख लूँ। हाँ प्यारे चिलन, तुम भी पूरे घुटे हुए हो ! कई साल तुम्हें अकेले रहते हुए हो गये, माँ-बाप तो बचपन में ही अनाथ करके चल बसे थे। तो क्यों न तुम एक आध गुलाम रख लो ? उसके रखने के लिए जगह की भी तो जरूरत होगी, और विनिसियस उसके

लिए एक घर लेगा ही। अच्छा है तुम भी वहीं जा बसो। विनिसियस ही उसके खाने-कपड़े का भी प्रबन्ध कर देगा। कैसी तकदीर है अपनी! महँगाई को देखो तो आसमान चूम रही है। लो, अपना शराबखाना आ गया! बड़ी मजेदार जगह है यह भी। हर तरह की खबर यहाँ से मिल सकती है।

वह शराबखाने में घुस गया और एक बोतल काली शराब लाने का हुक्म देकर आगे बढ़ा, लेकिन शराबवाले ने कुछ ऐसी सूरत बनाकर उसकी ओर देखा कि फौरन उसने जेब से बटुआ निकाला और सोने का एक सिक्का मेज पर फेंककर कहा, "स्पोरस! देखो यह आज की कमाई।"

यह सुनकर स्पोरस की गोल आँखें और भी गोल हो गईं। उसने शराब उसके सामने पेश कर दी। चिलन ने शराब में एक उँगुली डुबोकर मेज पर मछली की शक्ल बनायी और पूछा, "जानते हो, इसका क्या मतलब है?"

"क्या बनाया, मछली? भला यह भी कोई सवाल है! यह तो मछली है, मछली ही तो है!"

"अरे, तुम तो बिल्कुल गधे हो—मछली तो तुम्हें नजर आयेगी ही, शराब में तुम इतना पानी मिलाते हो कि इसमें आसानी से एक मछली रह सकती है। अरे मूर्ख, यह फलसफा है, इस निशान का मतलब होता है खुशनसीबी! अगर तुमने इसे पहचान लिया होता, तो आज तुम्हारे नसीब खुल जाते। इसीलिए तो तुमसे कहता हूँ कि जरा फिलासफरों की कदर किया करो, वरना याद रखो, मैं कहीं चला जाऊँगा और तुम पछताओगे! अभी-अभी मेरा एक मित्र पेट्रोनियस मुझे यह शराबखाना छोड़ने की राय दे रहा था।"

## १४

अगले कुछ दिनों तक चिलन का कोई पता न लगा। विनिसियस को लीजिया की याद और अधिक सताने लगी थी, क्योंकि अब उसे मालूम हो गया था कि उसके बारे में उसकी क्या राय है। इसलिए वह खुद अब उसकी खोज में निकलता था। सीजर से उसने न तो कोई मदद माँगी और न माँगना ही चाहता था। सीज़र भी राजकुमारी की बीमारी से बेचैन था।

राजकुमारी की तबियत कुछ ठीक ही नहीं हो पा रही थी, बलि चढ़ायी गई, प्रार्थना और भजन हुए, मनौतियाँ मानी गईं। डाक्टरों ने अपनी हिकमत लगायी यहाँ तक कि जादू-टोनेवाले और ओझा लोग भी बुलाये गये, लेकिन सब बेकार, कोई कुछ न कर सका। एक हफ्ते की बीमारी के बाद राजकुमारी चल बसी।

सीज़र के दरबार और शहर में उदासी छा गई। बच्ची के जन्म पर सीजर खुशी से पागल हो गया था, अब उसकी मृत्यु पर वह जैसे दुःख से पागल था। दो दिन तक उसने खाना ही नहीं खाया। महल में हमेशा सिनेटरों और दूसरे लोगों की भीड़ लगी रहती थी जो मातमपुर्सी के लिए और उसे धीरज बँधाने के लिए आते थे, लेकिन वह किसी से नहीं मिलता था। सिनेट की एक असाधारण बैठक हुई और उसमें राजकुमारी को एक विशेष देवी घोषित किया गया, एक मन्दिर उसके नाम कर दिया गया, जिसमें एक पुजारी उसकी पूजा करने लगा। दूसरे मन्दिरों में भी उसके लिए पूजा-पाठ हुआ और बलि चढ़ायी गई। कीमती धातुओं की उसकी मूर्तियाँ बनवायी गईं। उसकी अन्त्येष्ठि क्रिया बड़ी धूम-धाम से हुई। सम्राट् को इस तरह दुख से पागल देखकर लोग दंग रह गये, उसके साथ उन्होंने भी आँसू बहाये और आसमान की ओर हाथ उठाकर दुआ माँगी, लेकिन असल में वे इस सारी धूमधाम का मजा ले रहे थे।

पेट्रोनियस बहुत परेशान था। पूरे शहर में यह हल्ला था कि महारानी पोपिया का कहना है कि राजकुमारी की मृत्यु का कारण किसी का जादू-टोना है। वैद्य-हकीम भी अपनी असफलता को छिपाने के लिए इसी कहानी का आसरा ले रहे थे और पुजारी लोग भी, जिनका पूजा-पाठ बेकार सिद्ध हुआ था, इसी बात को दोहराते थे। जादूगर लोगों की हालत पतली थी, उनके प्राण सूख रहे थे। आम लोग भी घबराये हुए थे। पेट्रोनियस भी खुश था कि लीजिया इस मौके पर गायब थी, लेकिन वह चाहता था कि ओलस के परिवार को हानि न हो और अपनी और विनिसियस की हिफाजत की भी उसे फिक्र थी, इसलिए महल के सामने शोकसूचक प्रतीक के रूप में रखा हुआ सनोवर का पेड़ ज्यों ही हटाया गया, वह फौरन सीजर के पास जा पहुँचा। उस दिन सीजर के मित्र और सिनेटर अपनी सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए वहाँ इकट्ठे हुए थे। सबसे वह यह जानना चाहता था कि इस जादू-टोनेवाले किस्से का नीरो के ऊपर क्या असर है।

लोग आते थे और नीरो के सामने अपनी सहानुभूति प्रकट करते थे, लेकिन वह चुपचाप बिल्कुल पत्थर की तरह निर्विकार चेहरा बनाये, शून्य में देखता हुआ बैठा रहता था। यह साफ जाहिर था कि हालाँकि उसे राजकुमारी की मृत्यु का दुःख था, लेकिन इस समय असल में उसकी नजर इस बात पर थी कि जो लोग हाजिर हुए हैं, उन पर उसके दुःख का क्या असर पड़ा है। पेट्रोनियस को देखते ही वह कुछ सँभला और दुःख भरी आवाज में बोला, "हाय, तुमने भी उसकी मौत का रास्ता साफ किया! तुम्हारे ही जरिये पापी आत्मा ने महल में प्रवेश किया और अपनी एक नजर में ही राजकुमारी की जान ले ली! मेरा तो सर्वनाश हो गया, मैं तो इस दुनिया में नहीं रहना चाहता!" और वह जोर-जोर से रोने लगा।

लेकिन पेट्रोनियस ने फौरन एक तरकीब सोची। उसने हाथ बढ़ाकर नीरो के

गले में पड़ा हुआ दुपट्टा खींच लिया और उसे मुँह में लेते हुए बहुत ही करुणा-जनक आवाज में कहा, "प्रभू, आप सारे रोम में आग लगा दीजिये, अपने दुःख के एवज में आप पूरी दुनिया को भस्म कर दीजिये, लेकिन हम पर कृपा कीजिये और अपने मधुर स्वर को हमारे लिए सुरक्षित रखिये। हमें आपका कंठ-स्वर इतना प्रिय है कि हम उसके लिए सब कुछ सहने को तैयार हैं!"

वहाँ खड़े सभी लोग यह सुनकर अवाक् रह गये। खुद नीरो की समझ में नहीं आया कि क्या करे। लेकिन पेट्रोनियस ने हिम्मत नहीं हारी वह जानता था कि वह क्या कर रहा है, क्योंकि सीजर ने अपने दो मुसाहिबों को हुक्म दे रखा था कि ज्यों ही वह कभी तेज आवाज में बोले तो वे उसका मुँह बन्द कर दें, और इस तरह उसके मधुर स्वर को नष्ट होने से बचायें।

पेट्रोनियस ने अपने उसी अन्दाज में कहा, "सीजर, राजकुमारी की अनुपस्थिति से हमें बहुत हानि हुई है। लेकिन आपके स्वर के रूप में हमें जो अतुल सम्पत्ति मिली है, कम से कम उसे तो हमसे न छीनिये!"

नीरो का चेहरा कुछ काँपा और उसकी आँखों से आँसू बह चले। वह पेट्रोनियस की बाँह पर झुक आया और उसके सीने पर अपना सिर रखते हुए सिसकते-सिसकते बोला, "बस तुम्हीं एक हो, तुम्हीं मेरे एक मात्र मित्र हो, जिसे इसकी इतनी फिक्र है। आह, मेरे पेट्रोनियस, तुम्हीं मेरे एक मात्र मित्र हो!"

यह सुनकर तिजेलिनस ईर्ष्या से जल उठा। लेकिन पेट्रोनियस कहता रहा, "आप उस जगह पधारिये, जहाँ राजकुमारी ने सबसे पहले इस पृथ्वी पर पदार्पण किया था, वहीं आपको तब अतुल आनन्द मिला था। आज भी आपको वहीं सांत्वना मिल सकेगी। आप एन्तीयम चलिए, वहाँ समुद्री हवा आपके दिव्य स्वर को ठीक कर देगी। हम लोग, जो आपके वफादार मित्र और सेवक हैं, आपके साथ चलेंगे और गा-बजा कर आपका मनोरंजन करेंगे।"

"हाँ," नीरो ने दुःखी स्वर में कहा। मैं उसके सम्मान में एक भजन लिखूँगा और उसका सुर भी निकालूँगा।"

"और फिर आप बाए में धूप का आनन्द लेंगे।"

"और कुछ दिन यूनान में भी मनोरंजन करेंगे।"

"हाँ, कविता और संगीत से अपना मन बहलायेंगे।"

इस तरह बातचीत का दौर चल पड़ा। दुःख का वातावरण अवश्य था, लेकिन अब भविष्य की योजनाएँ बन रही थीं, यात्रा, कला आदि से मन बहलाने की योजनाएँ बनने लगी थीं और तय होने लगा कि अरमीनियाँ के राजा जो शीघ्र ही आनेवाले हैं, स्वागत किस प्रकार किया जाय। तिजेलिनस ने एक बार और कोशिश की कि जादू-टोनेवाली बात चल पड़े, लेकिन अब पेट्रोनियस को अपनी

विजय का विश्वास था। उसने फौरन बहस छेड़ दी, "तिजेलिनस, क्या तुम्हारे ख्याल में देवताओं पर भी जादू-टोने का असर हो सकता है ?"

वह सकपकाकर बोला, "सीजर ने ही कहा था।"

"वह असल में उनका दुःख बोला था, सीजर नहीं बोले थे, लेकिन तुम्हारे ख्याल से क्या यह ठीक है ?"

"नहीं तो, देवता जादू-टोने से अधिक शक्तिमान होते हैं।"

"तो तुम्हारा मतलब यह है कि तुम सीजर और उनके परिवार को देवता नहीं मानते ?"

तिजेलिनस चुप रह गया। उससे कुछ कहते न बना। पेट्रोनियस ने राजमहल से लौटते समय रास्ते में विनिसियस से मुलाकात की और उसे सारी घटना के बारे में बताया।

"इस तरह मैंने न सिर्फ ओलस और उसकी पत्नी को, बल्कि हम दोनों को और लीजिया को भी खतरे से बचा लिया। अब वे लीजिया के पीछे नहीं पड़ेंगे। मैंने खुद उस पीली दाढ़ी के बन्दर को सलाह दी कि वह जरा समुद्र किनारे की हवा खा आये। इस बीच हम लोग जिस तरह चाहेंगे लीजिया की खोज करेंगे और उसे किसी सुरक्षित स्थान में पहुँचा देंगे। तुम्हें जो कुछ भी पता चले, वह मुझे भी बता देना, क्योंकि मुझे भी नीरो के साथ जाना पड़ेगा।"

"ठीक है।"

वे लोग एक-दूसरे से विदा ले ही रहे थे कि इतने में एक दास ने आकर बताया कि चिलन नीचे बैठा उनका इंतजार कर रहा है और उनसे मिलना चाहता है। विनिसियस ने उसे वहीं बुला भेजा।

उसने आते ही अभिवादन किया, "मालिक की जय हो, भगवान आपको खुश रखे, दुनिया में आपका नाम और यश हो !" पेट्रोनियस ने भी इसी तरह उसका जवाब दिया, "खुश रहो, गाँठ के कोरे और बात के धनी, तुम्हारी अक्ल बड़ी है !"

लेकिन विनिसियस से अधिक रुकते न बना। उसने पूछा, क्या "खबर लाये हो ?"

"सरकार, सब से पहले तो मैं आपके लिए आशा का सन्देश लाया हूँ, और फिर मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि उस लड़की को जल्दी ही खोज लिया जायगा !"

"इसका मतलब यह हुआ कि अभी तक तुमने उसका पता नहीं पाया ?"

"कहाँ सरकार ! लेकिन मैंने उस निशान का मतलब मालूम कर लिया है, जिसे उसने आपके आगे बनाया था। मुझे मालूम हो गया है कि कौन लोग उसे ले गये हैं, और मैं यह भी जानता हूँ कि वे लोग किस देवता के पूजक हैं।"

विनिसियस कुछ जल्दबाजी करना चाहता था, लेकिन पेट्रोनियस ने कन्धे पर हाथ रखकर उसे रोक दिया और कहा, "हाँ, कहे जाओ।"

"तो हुजूर, आपको ठीक से मालूम है कि उस लड़की ने आपके सामने बालू पर एक मछली की शक्ल बनायी थी?"

"हाँ।"

"तो वह ईसाई है, क्रिश्चियन है और क्रिश्चियन लोग ही उसे उड़ा ले गये हैं।"

कुछ देर सब चुप रह गये। अन्त में पेट्रोनियस बोला, "जियो, मेरे दोस्त! विनिसियस ने तो वादा किया है कि अगर तुम उस लड़की को खोज लाते हो तो तुम्हें बहुत बड़ी रकम इनाम में मिलेगी, लेकिन याद रखो अगर तुमने बहकाने की कोशिश की तो उतने ही कोड़े भी खाने पड़ेंगे! अगर इनाम तुम्हें मिला तो एक नहीं तुम तीन नौकर रख सकोगे, और अगर कोड़े खाने पड़े तो तुम्हारा फलसफा कुछ काम नहीं आयेगा और तुम कहीं के न रहोगे!"

चिलन बोला, "हाँ हाँ सरकार, वह लड़की ईसाई है।"

"देखो चिलन, बेवकूफ बनाने की कोशिश न करो। क्या तुम हमसे यह मनवाना चाहते हो कि पोम्पोनिया और लीजिया उस मजहब को माननेवाली हैं, जिसके माननेवाले मानवता के शत्रु हैं, जिनके बारे में सुना जाता है कि वे कुओं और तालाबों में जहर मिला देते हैं, जो गदहों की पूजा करते हैं, जो अपने बच्चों की बलि चढ़ा देते हैं और बड़े ही अनाचारी होते हैं? देखो, ठीक से सोच लो, कहीं यह सब बकवास तुम्हारे ही सिर न आ गिरे!"

चिलन ने हाथ के इशारे से यह बताने की कोशिश की कि वह निरपराध है। फिर वह बोला, "सरकार, आप ही देखिये न। आप जरा इस वाक्य को यूनानी भाषा में कहिये—जीसस क्राइस्ट, ईश्वर के पुत्र, हमारे रक्षक।"

पेट्रोनियस से इसे यूनानी भाषा में कहा और फिर बोला, तो "इसे क्या हुआ?"

"अच्छा अब आप इन शब्दों के पहले अक्षरों को लीजिये और फिर उनसे एक नया शब्द बनाइये।"

"मछली!" पेट्रोनियस ने आश्चर्य से कहा।

"इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि मछली ईसाई धर्म का प्रतीक है!" चिलन ने गर्व से कहा।

वे लोग चुप रह गये, क्योंकि अब चिलन की बात में कुछ सार नजर आने लगा था। दोनों मित्रों के आश्चर्य की सीमा नहीं थी। पेट्रोनियस ने कहा, "विनि-

सियस, कहीं तुमने गलती तो नहीं की ? क्या लीजिया ने सचमुच मछली की शक्ल बनायी थी ?"

विनिसियस परेशान होकर बोला, "अजीब चक्कर है ! अरे भाई, अगर उसने कोई दूसरी चीज बनायी होती, जैसे चिड़िया बनायी होती तो मैं कहता कि चिड़िया बनायी थी।"

"हुजूर, वह लड़की ईसाई है !" चिलन ने दोहराया।

"तो इसका मतलब यह हुआ कि पोम्पोनिया और लीजिया भी वही सारे कुकर्म करती हैं, जो ईसाई कहते हैं—कुओं में जहर मिलाना, बच्चों को पकड़ ले आना और उनकी बलि चढ़ा देना ! कैसी बेकार की बात है ! विनिसियस, मेरे बजाय तुम उन लोगों के घर ज्यादा देर रहे हो। मैं तो कुछ क्षणों ही के लिए उनके साथ रहा हूँ और फिर भी कह सकता हूँ कि वे लोग ऐसे नहीं हैं और उनके लिए इस तरह सोचना बड़े कमीनेपन की बात है। अगर मछली ईसाई धर्म का प्रतीक है, और लगता है कि उनका प्रतीक यही है, और अगर वे लोग ईसाई हैं तो ईश्वर की कसम, ईसाई लोग वैसे नहीं होते जैसा कि हम उन्हें माने बैठे हैं।"

"हुजूर तो बिल्कुल सुकरात की तरह इस समय बात कह रहे हैं !" चिलन बोला, "क्या आज तक किसी ने किसी ईसाई से भी पूछताछ की है ? उनके बारे में ठीक ठीक पता किसे है ? तीन साल पहले जब मैं नेपल्स से रोम लौट रहा था तो रास्ते में एक बहुत ही भला और ईमानदार आदमी भी मेरे साथ हो लिया, वह कोई ग्लोकस नाम का हकीम था और वह भी ईसाई था। सचमुच वह बड़ा भला आदमी था।"

"तो क्या उसी भले आदमी से तुम्हें मालूम हुआ है कि मछली निशान का क्या मतलब है ?"

"नहीं सरकार, बात यह हुई कि सफर के दौरान में ही एक सराय में डाकुओं ने उस बूढ़े को कत्ल कर दिया और उसकी बीवी और बच्चों को गुलाम बनाकर ले गये। यह मेरी दो उँगलियाँ उसे बचाने की कोशिश में ही कटी हैं। लेकिन ईसाइयों का विश्वास है कि ईश्वर उनकी मदद करता है, इसलिए मुझे भी आशा है कि मेरी उँगलियाँ फिर से जम जायँगी।"

"क्या ? क्या तुम भी ईसाई हो गये हो ?"

"नहीं हुजूर, बस कल से। यह सब इसी मछली का खेल है। सुनिये साहब, यह जो मैंने खोज की है, यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। मैंने अभी तक लड़की का पता नहीं लगाया है, लेकिन अब मुझे मालूम हो गया है कि उसे कैसे खोजा जा सकता है। जरा ठहरिये, सुनिये मेरी बात, कल दिन भर मैं भटकता रहा हूँ, मेरे पैरों में छाले पड़ आये हैं। कहाँ-कहाँ मैं नहीं गया, शराबखानों में और नानबाइयों के यहाँ,

कसाइयों के पास, मछली बाजार में, हर गली और हर ऐसे कोने को मैंने ढूँढ़ डाला जहाँ एक भागे हुए गुलाम के छिपने की उम्मीद हो सकती थी। इसमें मेरे कुछ पैसे भी खर्च हो गये, एक जगह मैं जुआ में हार भी गया। इस तरह के छोटे-मोटे पेशेवर लोगों के यहाँ मैंने बातें कीं और उनसे मैंने पता लगाने की कोशिश भी की कि इस निशान का क्या मतलब होता है। काफी दिनों तक तो मुझे कुछ पता ही न चल सका, लेकिन एक दिन मुझे एक गुलाम मिला जो एक जगह पानी भर रहा था और रोता जा रहा था। मैंने उससे रोने का कारण पूछा। हम लोग एक जगह सीढ़ियों पर बैठ गये तब वह बताने लगा कि अपनी पूरी जिन्दगी भर वह धीरे-धीरे कुछ पैसा इसलिए जमा कर रहा था कि अपने लड़के को एक सरदार की गुलामी से छुड़ा सके। लेकिन जब वह पैसा लेकर उसके पास गया तो सरदार ने उसका पैसा भी छीन लिया और उसके लड़के को भी नहीं लौटाया। फिर वह बोला, इसीलिए मैं रो रहा हूँ। ईश्वर ने मेरी मदद नहीं की, क्योंकि मैं पापी हूँ। तब मैंने पानी से उसके सामने मछली का निशान बनाया तो वह जानकर खुश हुआ कि मैं भी ईसामसीह में विश्वास करता हूँ। धीरे-धीरे वह मुझे सब कुछ बताने लगा। उसका मालिक जिसने उसके लड़के को रख रखा है, खुद एक पुराना आजाद किया हुआ गुलाम है। वह टाइबर नदी के किनारे से रोम तक पत्थर लाने का काम करता है। उसके नौकर-चाकर और गुलाम नाव से इन पत्थरों को उतारते हैं और रातों-रात उन मकानों तक पहुँचा देते हैं जिनमें अभी काम चल रहा है। इन मजदूरों में बहुत से ईसाई हैं। उन्हीं में उसका लड़का भी है। लड़का काम के भार से मरा जा रहा था, इसलिए उसका बाप उसे पासा के यहाँ से छुड़ा लाना चाहता था। लेकिन न तो उसे अपना लड़का ही मिला और न पैसे ही। यह कहकर वह फिर रोने लगा और मैं भी आँसू बहाने लगा। फिर मैंने उसे बताया कि मैं नेपल्स से थोड़े ही दिन हुए आया हूँ और यहाँ बिल्कुल अकेला हूँ, क्योंकि यहाँ मेरी जान-पहचान का, या अपने मजहब का कोई आदमी मुझे नहीं मिला। न मैं यही जानता हूँ कि अपने धर्म-भाई लोग प्रार्थना के लिए कहाँ मिलते हैं। उसे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि नेपल्स के ईसाइयों ने मुझे रोम के ईसाइयों के नाम परिचयपत्र क्यों नहीं दिये। मैंने उसे बताया कि पत्र तो मेरे पास थे लेकिन वे रास्ते में चोरी हो गये। तब उसने मुझे रात के समय नदी किनारे आने को कहा। वहाँ से वह मुझे धर्म-भाइयों से मिलाने ले चलेगा। उसने मुझे उनके इकट्ठे होने की जगहें और ईसाई धर्म नेताओं के घर भी दिखाने को कहा। यह सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई और मैंने फौरन उसे इतना रुपया दे डाला, जिससे कि वह अपने बेटे को फिर से खरीद सके, मुझे यह उम्मीद थी कि सरकार मुझे इनाम में उसका दूना रुपया देंगे।"

पेट्रोनियस बोला, "चिलन, तुम्हारी इस पूरी कहानी में सच्चाई के साथ-साथ

झूठ भी खूब मिली हुई है। इतना तो मुझे भी लगता है कि हम लोगों ने सही रास्ता मालूम कर लिया है, लेकिन तुम बेकार ही अपना रंग जमाने की कोशिश न करो। उस आदमी का नाम क्या है?"

"सरकार, उस गरीब बूढ़े का नाम है, यूरिसियस।"

"इतना तो मैं मानने को तैयार हूँ कि तुमने उस आदमी से जान-पहचान की है लेकिन तुमने उसे कोई पैसा नहीं दिया, झूठ न बोलो। तुमने उसे कुछ नहीं दिया है।"

"हुजूर, भला आपसे क्या छिपा है, हाँ, मैंने उसकी मदद जरूर की, उसका पानी पहुँचवा दिया, उससे हमदर्दी दिखाई। मैंने उसे पैसे नहीं दिये, लेकिन मैंने उसे हिम्मत तो दी और हुजूर, एक फिलासफर की हमदर्दी बड़ी कीमती होती है। मैंने उसकी कल्पना को जगाया और अपनी आत्मा की शक्ति उसे दी।"

पेट्रोनियस ने विनिसियस से कहा, "इन ज्योतिषी जी को अपनी कल्पना में और अपनी आत्मा में पाँच हजार रुपये का इनाम दे दो।"

चिलन का चेहरा उतर गया। लेकिन विनिसियस बोला, "मैंने तुम्हारे साथ रुपया और अपने एक आदमी को भेज दूँगा, तुम उसके सामने ही उस बूढ़े को रुपये दे देना। चूँकि तुमने भी एक कीमती खबर दी है इसलिए इतना ही इनाम मैं तुम्हें भी दूँगा। आज शाम को पैसे के लिए आ जाना।"

चिलन खुश होकर बोला, "वाह, आप तो बादशाहों से भी बढ़कर हैं!"

## १५

पेट्रोनियस के नाम विनिसियस का पत्र :

"अब तक लोजिया की कोई खबर नहीं मिली। मैं यह देखना चाहता था कि कहीं चिलन मुझे धोखा तो नहीं दे रहा है। इसलिए जिस दिन मैंने यूरिसियस को देने के लिए उसे गुलाम के हाथ रुपया भेजा तो मैं भी एक सिपाही का लबादा ओढ़कर बिना किसी को बताये चुपचाप उन दोनों के पीछे हो लिया। जब वे लोग उस जगह पहुँचे तो उनसे कुछ दूर हटकर मैं एक खम्भे की आड़ में खड़ा हो गया। मैंने देखा कि यूरिसियसवाली बात गप नहीं है। नदी के पास ढाल पर करीब पचास आदमी मशालों की रोशनी में एक नाव से पत्थर उतार रहे थे और उन्हें किनारे पर जमा करते जा रहे थे। मैंने देखा कि चिलन उन लोगों के पास पहुँचा और एक

बूढ़े आदमी से बातें करने लगा, जो फौरन उसके आगे घुटनों के बल झुक गया और दूसरे लोग भी आश्चर्य से उनके पास घेरा बाँधकर खड़े हो गये। मेरे सामने ही मेरे गुलाम ने यूरिसियस को रुपयों की थैली दी। वह बूढ़ा आसमान की ओर हाथ उठाकर अपने ईश्वर को धन्यवाद देने लगा। उसके पास ही एक लड़का भी सिर झुकाकर खड़ा था जो शायद उसका बेटा था। मैं ठीक से सुन तो नहीं पाया लेकिन चिलन ने उन दोनों को आशीर्वाद दिया और हवा में सलीब का चिह्न बनाया। इस पर वहाँ खड़े सभी लोग घुटनों के बल झुक गये। मेरी इच्छा तो हुई कि उन लोगों के पास जाकर ऐलान करूँ कि जो कोई मुझे लीजिया को ला देगा उसे मैं इसका तिगुना रुपया दूँगा। लेकिन मुझे डर था कि इस तरह कहीं चिलन की अपनी योजना खराब न हो जाय इसलिए कुछ हिचकने के बाद मैं वापस लौट आया।

"यह तुम्हारे जाने के कोई बारह दिन बाद की बात है। उसके बाद से वह कई बार मुझसे मिलने आया है। वह बताता है कि ईसाइयों के बीच उसने अपनी साख जमा ली है और अब तक लीजिया को ढूँढ़ न पाने का कारण यह बताता है कि रोम में ईसाइयों की तादाद काफी है और वे लोग आपस में अपने प्रत्येक धर्म-भाई को नहीं पहचानते, उन्हें यह भी पता नहीं रहता कि जाति में क्या हो रहा है। इसके अलावा वे लोग कुछ गम्भीर प्रकृति के और चुप्पे आदमी हैं। लेकिन उसका कहना है कि जैसे ही उनके नेताओं से और जाति के बड़े-बूढ़ों से उसका मेल-मिलाप बढ़ेगा, उसे और भी रहस्यों का पता लगता जायगा।

"उसने यह भी पता लगाया है कि वे लोग एक जगह इकट्ठे होकर सामूहिक रूप से प्रार्थना करते हैं। ये जगहें आमतौर से शहर के दरवाजों के बाहर, या खाली मकानों में, यहाँ तक कि बलुहे गड्ढों में भी होती हैं। वे लोग ईसा की पूजा करते हैं, अपने भजन गाते हैं। उनकी प्रार्थना की जगहें बहुत-सी हैं और चिलन का ख्याल है कि लीजिया जान-बूझकर उन्हीं जगहों में प्रार्थना के लिए जाती है जहाँ पोम्पोनिया नहीं जाती। यह शायद इसलिए कि अगर कभी पोम्पोनिया पर मुकदमा चले तो कहीं उससे उसकी लड़की का पता मालूम करने की कोशिश न की जाय। शायद उनके नेताओं और पुरोहितों ने ही यह राय दी है। जैसे ही चिलन को इनमें से किसी जगह का पता मालूम होगा, मैं उसके साथ वहाँ जाऊँगा और अगर ईश्वर की कृपा से मुझे वहाँ कहीं लीजिया दिखाई पड़ गई तो भगवान कसम, इस बार मेरे हाथ से वह नहीं निकल सकेगी।

"तुम कहते हो कि आदमी को प्यार करना आना चाहिए। मैं भी जानता हूँ कि लीजिया से प्यार की बातें किस तरह करनी चाहिए। लेकिन अब मैं बहुत परेशान हो चुका हूँ, और हर समय चिलन के आने का इन्तजार करता रहता हूँ, घर से तो मुझे नफरत हो गई है। अच्छा, अब विदा!"

# १६

चिलन ने इस बार आने में बहुत देर कर दी। विनिसियस की समझ में ही नहीं आता था कि अब क्या करे। दुविधा और दुख की यातना में फँसकर वह अपनी शक्ति और अपने सौन्दर्य को भी खोता जा रहा था। अब वह बहुत क्रूर और निर्दय होता जा रहा था। उसके दास-दासी और यहाँ तक कि उसके आजाद किये हुए दास भी उसके पास जाते हुए काँपते थे। बहुत ही अन्यायपूर्ण और कड़े दण्ड पाकर वे अब मन ही मन उससे घृणा करने लगे थे और यह बात उससे छिपी नहीं थी। इससे वह और अधिक क्रूरता से उनसे पेश आता था। सिर्फ वह चिलन से ही जरा कायदे से बात करता था, क्योंकि उसे भय था कि कहीं वह उसका काम करना न बन्द कर दे, और चिलन भी यह ताड़ गया था इसलिए वह अधिक से अधिक इसका लाभ उठाता था और उससे खूब रुपया ऐंठता था।

एक दिन वह ऐसा मनहूस चेहरा बनाकर वहाँ पहुँचा कि विनिसियस घबरा गया और फौरन लपककर उसके पास पहुँचा और उससे सवाल पर सवाल करने लगा।

"हाँ हुजूर," चिलन बोला, "मैंने उन लोगों में ग्लोकस को ढूँढ़ निकाला है, वही हकीम ग्लोकस।"

"क्या कहा तुमने? कौन है वह?"

"क्या हुजूर उस आदमी का किस्सा भूल गये जिसके साथ मैंने नेपल्स से रोम की सफर की थी और जिसे बचाने की कोशिश में मैंने अपनी दो उंगलियाँ गँवा दी थीं? डाकू लोग उसे छुरे से मारकर उसकी बीवी और उसके बच्चे को भगा ले गये। मैं भी उसे वहीं मरता हुआ छोड़कर चला आया था। मैंने उसके लिए बहुत आँसू बहाये थे। लेकिन अब मुझे पता चला है कि वह अब भी जिन्दा है और रोम के ईसाइयों के साथ है।"

"लेकिन जब तुमने उसकी मदद की है तब वह निश्चित रूप से तुम्हारा आभारी होगा और तुम्हारी सहायता करेगा।"

"हाँ हुजूर, लेकिन वह बहुत बूढ़ा है, उसका दिमाग कमजोर हो गया है और वह अपनी ढलती हुई उम्र और बदनसीबी की वजह से टूट चुका है। इसका नतीजा

यह है कि बजाय इसके कि वह मेरा आभार माने, वह मुझपर तोहमत लगाता है ! मुझे दूसरे ईसाइयों से पता चला है कि उसे शक है कि मैं डाकुओं से मिला हुआ था और उसकी विपत्ति का कारण मैं ही था। देखिये सरकार, इस तरह वह मुझे मेरी कटी हुई उँगलियों का बदला चुका रहा है !"

विनिसियस बोला, "लेकिन तुम मुझे नहीं चला सकते, मुझे पूरा विश्वास है कि वह जो कुछ कहता है वह गलत नहीं कहता !"

चिलन हँसकर बोला, "भला हुजूर से क्या छिपा है, आप उससे भी ज्यादा जानते हैं। लेकिन वह ईसाइयों को मुझसे बदला लेने के लिए उभारेगा, और वे लोग भी निश्चित रूप से उसकी मदद करेंगे। सौभाग्य से वह मेरा नाम नहीं जानता और प्रार्थना के समय उसने मुझे देखा भी नहीं है। मेरी इच्छा तो हुई कि लपककर उसकी गर्दन दबोच लूँ, लेकिन मैंने बुद्धिमानी करके अपने को रोक लिया, क्योंकि कोई भी काम करने के लिए उसके बारे में सोच लेने की मुझे आदत है। मैंने उसके बारे में पूछताछ की और जो लोग उसे जानते थे उन्होंने बताया कि जब यह नेपल्स से यहाँ आ रहा था तो रास्ते में उसके किसी साथी ने उसे धोखा दिया और उसके साथ गद्दारी की। अगर मैं यह न पूछता तो मुझे यह पता ही नहीं चलता कि वह मेरे बारे में क्या-क्या कहता फिर रहा है।"

"लेकिन इस सब से मुझे क्या मतलब ? प्रार्थना के समय तुमने क्या-क्या देखा यह बताओ।"

"हुजूर ठीक कहते हैं, इससे आपको कोई खास मतलब नहीं, लेकिन चूँकि यह मेरी जान का सवाल है, और मै चाहता हूँ कि मेरी विद्या मेरे बाद भी जीवित रहे, इसलिए अभी मुझे कुछ दिन और अपनी जान हिफाजत से रखनी चाहिए। इसलिए मैं इस संसार के बखेड़ों में पड़कर अपनी जान आफत में डालने के बजाय आपके इनाम का मोह छोड़ दूँ, और एक सच्चे फिलासफर की तरह सत्य की खोज में अपना जीवन बिता दूँ।"

लेकिन विनिसियस उसे धमकाता हुआ उसके पास आ खड़ा हुआ और बहुत ही रूखी आवाज में बोला, "लेकिन यह किसने तुम्हें बताया कि तुम मेरे बजाय उस बूढ़े हकीम के हाथ मरोगे ? बेवकूफ कहीं के, भला तुम्हें यह मालूम नहीं कि मैं चाहूँ तो एक क्षण में तुम्हें जिन्दा अपने बगीचे में गड़वा दूँ !" चिलन डरपोक तो था ही, वह विनिसियस की ओर देखकर यह समझ गया कि एक गुस्ताखी का शब्द उसने और कहा कि उसे अपनी जिन्दगी से हाथ धोना पड़ेगा। इसलिए वह फौरन बोला, "मैं उसकी खोज करूँगा हुजूर, मैं उसे ढूँढ़ निकालूँगा !" थोड़ी देर के लिए वहाँ चुप्पी छा गई। सिर्फ विनिसियस के जोर-जोर से साँस लेने और बगीचे में काम करते हुए गुलामों के गाने की आवाज आती रही।

जब उस बूढ़े यूनानी ने देखा कि यह कुछ शान्त हो रहा है, तब वह बोला, "हुजूर, मैंने यह तो कहा नहीं कि मैंने उस लड़की को खोजना बन्द कर दिया है, मैं तो सिर्फ आपको यही बताना चाहता था कि यह काम अब मेरे लिए कितना खतरनाक होता जा रहा है। ग्लोकस जिन्दा है, और अगर वह मुझे एक बार देख लेगा, तो फिर आप मुझे कभी नहीं देख पायेंगे और फिर ऐसी हालत में आपका काम कौन पूरा करेगा ?"

"अच्छा, तो मुझे क्या करना चाहिये ? इसका इलाज क्या है ? तुम क्या चाहते हो ?"

"अरस्तू का कहना है कि हमें हमेशा बड़ी चीजों के लिए छोटी को बलि कर देना चाहिए, और राजा प्रिआम बराबर कहा करते थे कि बुढ़ौती एक बहुत बड़ा बोझ है। इसलिए अब जबकि ग्लोकस अपनी बुढ़ौती और अपनी बदनसीबी के भार से दबा जा रहा है तो मौत उसके लिए एक वरदान की तरह होगी और महान् दार्शनिक सेनेका का तो कहना ही है कि मृत्यु कुछ नहीं, एक तरह की मुक्ति है !"

"तुम यह सब बकवास पेट्रोनियस के आगे किया करो—मेरे सामने यह बेकार है। साफ-साफ कहो कि तुम्हारा मतलब क्या है !"

"हुजूर, भला यह बकवास कहाँ है ! मैं चाहता हूँ, सरकार, कि ग्लोकस से किसी तरह पिंड छूटे।"

"तो ठीक है, कुछ भाड़े के लोगों को लेकर उसका सिर फुड़वा दो। खर्चा मैं दूँगा। बोलो, तुम्हें कितने की जरूरत होगी ?"

"एक हजार की ! यह न भूलिये सरकार, कि मुझे बहुत ही ईमानदार गुंडे खोजने पड़ेंगे, ताकि कहीं ऐसा न हो कि वे रुपया भी ले लें और बिना कुछ काम किये ही चलते बनें। फिर कुछ मुझे भी इस काम का इनाम मिलना चाहिए, ताकि ग्लोकस की मौत पर मैं जब रोऊं तो आँसू पोंछने के लिए मेरी जेब में भी कुछ हो। मैं आज ही आदमियों को ठीक कर लूंगा और उनसे कह दूँगा कि कल के बाद जितने दिन भी ग्लोकस जिन्दा रहेगा, हर रोज के हिसाब से उनके सौ रुपये कम होते जायँगे। मैंने इसकी बहुत ही अच्छी योजना बना रखी है, जो कभी बेकार नहीं हो सकती।"

विनिसियस ने उसको पैसा देने का वादा किया और उससे पूछा कि वह उसके लिए समाचार क्या लाया है, अब तक उसने क्या पता लगाया, और इस बीच कहाँ रहा है लेकिन चिलन उसे कोई खास खबर नहीं दे सका।

उसने बताया कि वह अब तक तो प्रार्थना-घरों में गया और वहाँ उसने देखने की कोशिश की कि कौन-कौन आता है, खासतौर से औरतों को, लेकिन

अब तक वह लीजिया को नहीं देख पाया। परन्तु अब ईसाइयों का सबसे बड़ा पुरोहित, जो ईसा का निजी शिष्य रहा है और जिसे ईसा सन्देश फैलाने का काम सौंप गया है, बहुत जल्द ही रोम आनेवाला है। वह किसी दिन भी आ सकता है। सभी ईसाई उसे देखना और उसका उपदेश सुनना चाहेंगे। तब बड़ी भीड़ जमा होगी, और चिलन भी वहाँ जायगा और चूँकि ऐसी जगह नजर चूकने की बहुत सम्भावना रहती है इसलिए वह अपने साथ विनिसियस को भी लेता जायगा और तब वे लीजिया को खोजने में किसी हालत में भी असफल नहीं होंगे। बस, ग्लोकस किसी तरह रास्ते से हटा दिया जाय, फिर तो उन्हें किसी बात का डर नहीं।

## १७

ग्लोकस से पिंड छुड़ाना चिलन के लिए बायें हाथ का खेल था, क्योंकि वह बूढ़ा हो चुका था। चिलन ने विनिसियस को जो कहानी बतायी थी, उसमें काफी बात स्पष्ट थी। वह ग्लोकस को जानता था और उसी ने डाकुओं से मिलकर उसे मरवाने की कोशिश की थी और उसके परिवार को तबाह किया था, लेकिन उसने उसे घायल हालत में किसी सराय के बजाय मरने के लिए एक खेत में ही छोड़ दिया था। उसने सब कुछ सोच लिया था, लेकिन यह सपने में भी नहीं सोचा था कि ग्लोकस जिन्दा रह जायगा और रोम तक पहुँच जायगा। अब किसी तरह उससे पिंड छुड़ाना जरूरी था।

इसी ख्याल से उस दिन उसने शाम को यूरिसियस से मुलाकात की। वह जानता था कि यह बूढ़ा अब उसके प्रति कितना वफादार था, और उसकी जान बचाने के लिए सब कुछ कर सकता था। चिलन ने इतनी बुद्धिमानी की कि अपना असली उद्देश्य उसे नहीं बताया, क्योंकि इससे यूरिसियस को धक्का लगाता, और वह उसमें विश्वास खो बैठता।

यूरिसियस अपने बेटे को गुलामी से आजाद कराने के बाद मैक्सिमस सरकस के पासवाली बस्ती में एक छोटी-सी झोपड़ी में रहने लगा था। अब वह खेल-तमाशे के समय दर्शकों को खाने-पीने की चीजें बेचा करता था। चिलन जब वहाँ पहुँचा तो वह अपनी छोटी-सी दूकान में बिक्री का सामान सजा रहा था। चिलन ने ईसा का नाम लेकर उसका अभिवादन किया और फिर अपने आने का कारण बताया। उसने कहा कि मैंने तुम्हारे साथ भलाई की है, और अब मुझे तुम्हारा ही भरोसा है। फिर उसने बताया कि उसे दो-तीन तगड़े और बहादुर आदमियों की जरूरत है, जो

उस खतरे को दूर करेंगे जो उसपर ही नहीं बल्कि पूरी ईसाई जाति पर आ सकता है। वह कहने लगा कि मैं गरीब तो हूँ लेकिन इस काम के लिए मैं कोशिश करके कुछ इनाम का जुगाड़ भी कर सकता हूं, बशर्ते कि ये लोग उसपर विश्वास करें और उसके हुक्मों को वफादारी से पूरा करें।

यूरिसियस और उसका बेटा क्वारतस दोनों फौरन राजी हो गये, क्योंकि उन लोगों का ख्याल था कि चिलन के जैसा धार्मिक आदमी कभी उनसे ऐसा काम नहीं ले सकता जो ईसा की शिक्षा के विरुद्ध हो।

चिलन ने भी उन्हें विश्वास दिलाया कि उसका काम बहुत पवित्र है और फिर आसमान उसने की ओर आँखें उठाकर ईश्वर से प्रार्थना करनी शुरू की। लेकिन असल में वह उस समय इस बात पर विचार कर रहा था कि वह इन लोगों को अपने काम में लगाये या किसी तरह विनिसियस के दिए हुये रुपयों को बचा ले। ये लोग मुफ्त में भी उसके लिए काम कर सकते थे। लेकिन यूरिसियस बूढ़ा था और क्वारतस अभी केवल सोलह साल का लड़का ही था, और चिलन को जरा तेज और मजबूत आदमियों की जरूरत थी।

तब तक क्वारतस बोला, "मैं देमास नाम के एक रोटीवाले को जानता हूँ, जिसके यहाँ बहुत से मजदूर और गुलाम काम करते हैं। इन लोगों में से दो-चार तो बहुत ही तगड़े हैं। मैंने खुद उनको इतने बड़े-बड़े पत्थर ढोते देखा है, जिन्हें चार आदमी भी नहीं उठा सकते।"

चिलन बोला, "अगर उनमें से कोई वफादार हो, ईश्वर से डरता हो और अपने धर्म-भाइयों के लिए अपने को बलि तक कर देने के लिए तैयार हो, तो मुझे बताओ।"

"हाँ साहब, उनमें से एक ईसाई है," क्वारतस बोला। "देमास के बहुत से नौकर ईसाई हैं। उसके यहाँ रात-दिन मजदूर काम करते हैं। वे मजदूर रात-वाली पाली में हैं। अगर अभी हम लोग चलें तो उन्हें छुट्टी में खाना खाते हुए पायेंगे और आप अच्छी तरह उससे बात कर सकेंगे।"

देमास बन्दरगाह के पास रहता था। चिलन खुशी-खुशी वहाँ जाने के लिए राजी हो गया। बन्दरगाह वहाँ से बहुत दूर नहीं था। नदी से जाने पर वहाँ पहुँचने के लिए पहाड़ पार करने की भी जरूरत नहीं होती थी। रास्ते में चिलन कहने लगा, "मैं अब बूढ़ा होने आया हूं और मेरी याददाश्त कम होता जा रही है। हमारे ईसामसीह को उनके अपने शिष्यों में से किसी ने धोखा दिया था, लेकिन मैं उस गद्दार का नाम अभी याद नहीं कर पा रहा हूँ।"

"साहब, उसका नाम जुडास था, बाद में उसने अपने आप को फाँसी लगा

ली," क्वारतस ने कुछ आश्चर्य से जवाब दिया, उसे यह नहीं समझ में आ रहा था कि कोई आदमी जुडास के नाम को कैसे भूल सकता है।

दोनों कुछ देर तक चुपचाप चलते रहे। जब वे बन्दरगाह के पास पहुँचे तब वहाँ का बड़ा फाटक तो बन्द था ही, वे लोग उस छोटे फाटक से गुजरे जहाँ अनाज का गोदाम था वहाँ से निकल कर वे लोग बाईं तरफ चल पड़े। कुछ देर बाद वे लकड़ी के एक मकान के सामने पहुँचे, जो चक्कियों की आवाज से गूँज रहा था। क्वारतस अन्दर चला गया लेकिन चिलन बाहर ही खड़ा रहा।

उसने ऊपर आसमान में चमकते हुक चाँद की ओर देखकर अपने मन में कहा, "मैं इस पहलवान को देखना चाहता हूँ। अगर इसमें कुछ अक्ल हुई तब तो मुझे कुछ ज्यादा खर्च करना पड़ेगा, लेकिन अगर यह बहुत ही धर्मप्राण ईसाई हुआ तब तो यह अन्धे की तरह मेरी बात मानेगा।"

तब तक क्वारतस एक आदमी के साथ बाहर निकल आया, जो मजदूरों की बंडी पहने था, जिसमें दाहिना हाथ और कन्धा खुला रहता है। उसे देखकर चिलन ने सन्तोष की एक साँस ली, अपने जीवन में कभी उसने ऐसी ताकतवर छाती और ऐसी मांसल भुजा नहीं देखी थी।

"साहब, यह भाई आ गया, जिससे आप मिलना चाहते थे।"

चिलन बोला, "ईसा तुम्हें शान्ति दे। क्वारतस, इस भाई को बताओ कि मुझपर कहाँ तक विश्वास किया जा सकता है और फिर चलो घर लौट चलें, क्योंकि भगवान के लिए तुम्हें अपने बूढ़े पिता को अधिक देर अकेले नहीं छोड़ना चाहिए।"

क्वारतस अपने मित्र को समझाने लगा, "यह एक बहुत ही बड़े धर्मात्मा आदमी हैं, इन्होंने मुझे गुलामी से छुड़ाने के लिए अपना सारा धन दे डाला, हालाँकि मैं इनके लिए बिल्कुल अनजान था। प्रभु ईसा इन्हें इनके पुण्यकर्म का फल दे।"

यह सुनकर वह तगड़ा मजदूर अभिवादन में झुका और फिर उसने चिलन का हाथ चूम लिया।

"भाई, तुम्हारा नाम क्या है?" चिलन ने पूछा।

"हुजूर, बपतिस्मे के समय मेरा नाम अरबन रखा गया था।"

"अरबन, मेरे भाई, क्या तुम्हारे पास अभी मुझसे बात करने का वक्त है?"

"हमारा काम आधी रात से पहले शुरू नहीं होता और अभी तो शाम का खाना ही बन रहा है।"

"तब तो अभी काफी वक्त है। चलो, हम लोग जरा उधर नदी-किनारे चलें जहाँ मैं तुमसे कुछ बातें करूँगा।"

वे लोग जाकर नदी किनारे एक बड़े से पत्थर पर बैठ गये, जहाँ बिल्कुल

शान्ति थी, सिर्फ नदी के बहने की और दूर चक्कियों के चलने की आवाज आ रही थी। चिलन ने मजदूर के चेहरे को गौर से देखा जो हालाँकि कुछ उदास और सख्त-सा भी लगता था, लेकिन उससे भलमनसाहत और ईमानदारी प्रकट होती थी। उसने सोचा कि यह आदमी सचमुच में भला और बेवकूफ है जो आसानी से ग्लोकस को मारने के लिए तैयार हो सकता है। उसने पूछा, "अरबन, तुम्हें ईसा पर श्रद्धा है ?"

"जी हाँ, मैं अपने पूरे दिल से उनपर श्रद्धा रखता हूँ।"

"और क्या तुम अपने सभी भाई-बहनों से, जिन्होंने तुम्हें सत्य का और प्रभु में विश्वास का रास्ता दिखाया है, प्रेम करते हो ?"

"हाँ दादा, मैं सब को दिल से चाहता हूँ।"

तब चिलन ने ऊपर चाँद की ओर आँखें उठायीं और बड़ी गम्भीरता से ईसा की मृत्यु की बारे में कहना शुरू किया। वह इस तरह बोल रहा था जैसे वह न सिर्फ अरबन को समझा रहा था बल्कि आसपास सोते हुए पूरे रोम शहर को शिक्षा दे रहा था। उसकी आवाज बड़ी गम्भीर और भावपूर्ण थी। मजदूर की आँखों में आँसू आ गये और जब चिलन ने रुंधे हुए गले से यह कहना शुरू किया कि अन्तिम समय में ईसा की सहायता करने और उनकी रक्षा करने के लिए कोई नहीं था और सिपाहियों और यहूदियों के अपमान का बदला लेने के लिए कोई आगे नहीं बढ़ा तो उस मजदूर की मुट्ठियाँ भिंच गईं और दुःख और क्रोध से उसके ओंठ काँपने लगे। चिलन ने अचानक पूछा, "और अरबन, तुम जानते हो कि जुडास कौन था ?"

"जी हाँ, जी हाँ, मैं जानता हूँ, लेकिन बाद में उसने अपने आपको फाँसी लगा ली थी।" यह कहते समय उसकी आवाज से ऐसा लगा जैसे उसे इस बात का अफसोस हो कि ईसा के शत्रु से पूरा-पूरा बदला नहीं लिया जा सका।

चिलन कह रहा था, "लेकिन मान लो कि उसने अपने आपको फाँसी न लगायी हो, मान लो कि वह किसी ईसाई को कहीं मिल गया तो क्या उसका यह कर्त्तव्य नहीं होगा कि वह महात्मा ईसा के खून का बदला उससे ले ?"

"क्यों नहीं ?"

"ईश्वर तुम्हें सुखी रखे, मेरे भाई ! हाँ ठीक कहते हो, हम लोग अपने प्रति किये हुए अपराध को क्षमा कर सकते हैं, लेकिन भला ईश्वर के प्रति किये गये बुरे काम को कौन क्षमा करेगा ? जिस तरह साँप से साँप पैदा होता है, नीचता से नीचता पैदा होती है और गद्दारी से गद्दरी, उसी तरह से जुडास का पाप भी एक दूसरे गद्दार के रूप में पैदा हुआ है। जिस तरह से उसने हमारे पैगम्बर को यहूदियों और रोमन सिपाहियों के हाथ बेंच दिया था, उसी तरह यह दूसरा पापी, जो हम लोगों के बीच में है, हमारी पूरी जाति को धोखा देना चाहता है और अगर कोई इसके पाप को नहीं रोकता,

अगर साँप के सिर को समय रहते ही नहीं कुचल दिया जाता है तो यह तय है कि हमारा सर्वनाश हो जायगा, और हमारे साथ-साथ ईसाई धर्म का भी अन्त हो जायगा।"

वह मजदूर बहुत बेचैनी से उसकी ओर देखने लगा, जैसे उसका समझ में कुछ न आया हो।

चिलन ने अपने सिर को लबादे से ढँकते हुए बहुत ही गम्भीर आवाज में कहा, "ईश्वर हमारे धर्म-भाइयों की रक्षा करे!"

फिर कुछ देर के लिए वहाँ शांति हो गई, मिल में चक्कियों के चलने की आवाज आती रही, दूर कुछ मजदूर काम करते हुए गा रहे थे और नदी बह रही थी।

अन्त में मजदूर ने पूछा, "पिता, यह गद्दार कौन है?"

चिलन ने अपना सिर झुका लिया और कहा, "कौन हो सकता है? यह भी जैसे जुडास का बेटा है। उससे बढ़कर कोई पापी नहीं। यह हमारे बीच ईसाई बनकर रहता है और हमारी प्रार्थनाओं में इसलिए शरीक होता है कि मौका मिलने पर सीज़र के सामने हमारा सारा भेद खोल दे और कहे कि ईसाई लोग उसे ईश्वर के बराबर नहीं मानते, हम लोग कुओं में जहर डाल देते हैं और अपने बच्चों को बलि चढ़ा देते हैं। हम लोग इस शहर को मटियामेट कर देना चाहते हैं। इसका नतीजा यह होगा कि कुछ ही दिनों में सिपाही लोग हमारे आदमियों, औरतों और बच्चों को पकड़ ले जायेंगे और मार डालेंगे। यह पापी यही चाहता है। लेकिन जब उस पहले जुडास को किसी ने दण्ड नहीं दिया, किसी ने महात्मा ईसा को उसके चंगुल से बचाने की कोशिश नहीं की, तो भला कौन इस दूसरे जुडास को रोकेगा? भला कौन है ऐसा, जो इस साँप का सिर समय रहते ही कुचल दें, ताकि यह सीज़र को कुछ बताने के पहले ही ठंडा हो जाय?"

अरबन अब तक चुपचाप बैठा सुन रहा था, लेकिन अचानक वह खड़ा हो गया और बोला, "पिता, मैं उसे रोकूँगा, मैं उसका अन्त करूँगा!"

"तो अपने ईसाई भाइयों के पास जाओ, प्रार्थना सभाओं में लोगों से पूछो कि ग्लोकस नाम का हकीम कहाँ है। जब तुम्हें उसका पता चल जाय तो ईसा के नाम पर उसको मार डालो।"

"ग्लोकस!" मजदूर ने इस तरह दोहराया जैसे वह इस नाम को याद करने की कोशिश कर रहा हो।

"क्या तुम उसे जानते हो?"

"नहीं, मैं नहीं जानता। रोम में हजारों ईसाई हैं, सबको जानना बड़ा मुश्किल है, कोई नहीं जानता लेकिन कल रात को सब लोग, हर ईसाई स्त्री-पुरुष ओस्त्रिएनम

के पास इकट्ठे होंगे, क्योंकि ईसा के सबसे बड़े शिष्य यहाँ आ गये हैं, और वे कल उपदेश देंगे। वहीं मुझे ग्लोकस का पता चल जायगा।"

"ओस्त्रेनम के पास! लेकिन यह जगह तो शायद शहरपनाह के बाहर है!"

"जी हाँ, वहीं हम लोगों का कब्रगाह है। यह सलारिया और नोमेन्ताना की सड़कों के बीच में पड़ता है। क्या आपको नहीं मालूम कि वे महात्मा वहाँ उपदेश देने वाले हैं?"

"मैं दो दिन से बाहर गया हुआ था, इसीलिए मुझे कोई सूचना नहीं मिल सकी। मैं यह भी नहीं जानता कि ओस्त्रेनम कहाँ है, क्योंकि मैं हाल में ही कोरिन्थ से आया हूँ जहाँ के ईसाइयों का मैं नेता हूँ। लेकिन खैर, कोई बात नहीं। तुम जरूर ओस्त्रेनम जाना और क्योंकि प्रभू ईसा ने तुम्हें सद्बुद्धि दी है, इसलिए तुम ग्लोकस का पता लगाना और लौटते वक्त रास्ते में उसका अन्त कर डालना। इस पुण्यकार्य का बदला तुम्हें यह मिलेगा कि तुम्हारे सारे पाप धुल जायँगे। प्रभू तुम्हें सुखी रखे!"

"लेकिन पिता—"

"हाँ हाँ कहो, मैं सुन रहा हूँ।"

मजदूर के चेहरे पर कुछ बेचैनी-सी दिखाई दी। वह कहने लगा कि हाल में ही उसके हाथ से दो-एक आदमी मारे जा चुके हैं और ईसाई धर्म में हिंसा की मनाही है। यह सही है कि उसने जान-बूझकर, या अपने को बचाने के लिए उनकी हत्या नहीं की। बल्कि पादरी ने तो इस काम में उसकी मदद करने के लिए कुछ धर्म-भाइयों को भी भेजा था। असल में उसे उन लोगों को मारने की जरूरत नहीं थी, लेकिन वह क्या करे, उसे ईश्वर ने इतनी ताकत दी है कि न चाहते हुए भी उसके हाथ से चोट खाकर लोग अपनी जान खो बैठते हैं। अपने इस पाप का उसे बड़ा क्षोभ है, हमेशा उसे अपने इस पाप की याद आती रहती है और वह दूसरे मजदूरों की तरह काम करते समय खुशी से गा भी नहीं पाता।

अब फिर से उसे एक आदमी की हत्या के लिए राजी होना पड़ रहा है लेकिन खैर, वह उसे मार सकता है, क्योंकि यह कोई पाप नहीं होगा। वह अपने सब धर्म-भाइयों के सामने कल उसका सिर तोड़ेगा। लेकिन इसके लिए सबसे पहले यह होना चाहिए कि जाति के बूढ़े-बड़े ग्लोकस को सजा सुनाये, उस पर बाकायदा जाति की प्रथा के अनुसार मुकदमा चलाया जाय और मृत्यु-दण्ड दिया जाय।

चिलन बोला, "लेकिन बेटा, तुम यह नहीं जानते कि अब मुकदमे वगैरह का वक्त नहीं रहा। वह पापी आस्त्रेनम से सीधा सीज़र को खबर देने जायगा और फिर कहीं भाग निकलेगा।"

"लेकिन पिता, क्या आप इस काम को ठीक मानते हैं? क्या आपने खुद अपने कानों से ग्लोकस को इस तरह अपने धर्म-भाइयों के खिलाफ कहते सुना है? क्या आपके पास उसके पाप का सबूत है?"

चिलन ने फौरन समझ लिया कि उसे किसी न किसी तरह इस मजदूर को सन्तुष्ट करना चाहिए। वह बोला, "सुनो अरबन, मैं कोरिन्थ में रहता हूँ, लेकिन असल में मैं कोस का रहने वाला हूँ और मैं यहाँ रोम में अपने गाँव की एक औरत को जिसका नाम यूनिस है, जो यहाँ गुलाम है, प्रभू ईसा की वाणी का सन्देश सुनाता हूँ। वह सीज़र के मित्र पेट्रोनियस की निजी दासी है। उसके जरिये ही मुझे मालूम हुआ है कि ग्लोकस ने ईसाईयों को धोखा देने का बीड़ा उठाया है, और सीजर के एक दूसरे दोस्त विनिसियस से वादा किया है वह उसके लिए एक किसी ईसाई लड़की का पता लगायेगा, और उसे उसके यहाँ पहुँचाने में मदद करेगा, जिसे वह चाहता है।"

वह यह कहते-कहते रुक गया और उसने देखा कि उस मजदूर की आँखें किसी खूंखार जानवर की तरह चमकने लगी हैं। उसने कुछ घबराकर पूछा, "क्या हुआ?"

"कुछ नहीं, पिता! मैं कल ग्लोकस को जरूर मारूँगा।"

## १८

विनिसियस के नाम पेट्रोनियस का पत्र :

"यह साफ़ है कि कामदेव ने तुम्हें बेचैन कर रखा है, और तुम्हारी बुद्धि और स्मृति को छीन लिया है। इस समय सिवा प्रेम के तुम्हें और कुछ नहीं सूझता है। आगे फिर कभी अगर तुम अपने उस जवाब को पढ़ोगे जिसे तुमने मेरे पत्र के उत्तर में भेजा है तो तुम देखोगे कि सिवा लीजिया के और किसी बात पर तुम आजकल गौर करने के लिए तैयार नहीं हो।

"भगवान न करें, और जिस आग से तुम जल रहे हो, उससे अगर तुम राख नहीं हो गये तो तुम उस मिस्र की स्फिन्क्स कि तरह हो जाओगे जो अपने प्रेमी की प्रतीक्षा करते-करते पत्थर हो गई! तुम हर रोज रात को भेस बदल कर शहर में घूमा करो और अपने उस चौड़म फिलासफर के साथ ईसाईयों की प्रार्थना-सभाओं में जाया करो, क्योंकि इससे तुम्हें उम्मीद भी बँधेगी और तुम्हारा वक्त भी कट जायगा। लेकिन मेरी मित्रता के नाम पर इतना जरूर करना कि क्रोटोन को अपने साथ किराये

पर ले लेना और बिना उसके और यूनानी फिलासफर के तुम अकेले कभी न जाना, क्योंकि लीजिया का दास यूरसस, बहुत ही तगड़ा आदमी है। इससे तुम पर कोई खतरा नहीं आयेगा। जब पोम्पोनिया और लीजिया जैसी औरतें ईसाईयों के साथ हैं तो इतना तो जाहिर है कि वे लोग बदमाश नहीं हैं। लेकिन यह भी तय है कि जिस तरह उन्होंने लीजिया को बचाया है उस तरह वे अपने हर भाई को बचाने की पूरी कोशिश कर सकते हैं। मैं जानता हूँ कि अगर तुम्हें वह लड़की कहीं दिखाईदे गई तो उसे फौरन भगा ले जाना चाहोगे, लेकिन सोचो तो सही कि अगर तुम्हारे साथ सिर्फ वह बकवादी फिलासफर ही रहा तो तुम यह कैसे कर सकोगे? लेकिन क्रोटन तुम्हारी मदद करेगा, वह यूरसस जैसे दस आदमियों के लिए काफी है।

"यहाँ लोगों ने अब यह कहना बंद कर दिया है कि राजकुमारी की मृत्यु किसी के जादू-टोने से हुई थी। महारानी पोपिया कभी-कभी इस बात पर जोर देने की कोशिश करती है, लेकिन सीजर का दिमाग आजकल दूसरे कामों में लगा है। खैर जो भी हो, महारानी अब फिर देवताओं की कृपा से इस स्थिति में पहुँच गई हैं कि बहुत जल्दी ही वे अपना पहली संतान की याद को भूल जायेगी।

"जरा हिफाजत से रहना, और क्रोटन को जरूर अपने साथ रखना, वरना इस बार फिर वे लोग लीजिया को तुमसे छीन ले जायंगे। जब चिलन से तुम्हारा काम निकल जाय, तो तुम उसे मेरे पास भेज देना। मैं उसे सिखा-पढ़ाकर दरबार में ऐसी जगह दिला दूँगा कि हर दरबारी और सिनेटर उससे काँपता रहेगा। यह देखने में बड़ा मजेदार होगा। जब लीजिया तुम्हें मिल जाय तो मुझे खबर देना। मै देवी वीनस को भोग चढ़ाऊँगा। मैंने सपने में तुम्हें लीजिया के साथ देखा है। कोशिश करो कि मेरा सपना पूरा हो जाय। मेरी कामना है कि चिंता के कुहासे से तुम्हें मुक्ति मिले, और तुम्हारे जीवन में सुख-शांति हो!"

## १६

विनिसियस ने पत्र अभी खत्म ही किया था कि इतने में चिलन बिना सूचना दिये उसके कमरे में आ पहुँचा। विनिसियस ने अपने नोकरों को हुक्म दे रखा था कि चिलन को जब भी वह चाहे बिना किसी रोक-टोक के मेरे पास आने दिया जाय।

"भगवान आप की संपदा बढ़ायें और आपको प्रसन्न रखें!"

"मतलब क्या है तुम्हारा?"

"यूरेका! मैंने उसे पा लिया!"

"क्या तुमने उसे कहीं देखा ?"

"हुजूर, मैंने यूरसस को देखा और उससे बातें भी कीं।"

"और तुम्हें उनके छिपने की जगह मालूम हो गई ?"

"नहीं सरकार। इतना जानना मेरे लिए काफी है कि यूरसस देमास नाम के एक चक्कीवाले के यहाँ काम करता है। इतना काफी है, क्योंकि अब कोई भी आपका विश्वासपात्र गुलाम उसके पीछे जाकर छिपने की जगह का पता लगा सकता है। मैं तो आपको यही विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि चूँकि यूरसस रोम में ही है, इसलिए लीजिया भी यहीं है, और मुझे यह भी खबर मिली है कि बहुत मुमकिन है कि आज वह आस्त्रेनम में आयेगी।"

"आस्त्रेनम ! कहाँ है यह !"

"सरकार, यह सलारिया और नोमेन्ताना की सड़कों के बीच एक कब्रगाह है। जिस बड़े ईसाई पुरोहित के बारे में मैंने आपको बताया है, वह यहाँ आ पहुँचा है और आज रात को अपना उपदेश देगा।"

"तो तुम्हें भी मेरे साथ आस्त्रेनम चलना पड़ेगा।"

चिलन वहाँ नहीं जाना चाहता था। वह बोला, "सरकार, मैंने आपसे सिर्फ इतना वादा किया था कि मैं आपको लीजिया का पता बता दूँगा, मैंने उसे भगाने में हाथ बँटाने का वादा नहीं किया था। जरा सोचिये तो सही सरकार, तब मेरा हश्र क्या होगा, जब उस दैत्य यूरसस को यह मालूम हो जायगा कि उसने ग्लोकस को मारकर गल्ती की है।"

विनिसियस ने एक सन्दूकची से रुपये की थैली निकालकर चिलन की ओर फेंक दी और कहा, "जब लीजिया मेरे घर में आ जायगी तो मैं इसी तरह की थैली तुम्हें और दूँगा।"

चिलन ने झुककर अभिवादन किया और कहा, "आप तो बिल्कुल कुबेर हैं !"

"यहाँ तुम्हें अभी भोजन मिलेगा और फिर तुम आराम से लेट जाना। शाम को तुम मेरे साथ आस्त्रेनम चलना।"

एक क्षण के लिए तो वह कुछ घबराया और उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं, लेकिन फिर उसने अपने आपको संभाल लिया और कहा, "भला किसमें हिम्मत है कि आपकी बात को टालने की कोशिश करे !"

लेकिन विनिसियस ने उसे बीच में ही रोक दिया और उससे पूछना शुरू किया कि यूरसस से उसकी क्या-क्या बात हुई। दोनों को यह आशा थी कि आज लीजिया के छिपने की जगह मालूम हो जायगी, और बहुत मुमकिन है कि वे रास्ते से ही उसे उड़ाने में सफल हो जायँ।

विनिसियस को पेट्रोनियस की सलाह याद आ गई और उसने अपने आदमियों से कहकर क्रोटन को बुलवाया। यह सुनकर चिलन की जान में जान आई, क्योंकि वह रोम में हर आदमी को जानता था और उसने इस पहलवान का नाम सुन रखा था। इस तरह निश्चिंत होकर उसने विनिसियस के भोजनालय में बैठ कर भरपेट भोजन किया। भोजन के बाद वह अपना लबादा सिर के नीचे लगाकर आराम से सो गया। क्रोटन के आने पर ही वह उठा। जब वह बरामदे में पहुँचा पहलवान आ चुका था और विनिसियस से सब बातें तय कर चुका था, वह कह रहा था, "सरकार, आप जिस आदमी की ओर इशारा कर देंगे उसे मैं अपने इस एक हाथ में उठा सकता हूँ और दूसरे हाथ से यूरसस जैसे सात आदमियों से लड़ सकता हूँ। मैं उस लड़की को घर ले आऊँगा, चाहे रोम के सारे ईसाई मुझसे लड़ने के लिए आ जायें। अगर मैं यह नहीं कर सका तो आप इसी कमरे में मेरी खाल उधेड़वा लीजियेगा!"

चिलन ने वहाँ पहुँचते ही कहा, "नहीं हुजूर, इसे वहाँ से भागने मत दीजियेगा, वरना वे लोग हमारी जान ले लेंगे। लेकिन यह सब करने की जरूरत ही क्या है. क्यों न जब वह रास्ते में लौट रही हो तभी उसे पकड़ लिया जाय! इस तरह उसपर न कोई संकट आयेगा और न हम पर ही।"

"क्रोटन, यही मेरे कहने का भी मतलब है," विनिसियस ने कहा।

"मैं तो हुजूर, आपका तावेदार हूँ!"

चिलन कहने लगा, "हुजूर, अभी-अभी मुझे एक नई चाल सूझी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि ईसाई लोग अपनी प्रार्थना में आनेवालों के लिए एक विशेष चिन्ह रखते हैं, उसके बिना वहाँ किसी को भी आने नहीं दिया जायेगा। मुझे इसका अनुभव हो चुका है। यूरिसियस मुझे एक बार पहले यह सब बता चुका है। इसलिए क्यों न मैं पहले चला जऊँ और उनसे आज सभा में शरीक होने के लिए अनुमति-पत्र वगैरह ले आऊँ?"

विनिसियस यह सुनकर खुश हो गया और बोला, "फिलासफर साहब, बात तो तुमने बड़ी पते की कही! अच्छा तो तुम जाओ और यूरिसियस या और किसी से मिलकर सब कुछ तय कर लो लेकिन अच्छा हो कि मैंने जो थैली तुम्हें अभी दी है उसे तुम हिफाजत के ख्याल से यहीं छोड़ते जाओ।"

चिलन कभी भी आसानी से अपना पैसा छोड़ने के लिए राजी नहीं होता था। वह कुछ सोच में पड़ गया। अन्त में उसने उसकी बात मान ली। बहुत जल्दी ही वह यूरिसियस के पास जा पहुँचा। उसे किसी तरह सिखा-पढ़ाकर, वह अन्दर घुसने के लिए अनुमतिपत्र वगैरह ले आया, "लीजिये सरकार, इनसे हमारा काम चल जायगा।"

जब अंधेरा होने लगा तो ये तीनों लबादों में अपने को अच्छी तरह ढँक-कर और कुछ हथियार वगैरह छिपाकर वहाँ जाने की तैयारी करने लगे। चिलन ने भी अपना भेस कुछ बदल लिया। वे तीनों जल्दी ही घर से निकल पड़े और रास्ते में नोमेन्ताना सड़क का पता पूछते रहे। इन्होंने जल्दी ही वहाँ पहुँचने का इरादा किया था।

## २०

इस तरह वे लोग चले जा रहे थे, उन्होंने विमिनल दरवाजा पार किया और फिर बड़े-बड़े हम्मामों के पास से होते हुए सलारिया सड़क की ओर मुड़ते हुए वे लोग छोटी-छोटी पहाड़ियों और छोटे-मोटे कब्रिस्तानों के बीच से होकर गुजरने लगे। रात हो आई थी और चूँकि चाँद अभी नहीं निकला था इसलिए उन्हें रास्ता खोजने में कुछ कठिनाई होती, लेकिन जैसी कि चिलन को आशा थी ईसाई लोग खुद उन्हें रास्ता दिखा रहे थे। उनके दायें-बायें और सामने धीरे-धीरे अन्धेरे से निकल कर कुछ धुंधली आकृतियाँ चुपचाप आगे बढ़ रही थीं। वे भी उनके पीछे पीछे चलने लगे। राहगीर और शहर से लौटनेवाले इन लोगों को मजदूर समझकर आगे बढ़ जाते थे, कुछ लोगों ने यह भी समझा कि ये लोग किसी की अर्थी के साथ कब्रि-स्तान की ओर जा रहे हैं। लेकिन जैसे-जैसे विनिसियस और उसके साथी आगे बढ़ते जाते थे, रास्ते में बत्तियाँ लिये हुए लोगों की तादाद भी बढ़ती जा रही थी। उनमें से कुछ लोग दबी आवाज में भजन गुनगुनाते जा रहे थे, जिनका स्वर विनिसियस को बहुत दुःखभरा मालूम हुआ। कभी-कभी उसके कानों में लोगों की बातचीत के कुछ टूटे-फूटे वाक्य पड़ जाते थे, जिनमें ईसा का नाम भी कभी-कभी सुनाई पड़ता था। रास्ता बड़ा लम्बा मालूम हो रहा था। अन्त में उन्हें कुछ दूर रोशनी दिखाई दी। विनिसियस ने पूछा कि क्या हम लोग प्रार्थना की जगह पर आ पहुँचे। चिलन रास्ते की थकावट से और कुछ घबराहट से बेचैन हो रहा था। उसने काँपती हुई आवाज में उत्तर दिया, "पता नहीं, सरकार। मैं कभी इस जगह नहीं आया। काश, ये लोग शहर के पास ही प्रार्थना के लिए अपनी जगह चुनते!"

कुछ दूर तक चुपचाप चलने के बाद चिलन फिर घबरायी हुई आवाज में कहने लगा, "मैंने अपना भेस तो इस तरह बदला है कि वे लोग मुझे पहचान नहीं पायेंगे, लेकिन अगर उन्होंने मुझे पहचान भी लिया तो वे मेरी जान नहीं लेंगे। इतने बुरे नहीं हैं ये लोग। बल्कि मैं तो कहूँगा कि ये काफी भले हैं और मैं इन्हें पसन्द करने लगा हूँ!"

—८८—

"इतनी जल्दी इन लोगों से प्रभावित होने की कोशिश न करो," विनिसियस ने कहा।

अब वे लोग एक सँकरे रास्ते से होकर आगे बढ़ रहे थे, जो बाँध के पास से होकर जाता था। चाँद अब कुछ-कुछ बादलों से बाहर निकल आया था, उसके प्रकाश में उन्होंने देखा कि वे लोग ओस्त्रेनम की दीवाल के पास आ पहुँचे हैं।

फाटक पर दो मजदूर अन्दर जानेवालों के संकेत-चिह्न देख रहे थे। थोड़ी ही देर में विनिसियस और उसके साथी ने अपने को एक खुली हुई जगह के बीच पाया, जो चारों ओर से दीवार से घिरी हुई थी। बीच में एक गुमटीनुमा कोई चीज थी, जिसके सामने फव्वारा चल रहा था। यहाँ-वहाँ कभी-कभी किसी कब्र का पत्थर दिखाई दे जाता था। लोग हल्की चाँदनी और दीये के प्रकाश में धीरे-धीरे इकट्ठे होते जा रहे थे। ठंडक की वजह से या गद्दारों के डर से लगभग सभी लोगों ने अपने चेहरे छिपा रखे थे। यह देखकर विनिसियस को कुछ निराशा हो रही थी कि ऐसे में लीजिया को पहचानना लगभग असम्भव हो जायगा।

घेरे के बीच में एक चबूतरे के पास मशालें जल रही थीं। अब लोगों ने एक अजीब सा भजन गाना शुरू किया। पहले तो उनका स्वर कुछ धीमा था, लेकिन वह फिर धीरे-धीरे तेज होता गया। इस भजन में ईश्वर से जैसे अन्धेरे में राह दिखाने की प्रार्थना की गई थी। लोगों ने अपने चेहरे आसमान की ओर उठा रखे थे और हाथ फैलाकर वे जैसे आसमान से किसी के नीचे उतरने की प्रार्थना कर रहे थे। कई मशालों को इकट्ठा करके काफी तेज रोशनी कर ली गई, जिससे पूरा कब्रिस्तान प्रकाशित हो उठा और दीयों की रोशनी मन्दी पड़ गई। उसी समय गुमटी में से एक बूढ़ा आदमी निकला जो नंगे सिर था और लबादा ओढ़े था। वह आदमी जलती हुई मशालों के पास ही चढ़ गया।

भीड़ में कुछ फुसफुसाहट शुरू हुई और विनिसियस ने अपने पास ही लोगों को दबी आवाज में कहते सुना, "पीटर, सन्त पीटर आ गये!" कुछ लोगों ने घुटनों के बल झुककर उसे प्रणाम किया और कुछ लोगों ने अपनी बाहें उसकी ओर फैला दीं। फिर वहाँ एक दम शान्ति छा गई, यहाँ तक कि जलती हुई मशालों के चटखने की आवाज सुनाई देने लगी। दूर सड़क पर कुछ गाड़ियाँ जा रही थीं और पास ही चीड़ के पेड़ों में हवा सनसना रही थी।

चिलन ने विनिसियस की ओर झुककर दबी आवाज में कहा! "यही है, यही ईसा का सबसे पहला शिष्य है। यह मछुए का काम करता था।"

बूढ़े ने अपने हाथ फैलाकर क्रास का चिन्ह बनाया और लोगों को संकेत से आशीर्वाद दिया। लोग उसके सामने घुटनों के बल झुक आये। विनिसियस और उसके साथियों ने भी दूसरों की देखा-देखी झुककर उसे नमस्कार किया। विनि-

सियस को लगा कि इस बूढ़े का चेहरा बहुत साधारण है और साथ ही काफी असाधारण भी है। उसकी असाधारणता उसके भोलेपन में थी। जैसा कि मिस्र, यूनान और रोम के पुरोहितों का लिबास होता है, सिर पर देवदार की पत्तियों की माला, हाथ में ताड़ के पेड़ की टहनी, सीने पर सुनहली पट्टी, सफेद या सितारों से मढ़ा हुआ कमरबन्द वगैरह ऐसा कुछ भी ईसाइयों के इस पुरोहित के पास नहीं था।

पहले तो पीटर इस तरह बोलता रहा जैसे पिता अपने बच्चों को सीख देता है। उसने उन्हें विलासिता और किसी भी काम में अति से बचने की राय दी। निर्धनता, पवित्रता और सत्य को प्यार करने और अन्याय और अत्याचार को धीरज के साथ सहन करने, अपने शासकों और ईश्वर की आज्ञा मानने और अपराध से बचने तथा पाखंड और अनाचार से बचने की उसने सीख दी, और अंत में उसने यह कहा कि ईसाइयों को अपने रहन-सहन से आदर्श जीवन का उदाहरण पेश करना चाहिए और बुराई का सामना होने पर भी अपनी अच्छाई नहीं छोड़नी चाहिए। विनिसियस को यह सब सुनना कुछ बुरा लग रहा था, क्योंकि वह अब तक लीजिया को खोज नहीं पाया था। उसे ऐसा लगा जैसे यह बूढ़ा फकीर पवित्रता और अपनी चित्तवृत्तियों को रोकने की शिक्षा देकर उसका मजाक बना रहा है। क्या वह इस तरह लीजिया को उसके खिलाफ नहीं कर रहा है? उसे क्रोध के साथ-साथ यह भी लग रहा था कि जैसे उसे धोखा दिया गया है। उसने किसी बहुत बड़े रहस्य को देखने की आशा की थी, उसका ख्याल था कि उसे यहाँ कम से कम कोई अच्छा भाषण सुनने को तो मिलेगा ही, लेकिन यहाँ तो उसे बहुत ही सीधे-सादे और सादगी से भरे कुछ वाक्य सुनने को मिले। उसे यही आश्चर्य हो रहा था कि लोग क्यों उसकी बात को इतनी गंभीरता से सुन रहे हैं। वह बूढ़ा कह रहा था कि आप लोगों को अपने से ज्यादा सच्चाई और भलमनसाहत को प्यार करना चाहिए, क्योंकि सच्चाई और भलमनसाहत ही ईश्वर का दूसरा रूप है, जो आदमी इन चीजों को प्यार करता है वह जैसे ईश्वर को प्यार करता है और उसकी सन्तानों में गिना जाता है।

विनिसियस की समझ में यह सब कुछ नहीं आया, लेकिन इतना यह जानता था कि ओलस की पत्नी पोम्पोनिया भी ईसाई धर्म के अनुसार ईश्वर को एक और सबसे बड़ा मानती थी। लेकिन सबसे ज्यादा आश्चर्य तो उसे उस बूढ़े फकीर की इस बात पर हुआ कि वह असीम प्रेम को ही ईश्वर का प्रेम बता रहा था और यह कह रहा था कि जो मनुष्यमात्र को प्यार करता है वह ईश्वर की आज्ञा का पालन करता है। बूढ़ा कह रहा था कि हमारे पैगम्बर सबको समान दृष्टि से देखते थे, उन्होंने उन यहूदियों को भी क्षमा कर दिया था जो उनकी मृत्यु के कारण बने थे। हमें अपने प्रति बुराई करनेवाले को क्षमा ही नहीं कर देना चाहिए बल्कि उन्हें प्यार भी करना चाहिए, उन पर स्नेह रखना चाहिए—हमें बदमाशों को भी प्यार करना चाहिए,

क्योंकि प्रेम ही एक ऐसी चीज है जो खराब से खराब आदमीयों को भी रास्ते पर ला सकती है।

मशालों की रोशनी और भी तेज की गई, हवा जैसे सो रही थी। मशालों की लपट सीधे आसमान की ओर उठ रही थी और वह बूढ़ा ईसा की अन्तिम दावत का वर्णन करने के बाद अब बराबर ईसा का नाम ले रहा था।

इस बूढ़े ने बहुत कुछ सहन किया था। वह बता रहा था कि किस तरह ईसा की मृत्यु के बाद दो दिन तक वह बेचैन रहा और उसने किसी तरह जॉन के साथ अपने दिन काटे। दो दिन उसने रोते-रोते ही गुजारे। जब ईसा की मृत्यु का तीसरा दिन हुआ और वे लोग तब भी रो रहे थे तो अचानक मेरी मांग्दलेन हाँफती हुई आई और रोकर कहने लगी, "उन्होंने हमारे पैगम्बर को गायब कर दिया!" यह सुनकर वे लोग दौड़ते हुए उस जगह पहुँचे जहाँ ईसा को दफन किया गया था। वहाँ सबसे पहले जॉन पहुँचा और उसने देखा कि कब्र खाली थी। उसे आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हो रही थी। जब तीनों वहाँ पहुँचे तब मैं कब्र में घुसा और मैंने देखा कि बाकी सब कुछ तो वहीं है, लेकिन ईसा का शरीर गायब है। यह सोचकर कि रोमन पुरोहितों ने उनके पैगम्बर की लाश चुरा ली है, वे लोग बहुत दुखी होकर घर लौटे।

फिर बूढ़े ने इस तरह आँखें मूँद लीं, जैसे वह बीती हुई बातों को ठीक से याद करने की कोशिश कर रहा हो, और उसने कहा, "और जब सब लोग इस तरह आँसू बहा रहे थे तो अचानक फिर से दूसरी बार मेरी मांग्दलेन दौड़ती हुई आई और बोली कि मैंने प्रभू ईसा को देखा है। उस अलौकिक प्रकाश में पहले तो वह उन्हें पहचान नहीं सकी, लेकिन जब उन्होंने उसका नाम लेकर पुकारा तो उसने उनके चरणों में अपना सिर रख दिया। ईसामसीह ने उसे अपने अन्य शिष्यों के पास जाने की आज्ञा दी, और फिर वे गायब हो गये। जब मेरी ने अपनी यह बात अपने दूसरे साथियों को बताई तो कुछ ने तो उसे डाँट दिया और दूसरों ने यह समझा कि मारे दुःख के इसका सिर फिर गया है, क्योंकि उसने आनंदाश्रु बहाते हुए यह भी बताया था कि उसने ईसा की कब्र के पास देवदूतों को देखा था। फिर शाम को जब सब लोग दरवाजा बंद करके बैठे थे और इस बात पर बहस कर रहे थे तब अचानक ईसा ने उन्हें दर्शन दिये और कहा, "तुम्हें शांति मिले!"

"और मैंने अपने प्रभू को साफ-साफ देखा। फिर हमें विश्वास हो गया कि ईसा फिर से जी उठे हैं और चाहे जो कुछ भी हो जाय लेकिन उनका नाम हमेशा अमर रहेगा। एक सप्ताह बाद थामस को उन्होंने उपदेश दिया और हम सब लोग अपनी आँखों से उनका दर्शन करते रहे और कानों से उनकी आवाज सुनते रहे।"

विनिसियस यह सब सुनता रहा, उसे बूढ़े की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। कभी-कभी विनिसियस को ऐसा लगता जैसे वह सपना देख रहा हो, लेकिन फिर उसे अपने आसपास खड़े हुए लोग दिखाई देते और उसकी नाक में मशालों के धुएँ की बदबू आती और उसे अपने सामने चट्टान पर खड़ा हुआ वह बूढ़ा दिखाई देता जो अपना सिर हिला-हिलाकर यह कह रहा था कि उसने ईसामसीह को फिर से जीवित होते देखा है।

इतने में चिलन ने विनिसियस का कपड़ा खींचते हुए धीरे से कहा, "हुजूर, उधर देखिये! उस बूढ़े के पास ही यूरसस दिखाई दे रहा है, जिसके बगल में एक लड़की खड़ी हुई है।"

विनिसियस ने अचानक चौंककर देखा, सचमुच वह लीजिया ही थी।

## २१

उसने लीजिया को देखा, और इसके बाद वह जैसे सब कुछ भूल गया। इतने दिनों की परेशानी और निराशा के बाद आज उसने फिर से लीजिया को पा लिया था! उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। उसे जैसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने सोचा कि कहीं वह सपना तो नहीं देख रहा है। नहीं, यह लीजिया ही थी जो उससे कुछ ही दूर खड़ी थी। वह मशालों की रोशनी में साफ-साफ दिखाई दे रही थी। उसके सिर से रूमाल खिसक गया था और बाल बिगड़ गये थे। उसका मुँह कुछ खुला हुआ था और वह बहुत ध्यान से उस बूढ़े फकीर की बातें सुन रही थी। उसने एक काली चादर ओढ़ रखी थी। विनिसियस को आज वह जितनी सुन्दर दिखाई दी उतनी इसके पहले कभी नहीं दिखाई दी थी। अचानक उसका हृदय प्रेम के उद्दाम आवेग और एक प्रबल चाह से भर उठा। उसे देखकर जैसे उसकी कई दिनों की प्यास बुझ गई। उस दैत्याकार गुलाम के पास खड़ी वह बहुत ही छोटी, एक नन्हीं बच्ची जैसी दिखाई दे रही थी। उसने बहुत-सी सुन्दर स्त्रियाँ देखी थीं लेकिन इस समय लीजिया जैसी उसे दिखाई दे रही थी वैसी सुन्दरी आज तक उसने नहीं देखी थी। इस समय वह उसके लिए सब कुछ बलि कर सकता था, रोम और सारी दुनिया को उस पर निछावर कर सकता था।

वह इसी तरह मन्त्र मुग्ध-सा उसकी ओर देखता रहता, लेकिन चिलन ने उसका ध्यान भंग कर दिया। अब लोग भजन गाने लगे थे। फिर सन्त पीटर ने उन लोगों को ईसाई धर्म में दीक्षित किया, जिन्हें दूसरे पुरोहितों ने धर्म की दीक्षा

लेने के लिए उसके सामने खड़ा किया था। विनिसियस को लगता था कि जैसे यह रात कभी नहीं कटेगी। वह लीजिया का पीछा करने और उसे भगा ले जाने के मौके के इन्तजार में था।

अन्त में कुछ लोग वहाँ से जाने लगे। चिलन ने धीरे से कहा, "हुजूर, चलिये हम लोग भी बाहर निकल चलें और उसका इंतजार करें। हम लोगों ने अपने चेहरे नहीं खोले हैं, इसलिए लोग हमारी तरफ देख रहे हैं।"

वे लोग बाहर निकल आये और ऐसी जगह खड़े हो गये जहाँ से निकलने, वालों को आसानी से देखा जा सकता था। भीड़ में यूरसस के लम्बे-चौड़े आकार को पहचानना मुश्किल नहीं था।

"हम लोग उनका पीछा करेंगे और देखेंगे कि वे किस घर में जाते हैं, और कल, या आज ही क्यों नहीं, आप अपने गुलामों को उस घर के आसपास तैनात कर दें और लड़की को वहाँ से निकाल लायें।"

"नहीं।"

"तब हुजूर, आप करना क्या चाहते हैं?"

"हम लोग उसका पीछा करेंगे और उसके घर पहुँचते ही उसे निकाल ले जायेंगे। क्रोटन, तुम्हें याद है न कि इस समय तुम्हें क्या करना है?"

"जी हुजूर, अगर मैं उस साँड़ की गर्दन न तोड़ दूँ तो आप मुझे जिन्दगी भर के लिए अपना गुलाम बना लीजियेगा।"

चिलन ने ईश्वर के नाम पर उनसे ऐसा न करने की प्रार्थना की और कहा कि हम लोग क्रोटन को इसलिए लाये हैं कि अगर हमें पहचान लिया जाय तो यह हमारी रक्षा करेगा, लड़की को भगाने के लिए इसे नहीं लाया गया है। अगर हम लोगों ने बिना पूरी तैयारी के लड़की को भगाने की कोशिश की तो हम सब की जान खतरे में पड़ जायगी और वह हमारे हाथ से भी निकल जायगी। इसलिए क्यों न पहले ठीक से उसके रहने की जगह का पता लगा लिया जाय? बेकार ही खतरा मोल लेने से क्या फायदा?

इतने दिनों बाद लीजिया को देखकर अपने को रोकना विनिसियस के लिए बहुत मुश्किल हो रहा था, लेकिन इस समय उसे चिलन की बात भी ठीक मालूम हुई और वह उसकी राय मान भी सकता था, लेकिन क्रोटन यह नहीं चाहता था, क्योंकि इसमें उसे पूरा इनाम मिलने की आशा नहीं थी। वह बोला, "हुजूर, इस बुड्ढे को कह दीजिये कि बेकार की बकवास न करे, वरना मुझे गुस्सा आ जायगा। मैं यह नहीं कहता कि आप लड़की को यहीं भीड़-भाड़ में पकड़ लीजिये, क्योंकि ऐसे तो लोग हमें पत्थर मारकर भगा देंगे, लेकिन ज्योंही वह घर पहुँचेगी, मैं उसे उठाकर जहाँ आप चाहेंगे पहुँचा दूँगा।"

"बिल्कुल ठीक ! यही तो मैं चाहता हूँ," विनिसियस बोला।

चिलन ने कुछ दबी आवाज में कहा, "लेकिन उसका नौकर बहुत ही ताकतवर मालूम होता है।"

"होगा, तुम्हें इससे क्या ? कोई तुम्हें तो कह नहीं रहा है कि उसके हाथ रोक लो।" क्रोटन ने चिढ़कर कहा।

उन्हें काफी देर तक इन्तजार करना पड़ा और जब यूरसस और लीजिया बाहर निकले तब मुर्गे बोलने लगे थे और सवेरा होनेवाला था। वे लोग कई आदमियों के साथ निकले, जिनमें चिलन को लगा कि सन्त पीटर और कुछ लोग और भी है। एक लड़का हाथ में दीया लिये उन्हें रास्ता बताता जा रहा था। इन लोगों के पीछे करीब दो सौ ईसाइयों का झुण्ड आ रहा था। विनिसियस और उसके साथी भीड़ में शरीक हो गये।

"देख लीजिये हुजूर," चिलन ने कहा, "उस लड़की के साथ कितने सारे आदमी हैं। उसके साथ वह बड़ा फकीर भी चल रहा है, और आप देख ही सकते हैं कि लोग उसका कितना आदर कर रहे हैं !"

सवेरा हो रहा था। दीवारों की मुड़ेरों पर सूरज की हलकी रोशनी फैलने लगी थी। सड़क के आसपास के मकान और पेड़ तथा कब्र के पत्थर वगैरह धीरे-धीरे उजाले में आते जा रहे थे। सड़क अब सूनी नहीं थी। कुंजड़े अपने गदहों और खच्चरों पर तरकारियाँ लादे भागे जा रहे थे ताकि शहर के दरवाजे खुलने के वक्त तक वे वहाँ पहुँच जायें। गोश्त से लदी हुई गाड़ियाँ भी कभी-कभी चरमराती हुई उधर से निकल आती थीं। हलका-हलका कुहरा छाया हुआ था। कुहरे में लोगों की शक्लें बहुत ही धुंधली दिखाई पड़ती थीं। विनिसियस ने एक क्षण के लिए भी लीजिया की ओर से अपनी नजर नहीं हटायी।

लेकिन अब वे लोग शहरपनाह के पास पहुँच रहे थे और यहाँ उन्हें एक अजीब दृश्य देखने को मिला। दो सिपाही उस बूढ़े सन्त के चरणों में झुक गये और सन्त ने उनका लोहे की टोपियाँ छूकर और क्रास का चिह्न बनाकर उन्हें आशीर्वाद दिया। विनिसियस ने कभी यह नहीं सोचा था कि सिपाहियों में भी ईसाई धर्म को माननेवाले मिल सकते हैं। इस घटना ने उसे यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि यह नया धर्म कितनी तेजी से फैलता जा रहा है। अगर लीजिया कभी शहर से भागने की कोशिश करे तो शहर के चौकीदार भी इसमें उसकी मदद कर सकते हैं।

शहरपनाह के पास पहुँचते-पहुँचते ईसाई बिखरने लगे। अब यह जरूरी हो गया कि लीजिया का पीछा काफी दूर रहकर और बहुत सावधानी के साथ किया जाय। वे लोग इसी तरह चलते रहे और सूरज निकलते-निकलते नदी के पुल के पास पहुँचे, जहाँ आकर लीजिया का दल भी बिखर गया। एक बुढ़िया और उसके

साथ के बच्चे के साथ बूढ़ा सन्त भी दूसरी तरफ निकल गया और यूरसस और लीजिया एक नाटे से बूढ़े के साथ पास की एक संकरी गली में मुड़ गये। वे लोग कुछ कदम आगे चलकर एक ऐसे मकान में घुस गये जिसके निचले हिस्से में एक तेली और बहेलिये की दूकान थी।

चिलन विनिसियस और क्रोटन के काफी पीछे चल रहा था। वह अचानक चौंककर रुक गया और एक दीवाल से सट कर छिपे-छिपे उन्हें लौट आने का इशारा करने लगा। वे लोग वापस लौट आये। विनिसियस बोला, "जरा जाकर देखो तो, इस मकान में किसी दूसरी तरफ से निकलने का कोई रास्ता तो नहीं है।"

हालाँकि चिलन अब तक बराबर यह शिकायत कर रहा था कि उसके पैरों में दर्द हो रहा है, लेकिन विनिसियस की बात सुनते ही वह फौरन वहाँ से भागा। थोड़ी देर में वह लौट आया और बोला, "जी नहीं, इस मकान में सिर्फ एक ही दरवाजा है।" फिर कई देवताओं के नाम लेकर उसने बहुत आजिजी से कहा, "हुजूर, मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप इस योजना को छोड़ दें। जरा मेरी बात तो सुनिये—"

लेकिन बीच में ही उसकी बोली रुक गई क्योंकि विनिसियस खूंखार आँखों से उसकी ओर घूरने लगा था। इस समय उसके चेहरे से लग रहा था कि वह किसी की परवाह करने को तैयार नहीं है। क्रोटन भी बेचैन होकर इधर-उधर देखने लगा। वह बोला, "मैं पहले घुसता हूँ।"

"नहीं, तुम मेरे पीछे आओ!" विनिसियस ने आदेश के स्वर में कहा।

वे लोग मकान के गलियारे में घुस गये।

चिलन भागकर पास की एक गली के मोड़ पर छिपकर खड़ा हो गया और बहुत सावधानी से इधर-उधर देखने लगा।

## २२

विनिसियस मकान में घुस तो गया लेकिन अन्दर गलियारे तक जाते-जाते उसे महसूस होने लगा कि यह काम है मुश्किल। इस मकान में कई मंजिलें थीं जिसमें से एक में कई छोटी-छोटी कोठरियाँ थीं। इन कोठरियों में गरीब परिवारों के लोग भरे थे।

गलियारे से निकलकर विनिसियस और क्रोटन एक छोटे से आँगन में पहुँचे जो चारों ओर मकान से घिरा था, और जिसमें बीच में एक छोटा-सा फव्वारा बना

था। फव्वारे से पानी हौज में गिर रहा था। ऊपर की मंजिलों के लिए दीवारों से सटे हुए कई जीने बने थे जिनका कुछ हिस्सा पत्थर का और बाकी लकड़ी का था। जीने ऊपर के मकानों के छज्जों तक जाते थे। कुछ मकानों में लकड़ी के दरवाजे लगे थे और कुछ में सिर्फ फटी हुई कम्बलों के परदे लटक रहे थे। तड़के सबेरे का समय था इसलिए आँगन में कोई नहीं दिखाई दे रहा था। जो लोग अभी प्रार्थना सभा से लौटे थे उन्हें छोड़कर बाकी लगभग सभी सो रहे थे।

"हमें क्या करना चाहिए, सरकार?" क्रोटन ने रुकते हुए पूछा।

"हमें यहीं इन्तजार करना चाहिए," विनिसियस ने कहा, "शायद तब तक कोई दिखाई दे। हमें आँगन में दिखाई नहीं पड़ना चाहिये।"

इसी समय उसे लगा कि चिलन का कहना ज्यादा ठीक था। अगर वह अपने साथ चालीस-पचास गुलाम लाया होता और उन्हें दरवाजे पर तैनात कर देता तो ज्यादा अच्छा होता। दरवाजा एक ही था। उसके आदमी बाहर पहरा देते और वह आसानी से मकान की तलाशी ले लेता। उसे फौरन लीजिया का मकान ढूँढ़कर उसी पर धावा करना चाहिए था। वरना और लोग निकल आयेंगे और फिर सब ईसाई मिलकर उसका काम रोक देंगे। इस हालत में तो किसी से कुछ पूछना भी खतरनाक था। विनिसियस यही सोच रहा था कि लौटकर गुलामों को ले आना ठीक रहेगा या नहीं, इतने में कुछ दूर के एक मकान का परदा कुछ उठा और उसमें से एक आदमी निकलकर हाथ में छलनी लिए हुए फव्वारे की ओर बढ़ा।

"यही लीजिया का नौकर है," विनिसियस ने धीरे से कहा।

"आप कहें तो अभी मैं इसकी हड्डी-पसली ढीली कर दूँ!"

"नहीं, जरा ठहरो।"

यूरसस ने इन लोगों को नहीं देखा, क्योंकि ये गलियारे के अंधेरे में खड़े थे। वह चुपचाप छलनी में साग-सब्जी धोने लगा। अपना काम खत्म करके वह लौट गया। उसके बाद परदा बन्द हो गया। क्रोटन और विनिसियस ने यह सोचकर उसका पीछा किया कि फौरन चलकर लीजिया के मकान पर हमला कर दें।

लेकिन आगे बढ़ने पर उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि परदे के बाद कोई मकान नहीं था बल्कि उसके बाद एक दूसरा अन्धेरा गलियारा था जिसके दूसरे सिरे पर एक छोटा-सा बाग दिखाई देता था और बाग में ही सामने एक कोठरी बनी हुई थी। देखने में ऐसा लगता था कि यहाँ कोई नहीं रहता।

उन्हें लगा कि यह तो ज्यादा अच्छा मौका है। बाहर आँगन में ज्यादा लोगों के इकट्ठे हो जाने की संभावना थी लेकिन यहाँ शायद ही कोई आता। यूरसस कोठरी में जा ही रहा था कि अचानक पैरों की आहट पाकर वह रुक गया, जब उसने

अपने पीछे दो आदमियों को आते देखा तो उसने छलनी पास ही एक छोटी दीवार रख दी और उनकी ओर मुड़ कर पूछा, "किसे चाहते हो तुम लोग ?"

"तुम्हें !"

विनिसियस ने जवाब दिया। फिर उसने क्रोटन की ओर मुड़कर कहा, "मार डालो इसे !"

क्रोटन आगे झपटा और यूरसस को एक क्षण का मौका दिये बिना ही उसने उसे अपने फौलादी हाथों में जकड़ लिया। विनिसियस को अपने साथी की ताकत पर पूरा भरोसा था इसलिए वह इन दोनों की कुश्ती के खत्म होने का इन्तजार किये बिना ही आगे बढ़ गया और कोठरी का दरवाजा खोलकर अन्दर जा पहुँचा। अन्दर कमरे में अंधेरा था और एक कोने में लकड़ियाँ जल रही थीं। आग की रोशनी में लीजिया का चेहरा चमक रहा था। पास ही वह बूढ़ा भी बैठा था जो लीजिया और यूरसस के साथ प्रार्थनासभा से लौटा था।

विनिसियस ने लीजिया को कमर में हाथ डालकर उठा लिया और दरवाजे की ओर बढ़ आया। एक हाथ से वह उसे अपने सीने पर दबोचे रहा और दूसरे हाथ से उसने उस बूढ़े को एक जोर का धक्का दिया जो उसका रास्ता रोकने की कोशिश कर रहा था। उसके चेहरे पर से कपड़ा खिसक गया और लीजिया ने उसे पहचान लिया। इस समय उसका चेहरा इतना भयानक लग रहा था कि उसे देखकर लीजिया का खून सूख गया। वह मदद के लिए चीख सकती थी, लेकिन नहीं चीख सकी। उसने दरवाजे को पकड़ने की कोशिश की लेकिन उसका हाथ पत्थर पर फिसल गया। वह बेहोश होने वाली ही थी कि अचानक बाहर बागीचे में उसकी नजर एक भयानक दृश्य पर पड़ी।

यहाँ यूरसस अपनी बाहों में क्रोटन को दोहरा करके दबोचे हुए था, उसका सिर उसके कन्धों पर झूल आया था और उसके कन्धों से खून निकल रहा था, जब यूरसस ने विनिसियस को लीजिया को उठाकर भागते देखा तो उसने क्रोटन के झूलते हुए सिर पर एक घूंसा और मारा और फिर उसे फेंककर वह दहाड़ता हुआ विनिसियस पर झपटा।

"मौत !" विनिसियस ने मन में सोचा। लेकिन तभी जैसे उसने सपने में सुनाई देती हो इस तरह लीजिया की चीख सुनी, "उसे मारना मत, यूरसस !" और फिर यूरसस को लगा कि जैसे किसी ने बिजली की तरह झपट कर उसके हाथों से लीजिया को छीन लिया। उसे चक्कर आ गया और आँखों के आगे अँधेरा छा गया।

इस बीच चिलन बाहर दीवाल से सटा धड़कते हुए दिल से इन लोगों का इन्तजार कर रहा था। लेकिन देर होते देखकर उसकी बेचैनी बढ़ने लगी। उसकी आँखें

बराबर मकान में घुसने के गलियारे पर ही टिकी रहीं। उसने सोचा कि अगर उन लोगों को लीजिया का पता नहीं मिला और उन्होंने कुछ शोर मचाया तो लीजिया यहाँ से भी भाग निकलेगी। लेकिन यह सोचकर उसे मन में कुछ तसल्ली ही हुई क्योंकि इस हालत में विनिसियस को फिर से मदद के लिए उसका मुंह देखना पड़ेगा, और इस तरह उसके लिए आमदनी का जरिया बना रहेगा। वह मन में बोला—खैर, यह लोग चाहे जो कुछ करें, इसमें फायदा मेरा ही है। बस, भगवान जरा मुझपर कृपा रखें—लेकिन, यह क्या! और अचानक उसके रोंगटे खड़े हो गये।

यूरसस मकान के दरवाजे में खड़ा था और उसके कन्धे पर क्रोटन का निर्जीव शरीर झूल रहा था। इधर-उधर देखकर वह नदी की ओर बढ़ चला। चिलन साँस रोककर दीवाल से चिपटा रहा। उसने सोचा कि अगर इसकी नजर कहीं मुझपर पड़ी, तो बस मौत ही समझो।

लेकिन यूरसस उसके पास से होकर निकल गया और एक मकान के मोड़ पर जाकर गायब हो गया। चिलन फौरन सिर पर पैर रखकर वहाँ से भाग निकला। भागते-भागते वह मन में कह रहा था—अगर कहीं लौटकर उसने मुझे पाया, तो वह मेरी जान ले लेगा। हे सूर्य देव, हे अग्नि देव, मेरी रक्षा करो! हे ईसाइयों के भगवान, मुझपर कृपा करो! मैं रोम छोड़कर चला जाऊँगा। इस दैत्य से मेरी जान बचे तो मैं आज ही यहाँ से हमेशा के लिए चला जाऊँ।

उसे यह व्यक्ति बहुत अलौकिक शक्तिसम्पन्न-सा लग रहा था, क्योंकि इसने क्रोटन जैसे ताकतवर आदमी को मार डाला था। भागते-भागते उसके मन में आया कि हो न हो यह कोई देवता है जो मनुष्य का वेश धरकर यहाँ आया है। उसने सोचा कि क्रोटन को ईसाइयों के किसी देवता ने ही मारा है। यूरसस जरूर किसी का अवतार है। जब वह कई गलियाँ पार कर चुका और उसने कुछ मजदूरों को काम पर जाते देखा, तब कहीं उसकी जान में जान आई। वह बुरी तरह हाँफ रहा था। एक मकान की सीढ़ी पर बैठ कर वह साँस लेने लगा और अपने माथे का पसीना पोंछने लगा।

शहर इस समय भी सो रहा था। सुबह की ठंडी हवा में चिलन को कुछ कँपकँपी छूटने लगी। वह उठकर धीरे-धीरे नदी की ओर बढ़ चला। उसने सोचा कि शायद वहाँ कहीं उसे क्रोटन की लाश मिल जाय। यह लीजियन तो पूरा राक्षस मालूम होता है। इसने पार पाना मुश्किल है। इसकी हड्डियाँ जैसे फौलाद की बनी हैं, लेकिन अब इस मामले में आगे क्या होगा!

विनिसियस का क्या हुआ इसका पता लगाना उसके लिए आवश्यक था। उसने यूरसस को क्रोटन की लाश ले जाते हुए देखा था लेकिन और कुछ उसे नहीं मालूम था। शायद विनिसियस भी मारा गया हो, या घायल हो गया हो, या हो

सकता है पकड़ लिया गया हो! उसे उस समय यह नहीं मालूम था कि ईसाई लोग इतने बड़े आदमी को मारने की हिम्मत कर सकते हैं, जो सीजर का मित्र है और सेना में जिसे इतना ऊँचा ओहदा प्राप्त है। ऐसा होने पर सब को एक सिरे से सजा भुगतनी पड़ती। हो सकता है, यह हो कि वे लोग लीजिया को कहीं भाग निकलने का मौका देने के लिए विनिसियस को कुछ समय के लिए रोके हुए हों। चिलन सोच रहा था—अगर यूरसस ने एक ही झपट्टे में विनिसियस का अन्त न कर दिया हो और अभी वह जिन्दा हो तो इतना तो उसे मानना ही चाहिए कि मैंने उसे नहीं फँसवाया है। इसलिए मुझपर आफत आने का कोई सवाल ही नहीं उठता। अब मुझे चलकर विनिसियस के किसी आदमी को बता देना चाहिए कि उसका मालिक इस समय कहाँ फँसा है। अब यह उसका काम है कि वह पुलिस में खबर देता है कि नहीं। इसके अलावा मैं पेट्रोनियस के पास भी जा सकता हूँ और उससे भी इनाम माँग सकता हूँ। पहले मैं लीजिया को खोजता रहा, अब मैं विनिसियस का पता लगाऊँगा, और फिर इसके बाद फिर से लीजिया की खोज में लगूँगा।

लेकिन इस समय उसे सबसे ज्यादा खुशी इस बात की थी कि उसके पास रुपये की दो थैलियाँ थीं। एक तो विनिसियस ने उसे चलने के पहले दी थी और दूसरी उसने कब्रगाह से निकलने के बाद दी थी। इस स्थिति से फायदा उठाने की खुशी में उसने अपना कुछ मनोरंजन करने और कुछ बढ़िया खाने-पीने की योजना बनाई।

और जब शराब की दूकान खुली तो उसने खूब छककर खाना खाया और शराब पी, यहाँ तक कि वह नहाना भी भूल गया। इसके अलावा उसे नींद आ रही थी और उससे चलते नहीं बन रहा था। जब वह किसी तरह लड़खड़ाता हुआ अपने घर पहुँचा तो वहाँ उसकी दासी, जिसे उसने विनिसियस से मिले पैसों से खरीदा था, उसका इन्तजार कर रही थी। किसी तरह वह अपने सोने के कमरे तक पहुँचा और फिर बिस्तर पर जा गिरा। तुरन्त ही उसे नींद आ गई।

शाम को कहीं जाकर वह जागा, या कहिये कि अपनी दासी के द्वारा जगाया गया, जिसने बताया कि एक आदमी आया है और वह फौरन उससे मिलना चाहता है। यह सुनकर फौरन चिलन की नींद उड़ गई।

जल्दी से कुछ ओढ़कर उसने बाहर दरवाजे की ओर नजर डाली और अचानक वह चौंक पड़ा, बाहर दैत्याकार यूरसस खड़ा था।

चिलन के हाथ-पाँव ठंडे हो गये, दिल की धड़कन जैसे रुक गई और वह इस तरह काँपने लगा जैसे उसकी रीढ़ की हड्डी में सैकड़ों चींटियाँ काट रही हों। उसने अपनी दासी से कहा, "सायरा, कह दो कि मैं घर में नहीं हूँ। पता नहीं यह भला आदमी कौन है।"

लेकिन वह लड़की बोली, "पर मैंने तो उससे कह दिया है कि आप घर में हैं और सो रहे हैं। वह आपको जगाने के लिए कह रहा है।"

"अरे, हाय भगवान, तुमने यह क्यों कहा ! मैं तुम्हारी चमड़ी···"

लेकिन तब तक यूरसस बाहर इन्तजार करते-करते ऊबकर अन्दर चला आया और दरवाजे में झाँक कर बोला, "चिलन चिलनिडीस !"

चिलन बोला, "हाँ भाई, बोलो-बोलो, मैं ही चिलन हूँ। लेकिन शायद तुमने गलती की है, मैं तुम्हें नहीं पहचानता।"

"चिलन चिलनिडीस," यूरसस ने फिर से कहा, "तुम्हारा मालिक विनिसियस तुम्हें बुला रहा है। उसने कहा है कि तुम मेरे साथ चलो और उससे मिल लो।"

# दूसरा भाग

## १

पीड़ा से कराह कर विनिसियस जाग उठा। जब उसने आँख खोली तो तीन आदमियों को अपने ऊपर झुका हुआ पाया, इनमें से दो को वह पहचानता था, एक तो यूरसस था और दूसरा वह बूढ़ा था जिसे उसने लीजिया को उठाकर भागते समय ढकेल कर गिरा दिया था। तीसरा आदमी उसके बायें हाथ की चोट को देख रहा था। विनिसियस को इतना दर्द था कि उसे लगा कि ये लोग बदला लेने के लिए यातना दे रहे हैं, इसलिए उसने दाँत भींचकर कहा, "मुझे मार ही डालो न!"

लेकिन जैसे उन लोगों ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह विशालकाय यूरसस, जिसके सख्त चेहरे पर इस समय कुछ दुःख की रेखाएँ उभरी हुई थीं, हाथ में पट्टियों का एक बंडल लिये हुए था और वह बूढ़ा उस आदमी से कह रहा था, जो विनिसियस का घाव देख रहा था, "ग्लोकस, तुम्हारा क्या ख्याल है, इसके सिर में जो चोट आई है वह बहुत खतरनाक तो नहीं है?"

"नहीं तो, क्रिसपस, इस पहलवान ने," यह कहते हुए उसने यूरसस की ओर इशारा किया—"इसे दीवाल पर फेंक दिया था और इसने गिरते वक्त हाथ बढ़ाकर अपने को रोकने की कोशिश की इसी से हाथ उखड़ गया है और हड्डी टूट गई है। लेकिन सिर का घाव तो बहुत ही मामूली है।"

"तुमने बड़ी खूबी से उसका इलाज किया है। लोग भी तुम्हें बहुत अच्छा हकीम मानते हैं। इसीलिए मैंने यूरसस को तुम्हारे पास भेजा।"

"और इसने मुझे बताया है कि कल यह मेरी जान ही लेने पर उतारू था।"

"हाँ, इसने अपनी बात मुझे बतायी थी। असल में यह इसकी योजना नहीं थी। गद्दार तुम नहीं हो, बल्कि यह अजनबी आदमी है जो उसे खून करने के लिए मजबूर कर रहा था।"

"वह तो बड़ा नीच आदमी निकला, पहले मैंने सोचा था कि यह कोई हमारा ही धर्मभाई और बहुत ही बड़ा ईसाई है!" यूरसस ने आह भरकर कहा।

"यह सब तुम मुझे फिर कभी फुरसत से बतलाना। इस समय जरा मरीज को अच्छी तरह से रखने की जरूरत है।"

जब हाथ की जर्राही खत्म हुई तो विनिसियस फिर होश में आ गया। लीजिया उसके बिस्तर के पास ही खड़ी थी। उसके हाथों में एक तसला था जिसमें ग्लोकस बार-बार कपड़ा डुबोकर विनिसियस के सिर पर रखता जाता था।

"लीजिया!" विनिसियस कराहा।

लीजिया ने दुःख भरी आँखों से उसकी ओर देखा। उसके हाथ में तसला काँप गया। वह धीरे से बोली, "तुम ठीक हो जाओगे।"

"लीजिया, तुमने मुझे इन लोगों के हाथों मर क्यों नहीं जाने दिया?"

"ईश्वर तुम्हें जल्दी अच्छा कर दे!" वह धीरे से बोली।

विनिसियस को कुछ राहत मिली। दर्द के मारे उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी अँधेरे गड्ढे में गिरा जा रहा है, फिर भी उसे एक प्रकार का सन्तोष था। उसे ऐसा लगता था जैसे कोई देवता उसके सिर पर छाया किये हुए है।

ग्लोकस ने उसके सिर का घाव धोकर उसपर मरहम लगा दिया। लीजिया ने एक प्याले में शराब और पानी मिला कर उसके ओठों से लगा दिया। विनिसियस एक ही साँस में पी गया। अब उसे बहुत कम दर्द था। वह बोला, "मुझे और थोड़ी-सी पिला दो।"

लीजिया प्याला भरने के लिए कमरे में चली गई। क्रिसपस हकीम से कुछ बात करने के बाद उसके पलंग के पास आ खड़ा हुआ और बोला, "विनिसियस, ईश्वर ने तुम्हें एक पाप से रोक लिया। उसने तुम्हें इसलिए जिन्दा रखा कि तुम अपनी आत्मा को शुद्ध कर सको। उसने, जिसके लिए मनुष्य की कीमत मिट्टी के बराबर है, तुम्हें असहाय के रूप में हमारे हाथों में सौंपा था, लेकिन ईसा मसीह की शिक्षा है कि हमें अपने दुश्मनों से प्यार करना चाहिये। हमने तुम्हारी मरहम-पट्टी कर दी और तुम जल्द ही ठीक हो जाओगे, लेकिन हम ज्यादा दिनों तक तुम्हारी देखभाल नहीं कर सकेंगे। अकेले में तुम इस बात पर सोचना कि तुम्हारे लिए लीजिया को दुःख देना कहाँ तक उचित है, जिसने तुम्हारी वजह से अपना घर और अपने माता-पिता को खोया है और हम लोगों को भी सताना तुम्हारे लिए कहाँ तक ठीक है, जिन्होंने तुम्हारी बुराई का बदला भलाई से चुकाया है।"

"तो क्या तुम मुझे छोड़ देना चाहते हो?" विनिसियस ने पूछा।

"नहीं, हम लोग यह मकान छोड़ना चाहते हैं, क्योंकि यहाँ हमें सिपाही सतायेंगे। तुम्हारा एक साथी यहाँ मारा गया है और तुम भी घायल हुए हो इसमें हमारा कोई कुसूर नहीं है, लेकिन हमें कानून के हाथों सजा भुगतनी पड़ेगी।"

"तुम्हें डरने की जरूरत नहीं, मैं तुम्हें बचाऊँगा।"

क्रिसपस ने उससे यह नहीं कहा कि उन लोगों को उस पर भी विश्वास नहीं है। वह बोला, "मालिक, तुम्हारा दाहिना हाथ ठीक है। यह लो, तख्ती

और कलम लो और अपने नौकरों को चिट्ठी लिख दो कि वे लोग आज शाम को पालकी लेकर यहाँ आ जायँ और तुम्हें घर ले जायँ। यह एक गरीब विधवा का घर है। वह और उसका बेटा थोड़ी देर में यहाँ आयेंगे। वह लड़का तुम्हारा खत ले जायगा। जहाँ तक हम लोगों का सवाल है, हमें अब जल्दी ही अपने लिए कोई दूसरी जगह ढूँढ़नी पड़ेगी।"

यह सुनकर विनिसियस का रंग उड़ गया। उसने सोचा कि अगर मैंने लीजिया को फिर से खो दिया तो अब कभी उससे मिलने की उम्मीद नहीं रहेगी। वह हर हालत में उससे अपना सम्बन्ध अच्छा करना चाहता था, लेकिन इसके लिए उसे कुछ वक्त की जरूरत थी।

"सुनो, तुम लोग ईसाई हो, कल मैं भी तुम लोगों के साथ ओस्त्रेनम गया था और वहाँ मैंने तुम्हारे मज़हब की बातें सुनी थीं और अगर मैं उन्हें न भी सुन पाता तो भी तुम्हारे कामों से मेरे लिए समझना बहुत आसान था कि तुम लोग भले और ईमानदार हो। उस विधवा से कहो कि वह यहीं रहे, तुम लोग भी यहीं रहो, और मुझे रहने दो। तुम, या तुम्हारे ये हकीम जानते हैं कि मैं अभी यहाँ से जाने के काबिल नहीं हूँ। मेरा यह टूटा हुआ हाथ तभी अच्छा हो सकता है, जब कि इसे बिल्कुल न छेड़ा जाय और काफी आराम दिया जाय। इसलिए मैं तो यहाँ से तब तक नहीं हटूँगा, जब तक कि तुम लोग खुद मुझे यहाँ से उठा कर बाहर न फेंक दो।"

वह साँस लेने के लिए रुका तो क्रिसपस ने कहा, "यहाँ कोई तुम्हारे खिलाफ बल प्रयोग नहीं करेगा। सिर्फ हम लोग ही अपनी जान बचाने के लिए यहाँ से जायेंगे।"

विनिसियस को अपनी बात का जवाब सुनाना पसन्द नहीं था। उसकी भौंहें सिकुड़ गईं, लेकिन अपने को रोककर वह बोला, "इस घर में घुसते हम लोगों को किसी ने नहीं देखा, सिर्फ एक यूनानी जानता है, जो हमारे साथ ओस्त्रेनम तक गया था। मैं तुम्हें उसका पता बता देता हूँ। उसे यहाँ ले आओ। मैं उससे कह दूँगा कि वह इसके बारे में बिल्कुल चुप रहे। वह मेरा नौकर है। मैं घर खत लिख दूँगा कि मैं बाहर जा रहा हूँ। अगर उस यूनानी ने प्रिफेक्ट (नगरपाल) से शिकायत कर दी होगी तो मैं कह दूँगा कि मैंने ही क्रोटन को मार डाला है और अपना हाथ तुड़वा लिया है। मैं अपने माता-पिता की शपथ लेकर कहता हूँ कि मैं यही कहूँगा। इसलिए अब तुम लोग हिफाजत से यहाँ रह सकते हो। तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं। अब जल्दी करो और उसे बुला लाओ। उसका नाम चिलन चिलनिडीस है।"

"तो ठीक है, ग्लोकस हकीम आपके साथ रहेगा और वह बुढ़िया भी आपकी देखभाल करेगी।"

"मैंने तो अपनी सारी बातें तुमसे साफ-साफ कह दी हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि तुम कुछ अपने मन में छिपा रहे हो। शायद तुम्हें यह डर है कि मैं अपने नौकरों को बुलाकर उनके जरिये लीजिया को यहाँ से पकड़वा लूँगा।"

"हाँ।"

"ठीक, लेकिन सुनो मैं तुम्हारे सामने ही चिलन से बात करूँगा और तुम्हारे सामने ही खत में यह लिख दूँगा कि मैं बाहर जा रहा हूँ। इसके बाद मैं तुम्हारे जरिये ही किसी को खबर भेजूँगा। अब तो तुम्हें मुझ पर विश्वास होना चाहिए। मैं जो कुछ कह रहा हूँ उस पर जरा गौर करो, और बेकार ही मेरा सिर न खाओ।" यह कहते-कहते उसे गुस्सा आ गया और वह नाराज होकर बोला, "क्या तुम यह सोचते हो कि मैं इस बात से इन्कार कर दूँगा कि मैं लीजिया की वजह से ही यहाँ रहना चाहता हूँ? नहीं, लेकिन मैं जोर-जबरदस्ती से उसे पाना नहीं चाहता और फिर अगर वह यहाँ से चली जाती है तो याद रखो कि मैं अपनी यह सारी पट्टी वगैरह फाड़ डालूँगा और न कुछ खाऊँगा, न पीयूँगा फिर मेरी मौत तुम्हारे और तुम्हारे साथियों के सिर ही मानी जायगी।"

इसी समय लीजिया अन्दर आ गई और क्रिसपस के पास जाकर शान्ति से बोली, "क्रिसपस, इन्हें यहीं रहने दो। जब तक ये ईश्वर की कृपा से ठीक नहीं हो जाते, इन्हें अकेले छोड़ना ठीक नहीं है।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी," क्रिसपस ने कहा।

क्रिसपस ने जिस तरह आसानी से उसकी बात मान ली, यह देखकर विनिसियस को कुछ आश्चर्य हुआ। उसे लगा जैसे ईसाइयों के बीच लीजिया को बड़ा मान है. लोग उसकी बात मानते हैं और उसका आदर करते हैं। उसने भी अपने आपको उसके हाथ में छोड़ देने का निश्चय किया। थोड़ी देर बाद जब लीजिया ने उसे पानी पिलाया, तो उसकी इच्छा हुई कि उसका हाथ थाम ले, लेकिन उसे इसकी हिम्मत नहीं हुई। हालाँकि विनिसियस ने कभी महल में जबरदस्ती उसे चूमा था और फिर कसम खाई थी कि वह उसे कोड़े से पीटेगा और उसके बाल पकड़कर अपने कमरे में खींच ले जायेगा—वही विनिसियस आज उसका हाथ छूने तक की हिम्मत नहीं कर सका!

## २

विनिसियस ने यूरसस को चिलन का ठीक-ठीक पता बता दिया और फिर तख्ती पर कुछ लिखने के बाद उसने क्रिसपस की ओर देखकर कहा, "मैं तुम्हें खत इसलिए दे रहा हूँ कि यह चिलन बड़ा धूर्त आदमी है और इस पर विश्वास करना मुश्किल है। अक्सर जब कभी मैं उसे बुलाता हूँ तो वह मेरे नौकरों को यह कहकर भगा देता है कि वह अभी घर में नहीं है। जब वह मेरे यहाँ आने से घबराता है और उसे डर रहता है कि मैं गुस्सा होऊँगा तो अक्सर वह इस तरह के बहाने बनाया करता है।"

"मैं उसका पता लूँगा, और उसे यहाँ ले आऊँगा। अगर वह सीधे-सीधे यहाँ नहीं आयेगा तो मैं उसे जबरदस्ती खींच लाऊँगा," यूरसस ने कहा, और फिर वह अपना लबादा उठाकर तेजी से बाहर निकल गया।

जब वह चिलन के यहाँ पहुँचा तो उसे पहचान नहीं सका। वह उससे सिर्फ एक ही बार मिला था, वह भी रात के अन्धेरे में। इसके अलावा इस समय जो डर से काँपता हुआ बूढ़ा यूनानी उसके सामने खड़ा था उसमें और उस रात को अँधेरे में नदी किनारे बड़े आत्मविश्वास के साथ उसे ग्लोकस को मारने का आदेश देने-वाले उस बूढ़े में काफी फर्क था। चिलन ने भी अपने को फौरन संभाल लिया। विनिसियस की चिट्ठी देखकर उसे विश्वास हो गया। कम से कम अब उस पर कोई यह शक नहीं कर सकता कि उसने ही विनिसियस को जाल में फँसाया है। फिर उसने ओढ़-आढ़कर अपनी शक्ल ऐसी बना ली थी कि अब वह उसे पहचान न सके।

"तुम मुझे कहाँ ले चल रहे हो?" उसने रास्ते में उससे पूछा।

"नदी के उस पार।"

"मैं रोम में हाल में आया हूँ, और मैं कभी इस तरफ नहीं गया। मेरा ख्याल है कि हम लोग ठीक रास्ते पर हैं।"

यूरसस हालाँकि बहुत ही भोला आदमी था, लेकिन वह जानता था कि यह बूढ़ा विनिसियस के साथ उस दिन प्रार्थना-सभा में आया था। उसे यह भी मालूम था कि यह क्रोटन और विनिसियस के साथ उस घर में आया था, जहाँ लीजिया रहती थी। इसलिए उसे बीच में ही टोकते हुए उसने कहा, "देखो बुढ़ऊ, बेकार झूठ

बोलो। आज सुबह ही तुम विनिसियस के साथ प्रार्थना-सभा में गये थे और फिर हमारे घर तक आये थे।"

"ओह, तो तुम्हारा घर उधर नदी के पारवाले हिस्से में है? मैं हाल में ही इस शहर में आया हूँ और मुझे मुहल्लों के नाम भूल जाते हैं। हाँ, ठीक है भाई; मैं तुम्हारे दरवाजे पर गया था और मैंने विनिसियस से बहुत कहा कि इस तरह अन्दर न घुसो। लेकिन वह नहीं माना। मैं प्रार्थना-सभा में भी गया था, और जानते हो क्यों गया था? मैं पिछले कुछ दिनों से विनिसियस को भी ईसाई बनाने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं चाहता था कि वह हमारे सबसे बड़े जीवित पैगम्बर की बातें सुन सके। भगवान तुम्हें और उसको सुखी रखें! तुम ईसाई हो, हो न? और तुम भी यह चाहते होगे कि झूठ पर सच्चाई की विजय हो, है या नहीं?"

"हाँ," यूरसस ने प्रभावित होकर कहा।

अब तक चिलन की हिम्मत बँध चुकी थी। वह बोला, "विनिसियस बहुत बड़ा आदमी है और सीजर का मित्र है। वह अक्सर इस तरह लोगों को तंग किया करता है। लेकिन अगर उसका कहीं बाल भी बाँका हुआ, तो सीजर इसका बदला सारे ईसाइयों से लेगा।"

"लेकिन इन सबसे अधिक शक्तिमान तो वह ऊपरवाला है!"

"मैं यह सब तो नहीं जानता। खैर ठीक है, लेकिन विनिसियस मुझे क्यों बुला रहा है?"

"मैं ठीक से नहीं जानता। लेकिन हमें दूसरों की सेवा मन लगाकर करनी चाहिए।"

"ठीक कहते हो, इस बात को हमेशा अपने मन में रखना।"

यूरसस ने एक आह भरी और चिलन को ऐसा लगा कि इस आदमी को बहकाना बहुत आसान है। वह यह जानना चाहता था कि विनिसियस के अन्दर जाने के बाद मकान में क्या-क्या हुआ। उसने जरा रोब दिखाते हुए पूछा, "तुमने क्रोटन का क्या किया? बताओ, और सही सही बताओ।"

यूरसस ने दूसरी बार आह भरी और फिर कहा, "यह सब तुम्हें विनिसियस बतायेगा।"

"तो तुमने उसे छुरे से मारा या किसी सोंटे वगैरह से उसका सिर फोड़ा?"

"उस समय मेरे पास कोई हथियार नहीं था।"

चिलन को उसकी इस अलौकिक शक्ति पर आश्चर्य हुआ। वह बोला, "भगवान तुम्हें क्षमा करे!"

कुछ दूर तक वे चुपचाप चलते रहे, फिर चिलन बोला, "मैं तो किसी से भेद नहीं बताऊँगा, लेकिन जरा तुम भी होशियारी बरतना!"

"मैं सिर्फ ईसा से डरता हूँ और किसी की मुझे परवाह नहीं है।"

"हाँ ठीक है, हत्या से बढ़कर और कोई पाप नहीं होता। मैं तुम्हारे लिए दुआ माँगूँगा, लेकिन मेरी दुआ कारगर हो इसके लिए जरूरी यह होगा कि तुम इस बात की कसम खाओ कि आगे फिर कभी किसी पर उँगली तक नहीं उठाओगे।"

"लेकिन मैंने जानबूझ कर तो उसे मारा नहीं," यूरसस ने कहा।

असल में चिलन को अपनी गर्दन की फिक्र थी, इसलिए वह बार-बार यूरसस को हत्या के पाप से डराता रहा और उससे कसम खाने को कहता रहा। इसी तरह बात करते-करते ये लोग घर पहुँचे। चिलन का दिल फिर से धड़कने लगा था।

कमरे में अँधेरा था। जाड़े की शाम थी इसलिए घना कुहरा घिर आया था और दीयों की रोशनी बहुत ही मंद दिखाई देती थी। किसी तरह कोशिश करके चिलन ने देखा कि कमरे के एक कोने में एक बिस्तर बिछा है और विनिसियस उस पर पड़ा है। चिलन बिना इधर-उधर कुछ देखे चुपचाप विनिसियस के बिस्तर के पास जा खड़ा हुआ और अपने हाथ मींजते हुए बोला, "ओह सरकार, आपने मेरी बात क्यों नहीं मानी?"

"बको मत, चुप रहो! मेरी बात सुनो," विनिसियस ने कहा।

फिर वह जलती हुई आँखों से चिलन की ओर घूरते हुए और अपने प्रत्येक शब्द पर इस तरह जोर देते हुए बोलने लगा, जैसे वह चाहता हो कि चिलन उसकी आज्ञा को ठीक-ठीक अपने दिमाग में बैठा ले। उसने कहा, "क्रोटन ने मुझपर हमला कर दिया था, वह मेरी जान लेना चाहता था और मुझे लूटना चाहता था। कुछ समझा तुमने? इसलिए मैंने उसे मार डाला। लड़ाई में मुझे जो कुछ चोट आई, उसकी इन लोगों ने मरहम-पट्टी की।"

चिलन ने फौरन ताड़ लिया कि विनिसियस के इस तरह कहने का मतलब यह है कि उसका ईसाइयों से कुछ समझौता हो गया है। उसके चेहरे से भी यही बात जाहिर होती थी। इसलिए चिलन ने भी बिना किसी प्रकार का सन्देह या आश्चर्य किये फौरन उसकी बात मान ली और कहा, "ओह, बड़ा कमीना निकला वह! लेकिन हुजूर, मैंने आपसे पहले ही कह दिया था कि उस पर विश्वास न करें, लेकिन मेरी तो आपने एक बात भी नहीं सुनी!"

"अगर मेरे पास अपनी छुरी न होती, तो वह तो मेरी जान ही ले लेता," विनिसियस ने कहा।

"वह तो ईश्वर की कृपा थी कि मैंने आपको कम से कम एक चाकू अपने पास जरूर रख लेने की सलाह दी।"

विनिसियस ने गौर से उसकी ओर देखते हुए पूछा, "और आज तुम क्या कर रहे थे?"

"क्या करता सरकार ! मैंने आपको बताया न कि मैं तो आपके अच्छे होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था !"

"बस यही ?"

"और हाँ, मैं यहाँ आने की तैयारी ही कर रहा था, मैं देखना चाहता था कि हुजूर की तबीयत कैसी है, इतने में यह भला आदमी आ पहुँचा और इसने मुझे बताया कि हुजूर ने मुझे बुलाया है।"

"लो, यह एक तख्ती लो इसे ले जाकर तुम मेरे घर मेरे नौकर को दे देना। इसमें लिखा है कि मैं बेनेवेन्तम जा रहा हूँ। तुम उससे यह कहना कि मैंने आज सुबह ही रोम छोड़ दिया है और पेट्रोनियस का एक जरूरी खत पाकर मुझे फौरन चला जाना पड़ा।" उसने फिर एक बार अपनी बात दुहरायी, "मैं बेनेवेन्तम चला गया हूँ, कुछ समझे तुम ?"

"हाँ सरकार, आप आज ही चले गये, आज सुबह ही मैं आपको छोड़ने के लिए गया था और आपके रोम से चले जाने का मुझे इतना दुःख है कि कुछ न पूछिये, मैं तो जैसे आपके बिना अकेला रोम में विधवा हो गया हूँ !"

उसकी यह बकवास सुनकर विनिसियस बीमार होने के बावजूद अपनी हँसी नहीं रोक सका। लेकिन चिलन की बात से खुश होकर वह बोला, "अच्छा लो, मैं तुम्हारा दुःख दूर करने के लिए इसमें कुछ शब्द और लिख देता हूँ। जरा बत्ती यहाँ लाना।"

अब चिलन को किसी बात की चिंता नहीं थी, वह उठा और दीवार पर से एक दीया उतार लाया। लेकिन ऐसा करते समय उसके चेहरे से कपड़ा हट गया और रोशनी में उसका चेहरा चमक उठा। ग्लोकस वहीं बैठा था। वह फौरन उछल कर उसके आगे आ खड़ा हुआ और बोला, "क्यों, तुमने मुझे पहचाना ?" उसकी आवाज इतनी भयानक थी कि वहाँ बैठे हुए सभी लोग काँप उठे। चिलन के हाथ से दीया छूट गया। उसने फौरन नीचे झुककर अपना चेहरा छिपाने की कोशिश की और कहा, "अरे भाई, मैं वह नहीं हूँ जो तुम समझ रहे हो ! मुझपर दया करो !"

ग्लोकस ने चीखकर कहा, "सब कोई देख लो, यही वह आदमी है जो मुझे बेचना चाहता था, जिसने मुझे और मेरे परिवार को बर्बाद कर दिया !"

अब जाकर विनिसियस की समझ में आया कि यह वही ग्लोकस है जिसकी कहानी उसने कभी चिलन के मुँह से सुनी थी। यूरसस को तो जैसे आँखें ही फटी रह गईं। उसने फौरन चिलन को पहचान लिया। उसने उसके हाथ उसकी पीठ पर मरोड़कर कसते हुए चीख कर कहा, "यही वह आदमी है जो मुझसे ग्लोकस को मारने के लिए कहता था !"

"हाय, मुझपर दया करो !" चिलनने काँपते हुए कहा। फिर वह विनिसियस

की ओर मुड़कर रोते हुए बोला, "सरकार, मुझे बचाइये ! मुझे तो आपका भरोसा है। इन लोगों को समझाइये। हाँ, आपकी चिट्ठी कहाँ है ? मैं उसे अभी फौरन ले जाता हूँ !"

लेकिन विनिसियस ने इस ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया। एक तो वह यह जानता था कि चिलन क्या-क्या कर चुका है और दूसरे उसके दिल में किसी के लिए दया-माया नहीं थी। वह बोला, "इसको ले जाकर बाहर बगीचे में जिन्दा गाड़ दो ! मेरी चिट्ठी कोई दूसरा ले जायगा।" उसके शब्द चिलन के लिए तो जैसे मौत का संदेश थे। यूरसस की फौलादी जकड़ में उसकी हड्डियाँ चटक रही थीं। उसकी आँखों में आँसू आ गये। वह रोने लगा, "भगवान के लिए मुझपर दया करो ! मैं भी ईसाई हूँ ! ईश्वर तुम्हारा भला करे, भाइयो ! अरे सुनो, मैं भी तो ईसाई हूँ ! अगर तुम लोगों को विश्वास न हो तो एक-दो बार नहीं दस बार मुझे ईसाई बना लो ! ग्लोकस मेरी बात तो सुनो, तुम्हें भ्रम हो रहा है ! अरे, मैं जिन्दगी भर तुम्हारी गुलामी करूँगा, मेरी जान न लो। मुझ पर दया करो !"

उसका गला रुँध रहा था और आवाज बैठती जा रही थी। इतने में सन्त पीटर ने, जो वहीं मेज की दूसरी ओर बैठे थे, उठकर कहा, "महात्मा ईसा ने हमें सिखाया है कि अगर किसी भाई ने पाप किया है तो उसे सजा दो, लेकिन अगर वह अपनी किये पर पछताता है तो उसे माफ कर दो। यहाँ तक कि अगर वह दिन में दस बार तुम्हारा बुरा करे और अगर दिन में दस बार भी तुमसे माफी माँगे तो उसे माफ कर दो !"

कमरे में खामोशी छा गई, और ग्लोकस काफी देर तक अपने हाथों से अपना चेहरा ढँके रहा। अन्त में वह बोला, "चिलन, तुमने मेरे साथ जो बुराई की है, ईश्वर तुम्हें उसके लिए क्षमा करे। मैं तुम्हें ईसा के नाम पर माफ करता हूँ।"

तब यूरसस ने भी उसके हाथ छोड़ दिये और कहा, "ईश्वर तुम्हें क्षमा करे, मैं भी तुम्हें छोड़ता हूँ।"

चिलन अब तक जमीन पर गिर पड़ा था। अपने हाथों के बल उठते हुए उसने चारों ओर इस तरह देखा जैसे जाल में फँसा हुआ कोई जानवर हो, और उसे यह नहीं मालूम हो कि मेरी मौत किस दिशा से आनेवाली है। उसे न अपनी आँखों पर विश्वास हो रहा था और न अपने कानों पर। उसे यह सोचने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी कि इन लोगों ने मुझे क्षमा कर दिया है। धीरे-धीरे उसकी जान में जान आई। अब भी उसके डर के मारे पीले पड़े हुए ओंठ काँप रहे थे। सन्त पीटर ने उससे कहा, "अब तुम चुपचाप यहाँ से चले जाओ।"

चिलन के मुँह से आवाज नहीं निकली। वह उठा और सीधा विनिसियस के

बिस्तर की ओर बढ़ गया, जैसे उससे दया की भीख माँगना चाहता हो। अब उसे इसमें शक नहीं था कि उन लोगों ने उसे छोड़ दिया है। अब वह जल्दी से जल्दी उन लोगों के हाथ से निकलकर भागना चाहता था, जिनकी दयालुता से उसे उतना ही डर लगने लगा था, जितना कि उनकी क्रूरता से उसे लगता।

"मुझे खत दे दीजिये! हुजूर, मुझे खत दे दीजिये!"

विनिसियस ने उसे तख्ती दे दी, जिसे लेकर वह एक बार फिर अपने आस-पास खड़े ईसाइयों को झुककर प्रणाम करने लगा, फिर उसने विनिसियस को सलाम किया और चुपचाप गर्दन झुकाये दरवाजे की ओर बढ़कर वह फौरन वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

बाहर बागीचे में अंधेरे में पहुँचते ही फिर से मारे डर के उसके रोंगटे खड़े हो गये। वह जानता था कि यूरसस रात के अंधेरे में उसे घर दबोचेगा और बिना जान लिये मानेगा नहीं। वह वहाँ से भाग जाना चाहता था, लेकिन जैसे उसके पैरों को लकवा मार गया। वे आगे बढ़ ही नहीं रहे थे और सचमुच यूरसस उसके पास आ पहुँचा। चिलन ने फौरन उसके पैरों में अपना सिर रख दिया और गिड़-गिड़ाते हुए कहा, "यूरसस—ईसा के नाम पर, मुझे छोड़ दो!"

लेकिन यूरसस बोला, "डरो मत। सन्त पीटर ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें दरवाजे तक पहुँचा दूँ, ताकि अंधेरे में तुम कहीं रास्ता न भूल जाओ। अगर तुमसे चला नहीं जाता हो तो चलो मैं उठाकर तुम्हें घर पहुँचा आता हूँ।"

चिलन ने अपना सिर ऊपर उठाया और कहा, "क्या कह रहे हो तुम? क्या? क्या तुम मुझे मारना नहीं चाहते?"

"नहीं, मैं तुम्हें नहीं मारूँगा। अगर मैंने तुम्हें बहुत जोर से पकड़ा हो और तुम्हारी हड्डियों में दर्द हो आया हो तो मुझे माफ कर देना।"

"अरे भाई, जरा मुझे सहारा देकर उठाओ, क्या सचमुच तुम मुझे मारना नहीं चाहते? जरा गली तक पहुँचा दो, वहाँ से मैं अकेला चला जाऊँगा।" यूरसस ने उसे इस तरह उठा लिया जैसे उसमें कोई वजन ही न हो। फिर उसने उसे अंधेरे गलियारे से दूसरे आँगन में होते हुए बाहर दरवाजे तक पहुँचाया। गलियारे में वह अपने मन में सोचता रहा कि बस अब यह मेरी जान लेगा। जब वे दोनों बाहर पहुँचे तब कहीं उसे विश्वास हुआ कि सचमुच उसे छोड़ दिया गया है। वह बोला, "बस, अब मैं अकेला चला जाऊँगा।"

"ईश्वर तुम्हारा भला करे।"

"और तुम्हारा भी भला करे! तुम्हारा भी भला हो, भाई! अच्छा अब मैं चलूँ।"

जब यूरसस लौट आया तो चिलन ने राहत की साँस ली और अपने शरीर

पर हाथ फेर कर देखा कि वह बिल्कुल सही-सलामत बच निकला है। कोई पचास कदम आगे जाने पर वह रुक गया और सोचने लगा कि आखिर बात क्या है, उन लोगों ने मेरी जान क्यों नहीं ली ?

## ३

जो कुछ अभी हुआ, वह विनिसियस की समझ में भी नहीं आ रहा था, और अपने मन में उसे भी चिलन से कम आश्चर्य नहीं था कि ये लोग इस तरह उसके साथ व्यवहार करेंगे और उससे बदला लेने के बजाय उसकी दवा दारू करेंगे। यह तो उसकी समझ में आता था कि अपने सिद्धान्तों की ही वजह से वे लोग ऐसा कर रहे हैं। लेकिन इसका कारण भी वह लीजिया की उपस्थिति और खासतौर से राज्य में अपने को प्राप्त सम्मान को मानता था। लेकिन चिलन के प्रति उनका जो व्यवहार था, वह तो बेमिसाल था। ऐसी क्षमाशीलता आदमी में हो सकती है, इसकी उसने कभी कल्पना तक नहीं की थी। वह भी अपने मन से पूछता रहा कि इन लोगों ने उस यूनानी को मारा क्यों नहीं ?

आखिर क्यों इनका यह सन्त इस बात की शिक्षा देता है कि अगर किसी ने दस बार बुराई की है तो उसे दस बार माफ किया जाय ? आखिर ग्लोकस ने चिलन से यह क्यों कहा कि जिस तरह मैं तुम्हें क्षमा कर रहा हूँ उस तरह ईश्वर भी तुम्हें क्षमा करे ? इसमें कोई शक नहीं था कि चिलन ने उस गरीब हकीम का बड़ा नुकसान किया था। विनिसियस जानता था कि ऐसी स्थिति में यह क्या करता। अगर कोई लीजिया को मार डाले तो वह उसे कच्चा चबा जाय। और ये लोग ऐसी क्षमा दिखाते हैं !

लेकिन आश्चर्य के साथ-साथ उसके मन में ईसाइयों के प्रति एक तरह की घृणा का और तरस खाने जैसा भाव था। वे लोग उसे उन भेड़ों की तरह लगते थे जो कभी न कभी भेड़िये का शिकार होकर ही रहेंगी। उसकी रोमन संस्कृति में इस तरह अपने आपको मौत के हवाले कर देना, इस तरह की विरोध हीनता का कहीं स्थान न था। इतना होने पर भी वह इस बात से बहुत प्रभावित था कि चिलन के चले जाने पर सब लोग बहुत खुश थे। सन्त पीटर ग्लोकस के पास आये और उसके सिर पर अपने हाथ रखकर बोले, "पुत्र, तुम में महात्मा ईसा की शिक्षा की विजय हुई है।"

तब तक यूरसस भी लौट आया और बताने लगा कि किस तरह उसने चिलन को दरवाजे तक पहुँचा दिया और उसके हाथ बाँधने से उसने उसे जो पीड़ा पहुँचायी थी उसके लिए किस तरह उसने उससे क्षमा माँगी। यह सुनकर सन्त पीटर ने उसे भी

आशीर्वाद दिया। फिर क्रिस्पस ने कहा कि आज का दिन हमारे लिए बहुत बड़ी जीत का दिन है। लेकिन विनिसियस की समझ में यह सब नहीं आया।

जब लीजिया ने फिर से उसके ओठों से प्याला लगाया तो उसने एक क्षण के लिए उसका हाथ थाम लिया और पूछा, "तो तुमने मुझे भी क्षमा कर दिया?"

"हम लोग ईसाई हैं, और हमारा मज़हब हमें अपने मन में किसी तरह का मैल रखने से मना करता है।"

"लीजिया, तुम्हारा यह ईश्वर चाहे जो कोई हो, मैं उसे एक सौ बैल की बलि चढ़ाने का वादा करता हूँ, सिर्फ इसीलिए कि वह तुम्हारा देवता है।"

वह बोली, "जब तुम्हारे दिल में उसके लिए प्यार पैदा हो जायगा तो तुम भी उसे मेरी ही तरह मानोगे।"

"नहीं, सिर्फ इसीलिए कि वह तुम्हारा देवता है!" विनिसियस ने फिर से दोहराया। फिर उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। वह बहुत कमज़ोरी महसूस कर रहा था।

लीजिया बाहर चली गई, लेकिन जल्दी ही लौट आई और फिर उसके पास जाकर देखने लगी कि उसे नींद आ गई है या नहीं। विनिसियस ने यह अनुभव करके कि वह उसके पास ही है अपनी आँखें खोली और मुस्कुराकर उसकी ओर देखा। लीजिया ने अपने हाथ से उसकी पलकें मूंद दीं, जैसे वह उसे सुलाना चाहती हो। विनिसियस को ऐसा लगा कि जैसे ऐसी शान्ति उसे कभी नहीं मिली थी। लेकिन उसकी थकावट बढ़ती जा रही थी। रात में उसे थोड़ा बुखार हो आया।

सपने में उसने देखा कि जैसे एक सुनसान कब्रगाह में मीनार की शक्ल का एक मन्दिर बना है और लीजिया उसकी पुजारिन है। उसकी आँखें लीजिया पर ही जमी थीं। उसे लगा जैसे लीजिया मीनार पर खड़ी है और उसके हाथ में उन पुजारिनों की तरह एक सितार भी है, जिन्हें उसने पूर्व के देशों में रात में चन्द्रमा के स्वागत में सितार पर भजन गाते हुए देखा था। वह खुद उसे पाने के लिए बड़ी मेहनत से मीनार की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, और उसके पीछे चिलन रेंगता हुआ आ रहा था और मारे डर के काँपता हुआ बार-बार कह रहा था, "सरकार, यह काम न कीजिये, वह यहाँ का पुजारिन है और वह देव इसका बदला लेगा!" विनिसियस इस देव का मतलब नहीं समझ पाता था, लेकिन फिर भी वह उससे डरता था। जब वह लीजिया के कुछ करीब पहुँचा तो उसने देखा कि सफेद दाढ़ी-वाला वह सन्त लीजिया के पास खड़ा है और कह रहा है, "इसे तुम छूना मत, यह मेरी है!"

विनिसियस की नींद खुल गई और वह आँखें फाड़कर अपने सामने देखने लगा।

कमरे में आग जल रही थी। छोटी लकड़ियाँ तो आसानी से चल रही थीं लेकिन कुछ मोटे कुन्दे, जो शायद हाल में ही आँच में रखे गये थे। चटखते हुए धीरे-धीरे लौ दे रहे थे। आग की रोशनी में विनिसियस ने देखा कि लीजिया उसके बिस्तर के पास ही थोड़ी दूर पर बैठी है।

विनिसियस का दिल भर आया। लीजिया कल रात को ओस्त्रेनम में भी जगी थी, फिर सारे दिन वह उसकी देखभाल में लगी रही और अब, जब सब लोग आराम कर रहे थे वह अकेली बैठी उसकी निगरानी कर रही थी। वह चुपचाप बैठी थी और उसकी आँखें मुंदी हुई थीं। विनिसियस यह नहीं समझ पा रहा था कि वह सो गई है या अपने विचारों में खोयी है। वह गौर से उसका चेहरा देखता रहा। उसकी झुकी हुई पलकें, उसकी गोदी में रखे हुए उसके हाथ वह देखता रहा और उसके दिमाग में एक बिल्कुल नई बात आई। उसे लगा कि ग्रीक और रोमन सौंदर्य के अलावा भी, जिसे अपनी गौरवपूर्ण नग्नता पर गर्व है, एक और सौंदर्य भी है, एक नया सौंदर्य जो अत्यन्त पवित्र है और उसमें जैसे आत्मा का निवास है।

वह अभी तक यह नहीं तय कर पाया था कि लीजिया को किस तरह ईसाई माने, लेकिन अब उसके बारे में सोचते समय वह उसे उसके मजहब से अलग करके नहीं आँकता था। यह लीजिया ही थी, दुःखी लीजिया, जिसका उसने बहुत अहित किया था, और वह है कि उसकी सेवा कर रही है, जबकि और लोग पड़े सो रहे हैं। शायद यह इसलिए था कि उसका मजहब उसे इस तरह सेवा करने की सीख देता था। लेकिन लीजिया का यह धर्म विनिसियस के मन में हालाँकि ईसा की शिक्षा के बारे में प्रशंसा का भाव उत्पन्न करता था, लेकिन साथ ही वह उसके लिए दुःखदायी भी था। विनिसियस इस बात को ज्यादा पसन्द करता कि लीजिया उसकी इस तरह की सेवा अपने मज़हब की वजह से नहीं बल्कि उसके प्रति अपने प्रेम के कारण करती—उसके प्रति, उसके सुन्दर मुख, उसकी आँखों, उसके सुगढ़ शरीर के प्रति प्रेम के कारण, तात्पर्य यह कि उन कारणों से जिनसे कि दूसरी यूनानी और रोमन रमणियाँ उसके गले में अपनी बाहें डालने के लिए उत्सुक रहा करती थीं।

लेकिन उसे फौरन यह भी महसूस हुआ कि अगर वह दूसरी औरतों की तरह होती, तो उसमें जरूर कुछ अधूरापन होता। लीजिया ने अब अपनी आँखें खोलीं और जब उसने देखा कि विनिसियस उसकी ओर देख रहा है तो वह उसके पास आ गई और बोली, "मैं यहीं तुम्हारे पास हूँ।"

वह बोला, "मैंने आज सपने में तुम्हें देखा।"

## ४

दूसरे दिन जब उसकी नींद खुली तो उसका बुखार जा चुका था, लेकिन वह बहुत अधिक कमजोरी महसूस कर रहा था। उसे लगा कि उसकी कानों में किसी के बात करने की आहट आ रही है, जब उसने आँखें खोलीं तो लीजिया उसके पास नहीं थी। यूरसस अंगीठी के ऊपर झुका हुआ कोयलों की राख झाड़ रहा था। फिर उसने जलते हुए कोयले इकट्ठे करके मुँह से फूँक मारना शुरू किया। विनिसियस को याद आया कि कल किस तरह इसने देखते-देखते उसे पटका था, वह पहलवानों की कुश्ती का बड़ा शौकीन था, उसने इस विशालकाय लीजियन के मांस, पुट्ठों और उसकी तगड़ी-तगड़ी जांघों को गौर से देखना शुरू किया। उसने सोचा कि इस दैत्य ने मेरी गर्दन नहीं तोड़ी, इसके लिए मुझे शुक्रदेव का ऋणी होना चाहिए, लेकिन अगर सारे लीजियन इसके जैसे ही तगड़े होते हैं तब तो वे हमारे उन सिपाहियों को जिन्दगी भर के लिए पाठ पढ़ा सकते हैं, जो डेन्यूब के किनारे उनके देश पर रोम का शासन स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। उसने उसे पुकारा, "गुलाम, सुनो!"

यूरसस ने अंगीठी पर से अपना चेहरा ऊपर उठाया और कुछ मुस्कुराते हुए कहा, "नमस्ते साहब, ईश्वर आपको जल्दी अच्छा कर दे, लेकिन मैं गुलाम नहीं हूँ, मुझे गुलामी से मुक्ति मिल गई है। मैं सिर्फ एक नौकर हूँ।"

विनिसियस उससे लीजिया के देश के बारे में कुछ पूछताछ करना चाहता था, उसे यह सुनकर बड़ा सन्तोष हुआ कि यह आदमी गुलाम नहीं बल्कि नौकर है, क्योंकि एक रोमन भद्र पुरुष के नाते उसके लिए किसी गुलाम से बात करना अपनी प्रतिष्ठा के खिलाफ था। न ही रोमन कानून और न रोमवासियों के रीतिरिवाज ही गुलाम को इन्सान मानते थे।

"तो तुम ओलस के घर के आदमी नहीं हो?"

"जी नहीं साहब, मैं लीजिया की सेवा करता हूँ, जिस तरह मैं उसकी माँ की सेवा करता था, और यह भी मैं अपने मन से करता हूँ। यहाँ कोई नौकर नहीं है।"

वह फिर से अंगीठी पर झुककर कोयलों में फूंक मारने लगा फिर उसने उन पर कुछ लकड़ियाँ डालीं और उन्हें सुलगाने की कोशिश की। कुछ देर बाद उसने फिर अपना सिर उठाया और कहा, "हमारे देश में गुलाम नहीं होते।"

विनिसियस ने पूछा, "लीजिया कहाँ है?"

"जरा बाहर गई है, मैं आपके लिए नाश्ता तैयार करता हूँ। वह रात भर आपके पास बैठी रही।"

"तुमने क्यों नहीं उसकी जगह ले ली ?"

"क्योंकि यह उसकी इच्छा थी, मेरा काम सिर्फ उसकी आज्ञा मानना है।"

फिर उसका चेहरा उतर गया और उसने दूसरे ही क्षण कहा, "अगर मैंने उसकी आज्ञा नहीं मानी होती तो आप आज जिन्दे न रहते।"

"तो तुम्हें इस बात का अफसोस है कि तुमने मुझे मारा नहीं ?"

"नहीं साहब, क्राइस्ट ने हमें अहिंसा की शिक्षा दी है।"

"और तुमने क्रोटन को मार डाला जो ?"

"उस वक्त इसके अलावा मैं कर ही क्या सकता था ?" यूरसस धीरे से बोला। फिर उसने कुछ अफसोस से अपने हाथों की ओर देखा, उन हाथों की ओर जो अब भी उतने ही बर्बर दिखाई देते थे, हालाँकि उसका मन अहिंसक बन चुका था। फिर उसने आग पर एक बर्तन चढ़ा दिया और आग की लपटों को देखते हुए वह किसी विचार में खो गया। अन्त में वह बोला, "साहब, इसमें आपका दोष था। आपने उसके साथ जबरदस्ती क्यों करनी चाही, जो एक राजकुमारी है ?"

एक साधारण और गँवार आदमी को इस तरह अपने से बात करने की और अपना दोष दिखाने की हिम्मत करते देखकर विनिसियस एक क्षण के लिए तो मारे गुस्से के काँप उठा, लेकिन क्रोध से अधिक प्रबल उसकी यह इच्छा थी कि वह लीजिया के पिछले जीवन के बारे में कुछ जानकारी हासिल करे। इसलिए वह यूरसस से लीजिया के इतिहास के बारे में पूछने लगा। लेकिन यूरसस उसे उससे अधिक कुछ नहीं बतला सका, जो वह पहले ही ओलस से सुन चुका था। लेकिन उसे यह सुनकर बहुत ही आनन्द और एक तरह का गर्व हुआ कि आज फिर उसे इस बात का प्रमाण मिल रहा है कि लीजिया एक राजा की पुत्री है।

यूरसस ने कहना शुरू किया, "जब सीजर ने लीजिया को जबरदस्ती अपने महल में मँगवाया तो मेरी इच्छा हुई कि मैं फिर से अपने देश के जङ्गलों में लौट जाऊँ और लीजिया वासियों से कहूँ कि वे अपनी राजकुमारी को बचाने की कोशिश करें। और इतना तय था कि उन्होंने डेन्यूब के किनारे आपकी फौजों पर हमला कर दिया होता, क्योंकि वे बड़े स्वामीभक्त लोग होते हैं और फिर एक दिन ऐसा भी आता कि मैं उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखाता। जब लीजिया फिर से पोम्पोनिया के घर लौट जायगी तो मैं उससे अपने देश जाने की इजाजत माँगूँगा। मैं अपने देश-वासियों को ईसा के बारे में बताऊँगा। ईसा का जन्म हमारे देश से बहुत दूर हुआ था। खैर, यह तो प्रभु की इच्छा थी, उन्होंने जहाँ उचित समझा जन्म ग्रहण किया। लेकिन इतना तय है कि अगर वे हमारे देश में, हमारे जङ्गलों में अवतार लेते तो हमने कभी उन्हें इस तरह सूली पर नहीं चढ़ाया होता। हम उनकी खूब सेवा करते

और उन्हें बहुत आराम से रखते। हमने दो-चार लड़ाइयों में जो कुछ लूटा था वह सारा धन हम उन्हें अर्पित कर देते और उन्हें किसी बात की तकलीफ नहीं होती।"

उसने विनिसियस के लिए नाश्ते का बर्तन ठीक से आग पर रखा और वह फिर से अपने विचारों में खो गया। जब दलिया तैयार हो गया तो उसने एक प्याले में ठंडा करने के लिए छोड़ दिया और कहा, "ग्लोकस का कहना है कि आपको अभी कम से कम हरकत करनी चाहिए और जहाँ तक हो सके अपना अच्छा हाथ भी नहीं हिलाना चाहिए। लीजिया ने मुझसे कहा है कि मैं अपने हाथों आपको दलिया खिला दूँ।"

बिस्तर पर एक किनारे बैठकर उसने प्याला विनिसियस के ओठों से लगा दिया। उसके चेहरे पर इतनी आजिजी का भाव था और उसकी नीली आँखों में सन्तोष की ऐसी मुस्कान थी, कि उसे देखकर विनिसियस को यह विश्वास नहीं हो सका कि यह वही खूंखार आदमी है। अपने जीवन में आज पहली बार इस युवक रोमन नागरिक ने यह सोचना शुरू किया कि एक मजदूर, नौकर और गुलाम के दिल में क्या होता है।

लेकिन यूरसस पूरी अदा के साथ उसकी सेवा नहीं कर पा रहा था। उसकी बड़ी-बड़ी हथेलियों के बीच दलिये का प्याला न मालूम कहाँ छिपा हुआ था और बड़ी मुश्किल से वह उसे विनिसियस के ओठों से लगा पा रहा था। अन्त में शर्मा कर उसने कहा, "इससे ज्यादा आसान तो मुझे किसी साँड़ से कुश्ती लड़ने लगता है।"

विनिसियस ने अक्सर दंगलों में इस तरह की कुश्तियाँ देखी थीं। शहर के बहुत ही अभ्यस्त पहलवान जंगलों के इन विशालकाय दैत्यों का लोहा मानते थे जो अपनी ताकत में सिर्फ हाथी से ही हलके पड़ते थे। उसने आश्चर्य से पूछा, "क्या तुमने कभी किसी साँड़ को पकड़ने की कोशिश की है?"

"हाँ, बीस साल की उम्र के बाद से मैं यह काम आसानी से कर लेता हूँ।"

उसने एक बार फिर बहुत ही भद्दे ढंग से विनिसियस को दलिया खिलाया और कहा, "यह काम मुझसे नहीं होगा। मैं जरा मरियम या नजारियस को बुला लाता हूँ।"

इतने में परदा हटा और लीजिया का थका हुआ चेहरा दिखाई दिया। वह बोली, "मैं आ गई, लाओ मैं तुम्हारी मदद कर देती हूँ।"

वह असल में अपने कमरे में सोने की तैयारी कर रही थी। उसके बाल बिगड़े हुए थे। उसे देखते ही विनिसियस का दिल तेजी से धड़कने लगा था, लेकिन उसने उसे फौरन जाकर आराम करने के लिए कहा।

वह हँसकर बोली, "मैं सोने जा ही रही थी, लेकिन पहले मैं जरा यूरसस का काम कर दूँ।"

उसने प्याला ले लिया और बिस्तर के एक कोने पर बैठकर विनिसियस को

खिलाना शुरू किया। विनिसियस कुछ शरमा रहा था, लेकिन उसके आनन्द की सीमा नहीं थी। जब वह उसे खिलाने के लिए झुकती थी तो उसके बाल उसके सीने को छू लेते थे और उसके शरीर की गरमाहट से विनिसियस जैसे अपने होश खो बैठता था। उसे ऐसा लग रहा था कि इस पूरे संसार में लीजिया से बढ़कर उसके लिए कोई नहीं है। पहले उसने लीजिया को सिर्फ चाहा था लेकिन अब वह अपने पूरे दिल से उससे प्यार करता था। पहले जैसा कि उसका रहने का ढंग चला आया था, वह बहुत ही अभिमानी और दम्भी था लेकिन अब उसके मन में कुछ कोमलता आ गई थी और अपने अलावा वह उसके मन के बारे में भी सोचने लगा था।

हालाँकि वह चाहता था कि लीजिया उसके पास और बैठे और उसे खिलाती रहे लेकिन उसने खाने से इनकार कर दिया और कहा, "जाओ अब तुम आराम कर लो। लेकिन उसने हँसकर उसे बताया कि उसे जरा भी थकावट नहीं है और न नींद ही आ रही है। जब ग्लोकस आ जायगा तो वह आराम करने चली जायगी।

उसे बोलते हुए सुनकर विनिसियस को ऐसा लगता था जैसे वह कोई मधुर गीत सुन रहा है। वह इसके लिए बेचैन था कि किस तरह लीजिया के प्रति अपना आभार प्रकट करे। कुछ देर की चुप्पी के बाद उसने कहा, "लीजिया, मैं तुम्हें पहले नहीं पहचान पाया था, लेकिन अब मुझे लगता है कि मैंने तुम्हें पाने का बिल्कुल गलत रास्ता चुना। इसलिए अब मेरा कहना है कि तुम फिर से अपने घर लौट जाओ, विश्वास रखो कोई तुम्हें छू तक नहीं सकता।"

लीजिया का चेहरा फौरन उतर गया। वह बोली, "मैं उसे दूर से भी देख पाती तो मुझे बड़ा सुख होता, लेकिन अब मैं लौटकर पोम्पोनिया के घर नहीं जा सकती।"

"क्यों?" विनिसियस ने आश्चर्य से पूछा।

"हम लोगों को एक्ते से मालूम होता रहता है कि महल में क्या होता रहता है। क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि मेरे भागने के बाद सीजर ने ओलस और पोम्पोनिया को अपने दरबार में बुलवाया था और उन्हें बहुत धमकाया था। उसका ख्याल है कि उन्होंने मेरे भागने में मदद की है। ओलस ने उसे जवाब दिया था कि आप जानते ही हैं कि आज तक कभी मैंने अपने मुँह से झूठी बात नहीं निकाली है और मैं शपथ लेकर कहता हूँ कि न तो हमने उसके भागने में मदद की है और न हम यही जानते हैं कि अब वह कहाँ है। सीजर ने उसकी बात मान ली और फिर वह इस मामले को भूल गया। मैंने यहाँ अपने बड़े-बूढ़ों की राय मानकर आज तक अपनी माँ को कभी चिट्ठी नहीं लिखी, ताकि मौका पड़ने पर वह कसम खाकर कह सके कि वह मेरे बारे में कुछ नहीं जानती। हम ईसाई झूठ नहीं बोलते, चाहे हमारी जान ही खतरे में क्यों न हो। पोम्पोनिया को सिर्फ दूर-दूर से खबर मिलती रहती है कि मैं जिन्दा हूँ और सुरक्षित हूँ।"

पोम्पोनिया की याद आते ही उसकी आँखों में आँसू आ गये, लेकिन किसी तरह वह अपने को रोककर बोली, "मैं जानती हूँ कि मेरे बिना उसे कितनी तकलीफ हो रही होगी, लेकिन ईसाई होने के नाते हम दूसरों से अधिक धैर्य और सन्तोष रख सकते हैं।"

विनिसियस बोला, "हाँ, तुम्हें ईसा का भरोसा है। यहाँ तुम मेरे पास बैठी हो और ईसा के बारे में सोच रही हो। जरा मेरे बारे में भी सोचा करो, वरना मुझे उससे नफरत होने लगेगी। मेरा तो सिर्फ एक ही देवता है, और वह है मेरी लीजिया। मैं तुम्हारे पैर चूमना चाहता हूँ, तुम्हारे भजन गाना चाहता हूँ, तुम्हारी पूजा करना चाहता हूँ और तुम्हारे ही आगे झुक सकता हूँ! नहीं, तुम नहीं जानती, जान भी नहीं सकती कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ।"

अपने ईश्वर का इस तरह अनादर किया जाना, लीजिया को बहुत बुरा लगा, लेकिन फिर भी विनिसियस के दुःखी मन के प्रति वह अपने को सहानुभूति से भरने से रोक न सकी। उसे लगा कि सचमुच वह उसे बहुत चाहता है और प्यार करता है। वह जानती थी कि यह क्रूर और खतरनाक रोमन आज उसका गुलाम बन चुका है, और यह देखकर उसे एक तरह का आनन्द और सन्तोष होता था। एक क्षण में उसे पिछली सारी बातें याद हो आईं। उसे वह लम्बा-तगड़ा और खूबसूरत विनिसियस याद आया जो कभी उसके घर ठहरा था, जिसने उसके बचपन भरे हृदय को अपनी प्यार भरी बातों ने उसी तरह जगा दिया था जिस तरह कोई किसी को सोते से जगा दे—इस आदमी के वे चुम्बन उसे याद आये जो उसने जबरदस्ती लिए थे और जिसकी भुजाओं से उसे यूरसस ने राजमहल में छुड़ाया था। लेकिन आज वह यहाँ पड़ा था, उसके गर्वीले चेहरे पर आनन्द के साथ-साथ दुःख की रेखाएँ थीं, उसकी गोरी पेशानी चमक रही थी और आँखों में एक चाह थी। प्यार ने उसे झुकने के लिए मजबूर किया था, अब वह घायल और असहाय-सा पड़ा था। इस समय वह ठीक ऐसा ही था जैसा कि वह उसे कभी चाहती थी, और उससे प्यार कर सकती थी।

फिर अचानक उसे लगा कि ऐसा भी क्षण आ सकता है जब इस आदमी का प्यार उसपर हावी हो जाय और उसे आँधी की तरह उड़ा ले जाय। क्या इसी के लिए वह भाग निकली थी? क्या इसके लिए वह अब तक शहर की गन्दी से गन्दी जगहों में अपने को छिपाती फिरी थी? आखिर यह विनिसियस है क्या? एक रोमन सैनिक, नीरो का एक दरबारी! जरूर लगता है कि यह कुछ बदल गया है, लेकिन अभी-अभी यह कह रहा था कि अगर वह उससे अधिक ईसा के बारे में सोचेगी तो वह उससे नफरत करने लगेगा? लीजिया को लगा कि ईसा से अधिक किसी से प्रेम करना ईसा के प्रति और उनकी शिक्षाओं के प्रति पाप करना है और यह सोचकर उसे अपने भविष्य के प्रति भय होने लगा और खुद अपने विचारों से भी भय होने लगा।

## ५

उसके बाद से लीजिया वहाँ बहुत कम दिखाई देने लगी और विनिसियस के पास बहुत ही कम जाने लगी। लेकिन इतने पर भी उसका चित्त शान्त नहीं हुआ। वह देखती थी कि विनिसियस ललचाई आँखों से उसकी ओर देखता है, वह चाहता है कि लीजिया उससे प्यार का एक शब्द ही कह दे। उसे बिना विरोध किये हुए यह सब कुछ सहना पड़ रहा है, क्योंकि उसे डर है कि कहीं वह नाराज न हो जाय और लीजिया यह भी जानती थी कि इस समय विनिसियस का स्वास्थ्य और सुख उस पर ही निर्भर है।

एक दिन लीजिया ने उसकी आँखों में आँसू देखे, और पहली बार उसे यह लगा कि क्यों न वह उसके आँसुओं को अपने चुम्बनों से सुखा दे। उस रात उसे अपने-आप पर बड़ी घृणा हुई और नींद न आ सकी।

विनिसियस अब ग्लोकस वगैरह से बातचीत करते समय बहुत ही कम अकड़ दिखाता था। वह बार-बार मन में अपने आप को याद दिलाता था कि यह बूढ़ा हर्कास और बूढ़ी मरियम और क्रिस्पस वगैरह भी इंसान हैं। यहाँ तक कि अन्त में वह यूरसस को भी पसन्द करने लगा।

इस तरह विनिसियस जितना ही अपने पर काबू पाता जाता था लीजिया उसे उतना ही अधिक प्यार करती थी। लेकिन यह रोमन सैनिक अपनी हिंसक प्रवृत्ति को ईसाई प्रभाव के कारण चाहे जितना ही दबाने की कोशिश करता, लेकिन उसके लिए यह एक बहुत बड़ी समस्या थी कि किस तरह वह अपने मन को ईसाई-धर्म का समर्थक बना सके। अब उसे इसमें सन्देह नहीं होता था, और न वह सन्देह करने का साहस ही कर पाता था कि ईसा मसीह एक देवपुरुष थे और अपनी मृत्यु के बाद वे सशरीर स्वर्ग गये थे। लेकिन उसे यह डर था कि अगर यह धर्म फैला तो यह समाज से ऊँच-नीच के भेद तो मिटा देगा। इसके कारण सामाजिक प्रभुत्व की परम्परा नष्ट हो जायगी। अगर यह हुआ तो रोमन साम्राज्य के प्रभुत्व का क्या होगा? क्या रोमन लोग अपना विश्व-व्यापी साम्राज्य छोड़ देंगे, और सारी विजित जातियों को अपने बराबर मान लेंगे? नहीं, इस तरह का विचार एक रोमन सरदार के मस्तिष्क में नहीं आ सकता।

लीजिया कुछ अन्दाज लगाती थी कि विनिसियस के मन में क्या चल रहा है। वह यह जानती थी कि वह उसके धर्म के प्रति अपने मन में सहानुभूति उत्पन्न

करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन साथ ही उसके मन में इसके प्रति एक स्वाभाविक घृणा भी है, और यह सोचकर वह सचमुच बहुत दुखी होती थी। लेकिन विनिसियस के मन में ईसा के प्रति जो एक मौन सम्मान की भावना उत्पन्न हो गई थी उससे लीजिया उसके प्रति आभार से भर उठती थी और उसकी ओर आकर्षित होती थी।

एक दिन उसके पास बैठे-बैठे वह बोली कि ईसाई धर्म के बाहर जीवन का कोई मूल्य नहीं है। विनिसियस अब कुछ ठीक हो गया था। वह अपने अच्छे हाथ के बल पर उचककर उठ बैठा और लीजिया के घुटनों पर सिर रखते हुए बोला, "जीवन ! तुम ही मेरा जीवन हो !"

यह सुनकर लीजिया की जैसे साँस रुक गई। उसके दिमाग ने सोचना बन्द कर दिया और वह हर्षातिरेक से काँपने लगी। उसने अपने हाथों से विनिसियस का सिर पकड़ लिया और उसे उठाने की कोशिश की, लेकिन इसी बीच उसने अपना सिर झुकाकर उसके बालों को ओठों से छू लिया। कुछ क्षणों के लिए दोनों के मन जैसे एक बहुत बड़ी शक्ति से संघर्ष करते रहे और बहुत कोशिश करके वे एक दूसरे को अपने आलिंगन में बाँधते से रोकते रहे। तब लीजिया उठ खड़ी हुई और वहाँ से चली गई।

विनिसियस को पता नहीं था कि इस सौभाग्य के लिए उसे क्या मूल्य चुकाना पड़ेगा। लेकिन अब लीजिया को लगता था कि उसे खुद सहायता की जरूरत है। दूसरी रात उसने जागते हुए, रोते हुए और ईश्वर से प्रार्थना करते हुए ही बिता दी। वह अब अपने को ईश्वर के सामने अपराधी पाती थी और सोचती थी कि ईश्वर अब उसकी बात नहीं सुन सकता। दूसरे दिन वह बहुत जल्दी उठ आई और क्रिस्पस को बाहर बगीचे में एक ओर ले गई। वहाँ उसने अपने मन का सारा रहस्य उसे कह सुनाया और फिर बोली कि मैं अपने आपे में नहीं हूँ, मुझे अपने-आप पर विश्वास नहीं रह गया है और मैं अपने को विनिसियस के प्यार में बहने से रोकने में असमर्थ हूँ, इसलिए मुझे यहाँ से कहीं दूर चली जाने दो।

क्रिस्पस ने उसके जाने की बात स्वीकार करली, लेकिन वह लीजिया के प्रेम को बर्दाश्त नहीं कर सका, वह इसे किसी पाप से कम नहीं मानता था। उसे यह सोचकर ही क्रोध हो आता था कि जिस लीजिया को उसने अपने यहाँ शरण दी, स्नेह किया, जिसे ईसाई-धर्म की दीक्षा दी और जिसे वह अक्सर ईसाई-धर्म की धरती से उत्पन्न हुआ एक पवित्र पुष्प समझता था, वह आज ईसा के बजाय और किसी के प्रेम को अपने मन में बसा ले ! उसे इसमें अपनी गलती मालूम हुई और इसपर उसे आश्चर्य और क्षोभ हुआ।

वह बहुत दुखभरी आवाज में बोला, "जाओ, और ईश्वर से अपनी गलती

के लिए क्षमा माँगो, ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुम्हें इस पाप से बचाये, जो तुम्हें पतन के रास्ते पर ले जायगा और तुम्हें ईसा से दूर कर देगा। ईश्वर से प्रार्थना करो कि यह बुरा विचार तुम्हारे मन में आने के पहले वह तुम्हें इस धरती से उठा ले। ईश्वर तुम्हें क्षमा करे और तुम पर दया करे, क्योंकि जब तक तुम इस बुरे विचार को अपने मन से नहीं निकाल दोगी, मैं, जो कि अब तक तुम्हें ईश्वर की बहुत बड़ी अनुयायी मानता था, अब आगे से—"

यह कहते-कहते वह एकदम से रुक गया, क्योंकि उसने देखा कि वे दोनों वहाँ अकेले नहीं हैं। झाड़ियों के बीच से उसने देखा कि दो व्यक्ति उधर आ रहे हैं, उनमें से एक सन्त पीटर थे। दूसरे ने अपना मुँह लबादे में छिपा रखा था इसलिए वह उसे पहले पहचान नहीं पाया था, और एक क्षण के लिए उसे ऐसा लगा कि शायद चिलन आया है।

क्रिस्पस को बातें करते सुनकर वे दोनों उधर ही चले आये और पास ही बैठ गये। जब दूसरे आदमी ने अपने चेहरे से लबादा हटाया तो उसका गंजा सिर, लाल पलकें और तिरछी नाक दिखाई दीं और क्रिस्पस ने पहचान लिया कि यह तारसस के पाल थे। लीजिया पीटर के सामने घुटनों के बल गिर पड़ी और उनके लबादे में अपना मुँह छिपा कर सिसकने लगी!

पीटर बोले, "ईश्वर तुम्हें शान्ति दे।"

उन्होंने अपना झुर्रियों भरा हाथ लीजिया के सिर पर रख दिया और फिर कहा, "क्रिस्पस, क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि हमारे पैगम्बर ने एक विवाह के अवसर पर पति और पत्नी के प्रेम को उचित बताया है? क्या तुम यह सोचते हो क्रिस्पस, कि ईसा ने, जिन्होंने मेरी माग्दलेन जैसी स्त्री को अपने चरणों में जगह दी और उसके पाप क्षमा कर दिये, कभी इस बच्ची से मुँह मोड़ा होता जो फूल की तरह पवित्र है! और लीजिया तुम, जब तक तुम्हारे प्रेमी की आँखें सत्य के प्रकाश को नहीं देख लेती तब तक तुम्हें उससे दूर रहना चाहिए, क्योंकि वह तुम्हें पाप की ओर ले जा सकता है। लेकिन तुम उसके लिए प्रार्थना करो, ईश्वर से दया की भीख माँगो, और इतना निश्चित समझो कि तुम्हारा प्यार कोई पाप नहीं है।" यह कह-कर उन्होंने लीजिया के सिर पर अपने दोनों हाथ रख दिये और उसे आशीर्वाद दिया। उनके चेहरे पर इस समय एक स्वर्गिक कान्ति आ गई थी।

क्रिस्पस बोला, "मैंने आज इसके साथ कुछ ज्यादती की, क्योंकि मैं सोचता था कि अपने मन में इसने सांसारिक प्रेम को जगह देकर ईसा का अनादर किया है।"

पीटर बोले, "मैंने महात्मा ईसा के साथ तीन बार भोजन किया है और उन्होंने मुझे आज्ञा दी कि मैं उनके अनुयायियों का नेतृत्व करूँ। मैं उनकी शिक्षाओं को अच्छी तरह जानता हूँ।"

अन्त में क्रिस्पस ने कहा, "और एक बात यह भी है कि विनिसियस रोमन सैनिक है।"

"ईसा की कृपा से कड़े से कड़े दिल मुलायम हुए हैं," पीटर ने कहा।

## ६

विनिसियस का पत्र पेट्रोनियस के नाम :

"मैं तुम्हें अपने पिछले पत्र में बता चुका हूँ कि मैं किस तरह ईसाइयों के बीच रहा, अपने दुश्मनों से वे किस तरह पेश आते हैं, किस तरह प्रेमपूर्वक और सावधानी से उन्होंने मेरी सेवा-सुश्रूषा की और फिर किस तरह लीजिया वहाँ से चली गई। अगर लीजिया मेरी माँ या बहन होती तो भी वह मेरी वैसी सेवा नहीं कर पाती, जैसी कि उसने की। मैंने कई बार सोचा कि सिर्फ प्रेम ही की वजह से आदमी ऐसा अच्छा व्यवहार कर सकता है। कई बार मैंने उसके चेहरे और उसकी आँखों में प्रेम की रेखाएँ देखी और तुम्हें यह सुनकर आश्चर्य होगा कि इन छोटे लोगों के बीच, इस रद्दी-से कमरे में, जिसमें रसोई भी बनती है और खाना भी खाया जाता है, मुझे इतना सुख मिला कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। नहीं, ऐसा नहीं है कि मैंने लीजिया के प्रति बेरुखी बरती हो और इतने पर भी वह लड़की यहाँ से चली गई। अब मैं दिन भर अपना सिर हाथों में लिये बैठा रहता हूँ और सोचता हूँ कि आखिर उसने ऐसा क्यों किया। मैंने तुम्हें लिखा है न कि मैं लीजिया को फिर से ओलस के यहाँ भेजना चाहता था? लेकिन यह संभव नहीं था क्योंकि वे लोग सिसली चले गये हैं। ऐसी हालत में उसे वहाँ भेजना ठीक नहीं होता, क्योंकि नौकर चाकर और गुलाम एक घर की बात दूसरे घर पहुँचाते रहते हैं, जो अन्त में राजमहल में भी पहुँच जाती और सीज़र उसे पकड़ मँगवाता। कम से कम वह इतना तो जान ही गई थी कि मैं अब उसे तंग नहीं करूँगा, मैंने हिंसा का रास्ता उसके लिए छोड़ दिया है। वह यह भी जानती है कि मैं उसे प्यार करने से अपने आप को रोक नहीं सकता, उसके बिना रह नहीं सकता, बिना उसे अपनी बनाये मुझे चैन नहीं मिल सकता और इतने पर भी वह भाग गई! क्यों? अब तो उसे किसी बात का डर नहीं था। अगर वह मुझे प्यार नहीं करती तो वह मुझसे घृणा कर सकती थी।

"अगर वह भी मुझसे प्यार करती हो तो? ऐसी हालत में वह अपने प्यार से दूर भागना चाहती है। यह सोचकर मेरी इच्छा होती है कि मैं घर-घर अपने नौकरों से आवाज लगवाऊँ, "लीजिया, लौट आओ!" मैं उसे ईसा में विश्वास रखने से

मना तो करता, नहीं बल्कि मैं तो अपने घर में उसके लिए एक पूजा-वेदी भी बनवा देता। अगर एक देवता और बढ़ गया तो इससे क्या बिगड़ता है, और मैं भी उसमें विश्वास क्यों न करूँ, क्योंकि मुझे पुराने देवताओं में बहुत कम विश्वास रह गया है।

"लेकिन ऐसा लगता है कि ईसाई लोग इतना ही काफी नहीं मानते। केवल ईसा की पूजा करना ही काफी नहीं है, उसकी शिक्षा पर चलना भी जरूरी है, और यह एक ऐसी समस्या है जैसे तुम से कहा जाय कि पैदल चलकर किसी सागर को पार करो और अगर मैं ईसा की सीख को अपने जीवन में लाने की कोशिश करता भी, तो भी वे लोग मुझ पर विश्वास नहीं करते, मेरे शब्द उन्हें खोखले मालूम पड़ते हैं।

"मैं कोई फिलासफर नहीं हूँ, लेकिन मैं इतना मूर्ख भी नहीं हूँ, जितना कि तुम मुझे मानते रहे हो और इसीलिए मैं कहता हूँ कि—मैं नहीं जानता कि ईसाइ लोग अपनी जिन्दगी किस तरह बिताते हैं, मैं इतना अच्छी तरह जानता हूँ कि उनका मज़हब रोमन प्रभुत्व का और हमारे इस रहन-सहन का अन्त कर देगा, उसकी वजह से विजेता और विजित का भेद मिट जायगा, गरीब और अमीर का, मालिक और नौकर का भेद मिट जायगा। इस संसार से कानून और व्यवस्था का जनाजा उठ जायगा। मैं मानता हूँ कि यह पूरा रोम और इसका सारा साम्राज्य मेरे लिए लीजिया के सामने तुच्छ है और मैं उसको अपने घर में लाने के लिए किसी की परवाह नहीं करता। लेकिन सवाल यह नहीं है। ईसाई सिर्फ यही नहीं चाहते कि कोई सिर्फ जबान से उनके धर्म का समर्थन करे।

"मेरा ख्याल है मैंने तुम्हें बताया है कि वह मुझे बिना बताये ही चली गई, लेकिन जाने के पहले वह मेरे लिए कुछ खपच्चियों का एक क्रास बनाती गई और जब मैं उठा तो यह क्रास मेरे बिस्तर के पास रखा था।

"मैं इसे घर ले आया हूँ और पता नहीं क्यों इसके पास जाते हुए मुझे डर भी लगता है और मैं इसका सम्मान भी करता हूँ, जैसे इसमें कुछ अलौकिकता हो, मैं इससे प्यार करता हूँ, क्योंकि इसे लीजिया ने अपने हाथों बनाया है, और मैं इससे घृणा भी करता हूँ क्योंकि यही मुझे उससे अलग किये हुए है।"

## ७

घर लौटकर विनिसियस पूर्ण स्वस्थ हो गया और अकेलेपन में दिन काटने लगा। सिर्फ कभी-कभी वह जाकर हकीम ग्लोकस से मिल लिया करता था। उससे मिलना

उसके लिए बड़ा कीमती था क्योंकि तब वह उससे लीजिया के बारे में बातें करता था। ग्लोकस को यह नहीं मालूम था कि लीजिया कहाँ छिपी है, लेकिन वह विनिसियस को विश्वास दिलाता रहता था कि हमारी जाति के बड़े-बूढ़े उस पर पूरी नजर रख रहे हैं।

एक दिन विनिसियस के दुःख से पिघलकर उसने बता दिया कि सन्त पीटर ने क्रिस्पस को इसलिए डाँटा था कि वह लीजिया को उसके सांसारिक प्रेम के लिए बुरा-भला कहता था। यह सुनकर विनिसियस खुशी से पागल हो गया, क्योंकि अब तक उसने यही सोचा था कि पता नहीं लीजिया उसे चाहती है या नहीं और आज उसने पहली बार एक ईसाई के मुँह से यह सुना कि वह भी उसे चाहती है। उसने सोचा कि अगर लीजिया उसे चाहती है तो उसके रास्ते में कोई रुकावट नहीं आ सकती, क्योंकि वह भी ईसा की पूजा करने के लिए तैयार है। कई बार उसका मन होता था कि पाल से मिले, जिसकी बातें उसे अजीब लगती थीं। लेकिन पाल अफ्रीका चला गया था, और ग्लोकस का आना-जाना भी इधर बहुत कम होता जा रहा था, इसलिए अब वह अपने को बिल्कुल अकेला महसूस करता था। उसने अब शहर के उन मुहल्लों की खाक छानना शुरू किया जहाँ छोटे लोग रहा करते थे, उसे आशा थी कि शायद कभी दूर से ही उसे लीजिया दिखाई दे जाय। लेकिन जब उसकी आशा पूरी नहीं हो सकी तो उसकी उदासी और उसका उतावलापन बढ़ता गया और अन्त में एक दिन फिर से उसका पिछला रूप जागृत हो उठा। उसने लीजिया को भुला देने की कोशिश की और इसके लिए वह फिर से तरह-तरह के मनोरंजन में अपने को बहलाने लगा। वह फिर से अपने उसी राजसी जीवन में अपने दिन बिताने लगा।

अब शहर का वातावरण भी कुछ ऐसा ही था। जाड़ा खतम होने आया था, सीजर के जल्दी लौट आने की आशा थी और शहर उसके स्वागत की तैयारी में लगा था। वसन्त ऋतु समीप थी। अफ्रीका से आनेवाली गरम हवाओं ने अलबान पर्वत की चोटियों का बर्फ पिघला दिया था और बागों में फूलों के खिलने की तैयारी थी। बड़े मैदान में और खुली हुई जगहों में लोगों के झुण्ड धूप खाते रहते थे। एपियन मार्ग पर अब खूब रखे हुए रथ अक्सर दिखाई देते थे। लोग अलबान पर्वत की पहाड़ियों पर खेलने जाते थे। जवान औरतें मन्दिरों में पूजा के बहाने घर से निकल आती थीं और इधर-उधर मनोरंजन की तलाश में घूमती-फिरती थीं।

एक दिन बढ़िया रथों की भीड़ में विनिसियस ने पेट्रोनियस की प्रेमिका क्राइसोथेमिस का शानदार चार घोड़ोंवाला रथ देखा। उसके आस-पास सुन्दर युवकों और उसके प्रशंसक सिनेटरों की भीड़ थी। क्राइसोथेमिस खुद अपना रथ हाँक रही थी और अपने आसपास चलनेवालों का, अपनी मुस्कान और अपने सुनहरे

कोड़े से स्वागत कर रही थी। जब उसने विनिसियस को देखा तो अपने घोड़े रोक लिये और उसे अपने पास बैठने को और अपने यहाँ एक दावत में शरीक होने के लिए निमन्त्रित किया। विनिसियस राजी हो गया। दावत रात भर चली खा-पीकर विनिसियस इस तरह अपने होश खो बैठा कि उसे यह भी पता नहीं चला कि कब उसे घर पहुँचाया गया। लेकिन उसे इतना याद था कि क्राइसोथेमिस ने उससे लीजिया के बारे में पूछा था, और उसे इस पर गुस्सा आ गया था और उसने अपने प्याले की कीमती शराब उसके सिर पर फेंक दी थी। इस बात को सोचकर उसका गुस्सा फिर से जाग उठता था। लेकिन दूसरे दिन क्राइसोथेमिस सब कुछ भूल कर उससे मिलने आई और उसे एपियन मार्ग पर घुमाने ले गई।

उस दिन वह शाम को भोजन के समय तक उसके यहाँ ही रही। उसने उसे बताया कि वह पेट्रोनियस से ऊब चुकी है और अब वह आजाद है। करीब एक हफ्ते तक दोनों अक्सर साथ साथ दिखाई देते रहे, हालाँकि उनकी यह मित्रता अधिक दिन टिकने वाली नहीं थी। उस दिन के बाद से, जब विनिसियस ने उसके सिर पर शराब फेंक दी थी, दोनों के बीच लीजिया का नाम नहीं आता था। लेकिन फिर भी विनिसियस लीजिया को अपने दिमाग से निकालने में सफल नहीं हो पाया। उसे ऐसा लगता था, जैसे लीजिया की आँखें बराबर उस पर लगी हैं। उसे अपने आप पर गुस्सा भी आता था, और लीजिया को तंग करने के विचार से भी उसे शान्ति नहीं मिलती थी। वह दो जवान सीरियन औरतें खरीद लाया था, जिन्हें देखकर ज्योंही पहली बार क्राइसोथेमिस ने कुछ ईर्ष्या प्रकट की कि उसने उसे दरवाजे का रास्ता दिखा दिया।

लेकिन वह अपना रहन-सहन बदल नहीं सका। बल्कि वह और भी ज्यादती करने लगा, ताकि लीजिया की याद को भुला सके। लेकिन अन्त में उसे लगा कि असल में वही ईसाई लड़की उसके सारे दुष्कर्मों की जड़ में है, और वही उससे कुछ भले काम भी करा लेती है। लेकिन उसके सिवा किसी चीज में उसका मन नहीं लगता था। यहाँ तक कि सम्राट् के लौट आने से भी उसे कोई उत्साह नहीं मिला। पेट्रोनियस के यहाँ भी वह तभी गया जब उसने उसे ले आने के लिए अपनी पालकी भेजी।

उसके चाचा पेट्रोनियस ने बहुत प्रेम से उसका स्वागत किया, लेकिन शुरू में वह आधे मन से ही उसे जवाब देता रहा। परन्तु फिर जैसे उसके मन का बाँध टूट गया और वह बिना रुके उसके सामने अपने मन की बातें कहता रहा। उसने खूब विस्तार से उसे उन घटनाओं की कहानी सुनायी, जिन्होंने इधर उसके मन की शान्ति छीन ली थी। उसने बताया कि उसे इस बात का बहुत अफसोस है कि उसने अपना दिमाग खराब कर लिया है और वह किसी बात पर ध्यान नहीं दे पाता। उसे किसी

चीज में रस नहीं रह गया था, किसी में उसे दिलचस्पी नहीं थी, और उसकी समझ में नहीं आता था कि क्या करे और कैसे करे। वह ईसा की पूजा करने के लिए तैयार था, वह समझता था कि ईसा की शिक्षा कितने ऊँचे दर्जे की है, लेकिन साथ ही उसे उससे नफरत भी थी। वह जैसे अँधेरे में भटक रहा था और उसे कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा था।

पेट्रोनियस ने फौरन उसकी स्थिति का अन्दाज लगा लिया। कुछ देर सोचकर वह अचानक बोला, "तुमने इस दुःख को दूर करने की कोशिश तो की ही होगी, दुनिया का लुत्फ़ उठाने की कोशिश तो की ही होगी ?"

"हाँ।"

पेट्रोनियस हँस पड़ा और बोला, "अरे, धोखेबाज ! नौकरों की जबान से बात बहुत आसानी से फैलती है—तुमने मुझसे मेरी क्राइसोथेमिस को छीन लिया !"

विनिसियस ने बेमन से इस आरोप को स्वीकार किया।

पेट्रोनियस कहता रहा, "खैर जो भी हो, मैं तुम्हारा आभारी हूँ। मैं उसके पास मोती के काम वाली जूतियों का एक जोड़ा भेज दूँगा। मेरे प्यार की भाषा में इसका मतलब होता है—अलविदा ! असल में तुमने मुझपर दोहरा उपकार किया है। पहले तो तुमने मेरी दासी यूनिस को लेने से इनकार किया और अब तुमने क्राइसोथेमिस से मेरा पिंड छुड़ा दिया। अच्छा, अब मेरी बात सुनो। देखो, आज तुम्हारे सामने वह आदमी बैठा है जो हमेशा देर से उठने का आदी रहा है, जो ठाट से नहाता था और पेट भरकर खाना खाता था, जिस औरत को चाहता था उसे अपने घर में डाल लेता था, जो व्यंग्य की चीजें लिखा करता था और कभी-कभी कविताएँ गढ़ लिया करता था, लेकिन तब भी उसे सन्तोष नहीं मिलता था और उसकी समझ में नहीं आता था कि अपनी मनहूसी दूर करने के लिए क्या करे, और तुम जानते हो इसका क्या कारण था ? क्योंकि वह उस चीज की तलाश में भटकता फिरता था, जो असल में उसके घर में ही मौजूद थी। मेरे दोस्त, एक खूबसूरत औरत अपने वजन के बराबर सोने जैसी कीमती होती है, लेकिन वह जो बदले में तुम्हें प्यार भी दे सकती है अमूल्य होती है, उसकी कोई कीमत नहीं। कुबेर के पूरे खजाने से भी तुम इस चीज को नहीं खरीद सकते। आजकल यही मैं अपने को समझता हूँ। मैं अपने जीवन को अब सच्चे सन्तोष और सुख से भरने की कोशिश करता हूँ, उसी तरह जिस तरह अच्छी मदिरा से अपना प्याला भरा जाता है, और मैं उसको छककर पीता हूँ, जब तक कि नशे में चूर नहीं हो जाता। इसके बाद चाहे जो कुछ भी हो—यही मेरा नया फलसफा है।"

"लेकिन यह तो तुम हमेशा से कहते आये हो। इसमें कोई नई बात नहीं।"

"असल में सब कुछ अब बहुत व्यवस्थित ढंग से चलता है, और इसी चीज़ की पहले कमी थी।"

फिर उसने अपनी दासी यूनिस को बुलवाया। वह सफेद पोशाक में अपने ओठों पर मुस्कान लिये आ खड़ी हुई। पेट्रोनियस ने अपनी बाहें फैला दीं और कहा, "आओ!"

वह दौड़कर उसकी गोद में आ बैठी और उसके सीने पर उसने अपना सिर रख दिया। विनिसियस ने देखा कि उसके गाल गुलाबी होते जा रहे हैं और आँखों में एक अजीब तरह का नशा है। इस तरह बैठे हुए वे दोनों प्रेम और सन्तोष की प्रतिमूर्ति मालूम होते थे। पेट्रोनियस ने हाथ फैलाकर पास ही तश्तरी में पड़े हुए फूलों की एक मुट्ठी भरी और उन्हें यूनिस के बालों, वक्ष और उसकी पोशाक पर बिखेर दिया। फिर उसने यूनिस के कन्धों पर से उसकी पोशाक को कुछ ढीला कर दिया और कहा, "असल में वही आदमी सुखी है, जिसने मेरी तरह यूनिस जैसी खूबसूरत देह में प्रेम का खजाना पा लिया है। जरा इसे देखो तो, इतने बड़े-बड़े मूर्तिकार हुए हैं लेकिन क्या कहीं किसी ने इसके जैसे रूप का निर्माण किया है? पारोस या पेन्टेलिकोन में जो संगमरमर की मूर्तियाँ हैं, क्या उनमें से कोई भी ऐसी भरी और गठी हुई है, ऐसी सुन्दर और आकर्षक है?"

उसके ओंठ यूनिस की गर्दन और उसके कन्धों पर चुम्बनों की वर्षा कर रहे थे। वह कुछ काँपी और उसकी पलकें झुक आईं। पेट्रोनियस विनिसियस की ओर मुड़कर बोला, "और बताओ कि तुम्हारी ईसाई औरतें इसकी क्या बराबरी करेंगी! अगर तुम्हें दोनों में कोई फर्क नहीं मालूम होता तो ठीक है, तुम उन्हीं के साथ रहो। यूनिस प्रिये, नौकरों से कहो कि नाश्ता तैयार करें और जरा हमारे लिए फूलमाला तो लाओ!"

फिर वह उठकर कमरे में टहलने लगा और कहता रहा, "किसी का प्यार आदमी की जिन्दगी में बहुत बड़ा फर्क ला देता है। मैं खुद इससे बदला हूँ। कभी मुझे वर्बना की खुशबू पसन्द थी लेकिन अब चूँकि यूनिस वायलेट पसन्द करती है इसलिये अब मैं भी उन्हें सबसे अधिक चाहने लगा हूँ।" फिर वह विनिसियस के सामने आ खड़ा हुआ और बोला, "तुम कहते हो कि लीजिया तुम्हें प्यार करती है। हो सकता है, लेकिन क्या उसका प्यार ऐसा नहीं है, जो उसे आत्मसमर्पण से रोकता है? और क्या इसका मतलब यह नहीं कि उसके लिए इससे भी बड़ी कोई चीज है? नहीं मेरे दोस्त, लीजिया यूनिस जैसी नहीं है!"

"यह सब देखकर मेरा दिल बैठा जाता है," विनिसियस ने कहा। "मैंने तुम्हें यूनिस के कन्धों को चूमते देखा है और फौरन मुझे लगा कि अगर लीजिया ने इस तरह मेरे लिए अपने कन्धे उघाड़ दिये होते तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहता।

लेकिन इसके साथ ही फौरन मुझे एक तरह का भय भी लगा, जैसे मैं किसी देव-कन्या का अपमान कर रहा हूँ, जैसे मैं किसी देवी का सम्मान छीन रहा हूँ। यह ठीक है कि लीजिया यूनिस जैसी नहीं है, लेकिन इन दोनों का फर्क हम लोग एक ही नजर से नहीं आँक सकते। तुम पर प्रेम का असर यह हुआ है कि तुम पहले के बजाय अब दूसरी किस्म के फूलों की खुशबू पसन्द करने लगे हो। लेकिन मेरे साथ यह हुआ है कि जैसी मेरी आत्मा ही बदल गई है और हालाँकि उत्तेजना के क्षणों में अपना दुःख मुझसे रोके नहीं बनता, लेकिन फिर भी मैं चाहता हूँ कि लीजिया दूसरी औरतों की तरह न हो।"

पेट्रोनियस ने अपने कन्धे उचकाकर कहा, "तब तो कोई बात ही नहीं बनी और तुम्हें किसी तरह के नुकसान की भी सम्भावना नहीं। लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।"

"असल में यह सत्य है जो तुम्हारी समझ में नहीं आ पा रहा है और शायद आगे हम आपस में एक-दूसरे को भी समझ नहीं सकेंगे।"

कुछ देर चुप रहकर पेट्रोनियस बोला, "मेरी तरफ से सारे क्रिश्चियन जहन्नुम में जायँ! उन लोगों ने तुम्हें बेचैन कर रखा है और जीवन के प्रति तुम्हारा दृष्टि-कोण भी बदल दिया है। तुम उनके मजहब को सही मान कर गलती कर रहे हो। अच्छी चीज वही है जो हमें सुख दे सके और वह है सौन्दर्य, प्रेम और शक्ति। और इन्हीं चीजों को उन लोगों ने पाखंड मान रखा है। तुम्हारा यह ख्याल भी गलत है कि वे न्यायप्रिय होते हैं। देखो न, अगर बुराई का बदला भलाई से दिया जाय तो फिर भलाई का बदला किस तरह चुकाया जायगा और अगर दोनों का नतीजा एक ही होता है तो सोचो तो सही कि कोई भलाई क्यों करने लगा?"

"नहीं, दोनों का एक फल नहीं मिलता। ईसाईयों का मत है कि सच्चा फल मृत्यु के बाद मिलता है, क्योंकि मृत्यु के बाद का जीवन शाश्वत और अनन्त है।"

"मैं इन बातों में और ज्यादा नहीं फँसना चाहता, फिर कभी हम इन पर विचार करेंगे और सच पूछो तो इन बातों पर विचार करने के लिए बुद्धि की कोई जरूरत नहीं। बहरहाल, इतना तय है कि लोग बेवकूफ हैं और ऐसे लोगों का कोई भविष्य नहीं।"

"असल में उनका भविष्य, या असली जीवन मृत्यु के बाद शुरू होता है।"

"तुम्हारे कहने का मतलब तो यह हुआ कि जैसे शाम को दिन शुरू होता है। अच्छा, यह बताओ कि तुम लीजिया को फिर से भगाना चाहते हो?"

"नहीं, मैं भलाई के बदले में उसके साथ बुराई नहीं कर सकता और फिर मैंने इसकी कसम खायी है।"

"तो क्या तुम ईसाई धर्म स्वीकार करना चाहते हो ?"

"मैं कर सकता था, लेकिन मेरा पूरा स्वभाव उसके विपरीत पड़ता है।"

"तो यह बताओ कि क्या तुम लीजिया को भूल सकते हो ?"

"नहीं।"

"तब फिर जाओ कहीं बाहर घूम-फिर आओ, किसी लम्बे सफर पर निकल जाओ।"

तभी नौकरों ने आकर सूचना दी कि खाना तैयार है। खाने के कमरे की ओर जाते समय पेट्रोनियस ने अपनी बातचीत जारी रखी, "तुमने दुनिया का काफी बड़ा हिस्सा देखा है, लेकिन सिर्फ एक सिपाही की तरह दौड़ते-भागते हुए ही। इस बीच तुम क्या देख पाये होगे ? कुछ भी नहीं ! क्या तुमने कोरबूलो के यूनानी मन्दिर ध्यान से देखे हैं ? मैं दो साल तक विशेषज्ञों को साथ लेकर उन्हें देखता रहा हूँ। क्या तुमने रोडेस वगैरह की प्रसिद्ध मूर्तियाँ देखीं, या तुमने स्पार्टा और एथेन्स में घोड़े के खुरों से बनाया हुआ जिरह-बख्तर देखा ? क्या तुमने ऐगामेमनन का मशहूर जहाज देखा, या उस प्याले को देखा जिसका ढाँचा हेलन के बायें स्तन के आकार का बनाया गया था ? क्या तुमने सिकन्दरिया देखा ? मिस्र के पिरामिड देखे ? क्या तुमने मेमनन की मूर्ति को गाते हुए सुना ? मेरे भाई, दुनिया बड़ी लम्बी-चौड़ी है। मैं तो सीजर के साथ दूसरा सफर जाना चाहता हूँ और रास्ते में मैं साइप्रस में उतर जाऊँगा। मेरी प्रियतमा चाहती है कि हम पाफोस में वीनस के कबूतरों को दाना चुगाएँ और तुम जानते हो कि मैं इसकी हर इच्छा पूरी करता हूँ।"

"हुजूर, मैं आपकी गुलाम हूँ," यूनिस ने बीच में ही कहा।

पेट्रोनियस ने उसके वक्ष पर अपना सिर रख दिया और मुस्कराते हुए कहा, "मैं भी तुम्हारा गुलाम हूँ प्रिये, मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ !"

फिर उसने विनिसियस से कहा, "तुम भी हमारे साथ साइप्रस चलो और अपने इन ईसाइयों को भूल जाओ। मैं तुम्हें बताता हूँ कि वे लोग निरे मूर्ख हैं। तुम खुद इस बात को महसूस करते हो और तुम्हारा मन उनके बीच नहीं लगता। तुम दूसरी धातु के बने हो। उन लोगों के बारे में सोचना बन्द कर दो और मेरे आगे कभी उनका जिक्र न करना। हम लोग आराम से जिएँ और आराम से मरें, इसके अलावा और क्या हो सकता है !"

उसकी इन बातों का विनिसियस पर पूरा असर पड़ा। घर लौटते समय रास्ते में वह सोचता रहा कि ईसाइयों की भलमनसाहत और उनकी उदारता इस बात का प्रमाण है कि उनका दिमाग खोखला है। दृढ़ व्यक्तित्ववाले लोग इस तरह क्षमाशील नहीं होते। पेट्रोनियस ठीक ही कहता है कि हम आराम से रहें और आराम से मरें। इसके अलावा हम और कर ही क्या सकते हैं ! ईसाई क्षमा करने के अलावा

और क्या काम कर सकते हैं ? जहाँ तक सच्चे प्रेम या सच्ची घृणा का सवाल है यह उनके बूते के बाहर है।

## ८

रोम जल्दी लौट आने का सम्राट् को अफसोस था और कुछ ही दिनों बाद फिर से कहीं जाने की उन्हें बहुत इच्छा होने लगी। एक फरमान निकाला गया और उसमें बताया गया कि सम्राट् कुछ दिनों के लिए शहर से बाहर रहेंगे, लेकिन इससे राज-काज में किसी प्रकार की बाधा नहीं होगी। फिर वह अपने अंगरक्षकों और चुने हुए सरदारों के साथ जिनमें विनिसियस भी था, देव मन्दिरों में बलि चढ़ाने गया। लेकिन दूसरे दिन जब वह वेस्ता के मन्दिर की ओर जा रहा था, तभी एक घटना घट गई, जिससे उसकी सारी योजनाएँ बदल गईं। नीरो देवताओं में विश्वास नहीं करता था, लेकिन फिर भी वह उनसे डरता था, खासतौर से रहस्यमय देवी वेस्ता से। देवी का दर्शन करके और उसकी पवित्र अग्नि को देखकर अचानक उसके रोंगटे खड़े हो गये, दाँत भिंच गये, उसका अंग-अंग काँपने लगा और वह मूर्छित होकर विनिसियस की बाँहों में आ गिरा, जो उसके पास ही खड़ा था। मन्दिर से उसे फौरन महल पहुँचाया गया, जहाँ वह दिन भर बिस्तर में रहा। जब उसने यह ऐलान किया कि देवी ने उसे बाहर जाने से रोका है और इसलिए वह यात्रा पर नहीं जायेगा, तो लोगों को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। एक घन्टे बाद पूरे रोम में ऐलान करा दिया गया कि महान् सीजर अपनी प्रजा को दुखी देखकर और उसके प्रति एक पिता के योग्य स्नेह की भावना से भरकर अपनी यात्रा की इच्छा त्याग रहे हैं और अब उनके बीच ही रहने का निर्णय कर रहे हैं। यह खबर पाकर जनता में बड़ी खुशी फैली, क्योंकि इसका मतलब यह था कि अब राजधानी में खेल-तमाशे और उत्सवों का दौर शुरू होगा। लोगों की भीड़ ने जाकर महल के द्वार पर सम्राट् की जय-जयकार की। सम्राट् उस समय अपने मित्रों के साथ बैठा चौसर खेल रहा था।

सम्राट् ने कहा, "हाँ, मुझे यात्रा का विचार छोड़ देना पड़ा। ज्योतिषियों का कहना है कि मिस्र और पूर्व के दूसरे देश मेरे साम्राज्य से निकल नहीं सकते। हम लोग मिस्र में अपने ऐसे स्मारक बनवायेंगे, जिनके आगे पिरामिड खिलौने मालूम पड़ेंगे। मेमफिस के रेगिस्तान में स्फिंक्स की जो मूर्ति बनी है, मैं उसकी सात गुनी बड़ी मूर्ति बनवाऊँगा, जिसमें मेरी शक्ल होगी।"

"मानवता के लिए इससे बड़ा तोहफा और क्या हो सकता है !" पेट्रोनियस ने कहा।

"और मिस्र ही में मैं चन्द्रमा से शादी रचाऊँगा और इस तरह मेरी गिनती भी देवताओं में होगी।"

"हम लोग आकाश की सारी तारिकाओं को आपकी दासियों के रूप में आपको भेंट कर देंगे। एक नये तारक-समूह का आपके नाम पर फिर नामकरण होगा।"

"मुझे क्या बख्शीश मिलेगी ?" वेटीनियस ने बीच में ही पूछा।

"तुम्हें एपिस की दुआएँ मिलेगी। तुमने बेनेवेन्तम में हमारे लिए ऐसे ऐसे शानदार खेलों का आयोजन किया कि हम उन्हें भूल नहीं सकते।"

नीरो ने फिर कहा, "तुम लोगों की आँखें असल में देवी की अलौकिक दृष्टि को नहीं पहचान सकतीं, इसीलिए तुम्हें पता नहीं कि मन्दिर में देवी वेस्ता ने खुद मेरे कान में कहा कि अपनी यह यात्रा रोक दो। यह सब इस तरह अचानक हुआ कि मैं घबरा गया, हालाँकि इसके लिए मुझे देवगणों का आभारी होना चाहिए, क्योंकि उनकी कृपादृष्टि मुझपर रहती है, यह इसी का प्रमाण है।" फिर कुछ देर सोचकर उसने कहा, "क्या कोई मुझे बता सकता है कि लोग देवी वेस्ता से इतने क्यों डरते हैं ? यहाँ तक कि मैं खुद डर गया था। मुझे सिर्फ इतना याद है कि मुझे गश आ गया था और अगर कोई पकड़ न लेता तो मैं गिर पड़ता। किसने पकड़ा था मुझे ?"

"मैं था, हुजूर," विनिसियस ने कहा।

"ओह, तुम थे, तुम पर मंगलदेव कृपा करें ! तुम बेनेवेन्तम क्यों नहीं आये ? लोगों ने मुझे बताया कि तुम बीमार थे, और सचमुच तुम पहले से कुछ बदले मालूम पड़ते हो। अच्छा, किसी ने मुझे बताया कि क्रोटन ने तुम पर हमला कर दिया था ? क्यों, यह सच है ?"

"जी हाँ, उसने मेरा हाथ तोड़ दिया, लेकिन किसी तरह मैंने अपने को बचाया ही।"

"क्या, टूटे हुए हाथ से ही ?"

"जी हाँ, एक आदमी जो क्रोटन से भी ज्यादा तगड़ा था, उस समय मेरी मदद के लिए आ गया था।"

नीरो ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और कहा, "क्या, क्रोटन से भी तगड़ा ? मजाक तो नहीं कर रहे हो तुम ? क्रोटन तो दुनिया का सबसे तगड़ा आदमी था। आजकल इथियोपिया का वासी एक कोई स्टाईफैक्स सबसे बड़ा पहलवान है।"

"मैं सरकार को सही बता रहा हूँ।"

"तो भला यह बहादुर कहाँ है ? वह तो जैसे शेरों का बादशाह मालूम होता है !"

"सरकार, मैं उसे जानता नहीं। उसके बाद मैंने उसे कभी देखा भी नहीं।"

"क्या तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि वह कौन है और कहाँ का रहने वाला वाला है ?"

"हुजूर, मेरा हाथ टूट गया था और उस समय मेरे दिमाग में यह आया ही नहीं कि मैं उसका पता पूछ लूँ।"

"उसे तुम मेरे लिए खोज लाओ।"

टिजेलिनस बीच में ही बोला, "यह काम मैं करूँगा, हुजूर।"

लेकिन नीरो ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया और विनिसियस से अपनी बात जारी रखी, "तुमने मुझे गिरने से बचाया इसके लिए शुक्रिया। बहुत मुमकिन था कि मैं गिर पड़ता और अपना सिर फोड़ लेता। पहले तो तुम अक्सर दिखाई देते रहे हो, लेकिन इधर बहुत कम आते हो, क्या बात है ?"

कुछ देर रुककर उसने फिर कहा, "वह लड़की कैसी है—जिसे तुम प्यार करते थे और जिसे मैंने तुम्हारे लिए ओलस के यहाँ से मँगवाया था ?"

विनिसियस घबरा। गया उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या उत्तर दे। लेकिन तभी पेट्रोनियस बोला, "हुजूर, मुझे तो लगता है कि यह अब तक उसे भूल चुका है। आप देख ही रहे हैं, कितना शरमा रहा है। जरा आप इससे पूछिये तो सही कि उसके बाद से कितनी और इसके यहाँ आ चुकी हैं। मुझे तो डर है कि इसे उनकी संख्या तक याद नहीं होगी। हुजूर, आपको तो इसके लिए इसे सजा देनी चाहिए और दावत का न्योता नहीं भेजना चाहिए।"

लेकिन नीरो ने कहा, "मैं तो बहुत ऊब चुका हूँ ! देवी की इच्छा है कि मुझे रोम में रहना चाहिए और यहाँ मेरा मन ही नहीं लगता। मैं तो ऐन्टीयम जाना चाहता हूँ। मैं इस घुटे-घुटे से शहर में रह नहीं पाता हूँ। इन गिरे-पड़े मकानों और गन्दी गलियों से मेरा दिमाग भिन्नाता है। शहर की गन्दी हवा मेरे बगीचे तक आ जाती है। काश, कोई भूकम्प आ जाता और रोम मटियामेट हो जाता, या किसी देवता के क्रोध से ज़मींदोज हो जाता, तब मैं तुम लोगों को बताता कि शहर कैसे बसाना चाहिए, ऐसा शहर जो दुनिया के शहरों का बादशाह हो और मेरी राजधानी बनने लायक हो !"

टिजेलिनस बोला, "सीजर, आप ने कहा कि किसी देवता के क्रोध से यह शहर ज़मींदोज हो जाता, है न ?"

"हाँ, तो हुआ क्या ?"

"तो क्या आप देवता नहीं हैं ?"

नीरो ने अपने कन्धे उचका दिये और कहा, "देखें, तुम लोग एग्रीप्पा में कैसे खेल करते हो। इसके बाद मैं एन्टीयम जाऊँगा। तुम लोगों को बहुत जल्दी चीजों से सन्तोष हो जाता है, असल में जिनकी मुझे इच्छा होती है ऐसी बातें तुम्हारी समझ में नहीं आतीं।"

उसने इस तरह आँखें बन्द कर लीं जैसे वह यह प्रकट करना चाहता हो कि उसे आराम की जरूरत है। उसके मित्र एक के बाद एक वहाँ से जाने लगे। पेट्रोनियस भी विनिसियस के साथ उठ आया।

रास्ते में वह उससे बोला, "तो तुम्हें भी दावत का न्योता मिल गया। अच्छा ही है, दुनिया को फतह कर लेने के बाद अब हम लोगों को कुछ आराम भी तो करना चाहिये।"

"लेकिन मुझे तो यह देखकर ताज्जुब होता है कि तुम्हारा मन इन सब चीजों से नहीं ऊबता।"

"किसने कहा कि नहीं ऊबता। बहुत पहले से ही मेरा मन इन चीजों से उखड़ गया है, लेकिन मेरी और तुम्हारी उम्र में फर्क है। इसके अलावा मेरी कुछ उन चीजों में रुचि है जिनसे तुम्हें कोई मतलब नहीं। जैसे मुझे किताबों में दिलचस्पी है, तुम्हें नहीं है। मैं कविता पसन्द करता हूँ और तुम्हारा उससे जी ऊबता है। मैं अच्छे-अच्छे बर्तन और हीरे-जवाहरात का शौक रखता हूँ और ऐसी कई चीजों को पसन्द करता हूँ जिन्हें तुम मुड़कर भी नहीं देखना चाहते। इसके अलावा मेरी पीठ और कमर में दर्द रहता है, लेकिन तुम्हें इस तरह की कोई शिकायत नहीं। और सबसे बढ़कर मेरे पास मेरी यूनिस है, लेकिन उसके जैसी तुम्हारे पास कोई नहीं है। मुझे कलात्मक वस्तुओं में बड़ी रुचि है, लेकिन तुम्हें तो जैसे ऐसी चीजों से कोई वास्ता ही नहीं। अगर मौत तुम्हारे दरवाजे आ खड़ी हो, तो बावजूद अपनी बहादुरी के तुम यह सोचकर भौचक्के रह जाओगे कि तुम्हें इतनी जल्दी इस दुनिया को छोड़ना पड़ रहा है। लेकिन मुझे मरने का कोई अफसोस नहीं होगा क्योंकि दुनिया में ऐसी कोई चीज नहीं रह गई है जिसका मैंने रस न चखा हो। मुझे अब किसी बात की जल्दी नहीं है और मैं आखिरी वक्त तक आनन्द से रह सकता हूँ। मस्ती का सिद्धांत माननेवाले मेरे ख्याल से बेवकूफ होते हैं लेकिन इतना तो तय है कि उनमें एक दृढ़ता होती है, लेकिन ईसाई लोग तो संसार में निराशा और क्षोभ ही फैलाना चाहते हैं। लेकिन जिन लोगों ने अपना धर्मचिन्ह सलीब बना रखा हो, उनसे और आशा ही क्या की जा सकती है? मेरा तो कहना है कि यूनान सौन्दर्य और बुद्धि की जन्मभूमि है, लेकिन रोम शक्ति का निवास स्थान है। और, ईसाई धर्म इस दुनिया में क्या लाना चाहता है, कुछ जानते हो? अगर इसके बारे में तुम्हें कुछ मालूम हो तो बताओ, मैं तो कुछ नहीं जानता।"

विनिसियस ने कहा, "तुम्हारी बातों से तो कोई यह समझेगा कि तुम्हें डर है कि कहीं मैं भी ईसाई न हो जाऊँ।"

"मुझे तो डर है कि कहीं तुम अपनी जिन्दगी न बरबाद कर दो। अगर तुम यूनान जैसे नहीं हो सकते तो रोम जैसे बनो—दुनिया पर राज करो और खुश रहो। वादा करो कि अगर घर लौटने पर तुम्हें कोई ईसाई अपनी राह देखता हुआ मिल जाय तो तुम उसे डाँटकर भगा दोगे। अच्छा, अब हम लोग एग्रिप्पा में मिलेंगे।"

## ६

एग्रिप्पा में झील के आसपास शाही सिपाहियों का पहरा बैठा दिया गया, ताकि तमाशबीन सीजर और उनके मेहमानों के आराम में खलल न डाल सकें। टिजेलिनस किसी भी तरह सीजर को अपनी यात्रा का विचार त्याग देने के लिए खुश करना चाहता था। वह चाहता था कि अब तक सीजर के सम्मान में जो भी खेल-तमाशे और दूसरे आयोजन हो चुके हैं, उसका आयोजन उन सबसे बढ़ कर हो। उसने नेपल्स और बेनेवेन्तम में ही इसकी योजना बनानी शुरू कर दी थी। इसी उद्देश्य से उसने दुनिया के हर कोने में बहुत अजीब-अजीब तरह की मछलियों और चिड़ियों और बहुत मुश्किल से पाये जाने वाले जानवरों और पेड़-पौधों के लिए अपने आर्डर भेज दिये थे। इन तैयारियों के लिए अनाप-शनाप खर्च किया जाता था। शाही खजाने का बहुत बड़ा हिस्सा इन्हीं सब कामों पर खर्च होता था लेकिन इस पर कोई रोक नहीं थी और टिजेलिनस चूँकि नीरो का मुँह लगा था, इसलिए उसे रोकने की कोई हिम्मत नहीं कर पाता था। दरबार में उसकी जगह बराबर बढ़ रही थी। शायद यह सही था कि नीरो उसे अपने दूसरे दोस्तों और दरबारियों से अधिक नहीं चाहता था, लेकिन फिर भी दिनोंदिन दरबार में इस आदमी की माँग बढ़ती जाती थी। लेकिन पेट्रोनियस उससे हर माने में बहुत ऊंचा था, रहन-सहन में, व्यवहार में, बुद्धि और समझ में, और काफी समय तक सीजर का मनोरञ्जन कर सकता था। इसलिए टिजेलिनस को उससे ईर्ष्या होने लगी।

टिजेलिनस ने सुनहरे तख्तों को जुड़वाकर झील में एक बहुत बड़ी नाव तैयार करवायी थी और उस पर ही दावत का इन्तजाम किया था। बहुत बढ़िया सजावट की गई थी, लाल सागर और हिन्द महासागर के बहुत ही कीमती शंखों, ताड़ के पेड़ों और कमल तथा गुलाब के पुष्पों का खूब प्रयोग किया गया था।

देवताओं की मूर्तियाँ बनी थीं। सोने और चाँदी के पिंजड़ों में रंग-बिरंगी चिड़ियाँ फुदक रही थीं और फव्वारों से गुलाब जल और दूसरे सुगन्धित पानी की बौछारें पड़ रही थीं। बीच में सीरिया से लाया गया एक बहुत कीमती चन्दोआ लगा था, जिसके खम्भे सोने के थे। उसके नीचे ही मेहमानों की मेजें लगी थी। मेजें शीशे और स्फटिक के कीमती बर्तनों से सजी थीं, जो इटली, यूनान और एशिया के देशों से लूट कर लाये गये थे।

यह तख्ता सुनहरी और लाल रंग की रस्सियों से ऐसी नावों से जुड़ा हुआ था जो मछली, हंस आदि की शकल की बनी हुई थीं। इन नावों में तरह-तरह की रंग-बिरंगी पोशाकें पहने नाव खेनेवाले बैठे थे, जिनमें पुरुष और स्त्रियाँ दोनों थे और अधिकांश लगभग नग्न थे। उनके चेहरे और शरीर की बनावट और गठन आदर्श थी। औरतों के बाल पूर्वी ढंग से सँवरे हुए थे या सुनहरी जालियों में बँधे हुए थे। जब नीरो अपनी महारानी और अन्य मित्रों के साथ बीचवाले बड़े तख्ते पर पहुँचा तो नावों में अपनी हरकत शुरू कर दी और तख्ता नदी के बीच नाचने लगा। उसके आसपास छोटे तख्ते भी नावों से बँधे तैर रहे थे, जिन पर स्त्रियाँ सारंगी, झाँझ और दूसरी तरह के वाद्य यंत्र बजा रही थीं, उनके गुलाबी शरीर आसमान और पानी के नीले रंग के बीच जादू के फूलों की तरह सुन्दर और मोहक लग रहे थे।

घाट की दीवारों में नीचे ही नीचे ऐसे कमरे बने थे जो ऊपर से देखने में नजर नहीं आ रहे थे। वहाँ से संगीत की मधुर लय उठ रही थी। झील के आसपास का इलाका बिगुलों की आवाज से गूंज रहा था। सीजर, पोपिया और पेथागोरस के बीच बैठा था और उसके चेहरे पर कुछ गम्भीरता छायी हुई थी। लेकिन अन्त में उसने खूबसूरत स्त्रियों और पुरुषों को नावों के आसपास तैरते हुए और जल-क्रीड़ा करते हुए देखा तो उसे इच्छा हुई कि टिजेलिनस को मनोरञ्जन की इस व्यवस्था के लिए शाबाशी दी जाय। फिर इसके बाद दावत और शराब का दौर शुरू हुआ। बहुत ही बढ़िया पकवान तैयार कराये गये थे और सैकड़ों तरह की कीमती से कीमती शराबें मेहमानों के सामने पेश की गई थीं। लेकिन विनिसियस अपने सौन्दर्य से सबको मात कर रहा था। एक जमाना था जब उसके चेहरे और शरीर की बनावट लड़ाकू सिपाहियों जैसी थी, लेकिन अब मानसिक क्लेश और शारीरिक थकान ने उसके शरीर में एक विशेष प्रकार की कोमलता ला दी थी और अब उसका सौन्दर्य और भी निखर उठा था। उसके गौरवर्ण शरीर में एक विशेष आकर्षण था। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में वेदना की एक हल्की-सी छाया थी। उसकी शारीरिक गठन और उसके सौन्दर्य का जोड़ खोजना कठिन था।

शराबों को बर्फ से ठंडा किया गया था, लेकिन इससे उनका स्वाद और

उनकी तल्ख़ी बढ़ गई थी। झील के आसपास की झाड़ियों से अजीब-अजीब शक्लों की नावें बाहर झील में निकल रही थीं और इधर-उधर फैलती जा रहीं थीं। उन पर सुनहरी डोरियों में बँधी भारत और अफ्रीका से लायी गई चिड़ियाँ उड़ रही थीं। आसमान में सूरज काफी उठ आया था और कुछ गर्मी मालूम पड़ रही थी। झील का पानी नाव के डाँड़ों से कुछ अस्थिर हो गया था। हवा बन्द थी और पेड़ों की पत्तियाँ तक नहीं हिल रही थी। दावत का तख्ता तैरता हुआ आगे बढ़ रहा था और मेहमान लोग खा-पीकर अपनी सुध-बुध भूलने की तैयारी में थे। अब कोई भी अपनी निश्चित जगह पर नहीं था। खुद सीजर विनिसियस की जगह एक नर्तकी के पास आ बैठा था और उससे बातें कर रहा था। विनिसियस महारानी पोपिया के पास बैठा था। महारानी ने कुछ ही क्षणों तक बातचीत करने के बाद उसकी ओर अपनी बाँहें फैला दीं और उससे प्रार्थना की कि वह उसकी पोशाक को जरा ठीक कर दे। विनिसियस का हाथ काँपने लगा और रानी पोपिया अधखुली आँखों से उसकी ओर देखने लगी और उसका सुनहरा सिर अर्थपूर्ण ढंग से हिलने लगा।

दिन ढल चुका था और सूरज का बड़ा भारी सुनहरा पिंड पेड़ों के पीछे डूबने जा रहा था। बहुत से मेहमान नशे में बेहोश हो चुके थे। बड़े तख्तों को नावें किनारे की ओर खींच रही थीं, जहाँ फूलों से लदी झाड़ियों के बीच रंग-बिरंगी पोशाकें पहने सुन्दर युवक विभिन्न प्रकार के गीत गा रहे थे और बाँसुरी इत्यादि वाद्ययंत्र बजा रहे थे। सुन्दर युवतियाँ परियों और अप्सराओं जैसी पोशाकें पहने इधर-उधर नाचती फिर रही थीं। लोगों ने नारे लगाकर उगते हुए चाँद का स्वागत किया और फिर झील के चारों ओर हजारों दीये टिमटिमा उठे। झील के किनारे बनी हुई इमारतें रोशनी से जगमगा उठीं और बरामदों, चबूतरों और झील के घाटों पर रोम के प्रतिष्ठित परिवारों की बहुएँ और बेटियाँ अपनी सर्व-विजयी नग्नता का प्रदर्शन करने लगीं और इशारों और शब्दों से शाही मेहमानों को आमन्त्रित करने लगीं। अन्त में नावें तख्तों को किनारे खींच ले आयीं और सीजर अपने मित्रों और मेहमानों के साथ घाट पर उतर आया। नावों से उतरकर लोग झाड़ियों, मकानों और तम्बुओं में घुस गये। चारों तरफ एक अजीब मदहोशी और पागलपन का समा छा गया। भीड़-भाड़ और खींचातानी में किसी को पता ही नहीं चला कि सीजर कहाँ है, कौन सिनेटर है, कौन सैनिक और संगीतकार है। जिसे देखो वही किसी सुन्दरी के पीछे पड़ा था और उसे झाड़ी की ओर खींच रहा था। दीये तोड़ डाले गये और झाड़ियों के कई हिस्से बिल्कुल अँधेरे में डूब गये, जहाँ से हँसी और चीखों की और हाँफने और फुसफुसाने की आवाजें आती रहीं।

विनिसियस नशे में इस बार उस तरह बदहवास नहीं हुआ जिस तरह वह सीजर के महल में हुई दावत में लीजिया के सामने हो गया था।। फिर भी दिन भर

की घटनाओं का और वहाँ के मादक वातावरण का उस पर भी पूरा असर पड़ा था। वह भी झाड़ियों में घुस गया और अपने लिए किसी सुन्दरी को चुनने के लिए औरों के साथ खींचातानी करने लगा। उसके आसपास चारों ओर सुन्दर युवतियों और युवकों की भीड़ थी। अन्त में उसने देखा कि कुमारियों का एक जत्था चला आ रहा है जिसके आगे एक लड़की प्रेम की देवी दायना का रूप धरे आगे-आगे चल रही है। विनिसियस उस लड़की को समीप से देखने के लिए उधर लपका। अचानक जैसे उसका दिल धड़कना बन्द हो गया, क्योंकि उसे लगा कि यह लड़की लीजिया ही है। लड़कियों ने उसे घेर लिया और उसके आसपास नाचना शुरू किया और फिर उसे अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वे जैसे हिरनियों के झुंड की तरह वहाँ से एक-दम भाग निकलीं। वह लड़की लीजिया नहीं थी, फिर भी विनिसियस कुछ क्षणों के लिए अपना होश खो बैठा।

अचानक उसका मन लीजिया से हुए विछोह के कारण व्यथा से भर आया। इसके पहले कभी उसे वह इतनी पवित्र नहीं लगी थी, आज इस घोर कामुकता और दुराचार के वातावरण में लीजिया के पवित्र प्रेम की उसे बहुत याद आ रही थी। कुछ क्षणों पहले वह भी इस हुड़दंग में जी भरकर भाग लेने के लिए तैयार था, लेकिन अब अचानक उसका मन इस सब से ऊब उठा और घृणा से भर आया। उसे अपने आप से शर्म आने लगी। वह कहीं खुली हवा में निकल जाना और आकाश में लिखे हुए तारों को शान्ति से देखना चाहता था। उसने वहाँ से भाग निकलने का निश्चय किया। लेकिन वह मुश्किल से एक गज आगे बढ़ा होगा कि उसने अपने आगे किसी को घूंघट काढ़े आते हुए देखा। उस स्त्री ने आगे बढ़कर उसके कन्धों पर अपने हाथ रख दिये और इच्छापूर्ण स्वर में कहा, "मैं तुम्हें प्यार करती हूँ! आओ···कोई हमें देख नहीं पायेगा, लेकिन जरा जल्दी करो!"

विनिसियस जैसे गहरी नींद से चौंका। उसने पूछा, "तुम हो कौन?"

जवाब में वह उससे सट गई और धीमे से बोली, "हाय, जल्दी करो! देखो, कहीं कोई नहीं है, और मैं तुम्हें कितना चाहती हूँ। आओ न!"

"तुम कौन हो?"

"तुम्हीं पहचानो न!"

उसने विनिसियस के गले में अपनी बाँहें डाल दीं, और घूँघट में से ही उसने अपने ओंठ उसके ओठों पर कस दिये। वह बोली, "यह प्यार की रात है—नशे और बदहोशी की रात! आज हम चाहे जो कर सकते हैं। आओ, मुझे प्यार करो!"

लेकिन उसके चुम्बन से विनिसियस की घृणा और भी बढ़ आई। उसका दिल और दिमाग इस समय किसी दूसरी जगह था, और इस दुनिया में उसके लिए

लीजिया से बढ़कर और कोई नहीं था। घूँघट में छिपी हुई और प्रणय की भीख माँगनेवाली इस स्त्री से उसे घृणा हो आई। वह बोला, "तुम चाहे जो कोई हो, मैं एक दूसरी लकड़ी को प्यार करता हूँ, और मैं तुम्हारे साथ नहीं आ सकता!"

वह उसकी ओर झुक आई और बोली, "जरा मेरा घूँघट तो खोलो।"

तभी झाड़ियों में किसी के घुसने की आहट हुई। वह स्त्री दुष्टता से हँसते हुए वहाँ से भाग गई। पेट्रोनियस झाड़ी से बाहर आया और बोला, "मैंने सब कुछ देख लिया और सुन लिया।"

विनिसियस बोला, "चलो, चलें यहाँ से।"

वे दोनों रोशनी से जगमगाते हुए वेश्याओं के तम्बुओं के पास से होते हुए सिपाहियों के घेरे को पार करके बाहर निकल आये और अपनी पालकियों के पास जा पहुँचे।

"चलो, मैं भी तुम्हारे घर चलता हूँ," पेट्रोनियस ने कहा।

वे दोनों एक ही पालकी में बैठ गये, लेकिन दोनों रास्ते भर चुप रहे। विनिसियस के घर पहुँचने पर ही पेट्रोनियस ने चुप्पी तोड़ी और कहा, "तुम जानते हो वह कौन थी?"

"रूब्रिया?"

"नहीं!"

"फिर कौन?"

पेट्रोनियस ने जरा आवाज धीमी करके कहा, "सम्राट का देवत्व तो धूल में मिल गया—सीजर रूब्रिया के साथ पड़ा था। लेकिन जो तुम्हारे पास आई थी, वह—" फिर उसने कान में कहा, "वह तो खुद महारानी पोपिया थी!"

कुछ क्षण दोनों चुप रहे, फिर पेट्रोनियस ने कहा, "सीजर उस सुन्दर नर्तकी रूब्रिया पर इस कदर मचल गया कि अपनी इच्छा महारानी से छिपा नहीं सका। इसलिए शायद महारानी भी उसका बदला लेना चाहती थी। मैंने बीच में आकर तुम दोनों को इसीलिए चौंका दिया कि अगर तुमने पहचान लेने के बाद भी उसे अस्वीकार कर दिया होता तो बस, सर्वनाश ही था—तुम्हारी तो मौत ही थी, और लीजिया की भी और साथ-साथ मेरी भी!"

विनिसियस बोला, "उफ्, मेरा तो जी ऊब गया इस सब से—यह रोम, सीजर, दावतें, महारानी, टिजेलिनस, सबसे! मेरा दम घुट रहा है यहाँ! मैं और नहीं सह सकता। क्या तुम इतना भी नहीं महसूस करते?"

"विनिसियस, तुम अपना दिमाग खराब कर रहे हो। तुम अपनी सारी बुद्धि और शालीनता खोये दे रहे हो!"

"इस दुनिया में मैं सिर्फ उसे प्यार करता हूँ।"

"ठीक है, तो इससे हुआ क्या ?"

"इसलिए मैं और किसी को प्यार नहीं कर सकता। मैं तुम लोगों की इस कामुकता से भरी, दुश्चरित्रता और दुराचार से भरी दुनिया से ऊब उठा हूँ !"

"आखिर तुम्हें हुआ क्या है ? क्या तुम ईसाई हो गये हो ?"

विनिसियस ने अपना सिर थाम लिया, और हताश स्वर में कहा, "हाय ! अभी नहीं—अभी नहीं !"

## १०

अन्त में पेट्रोनियस ने खुद सीजर से मालूम किया कि तीन दिन बाद ही यहाँ से उठकर शाही मुकाम एंटियम में होगा। दूसरे दिन ही वह विनसियस को खबर देने पहुँचा।

लेकिन विनिसियस ने उसे उन लोगों के नामों की सूची दिखाई जिन्हें सम्राट के साथ एंटियम जाने का निमन्त्रण मिला था। यह सूची सवेरे ही सीजर का एक आदमी दे गया था।

उसने कहा, "मेरा नाम भी इसमें है, और तुम्हारा भी है। तुम्हें भी शायद घर पहुँचने तक ऐसी सूची देखने को मिल जाय।"

"अगर मेहमानों की सूची में मेरा नाम नहीं हुआ तो बस, मैं अपनी फाँसी की ही आशा कर सकता हूँ—इसके अलावा सीजर से और उम्मीद ही क्या है ! लेकिन खैर, अभी सीजर ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि उसे मेरी जरूरत है।"

फिर उसने सूची में दूसरे लोगों के नाम देखने के बाद कहा, "अभी हमने घर आकर ठीक से साँस भी नहीं ली कि फिर से कूच करने का फरमान मिल गया ! अब एंटियम जाने का न्यौता मिला है ! लेकिन जाना तो पड़ेगा ही क्योंकि यह न्यौता एक तरह से शाही हुक्म भी है।"

"मान लो, अगर कोई इसे न मानना चाहे तो ?"

"तो फिर उसे दूसरी यात्रा का न्यौता मिल जायगा—उस यात्रा का जहाँ से कोई लौट नहीं पाता ! तुमने पहले ही मेरी राय नहीं मानी, वरना कहीं बाहर चले गये होते तो कितना अच्छा होता ! अब लो, तुम्हें मजबूरन सीजर के साथ एटियम भी जाना होगा।"

"मजबूरन ! यह भी कैसा जमाना है, हमारी हालत तो गुलामों से भी बदतर होती जा रही है !"

"हाँ, लेकिन यह क्या तुम्हारा पहला अनुभव है इसका ? लेकिन छोड़ो इसे, कोई दूसरी बात करो। मैंने महल में लोगों से कहा था कि तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है, लेकिन फिर भी इस सूची में तुम्हारा नाम लिखा है। इसका मतलब यह है कि वहाँ कोई ऐसा आदमी है जिसे मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ, और उसने जानबूझ कर तुम्हारा नाम सूची में रखवाया है। क्योंकि सीजर को इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं है, वह तो तुम्हें एक वीर सैनिक ही मानता है, और सैनिकों में उसे सिर्फ इतनी ही दिलचस्पी रहती है, कि उनके साथ कुछ देर घुड़दौड़ वगैरह जैसे विषयों पर बात कर ले, क्योंकि तुम्हें कविता या संगीत जैसे विषयों में कोई रुचि नहीं और न कोई ज्ञान ही है। इसलिए अगर सूची में तुम्हारा नाम भी आया है तो इसे तुम महारानी की कृपा का परिणाम ही समझो और उसका मतलब यह हुआ कि वह तुम्हें आसानी से नहीं छोड़ना चाहती, वह तुम्हें पाये बिना चैन नहीं लेगी।"

"बड़ी शुस्ताख़ औरत है यह !"

"हाँ, इसमें कोई शक नहीं। क्योंकि इसमें यह भी खतरा है कि वह हमेशा के लिए अपने को बरबाद कर ले। ईश्वर करे कि वह जल्दी तुम्हारा पिंड छोड़ दे। लेकिन जब तक उसका मन तुम पर है, तुम्हें बहुत सावधानी से काम लेना चाहिए।"

"वहाँ उस रोज जंगल में मैंने नहीं पहचाना कि वह कौन थी। तुम तो सुन ही रहे थे, मैंने उसे क्या जवाब दिया था। मैंने उससे कहा था कि मैं किसी और को प्यार करता हूँ और उसके अलावा किसी को प्यार नहीं कर सकता।"

"लेकिन विनिसियस, ईश्वर के नाम पर ईसाइयों की संगत से, जो कुछ थोड़ी-सी बुद्धि तुममें बची है, उसे भी खोने की कोशिश न करो। मैं पूछता हूँ कि इसमें हर्ज ही क्या है ? इसमें तुम्हारा नुकसान ही क्या है ? क्या इससे तुम लीजिया को प्यार करना बन्द कर दोगे और याद रखो कि महारानी ने तुम्हें उस रोज महल में दावत के वक्त लीजिया के साथ देखा था। उसके लिए यह पता लगाना मुश्किल नहीं होगा कि किसके लिए तुम उसका प्यार ठुकरा रहे हो और तब वह उसे फौरन पकड़ मँगवायेगी, चाहे वह पाताल में ही क्यों न छिप जाय ! इस तरह तुम न सिर्फ अपना सर्वनाश करोगे, बल्कि लीजिया को भी बरबाद कर दोगे। कुछ समझ रहे हो तुम ?"

विनिसियस इस तरह सुनता रहा जैसे उसका ध्यान कहीं दूसरी जगह हो। अन्त में वह बोला, "मुझे उससे जरूर मिलना चाहिए।"

"किससे ? लीजिया से ?"

"हाँ।"

"क्या तुम्हें मालूम है कि वह कहाँ रहती है ?"

"नहीं।"

"तो फिर से तुम उसके पीछे बावले होकर कब्रिस्तानों और पुराने खँडहरों की खाक छानना चाहते हो ?"

"पता नहीं, मुझे कहाँ-कहाँ जाना पड़ेगा, लेकिन मैं उससे एक बार जरूर मिलना चाहता हूँ।"

"अच्छी बात है। हालाँकि वह ईसाई है, लेकिन मेरा ख्याल है कि वह तुम से ज्यादा समझदार है, अगर यह तुम्हारी बरबादी नहीं चाहता तो जरूर समझदारी से काम लेगी।"

विनिसियस ने अपने कन्धे उचका दिये और कहा, "जो भी हो, उसने मुझे यूरसस से बचाया है, वरना वह मेरी जान ही ले लेता।"

"अगर तुमने तय ही कर लिया है तो जरा जल्दी करो, क्योंकि यह दद्रियल सीजर जल्दी ही यहाँ से रवाना होनेवाला है। तुम जानते ही हो कि अगर वह नाराज हो गया जो फाँसी का हुक्म देने के लिए वह दुबारा सोचना जरूरी नहीं समझता और न ही उसके लिए आवश्यक है कि वह राजधानी में रहता है या छुट्टी पर—वह एटियम से भी हुक्म निकाल सकता है!"

लेकिन विनिसियस कुछ और ही सोच रहा था। वह लीजिया से मिलने की तरकीब सोच रहा था।

अगले दिन एक ऐसी घटना घटी, जिसने सारी समस्या ही हल हो गई। अचानक चिलन उससे मिलने के लिए आ पहुँचा। जब वह उसके यहाँ आया तब कई दिनों का भूखा था और चिथड़े लपेटे था। विनिसियस ने पहले ही अपने नौकरों को उसे हर समय अन्दर आने का हुक्म दे रखा था, इसलिए किसी ने उसे रोकने की हिम्मत नहीं की। वह सीधा विनिसियस के पास जा पहुँचा और सलाम करके बोला, "देवता की कृपा हो सरकार पर! आप अमर हों और दुनिया पर राज करें!"

एक क्षण के लिए तो विनिसियस को उससे इतनी घृणा हुई कि उसे फौरन मकान से बाहर निकलवा दे, लेकिन यह सोचकर कि शायद इससे लीजिया का कुछ पता मिल सके, उसने अपने आपको रोका और उससे पूछा, "अरे, तुम कहाँ से आ टपके! क्या चाहिए तुम्हें?"

"मेरी हालत बड़ी खराब है, हुजूर!" चिलन बोला, "आपने जो कुछ मुझे दिया था वह तो मैंने किताबें खरीदने में ही खर्च कर दिया। फिर मेरे यहाँ चोरी हो गई और सब कुछ लुट गया। वह औरत जिसे मैंने अपने यहाँ काम करने के लिए रखा था, मेरा सारा सामान और रुपया-पैसा लेकर भाग गई। लेकिन अब सिवा आपके मैं और किसका मुँह देखूँ, हुजूर! आपकी मैंने एक बार सेवा की है, आपकी जान तक बचायी है, आप के आगे हाथ न फैलाऊँ तो और कहाँ जाऊँ!"

"अरे, तो तुम्हें चाहिये क्या बोलो तो ! आखिर तुम यहाँ आये क्यों हो ?"

"सरकार, जरा मेरी मदद कीजिये ! मैं भूखों मर रहा हूँ। जरा मुझ पर, मेरे आँसुओं पर तरस तो खाइये। और देखिये, मैंने आपके लिए कुछ काम भी किया है। मैं जानता हूँ कि देवी लीजिया आजकल कहाँ रह रही हैं। मैं आपको उस सड़क का रास्ता बता सकता हूँ।"

"कहाँ रहती है वह ?"

"लीनस के घर, जो यहाँ के ईसाइयों में सबसे बड़ा और पुराना है। यूरसस भी उसके साथ ही है, वह अब भी उस चक्कीवाले के यहाँ नाम बदलकर काम कर रहा है। यूरसस रात में काम करने जाता है, इसलिए अगर रात के वक्त मकान घेर लिया जाय तो वह कुछ नहीं कर सकता। लीनस बूढ़ा आदमी है और उसे छोड़कर घर में दो बुढ़ियाँ और हैं। हुजूर, अगर आप चाहें तो बस, आपके कहने भर की देर है और आज ही रात को वह सुन्दरी आपके घर आ सकती है !"

विनिसियस का सिर चकराने लगा। इतनी जल्दी सफलता मिल जायगी, इसकी उसे आशा तक नहीं थी। उसे कुछ लालच हो आया। हाँ, यह है लीजिया को पाने का रास्ता और इसमें सफलता निश्चित है। अगर वह एक बार मेरे घर आ गई तो भला कौन उसे मुझसे छीन सकता है ? जहाँ वह एक बार उसकी हुई कि फिर उसके सामने दूसरा चारा ही कौन-सा रह जायगा ? बेकार है यह सारा मजहब का पचड़ा ! लीजिया एक बार मेरी हो जाय फिर ईसाइयों से मुझे क्या लेना-देना ! बहुत दिन मैं उनके चक्कर में रह चुका और जहाँ तक लीजिया का सम्बन्ध है, मेरे घर का जीवन उसके मजहब से कहाँ तक मेल खा सकेगा, यह कोई विशेष महत्व की बात नहीं है। जो बात सोचने की है वह यह कि किस तरह उसे अपनी बनाया जाय और आज ही कैसे पाया जाय ! मैं उससे विवाह कर लूँगा और हमेशा के लिए उसे अपनी बना लूँगा। उसका मुझ पर एहसान भी है, उसने मेरी जान बचायी है।

और फिर उसे वह दिन याद आ गया जब वह क्रोटेन के साथ चुपके से लीजिया के घर में घुसा था और उसे याद आया किस तरह लीजिया का नौकर यूरसस उस पर वार करने जा रहा था। फिर उसके बाद क्या हुआ यह सब उसे याद आने लगा। किस तरह लीजिया उसके बिस्तर पर झुकी हुई उसकी सेवा कर रही थी। उस समय वह किसी देवी के समान लग रही थी। न चाहते हुए भी उसकी आँखें अपने घरेलू मन्दिर की ओर उठ गयीं और फिर उसने उस क्रास की ओर देखा जो लीजिया ने उसे दिया था। तो क्या वह उसकी सारी अच्छाइयों का बदला फिर से उसके साथ ज्यादती करके चुकाये ? क्या वह उसे जबरदस्ती अपने घर में खींच लाये और अचानक उसे लगा कि लीजिया को अपने पास ले आना

उसके लिए उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना यह कि वह अपने प्यार का उत्तर उससे पा सके। लीजिया उसकी बाँहों में बँध जाय केवल इतने से ही उसे संतोष नहीं हो सकेगा, वह लीजिया का प्यार पाना चाहता है, उसका मन जीतना चाहता है। इससे बढ़कर उसका सौभाग्य और क्या हो सकता है कि वह अपनी मरजी से उसके घर चली आये! लेकिन उसे जबरदस्ती भगाने की कोशिश करना तो अपने सौभाग्य को हमेशा के लिए खो देने के बराबर होगा। इससे सारे आनन्द पर पानी फिर जायगा, जीवन में जिसे उसने अपने लिए सबसे अधिक कीमती और अमूल्य माना है, वह सब नष्ट हो जायगा।

लीजिया को भगा लाने का विचार तक उसे घृणित लगा। उसने एक नजर चिलन पर डाली, जो उत्सुकता से उसकी ओर देख रहा था। अचानक उसके प्रति उसका मन घृणा से भर आया, उसकी इच्छा हुई कि उसे जहरीले साँप की तरह अपने पैरों तले कुचल डाले। अपने पर काबू पाने की उसे आदत नहीं थी, वह गुस्से में भर कर चिलन से बोला, "मुझे तुम्हारी राय की जरूरत नहीं है और चूँकि तुम्हें यहाँ से बिना कुछ पाये नहीं जाना चाहिये, इसलिए तुम्हें गुलामों की कालकोठरी में ले जाकर तीन सौ कोड़ों का इनाम दिया जायगा।"

उसकी बात सुनकर और उसके चेहरे का भाव देखकर चिलन के तो होश उड़ गये। वह विनिसियस के पैरों में सिर झुकाकर बैठ गया और गिड़गिड़ाने लगा, "हाय, मालिक, क्यों? क्यों, सरकार? हाय, मेहरबान, रहम कीजिये! मुझसे क्या अपराध हुआ? इस बूढ़े और भूखे आदमी पर दया कीजिये! मैंने तो आपकी सेवा की है और आप उसका यह बदला चुका रहे हैं!"

"हाँ, जिस तरह तुमने ईसाइयों के उपकारों का बदला चुकाया है!" विनिसियस ने कहा और अपने नौकरों को आवाज दी।

चिलन डर से पीला पड़ गया और विनिसियस के पैर पकड़ कर बैठ गया। "सरकार, सरकार! हाय, मैं मर जाऊँगा! तीन सौ नहीं हुजूर, पचास काफी होंगे! सौ कोड़े मार लीजिये, लेकिन तीन सौ में तो मैं मर ही जाऊँगा, मालिक! दया कीजिये!"

लेकिन विनिसियस ने उसे अपने पास से दूर ठेल दिया और नौकरों को फिर से हुक्म दिया। उसी क्षण दो जर्मन गुलाम वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने चिलन को दबोच लिया और उसी के चिथड़े से उसका मुँह ढँककर उसे कमरे से बाहर खींच ले गये। चिलन दरवाजे से बाहर होते-होते चीखा, "हाय, ईसा के नाम पर मुझे छोड़ दो!"

विनिसियस अब कमरे में अकेला था। चिलन को पीटने का आदेश देकर उसे कुछ चैन मिला था, वह अब अधिक सजग होकर अपने विचारों को तौलने लगा।

उसका मन उत्साह से भर आया। उसे लगा कि वह लीजिया की ओर एक कदम आगे बढ़ आया है और उसे इसका इनाम मिलेगा। फिर भी उसे डर था कि लीजिया शायद चिलन के प्रति किये गये उसके व्यवहार को पसन्द नहीं करेगी। उसका धर्म तो क्षमा की शिक्षा देता है! ईसाइयों ने तो इस दुष्ट को क्षमा कर दिया था, हालाँकि उनका इसने अधिक अहित किया था। फिर उसे याद आया कि चिलन ने यहाँ से जाते समय ईसा का नाम लिया था। उसने उसे छोड़ देने का निश्चय किया। उसने नौकर को आवाज देने का निश्चय किया ही था कि इतने में एक नौकर उसके पास आया और बोला, "सरकार, वह आदमी बेहोश हो गया है और हो सकता है वह जल्द ही मर जाय। क्या हम लोग उसे तब तक पीटते रहें?"

"उसे होश में लाओ और फिर यहाँ हाजिर करो!"

वह आदमी पर्दे के पीछे गायब हो गया। लेकिन चिलन को होश में लाना कुछ मुश्किल लगा। विनिसियस घबराने लगा। जब नौकर उसे उठाकर उसके पास लाये तो विनिसियस ने इशारे से उन्हें बाहर चले जाने को कहा। वे लोग बाहर हो हो गये। चिलन का चेहरा एकदम सफेद हो गया था। उसके पैरों से खून बह रहा था। होश में आते ही वह विनिसियस के पैरों में गिर पड़ा और बोला, "सरकार बड़े दयावान हैं!"

विनिसियस ने उसे डाँटकर कहा, "कुत्ते कहीं के, याद रखो, आज मैंने तुम्हें ईसा के नाम पर क्षमा कर दिया!"

"हुजूर, मैं जिन्दगी भर ईसा का और आपका गुलाम रहूँगा।"

"चुप रहो! खड़े हो जाओ! तुम्हें मेरे साथ चलना होगा और वह मकान बताना होगा जिसमें लीजिया रह रही है।"

"बहुत अच्छा, हुजूर, लेकिन मैं भूखा हूँ। मैं आपके साथ चलूँगा, लेकिन मारे भूख के मेरी जान निकल रही है। पहले जरा आप मुझे अपने कुत्तों का जूठन ही खिलवा दें, फिर मैं जिन्दगी भर सरकार की गुलामी करने के लिए तैयार हूँ।"

विनिसियस ने उसके लिए कुछ खाने को लाने का हुक्म दिया। फिर उसने उसे एक मोहर इनाम दी और ओढ़ने के लिए एक नया लबादा दिया। लेकिन चिलन की हालत ऐसी नहीं थी कि वह विनिसियस के साथ चल सके, हालाँकि वह जानता था कि इससे विनिसियस के नाराज हो जाने का डर था, पर कोशिश करके भी उसके लिए चलना मुश्किल था।

"मालिक, मुझे जरा-सी शराब भी दिलवा दें," उसने काँपते हुए कहा, "थोड़ी पी लेने से मुझमें कुछ चलने की ताकत आ जायगी। इसके बाद तो अगर

आप कहें तो मैं यूनान तक की दौड़ लगा सकता हूँ, लेकिन अभी तो मेरे पैरों में दम ही नहीं है।"

कुछ देर बाद जब उसकी हालत कुछ ठीक हुई तब वे दोनों बाहर निकले। रास्ता बहुत लम्बा था, क्योंकि लीनस अन्य ईसाइयों की तरह नदी के उस पार रहता था। उसका घर मरियम के घर के पास ही था। कुछ दूर जाकर चिलन ने एक छोटे से मकान की ओर इशारा किया जो काई से मढ़ी एक दीवार से घिरा था।

"वही मकान है, हुजूर!"

"ठीक है," विनिसियस ने कहा। "अच्छा, अब तुम यहाँ से चलते बनो, लेकिन देखो सुनो, अब आगे से तुम्हें सब कुछ गुप्त रखना चाहिये। किसी को यह न बताना कि तुम मेरे नौकर रहे हो और न यह बताना कि मरियम और पीटर कहाँ रहते हैं, या और दूसरे ईसाई कहाँ रहते हैं। समझे न? तुम हर महीने आना और मेरा नौकर तुम्हें दो मोहरें दे दिया करेगा। लेकिन अगर तुमने अब आगे कभी ईसाइयों के खिलाफ जासूसी की तो मैं तुम्हें इतने कोड़े लगवाऊँगा कि तुम्हारी जान ही निकल जायगी, या जेल में ठुँसवा दूँगा।"

चिलन ने झुककर उसे सलाम किया और कहा, "नहीं, हुजूर, मैं किसी से कुछ नहीं कहूँगा।"

लेकिन जब विनिसियस गली में मुड़ गया तो उसने उसकी ओर घूँसा तानकर कहा, "मैं कभी नहीं भूलूँगा!" और एक बार फिर उसे चक्कर आ गया।

## ११

विनिसियस सीधा मरियम के घर पहुँचा, जहाँ मरियम के अलावा उसका लड़का नेजारस और पीटर, ग्लोकस, क्रिस्पस और पोल वगैरह भी थे। विनिसियस को देखकर सब चकित रह गये। उसने कहा, "मैं ईसा के नाम पर आप लोगों को नमस्कार करता हूँ, जिनकी आप लोग पूजा करते हैं।"

"ईसा आप पर कृपा करें!"

"मैं आप लोगों के जीवन से प्रभावित हुआ हूँ और मैंने स्वयं भी आपकी कृपा का अनुभव प्राप्त किया है, इसीलिए मैं मित्र की तरह यहाँ आया हूँ।"

"और हम भी एक मित्र की तरह ही आपका स्वागत करते हैं," पीटर ने कहा। "आप बैठिये और हमारे साथ खाना खाइये, आप हमारे मेहमान हैं।"

"मैं बैठूँगा तो, लेकिन पहले मेरी बात तो सुनिये, और आप पीटर और पाल

मेरी इमानदी के गवाह रहेंगे। मैं जानता हूँ कि लीजिया कहाँ है। अभी कुछ देर पहले ही मैं लीनस के मकान के आगे खड़ा था। मेरा उस पर हक है और खुद सम्राट ने उसे मुझे दिया है। मेरे पास अपने कई मकान हैं और करीब पाँच सौ गुलाम हैं। इसलिए मेरे लिए यह बहुत आसान है कि मैं उसके मकान को घेर लूँ और उसे पकड़ ले जाऊँ, लेकिन फिर भी मैं अब तक ऐसा करने से अपने को रोकता रहा हूँ और आगे भी ऐसा कुछ करने की मुझे अच्छा नहीं है।"

"और इसके लिए ईश्वर आपका भला करेगा और आपके मन को पवित्रता प्रदान करेगा," पीटर ने कहा।

"पहले भी जब मैं आप लोगों के पास रहता था, तब भी अगर मैंने चाहा होता तो आसानी से मैं उसे ले जा सकता था। लेकिन आप लोगों के पवित्र रहन-सहन और आपके धर्म का मेरे मन पर प्रभाव पड़ा है, हालाँकि मैं उसका समर्थन नहीं करता और अब हिंसा की ओर भी मेरी प्रवृत्ति जाती रही है। इसलिए मैं आप लोगों से ही अपनी बात कहना चाहता हूँ, जो लीजिया के अभिभावक हैं। मेरा कहना है कि आप लोग मेरी पत्नी को लौटा दीजिये, और मैं शपथ खाता हूँ कि मैं उसे अपना धर्म मानने से कभी नहीं रोकूँगा। बल्कि मैं खुद भी ईसा की शिक्षाओं का अध्ययन शुरू कर दूँगा।"

वह सीधा तना खड़ा था और गम्भीर स्वर में बोल रहा था, लेकिन फिर भी वह भावावेश के कारण काफी उत्तेजित था और उसके पैर काँप रहे थे। वे लोग चुपचाप उसकी बात सुनते रहे। वह भी बिना उनके उत्तर की प्रतीक्षा किये बोलता रहा, "मैं जानता हूँ कि उसे पाना मेरे लिए आसान नहीं है, लेकिन मैं उसे बहुत प्यार करता हूँ। मैं ईसाई नहीं हूँ, लेकिन मैं आपका दुश्मन भी नहीं हूँ। आपके धर्म के समर्थक कहेंगे कि मुझे धर्म में दीक्षित कीजिये, लेकिन नहीं, मैं कहूँगा कि मुझे ज्ञान दान दीजिये! लीजिया को मैं पर्वत की चोटी पर रहनेवाले हिम की भाँति पवित्र पाकर ही इतना आकृष्ट हुआ हूँ और जब-जब मैं यह सोचता हूँ कि अपनी यह पवित्रता उसने आपके धर्म के कारण ही पायी है, तो मेरा भी मन आपके धर्म का आदर करना और अधिक से अधिक इसे समझना चाहता है। लोगों का कहना है कि आपका धर्म इस संसार के जीवन को कोई महत्व नहीं देता, उसके लिए आनन्द और सुख का कोई महत्व नहीं, वह रोम के कानून की और रोम की शक्ति की परवाह नहीं करता। क्या यह सच है? मुझे बताइये कि इन चीजों की जगह आप लोग क्या लाना चाहते हैं? क्या आप के विचार में प्यार करना, हँसी-खुशी से रहना और सुख की आशा करना पाप है? क्या आप जीवन के विरोधी हैं? क्या मुझे लीजिया को हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए? आप लोग किस तरह के सत्य में विश्वास करते हैं? लोग मुझसे पूछते हैं कि यूनान ने बुद्धि और सौन्दर्य को जन्म

दिया, रोम की सभ्यता ने बल और शक्ति को जन्म दिया लेकिन ईसाई क्या लाना चाहते हैं ? आप मुझे बताइये। अगर आपके दरवाजों के पीछे प्रकाश छिपा है तो मेरे लिए अपने द्वार खोलिये।"

पीटर ने उत्तर दिया, "हम तुम्हारे लिए प्रेम का सन्देश लाये हैं, हम ईसाई संसार में प्रेम-भाव फैलाना चाहते हैं।"

पाल ने कहा, "अगर हम मनुष्यों और देवताओं की सारी भाषाएँ सीख लें फिर भी अगर हम प्रेमरहित हैं तो समझो कि वाणीहीन है।"

उस बूढ़े सन्त का मन इस व्यथाग्रस्त व्यक्ति के लिए भर आया। उन्हें लगा जैसे यह पिंजड़े में बन्द पंछी की तरह फड़फड़ा रहा है। उन्होंने अपने हाथ उसकी ओर बढ़ा दिये और कहा, "मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, ईश्वर तुम्हारे मन को शान्ति दे और तुम्हें सत्य का प्रकाश मिले।"

पीटर के इन शब्दों को सुनकर विनिसियस उछलकर उनकी ओर बढ़ गया और उनके आगे घुटने टेककर बैठ गया। फिर उसने, जो रोम की एक कुलीन संतान था और जो अपनी सभ्यता के अनुसार किसी भी विदेशी को मनुष्य मानने से इन्कार करता था, उसने पीटर के हाथ थाम लिये और बहुत आदर से उन्हें अपने ओठों से लगा लिया।

पीटर इससे बहुत खुश हुए, वहाँ उपस्थित दूसरे लोग भी प्रसन्न हो गये। विनिसियस ने मुस्कराते हुए कहा, "मुझे लगता है कि आप लोग सुख को महत्व देते हैं और इस आनन्द के क्षण को चिरस्थायी बनाना चाहते हैं। लेकिन सम्राट् एंटियम जा रहे हैं, वे रोम में नहीं रहेंगे और मुझे भी उनके साथ जाना पड़ेगा, क्योंकि उनका हुक्म है। आप जानते हैं कि उनके हुक्म से इन्कार करना मौत बुलाना है। लेकिन अगर आप लोग ठीक समझते हैं और मुझे इसके योग्य मानते हैं तो आइये, मुझे भी सत्य की शिक्षा दीजिये। आप लोग भी मेरे साथ चलिये। वहाँ आप हिफाजत से रहेंगे और आपको सीजर के दरबार में भी अपना धर्म फैलाने का मौका मिलेगा। वहाँ मेरा एक मकान है जहाँ मैं आपको रखूँगा और आप से शिक्षा लूँगा।"

वहाँ बैठे हुए ईसाइयों को अपने धर्म की इस विजय से बड़ा आनन्द हुआ। वे यह सोचकर और भी खुश थे कि एक रोमन सेनानायक और रोम के एक अत्यन्त प्रतिष्ठित घराने के वंशज ने उसका धर्म स्वीकार कर लिया। इससे दूसरे बड़े-बड़े घरानों में एक सनसनी फैल जायगी। पीटर यहाँ ईसाइयों के नेता थे इसलिए वे नहीं जा सकते थे लेकिन पोल जो हाल ही में बाहर से आये थे और पूर्व की ओर यात्रा करने की तैयारी कर रहे थे उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गये।

पीटर के न चलने का विनिसियस को अफसोस था, उसे कुछ बुरा भी लगा

लेकिन उसने पोल को यात्रा के लिए तैयार होते देखकर उसे धन्यवाद दिया और फिर अपनी एक आखिरी माँग रखते हुए कहा, "चूँकि मैं जानता हूँ कि लीजिया कहाँ रहती है और मैं खुद जाकर उसे अपनी पत्नी बनने के लिए कह सकता हूँ, लेकिन मैं उचित यह समझता हूँ कि पहले आप लोगों से इजाजत ले लूँ, या आप लोग खुद ही मुझे वहाँ ले चलिये। मुझे पता नहीं कि कब तक एंटियम में सीजर के साथ रहना पड़े, उसके साथ रहने पर आगे क्या होगा इसका कोई भरोसा नहीं रहता। इसलिए जाने के पहले मुझे लीजिया से मिल लेने दीजिये, मैं उसे देखकर अपनी आँखों को तृप्त कर लूँ और उससे यह पूछ लूँ कि उसने मुझे क्षमा कर दिया है या नहीं, क्योंकि इसी पर हम लोगों की आगे की खुशी निर्भर है।"

पीटर ने मुस्कुराकर कहा, "बेटा, भला तुम्हारी इस छोटी-सी माँग को, जो हमारे लिए ही सुखप्रद है कौन अस्वीकार कर सकता है?"

विनिसियस ने फिर से झुककर पीटर के हाथों को चूम लिया, क्योंकि वह अपने भावावेश को रोक नहीं पा रहा था। पीटर ने भी अपने हाथ उसके सिर पर रखते हुए कहा, "जाओ, और सीजर से डरने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं। मैं कहता हूँ कि कोई तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता।"

फिर उन्होंने मरियम को कहा कि जाओ लीजिया को बुला लाओ, और उसे बताना मत कि कौन आया है।

उसका मकान पास ही था। थोड़ी ही देर में मरियम लीजिया का हाथ पकड़े हुए बगीचे से आते हुए दिखाई दी।

विनिसियस दौड़कर उससे मिलता, लेकिन उसके उस सुन्दर मुख को देखकर मारे खुशी के उससे वहाँ से हिलते-डुलते तक न बना। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा, इतनी घबराहट उसे उस समय भी नहीं हो रही थी जब पहली बार उसने युद्ध में भाग लिया था।

लीजिया उनके बीच आ खड़ी हुई। उसका चेहरा मुरझाया हुआ था फिर भी लाल हो रहा था और आँख उत्सुक और भयभीत थीं। लेकिन उसने अपने आस-पास लोगों के चेहरों पर सिर्फ प्रसन्नता के भाव ही देखे। पीटर ने आगे बढ़कर उससे कहा, "लीजिया, क्या तुम इनसे अब भी प्रेम करती हो?"

एक क्षण के लिए वहाँ सन्नाटा छा गया। लीजिया के ओंठ इस तरह काँपने लगे जैसे कोई बच्चा अपना अपराध स्वीकार करते समय रोने की तैयारी में हो।

"बोलो," पीटर ने कहा।

वह पीटर के पैरों में गिर पड़ी और बहुत ही धीमें स्वर में बोली, "हाँ।"

विनिसियस भी घुटनों के बल उसके पास आ बैठा। पीटर ने दोनों के सिरों

पर हाथ रखते हुए कहा, "भगवान तुम्हारा प्रेम चिरस्थायी रखें, क्योंकि तुम्हारा प्रेम अत्यन्त पवित्र है।"

## १२

मकान के छोटे से बगीचे में विनिसियस ने लीजिया को बताया कि उसने कुछ देर पहले उसके धर्मगुरुओं के सामने क्या-क्या कहा था। उसने उसे बताया कि किस तरह वह इधर परेशान रहा है, क्या-क्या उस पर बीता है और मरियम का घर छोड़कर जाने के बाद से कितना दुःख उसे सहना पड़ा। वह उसे उसी क्षण से चाहने लगा था जब उसने ओलस के घर उसे देखा था। फिर उसने उसे महल में देखा, इसके बाद पीटर का उपदेश सुनते हुए उसे कब्रिस्तान में देखा और अन्त में अपनी सेवा करते हुए अपने बिस्तर के पास देखा था और बराबर उसका प्रेम उसके प्रति बढ़ता गया था। अभी कुछ ही देर पहले चिलन ने उसे उसका पता बताया था और उसे जबरदस्ती उड़ाने की राय दी थी, लेकिन इसके लिए उसने उसे अच्छी सजा दी। उसने यह ज्यादा उचित समझा कि जाकर धर्मगुरुओं से शिक्षा ले और उन्हीं से लीजिया की माँग करे। उसने कहा कि धन्य है वह शुभ घड़ी जब मैंने यह निश्चय किया, वरना तुमसे मिल पाना मुश्किल ही था। लेकिन अब आशा है कि तुम मुझसे दूर नहीं भागोगी।

"लेकिन मैं तुमसे दूर नहीं भागती थी," लीजिया ने कहा।

"तब फिर तुम क्यों भाग आईं?"

उसने एक बार अपनी नीली आँखों से उसकी ओर देखा और फिर सिर झुकाकर उत्तर दिया, "यह तुम जानते ही हो।"

विनिसियस इतना खुश था कि वह उससे ठीक से बातें भी नहीं कर पा रहा था। वह खुद नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या कह रहा है। लेकिन इतना वह जरूर महसूस कर रहा था कि लीजिया के आ जाने से उसके जीवन में एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति होगी। वह उसके शारीरिक सौन्दर्य से ही नहीं बल्कि उसकी आत्मा के सौन्दर्य से प्रभावित था। उसने चुपचाप उसके हाथ थाम लिये और भावावेश में वह बार-बार उसका नाम दोहराने लगा, "लीजिया, ओह, लीजिया!"

फिर उसने उससे उसके मन की बात पूछी और उसने भी यह स्वीकार किया कि वह भी उसे ओलस के घर से ही चाहने लगी थी और अगर वह महल से वापस

उसे उनके पास पहुँचा देता तो वह ओलस और उसकी पत्नी को किसी तरह समझा-बुझाकर राजी कर लेती।

विनिसियस बोला, "पोल मुझे सत्य की शिक्षा देंगे तो मैं ईसाई होकर रोम लौटूँगा। मैं फिर से ओलस के परिवार से मित्रता कर लूँगा और फिर किसी बात की शिकायत नहीं रहेगी। फिर आकर मैं तुम्हें भी अपने घर ले जाऊँगा।"

वे लोग टहलते हुए दरवाजे के पास आ गये। लीजिया सनोबर के एक पेड़ से टिककर खड़ी हो गई, विनिसियस ने कहा, "तुम यूरसस को ओलस के घर भेज दो और वहाँ से अपनी चीजों और उन खिलौने को मँगवा लो जिनसे तुम खेला करती थीं।"

लीजिया ने शर्म से लाल होते हुए कहा, "लेकिन यह रिवाज नहीं है।"

"मैं जानता हूँ, दुलहन के बाद उसकी नौकरानी ही इन चीजों को लाती है, लेकिन तुम मेरे लिए यह कर दो। मैं उन्हें अपने साथ एंटियम ले जाऊँगा, जहाँ वे मुझे तुम्हारी याद दिलायेंगे।" फिर भावावेश में अपने हाथ मींजते हुए उसने कहा, "तुम्हें इतना तो करना ही पड़ेगा!"

"ठीक है, अगर पोम्पोनिया इसे ठीक समझती हैं, तो वही यह काम करेंगी," लीजिया ने और भी लजाते हुए कहा।

कुछ देर के लिए दोनों चुप हो गये, प्रेम के आवेग में वे कुछ कह ही नहीं पा रहे थे। लीजिया पेड़ से टिकी हुई खड़ी थी। उसकी आँखें झुकी हुई थीं, विनिसियस का चेहरा भी लाल हो रहा था। चारों ओर बिल्कुल शान्ति थी, दोपहर का समय हो आया था। वे दोनों एक-दूसरे के विचारों में इस तरह भूले हुए थे कि उन्हें यह तक याद नहीं रहा कि वे कहाँ खड़े हैं।

लेकिन मरियम तब तक दरवाजे में आयी और उन्हें खाना खाने के लिए बुलाने लगी। भोजन के समय वे दोनों अपने नेताओं के बीच बैठे, जो उन्हें देखकर बहुत ही प्रसन्न हो रहे थे। उन लोगों को यह सोचकर बड़ी खुशी हो रही थी कि उनका मजहब अधिक से अधिक फैलता जा रहा है। पीटर ने अपने आशीर्वाद के साथ ईसा के नाम पर भोजन आरम्भ किया, कमरे में अत्यन्त प्रसन्नता का वातावरण था। पोल ने विनिसियस की ओर मुड़कर कहा, "अब बताइये कि क्या हम लोग जीवन और सुख शान्ति के शत्रु हैं?"

विनिसियस ने कहा, "आज के पहले कभी मैंने आप लोगों को इतना प्रसन्न नहीं पाया था।"

## १३

उसी दिन शाम को जब विनिसियस अपने घर लौट रहा था, रास्ते में उसे पेट्रोनियस की सुनहरी पालकी जाती हुई दिखाई दी और उसने इशारे से पालकी रुकवायी और फिर परदा उठाकर उसने हँसते हुए कहा, "सोओ, और खूब मीठे सपने देखो!" क्योंकि पेट्रोनियस उस समय ऊँघ रहा था।

चौंककर वह बोला, "ओह, तुम हो! हाँ, मैं कुछ ऊँघ रहा था। कल की रात मैंने महल में ही बितायी। इस समय मैं किसी ऐसी चीज की तलाश में निकला था जो एंटियम में मेरा मन बहला सके। कहो, क्या खबर है?"

"तो तुम किताब खरीदने निकले हो?"

"हाँ, मैं अपने पुस्तकालय को नष्ट नहीं करना चाहता। उसकी सजावट मुझे पसन्द है इसके अलावा लोगों ने उसे खड़ा रखने की राय दी है। ओह, मुझे कितनी नींद आ रही है!"

"तो तुम महल में भी गये थे? तब तो मुझे तुमसे सवाल पूछने चाहिए। अच्छा हो कि तुम अपनी पुस्तकें और अपनी पालकी वापस भिजवा दो और मेरे साथ चले चलो। वहाँ पहुँचकर हम एंटियम की यात्रा की योजना बनायेंगे।"

"ठीक है," पेट्रोनियस ने अपनी पालकी से नीचे उतरने की कोशिश की। "हम लोगों को परसों ही बादशाह के साथ जाना पड़ेगा, इसलिए तैयार रहना चाहिए। कल ही वह कह रहा था कि उसे इस शहर की पुरानी बनावट पसन्द नहीं है। पहले तो वह बहुत समय तक हम लोगों के साथ नाचता रहा, फिर उसे पसीना हो आया और उसी में उसे जुकाम हो गया। वह पसीने में बिल्कुल तर हो रहा था। बार-बार वह अपनी नकाब बदलता था और लट्टू की तरह नाचते हुए शराबियों की तरह हाथ फेंकता जाता था। अपनी भारी भरकम तोंद के कारण वह बड़ा भद्दा लग रहा था!"

"सीजर का उस दिन इस तरह अचानक खुलेआम गाने लगना बड़ा भद्दा मालूम हुआ, लेकिन रोमन सम्राट किसी बन्धन में बँधना नहीं चाहते!"

"मेरे दोस्त, असल में जनता खुद चाहती है कि ऐसा ही आदमी उसका सम्राट् हो।" पेट्रोनियस ने कहा, "तुम तो कभी लीजिया का ध्यान करते हो और कभी अपने ईसाई दोस्तों का। इसलिए शायद तुम्हें यह नहीं मालूम कि पिछले दो-एक महीने में, क्या-क्या हुआ है। नीरो ने खुले आम पेथागोरस से विवाह किया है।

इसमें नीरो खुद दुलहन बना था। पागलपन की हद हो गई, है या नहीं ? खैर, पुरोहित बुलाये गये और उन्होंने बड़ी गम्भीरता के साथ दोनों का विवाह किया ! मैं भी उस मौके पर उपस्थित था। मैं बहुत कुछ बरदाश्त कर सकता हूँ, लेकिन यह तो हद हो गई। मैं नहीं जानता कि देवताओं ने, अगर देवता हैं तो, उसे आशीर्वाद दिया होगा। नीरो देवताओं में विश्वास नहीं करता और वह ठीक ही करता है।"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि नीरो अपने को न केवल सबसे बड़ा पुरोहित समझता है, बल्कि वह अपने को सबसे बड़ा देवता भी मानता है और साथ ही वह एक तरह से देवता-विरोधी भी है !"

पेट्रोनियस ने हँसते हुए कहा, "यही तो मजाक है। क्या दुनिया है यह भी ! खैर, अच्छा यह बताओ, क्या तुम अपनी पालकी कुछ देर के लिए मुझे दे सकते हो ताकि मैं यूनिस को बुलावा सकूँ ! मेरी नींद गायब हो चुकी है और मैं जरा अपना मनोरंजन करना चाहता हूँ। जरा, अपने सितारिये को कहो कि जब तक हम लोग खाना खाते हैं, तब तक कोई गीत ही सुना दे, इसके बाद हम लोग एंटियम के बारे में बात करेंगे। जरा हम लोगों को इस सम्बन्ध में सोच लेना चाहिये, खासतौर से तुम्हारे ख्याल से।"

विनिसियस ने अपने आदमियों को यूनिस को लाने के लिए भेज दिया। लेकिन उसने कहा, "मुझे एंटियम के बारे मे बात करके माथा-पच्ची करने की इच्छा नहीं है ! राजमहल और उसकी राजनीति तक ही इस दुनिया की सीमा नहीं है, खासतौर से उन लोगों के लिए जो और बातों में भी दिलचस्पी लेते हैं। मुझे अभी इसमें कोई रुचि नहीं है कि नीरो क्या चाहता है और उसका क्या मिजाज है।"

उसने यह इतनी बेपरवाही और मस्ती मे कहा कि पेट्रोनियस कुछ देर तक आश्चर्य से उसकी ओर देखता रह गया। उसने पूछा, "आखिर बात क्या है ! तुम्हें हुआ क्या है ? तुम आज बहुत खुश नजर आ रहे हो !"

"मैं आज बहुत खुश हूँ, और यही बताने के लिए मैंने आज तुम्हें अपने यहाँ बुलाया है।"

"क्यों, क्या हुआ ?"

"जो कुछ हुआ है, उसके सामने मेरे लिए पूरा रोमन साम्राज्य भी तुच्छ है।" फिर वह कुर्सी की पीठ से लगकर आराम से बैठ गया और अपनी हथेलियों की गद्दी पर सिर रखकर खुशी-खुशी बोला, "तुम्हें उस दिन की कुछ याद है जब हम लोग ओलस के यहाँ गये थे ? वहाँ तुमने पहली बार उस सुन्दरी को देखा था, जिसके सामने स्वर्ग की अप्सराएँ भी मात हैं, तुमने खुद उसकी तारीफ की थी। कुछ याद है तुम्हें उस देवकन्या की, सुन्दरता की उस देवी की ?"

"क्या बात है ! तुम आज किस भाषा में बोल रहे हो ! हाँ, मुझे लीजिया की याद है ।"

"मैं उससे शादी करने जा रहा हूँ ।"

"क्या !"

विनिसियस ने अपने नौकर को आवाज दी और कहा, "मेरे सारे गुलामों को यहाँ हाजिर करो, फौरन ।"

"क्या, तुम उससे शादी करने जा रहे हो !"

पेट्रोनियस अभी आश्चर्य ही कर रहा था कि इतने में पूरा कमरा विनिसियस के गुलामों से भर गया । विनिसियस ने अपने निजी सेवक देमास से कहा, "जो लोग मेरे यहाँ बीस साल से गुलामी कर रहे हैं, वे कल नगरपाल के सामने हाजिर हों, उन्हें आजाद कर दिया जायगा । बाकी लोगों को सोने की तीन तीन मोहरें इनाम में मिलेंगी और एक हफ्ते तक उन्हें दूनी खूराक दी जायगी । मेरी जमींदारी में भी यह हुक्म भेज दो कि लोगों की सजाएँ माफ कर दी जायँ और जो लोग कैद करके रखे गये हैं उन्हें छोड़ दिया जाय और उन्हें भरपेट भोजन कराया जाय । आज का दिन मेरे लिए बहुत खुशी का दिन है, और मैं अपने घर में हँसी-खुशी का वातावरण चाहता हूँ ।"

उसके गुलाम कुछ देर तक तो चुपचाप सुनते रहे, जैसे उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था, लेकिन फिर सबके हाथ ऊपर उठ गये और सबने झुककर उसे धन्यवाद दिया, "वाह, मालिक धन्य हो !"

विनिसियस ने उन्हें चले जाने का इशारा किया । हालाँकि वे उसके पैर छूकर उसे धन्यवाद देना चाहते थे, लेकिन उसके आदेश के बाद वहाँ रुकने की हिम्मत नहीं कर सके । पूरा घर उनकी खुशी से भर उठा, उन्होंने नाचना-गाना शुरू कर दिया ।

विनिसियस बोला, "कल मैं इन सब लोगों को अपने बगीचे में इकट्ठा करूँगा और अपने सामने अपने मन का एक चिन्ह बनाने के लिए कहूँगा । जो लोग मछली का चिन्ह बनायेंगे उन्हें लीजिया की ओर से आजाद कर दिया जायगा ।"

पेट्रोनियस बोला, "मछली ? ओह, चिलन ने एक बार कहा था कि मछली ईसाइयों का निशान है ।" फिर उसने विनिसियस की ओर हाथ बढ़ाकर कहा, "सुख और सन्तोष तो उसी जगह मिल सकता है, जहाँ आदमी उसे खोजे । मेरी कामना है कि तुम्हारे जीवन में सदा वसन्त की बहार रहे । मेरी सारी शुभकामना तुम्हारे साथ है !"

"धन्यवाद ! मैं तो डर रहा था कि तुम मुझे बुरा-भला कहोगे, हालाँकि तुम जानते हो कि उसका मुझ पर कोई असर नहीं होता ।"

"मैं तुम्हें बुरा-भला कहता ? बिल्कुल नहीं, उल्टे मैं तो कहता हूँ कि तुम जो कुछ कर रहे हो वह बहुत ठीक कर रहे हो।"

"तो तुम उस बात को भूल गये जो तुमने उस रोज ग्रेसीना से चलते वक्त कही थी ?"

"नहीं तो, बिल्कुल नहीं। लेकिन मैंने अपना विचार बदला है। मेरे दोस्त, रोम में हर चीज बदलती है : आदमी अपनी औरतें बदलते रहते हैं और औरतें अपने आदमी बदलती रहती हैं, तो भला मैं अपने विचार क्यों न बदलूँ ? लेकिन मुझे एक बात तो बताओ, क्या तुम ईसाई हो गये हो ?"

"न, अभी नहीं। लेकिन पोल मेरे साथ आकर रहेंगे और मुझे ईसा की शिक्षा के बारे में बतायेंगे। इसके बाद ही मेरा धर्म-संस्कार, यानी बपतिस्मा होगा। जैसा कि तुम कहा करते हो, वे लोग जीवन और सुख या आनन्द के विरोधी नहीं है।"

"चलो, तब तो तुम्हारे और लीजिया के लिए ठीक ही है," पेट्रोनियस ने कहा। फिर जरा अपने कंधे उचकाकर वह इस तरह कहने लगा जैसे अपने मन से बात कर रहा हो। "इन लोगों में यह एक बड़ी खूबी है कि ये अपने समर्थक बहुत आसानी से बना लेते हैं। कितनी तेजी से इनका धर्म फैल रहा है !"

"हाँ, उनकी तादाद सैकड़ों और हजारों में होगी रोम में और इटली, यूनान और एशिया के दूसरे देशों में भी ये बहुत बड़ी तादाद में हैं। सैनिकों और शाही सिपाहियों में और यहाँ तक कि खुद सीजर के महल में ईसाई फैले हुए हैं। गुलाम और नागरिक, गरीब और अमीर, आम जनता और ऊँचे वर्ग के लोग सभी इस धर्म में हैं और कौन कह सकता है कि शायद एक महीने में या एक साल में तुम खुद भी ईसाई हो जाओगे।"

"मैं ! कभी नहीं ! मैं कभी नहीं हो सकता, हालाँकि उनके धर्म में जो सत्य और ज्ञान है उससे इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन इस धर्म को स्वीकार करने का मतलब है संयम से रहना और मैं अपने को किसी सुख से वंचित नहीं रखना चाहता। तुम इतनी जल्दी अपने को बदल सकते हो, लेकिन मुझे अपने धन-दौलत से मुहब्बत है, अपने हीरे-जवाहरात से और अपनी प्यारी यूनिस से मुहब्बत है, जिसे मैं छोड़ नहीं सकता और अपनी सुख-सम्पदा बराबर बढ़ाता जाऊँगा जब तक कि मुझे काल का बुलावा नहीं आ जाता, या सीजर मुझे मारना नहीं चाहता। मुझे फूलों का शौक है और अपने बैठने के कमरे को सजाने का शौक है, मैं इन चीजों को छोड़ नहीं सकता और फिर मैं रोमन देवी-देवताओं को पसन्द करता हूँ और मैं आखिरी दम तक सीजर आगस्टस, पेरियादोनिसीज, हरक्यूलीज, और अपने देवतुल्य नीरो का साथ दूंगा···"

अचानक वह रुक गया क्योंकि तभी एक नौकर ने आकर कहा कि यूनिस आ गई है।

इसके फौरन बाद ही शाम का खाना लगाया गया और दोनों मित्र खाने बैठे। कुछ देर तक दोनों सितार सुनते रहे, विनिसियस ने चिलन के आने के बारे में बताया। पेट्रोनियस को जरा सुस्ती-सी मालूम हो रही थी, उसने अपने माथे पर हाथ रखते हुए कहा, "जहाँ तक चिलन का सवाल है, अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो उसे पाँच मोहरें इनाम में देता। लेकिन जब तुमने एक बार उसे पीटने का हुक्म दे ही दिया था तो तुम्हें चाहिये था कि उसे कोड़े खाते-खाते मर जाने देते क्योंकि हो सकता है किसी दिन वह दरबार में प्रवेश पा जाय और फिर उसकी भी वही स्थिति हो जाय जो आज वेटिनस की है, तब हर दरबारी उसे सलाम बजायेगा!"

पेट्रोनियस और यूनिस वहाँ से चले गये। विनिसियस भी वहाँ से उठ आया और अपने पढ़ने के कमरे में बैठकर उसने लीजिया को एक पत्र लिखा :

"मैं चाहता हूँ, मेरी प्रियतमा, कि जब तुम सुबह आँख खोलो तो मेरा यह पत्र तुम्हारा अभिवादन करे। इसीलिए मैं इसे इस समय रात में लिख रहा हूँ हालाँकि कल मैं खुद तुमसे मिलूँगा ही। दो दिन बाद ही सीजर एंटियम के लिए रवाना होनेवाला है, और अफसोस, मुझे भी उसके साथ जाना ही पड़ेगा। जैसा कि मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि उसके निमंत्रण को अस्वीकार करने का मतलब है अपनी मौत बुलाना, और अब मैं मरना नहीं चाहता। लेकिन इतने पर भी अगर तुम चाहती हो कि मैं न जाऊँ, तो बस तुम्हारे कहने भर की देर है, मैं रुक जाऊँगा। फिर चाहे जो कुछ हो! पेट्रोनियस फिर कोई न कोई रास्ता निकालेगा ही मुझे बचाने का! आज के इस खुशी के दिन मैंने अपने सारे गुलामों को इनाम दिये हैं, और उन सब लोगों को मैं कल नगरपाल से कहकर आजाद करा दूँगा जो बीस साल से मेरी सेवा कर रहे हैं। इसके लिए, प्रिये, तुम्हें मुझसे खुश होना चाहिये, क्योंकि इस प्रकार मैं तुम्हारे धर्म के अनुसार ही काम कर रहा हूँ। यह सब मैं तुम्हारे लिए ही कर रहा हूँ, और मैं उन लोगों को बता दूँगा कि यह आजादी उन्हें तुम्हारे कारण ही मिल रही है। ताकि वे तुम्हारे गीत गाते फिरें। और मैं तुम्हारा गुलाम होना चाहता हूँ, ऐसा गुलाम जिसे कभी आजादी न मिले! बुरा हो सीजर की इन आये दिन होने वाली यात्राओं का और एंटियम जैसी जगहों का! पेट्रोनियस के समान विद्या और बुद्धि न होने का आज मुझे कितना सुख है कि मैं सीजर के साथ एंटियम के बाद और आगे सफर पर जाने से बच जाऊँगा। लेकिन जब तक मैं तुमसे दूर रहूँगा मुझे तुम्हारी याद चैन नहीं लेने देगी। जब भी मुझे मौका मिलेगा मैं घोड़ा दौड़ाता हुआ रोम आ पहुँचूँगा और तुम्हें देखकर अपनी आँखों को तृप्त करूँगा और जब मैं नहीं आ सकूँगा तो अपने नौकर के हाथ तुम्हें बराबर पत्र भेजूँगा और तुम्हारा जवाब मँगाऊँगा।..."

## १४

रोम में यह अफवाह थी कि सम्राट् पहले ओस्तिया जायँगे और फिर वहाँ से समुद्र किनारे बनी हुई सड़क से एंटियम जायँगे। पहले से ही इसके लिए आवश्यक आदेश जारी कर दिये गये थे और ओस्तिया के नगर-द्वार पर तड़के सबेरे से ही लोगों की भीड़ इकट्ठी हो जाती थी, जिसमें रोम के अलावा हर देश के निवासी देखे जा सकते थे।

सीजर की यह आदत थी कि जब वह किसी सफर पर निकलता था तो अपने साथ हर ऐसी चीज को ले जाने की कोशिश करता था जिसे वह पसन्द करता था, यहाँ तक कि जहाँ वह थोड़ी देर के लिए रुकता था वहाँ भी वह अपनी पसन्द की सड़कें बनवाता था, जिनपर उसके मन के लायक मूर्तियाँ आदि बनी होती थीं। इसलिए जब वह एक जगह से दूसरी जगह जाता था तो उसके साथ शाही सैनिकों के जत्थों के अलावा बहुत बड़ी तादाद में नौकर-चाकर भी रहते थे, और इष्ट-मित्रों का तो कोई प्रश्न ही नहीं था।

बहुत तड़के सबेरे ही गड़रिये और चरवाहे करीब पाँच-सौ बकरियाँ लेकर तैयार खड़े थे, ताकि महारानी पोपिया जब एंटियम आयें तो बकरी के दूध में स्नान कर सकें। सम्राट् की सवारी का स्वागत करने के लिए आई हुई भीड़ बकरियों के इस झुंड को देखकर हँसी-मजाक कर रही थी और गड़रिये अपने चाबुक फटकारते फिर रहे थे।

बकरियों के पीछे नौजवान गुलामों की एक भीड़ चल रही थी, जो सड़क साफ कर रहे थे और उसपर फूल-पत्ती बिछा रहे थे। सबेरा ज्यों-ज्यों पास आता जाता था, भीड़ बढ़ती जाती थी। कुछ लोग अपने पूरे परिवार के साथ आये थे और रास्ते में बनने वाले एक नये मन्दिर के पत्थरों पर अपने खाने-पीने की चीजें फैलाये इन्तजार कर रहे थे। इधर-उधर लोग झुंड में खड़े होकर सम्राट् की इस यात्रा के बारे में बहस कर रहे थे। बूढ़े नाविक और पुराने सिपाही अपने दोस्तों को उन देशों की कहानियाँ बता रहे थे जहाँ आज तक कोई नहीं गया था, और जहाँ उन्होंने लड़ाइयाँ लड़ी थीं। शहर में रहनेवाले लोग, जिन्होंने शहर की सीमा के बाहर कभी पैर तक नहीं रखा था आश्चर्य से मुँह फाड़े भारत और अरब देश की कहानियाँ सुन रहे थे, ब्रिटानी द्वीप और दूर उत्तर के उन प्रदेशों की कहानियाँ सुन रहे थे जहाँ बर्फ का समुद्र फैला है।

थोड़ी ही देर बाद सम्राट् की सवारी आई। सबसे पहले शाही सैनिक निकले, जो सुनहरे टोप पहने थे और जिनके भालों की नोंक चमक रही थी। उनके बाद गाड़ियाँ निकलीं जिनमें कई रंग के तम्बू लदे हुए थे और पूर्व के कीमती कालीन और लकड़ी का कीमती सामान था, रसोई के बर्तन, उन चिड़ियों के पिंजड़े, जिनके दिमाग या जीभ के पकवान खास तौर से सम्राट् के लिए तैयार किये जाते थे, कीमती शराबें और फलों से लदी टोकरियाँ एक के बाद एक गाड़ियों में ठुँसी हुई थीं। ऐसी चीजें जो गाड़ी में लादने से खराब हो जातीं या टूट-फूट जातीं, उन्हें पैदल नौकर ढो रहे थे, जिनमें से कुछ कांसे की मूर्तियाँ थीं, विदेशों से लाये गये कलसे और फूलदान थे, जिनमें से कई सोने और चाँदी के थे और कुछ कीमती शीशे के बने थे। हम्मालों के एक-एक झुंड के पीछे कुछ पैदल या घुड़सवार सैनिक चल रहे थे, जो अपने हाथों में लोहे या सीसे की जंजीरोंवाले चाबुक लिये हुए थे और मौके-बेमौके किसी धीमे चलनेवाले गुलाम को पीटते जा रहे थे। इसके बाद हर देश के वाद्य-यंत्र उठाये हुए गुलामों का जत्था निकला, जिन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे यह कोई धार्मिक जुलूस हो। इसके बाद विदूषकों और कलाबाजों के अलावा सुन्दर नर्तकियों की बारी आयी जो शानदार रथों में सवार थीं। इसके बाद उन गुलामों का जत्था आया जिनका काम अपने मालिकों की वासना शान्त करना था, इनमें यूनान और तुर्की के खूबसूरत लड़के और लड़कियाँ थीं, जिनके घुंघरालेबालों पर सुनहरी जालियाँ पड़ी हुई थीं और चेहरों पर तेल का मोटा लेप किया हुआ था, ताकि सुबह की हवा से उनके सुन्दर चमड़े को कोई नुकसान न पहुँच सके।

इसके बाद ऐसे सिपाहियों का एक जत्था निकला, जो बहुत अच्छी तरह सजे हुए थे और रोमन ध्वजा-पताका और दूसरे शाही चिन्हों को लेकर गर्व के साथ चल रहे थे, इन्हीं में से कुछ सैनिक जर्मन और रोमन देवताओं तथा नीरो की मूर्तियाँ उठाये हुए थे।

इसके बाद रथों में बड़े-बड़े पिंजड़ों में शेर और चीते बन्द थे, जिन्हें योग्य शिक्षकों ने पाल रखा था, और जिन्हें नीरो कभी-कभी अपने रथ में जोतता था। इन जानवरों के भारतीय और अरब मालिक इन्हें फौलादी जंजीरों में बाँधे हुए थे। जंजीरों पर अच्छी तरह से फूल मढ़े हुए थे। सभी शेर बहुत शानदार और तगड़े थे। कभी-कभी उनमें से कोई अपनी हरी आँखों से लोगों की भीड़ की ओर देखकर गरज उठता था। इसके बाद महल के खास सैनिकों का जत्था निकला और उसके बाद महल के सबसे खूबसूरत गुलामों की पलटन थी और अन्त में खुद सीजर का रथ था।

लोगों की भीड़ में सन्त पीटर भी थे जो नीरो को देखना चाहते थे। उनके साथ ही घूँघट में अपने को छिपाये हुए लीजिया भी खड़ी थी। पास ही यूरसस भी

उनकी रक्षा के लिए खड़ा था। यूरसस दौड़ा गया और मन्दिर के पास से एक बड़ा पत्थर उठा लाया, ताकि पीटर उसपर खड़े होकर अच्छी तरह से नीरो का जुलूस देख सकें। जब यूरसस लोगों को धक्के देता हुआ आगे बढ़ा उनमें से कई को बहुत बुरा लगा लेकिन जब उनकी नजर उस बड़े भारी पत्थर पर पड़ी, जिसे चार आदमी भी मिलकर नहीं उठा सकते थे और जिसे वह अकेला उठाये हुए था, तो वे चौंककर पीछे हट गये और हर्ष से उसका स्वागत करने लगे।

सीजर अपने शानदार रथ में बैठा हुआ था, जिसे छः बहुत ही खूबसूरत घोड़े खींच रहे थे। रथ में वह अकेला था, सिर्फ उसके पैरों के पास दो बहुत ही नाटे गुलाम बैठे हुए थे। वह सफेद लुंगी और नीला टोगा पहने हुए था, जिसकी झांई उसके चेहरे पर भी हल्की नीलिमा की तरह पड़ रही थी। वह इधर कुछ दिनों से मोटा होने लगा था। उसके भरे हुए चेहरे में दोहरी ठुड्डी साफ दिखाई देती थी। उसके ओंठ वैसे ही उसकी नाक से सटे हुए से लगते थे लेकिन अब मोटाई की वजह से उनमें और नाक में कोई फासला नजर नहीं आता था। वह अपने गले में एक बहुत कीमती रूमाल बाँधे, था जिसे वह बार-बार अपने मोटे हाथ से ठीक करता जाता था, उसके हाथ पर लाल रंग के बाल थे, जिनसे ऐसा लगता था जैसे हाथ खून में सने हों। वह इन बालों को कटवाने से इनकार करता था, क्योंकि किसी ने उसे बता दिया था कि इन बालों को निकलवाने से उसकी उँगलियों पर असर पड़ेगा और फिर वह सितार नहीं बजा सकेगा। उसके चेहरे पर घोर दंभ और कामुकता के चिन्ह स्पष्ट थे। देखने में यह बहुत ही भद्दा और डरावना मालूम होता था।

लेकिन लोग ऐसे नारों से उसका स्वागत करते थे, जिनमें उसे देवतुल्य और विश्वविजयी माना जाता था और वह धीरे से मुस्करा देता था। लेकिन बीच-बीच में कोई शरारत से उसे दद्दियल कहकर चिढ़ाने की कोशिश भी करता था, लेकिन ऐसी आवाजें उस तक पहुँच ही नहीं पाती थीं। यहाँ तक कि महारानी पोपिया जो सीजर के ठीक पीछे चलती थी उसे भी चिढ़ाने की लोग कोशिश करते थे। कभी-कभी नीरो इन तानों को सुन लेता था और अपने एक आँख के खास चश्मे से भीड़ में अपराधी को ढूँढ़ने की कोशिश करता था। अचानक उसकी आँख पत्थर पर खड़े हुए सन्त पीटर से मिल गई। उनकी आँखें मिलीं, और इस तरह एक क्षण के लिए दुनिया के दो बादशाह एक दूसरे से मुखातिब हुए, उनमें से एक वह था जिसकी मौत के बाद जिसका नाम खूनी अक्षरों में लिखा जानेवाला था, और दूसरा वह बूढ़ा था जो एक मोटी कम्बल ओढ़े था और जिसका साम्राज्य उसके बाद भी चिरस्थायी रहनेवाला था।

सीजर के बाद एक बड़ी भारी पालकी में, जिसे अफ्रीकी गुलाम उठाये हुए

थे, पोपिया बैठी थी, जिससे सारी दुनिया नफरत करती थी। वह भी सीजर की तरह नीली पोशाक पहने हुए थी। उसके पीछे बहुत से गुलाम चल रहे थे और उसकी कीमती पोशाकों और दूसरे सौंदर्य-प्रसाधनों से लदी हुई गाड़ियाँ चल रही थीं।

शाही जुलूस इतना लम्बा था कि दोपहर होने तक सीजर के मित्रों के रथों के निकलने की बारी आई। पेट्रोनियस अपनी चहेती दासी के साथ एक पालकी में बैठा था। लोगों ने मुस्कराकर उसका स्वागत किया। टिजेलिनस बार-बार अपने रथ में से उचककर देख रहा था कि कहीं सीजर उसे अपने पास तो नहीं बुला रहे हैं। एक के बाद एक सीजर के दरबारी और मुसाहिब अपने-अपने ढंग की शान-शौकत के साथ गुजर रहे थे, उनमें कई औरतें भी थीं जो अपने विलासपूर्ण जीवन के कारण और अपने धन-सम्पत्ति के कारण काफी प्रसिद्ध थीं। हालाँकि भीड़ में गरीब और बदहाल लोगों की कमी नहीं थी, फिर भी इस धूमधाम से ऐसा लगता था जैसा रोम में किसी बात की कमी नहीं है, यह शान-शौकत रोम के अतुल शक्ति और गौरव का प्रमाण थी, इसी के कारण रोम संसार का सबसे आश्चर्यजनक और वैभवपूर्ण शहर माना जाता था।

विनिसियस सबसे बाद में था। सन्त पीटर और लीजिया पर नजर पड़ते ही वह अपना रथ रोककर उतर पड़ा और पास आकर बोला, "आप लोग यहाँ खड़े हैं! लीजिया, इसके लिए तुम्हें धन्यवाद! इससे बढ़कर सगुन मेरे लिए कोई और नहीं हो सकता था। ईश्वर तुम्हारा भला करे। मैं जा रहा हूँ, लेकिन थोड़े दिनों के लिए ही। मैं रास्ते में खास-खास मुकामों पर अपने पार्थियन घोड़े छोड़ता जाऊँगा और जब भी मुझे मौका मिलेगा मैं कुछ देर के लिए तुम्हारे पास जरूर आऊँगा। अच्छा, अलविदा!"

"अलविदा!" लीजिया ने उत्तर दिया, "ईसा तुम्हारी रक्षा करे और पोल की शिक्षाओं के प्रति तुम्हारे चित्त को स्थिर करें।"

"लीजिया, जो तुम चाहोगी वही होगा। पोल मेरे साथ जा रहे हैं, इस बीच वे मेरे शिक्षक और मित्र रहेंगे। लीजिया, जरा अपना घूँघट उठाओ, ताकि जाने के पहले मैं तुम्हें देख सकूँ। आखिर तुमने अपने को इस तरह छिपा क्यों रक्खा है?"

अपना घूँघट उठाते हुए और अपने गुलाबी चेहरे और बड़ी-बड़ी आँखों को प्रकट करते हुए लीजिया ने कहा, "क्या तुम्हें यह पसन्द नहीं?"

यह कहकर वह मुस्कुरा दी। विनिसियस उसकी ओर देखता रह गया। वह बोला, "नहीं, मैं आखिरी दम तक तुम्हें देखते रहना चाहता हूँ।" आसपास की भीड़ आश्चर्य से देखती रह गई और नीरो के इस खास दरबारी ने उस शर्मीली लड़की के हाथ उठाकर अपने ओठों से लगा लिये।

फिर वह अपना रथ दौड़ाता हुआ तेजी से आगे बढ़ गया, क्योंकि शाही जुलूस काफी आगे बढ़ गया था। सन्त पीटर ने पीछे से क्रास का चिन्ह बनाते हुए उसे आशीर्वाद दिया।

जिस चक्की में यूरसस काम करता था, उसका मालिक देमास पास आया और संत पीटर के हाथ चूमकर उनसे प्रार्थना करने लगा कि सब इष्ट-मित्र पास ही उसके घर चलें और कुछ नाश्ता कर लें।

वे लोग देमास के साथ उसके घर गये, जहाँ खा-पीकर उन्होंने कुछ देर आराम किया और फिर शाम को वे लोग टाइबर नदी के उस पार अपनी बस्ती की ओर चल पड़े। पुल से नदी को पार करते समय संत पीटर ने रोम के आलीशान भवनों और अट्टालिकाओं पर एक नजर डाली। अचानक उन्हें उस शहर के विस्तार और उसकी अतुल शक्ति का अनुभव हुआ, जहाँ वे धर्म-प्रचार के लिए आये थे। वे कई देशों में घूमे थे और वहाँ उन्हें रोमन सेनाओं को देखने का मौका मिला था, लेकिन आज उनके इस विराट् प्रदर्शन को देखकर पहली बार उन्हें अनुभव हुआ कि सीजर की शक्ति और उसका विस्तार क्या है। यह नगर, जो भ्रष्टाचार और दुराचार से सड़ रहा था, लेकिन फिर भी अजेय था; यह सम्राट्, जिसने गद्दी हथियाने के लिए अपने भाई और अपनी माँ तथा अपनी पत्नी का खून किया था और उनके ये दरबारी और मुसाहिब, ये व्यभिचारी और दुराचारी शासक, जो अपनी तीस विशालकाय सेनाओं से संसार पर शासन करते थे। यह सब उन्हें मानवीय असमानता और शोषण का साम्राज्य मालूम पड़ा और उनका भोला हृदय यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि ईश्वर ने नीरो जैसे खूंखार आदमी के हाथ इस पृथ्वी का शासन सौंपा है, ताकि वह मनमाने ढंग से अत्याचार कर सके और खून और आँसुओं की नदियाँ बहा सके। "हे भगवान्!" उन्होंने अपने मन में कहा, "इस शहर का मैं क्या करूँ, मुझे कहाँ ला पटका तुमने! यह वह शहर है जो इस पृथ्वी के सबसे बड़े भू भाग और अथाह सागरों पर शासन करता है, जिसके नाम से दुनिया के बड़े-बड़े राजवंश थर्राते हैं। तीस विशालकाय सेनाएं इसकी रक्षा करती हैं और हे भगवान्, मैं तो आपका एक दास और साधारण मछुआ हूँ। भला मैं क्या कर सकूंगा! किस तरह मैं यहाँ पाप की शक्ति से संघर्ष कर सकूंगा?"

तभी लीजिया ने उनका ध्यान भंग कर दिया और कहा, "यहाँ से देखने पर आपको ऐसा लगेगा जैसे पूरा शहर जल रहा है।" सचमुच डूबते हुए सूरज की सुनहरी किरणों ने पूरे नगर को नहला रखा था। जहाँ वे लोग खड़े थे वहाँ से आसपास काफी दूर तक दिखाई देता था। महाजनों और श्रीमानों के भवन और विशाल अट्टालिकाएँ, सामने पहाड़ी पर बने हुए छोटे-छोटे रंगमहल और देवताओं के बड़े-बड़े मन्दिर। शहर की सारी सड़कें, मकानों की दीवारें, मीनारें और मन्दिरों

के गुम्बद अस्त होते हुए सूर्य की सुनहरी किरणों से आलोकित थे। नदी जैसे सोने की धारा-सी बह रही थी। लीजिया ने फिर से दोहराया, "ऐसा लगता है, जैसे शहर में आग लगी हो!"

पीटर ने कहा, "यह ईश्वर का क्रोध है जो इस शहर पर मँडरा रहा है!"

## १५

विनिसियस का पत्र लीजिया के नाम :

"यह मैं पत्र तुम्हें बीच रास्ते से ही लिख रहा हूँ, जहाँ गर्मी की वजह से हमें कुछ देर रुकना पड़ा। लोरेन्तम में महारानी पोपिया का एक बँगला है, जिसे उसके पहले पति ने उसे तोहफे के रूप में दिया था और जिसे पोपिया अभी तक अपने कब्जे में किये हुए है, हालाँकि अपने पुराने पति को तलाक दिये उसे काफी समय हो चुका है। यहीं सीजर एक तरह से पोपिया का मेहमान है। यहाँ पोपिया ने सीजर के स्वागत का बहुत ही शानदार प्रबन्ध कर रखा था, जिसकी खबर सीजर तक को नहीं थी। मेहमानों में बहुत कम लोग थे, लेकिन उनमें पेट्रोनियस और मुझे भी शरीक किया गया था। दावत के बाद हम लोग सुनहरे रंग की नावों में बैठकर सागर की सैर करने निकले, जो तुम्हारी आँखों की तरह ही नीला था। महारानी की इच्छा के अनुसार नावों को हम लोग खुद खे रहे थे। सीजर ने सागर के सम्मान में एक भजन सुनाया, जिसका सुर उसने खुद डियोडोरस की मदद से निकाला था। हमारी नावों के पीछे-पीछे हिन्दुस्तानी गुलामों से भरी दूसरी नावें थीं जो गीत गा रहे थे। तुम जानती हो कि उस समय मैं क्या कर रहा था? मैं उस समय सिर्फ तुम्हारे बारे में सोच रहा था, प्रिये, क्या कभी यह सम्भव होगा कि हम लोग रोम से दूर कुछ दिनों के लिए किसी सागर के तट पर आराम से रह सकें? सिसली में मेरी जमींदारी है, जहाँ बादाम के पेड़ों का एक जंगल है, जो वसन्त में फूलता है। तब पेड़ों की डालियाँ भारी होकर इतनी झुक आती हैं कि समुद्र का पानी छूने लगती हैं। वहीं हम दोनों साथ रहेंगे। क्या तुम वहाँ चलना पसन्द करोगी?

"जब हम लोग नाव खेते हुए कुछ दूर आगे निकल गये तो हमें एक पाल दिखाई दी और फौरन इस बात पर बहस उठ खड़ी हुई कि यह किसी मछुए कि नाव है या कोई जहाज आ रहा है। सबसे पहले मैंने सही जवाब दिया और महारानी ने कहा कि मेरी नजरों से कोई चीज छिप नहीं सकती। फिर उसने अपने चेहरे पर घूँघट डाल लिया और पूछा कि क्या मैं इस हालत में भी उसे पहचान सकता हूँ? मेरी जगह पेट्रोनियस ने फौरन जवाब दिया कि सूरज तक बादल की ओट आने पर

अदृश्य हो जाता है। लेकिन पोपिया ने मजाक करते हुए कहा कि मेरे जैसी तेज आँखें सिर्फ प्यार से ही अन्धी हो सकती हैं और फिर दरबार में उठने-बैठनेवाली कई औरतों के नाम गिनाते हुए वह मुझसे यह जानने की कोशिश करने लगी कि मैं किसे प्यार करता हूँ। मैं शान्ति से उसका जवाब देता रहा, लेकिन अन्त में उसने तुम्हारा नाम लिया और घूंघट खोलते हुए शरारत से मेरी ओर देखा। मुझे पेट्रोनियस को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने किसी तरह कोशिश करके महारानी और दूसरे लोगों का ध्यान मेरी ओर से हटा लिया, वरना उस दुष्टा की शरारत इतनी बढ़ रही थी कि बहुत मुमकिन था कि गुस्से में आकर मैं डाँड से उसका सिर तोड़ देता।

"पेट्रोनियस मेरी वजह से बहुत परेशान रहता है और बार-बार मुझसे कहता रहता है कि मैं महारानी के अहंकार को चुनौती देने की कोशिश न करूँ। लेकिन असल में वह मुझे समझ नहीं पाता है, क्योंकि मेरे लिए मेरी लीजिया को छोड़कर और किसी स्त्री को पसन्द करना अब सम्भव नहीं रह गया है और महारानी को देखकर तो मुझे घिन आती है। चलते समय संत पीटर ने मुझसे कहा था कि मुझे सीजर से डरने की कोई जरूरत नहीं है, कोई मेरा बाल भी बाँका नहीं कर सकता। मुझे उनके आशीर्वाद में विश्वास है। मेरा मन कहता है कि संत पीटर की सारी बातें किसी न किसी दिन सही सिद्ध होंगी और चूँकि उन्होंने मेरे और तुम्हारे प्रेम को अपना आशीर्वाद दिया है तो न सीजर और न मौत ही मुझे मेरी लीजिया से अलग कर सकती है! लेकिन प्रिये, अब तारे डूबने आये हैं और दिन का उजाला फैलता जा रहा है। बहुत जल्दी ही सवेरा होगा। मेरे आसपास सब लोग पड़े सो रहे हैं, सिर्फ मैं ही जाग रहा हूँ और तुम्हारे बारे में सोच रहा हूँ।"

## १६

विनिसियस का दूसरा पत्र :

"प्रिय लीजिया, क्या तुम कभी एंटियम आई हो? अगर नहीं आई, तो किसी दिन तुम्हें इस शहर में घुमाकर बड़ी खुशी होगी। बड़ा सुन्दर शहर है यह। समुद्र के किनारे मकानों की कतार चली गई है। मेरे मकान के पीछे सनोवर के पेड़ हैं, जहाँ बैठकर मैं बराबर यह सोचता हूँ कि किसी दिन यह मकान तुम्हारा होगा। आह लीजिया, जीवित रहना और किसी को प्यार करना कितना बड़ा सौभाग्य है!

यहाँ मेरे माली ने एक बगीचा तैयार किया है जिसमें लगे पौधों को देखकर मुझे ओलस के उस बगीचे की याद आती है, जहाँ पहली बार मैंने तुम्हें देखा था।

"यहाँ आने के बाद से पाल के साथ मेरी काफी बातचीत हुई है। पहले दिन कुछ देर तक हम दोनों तुम्हारे बारे में बातें करते रहे। फिर उनकी शिक्षा आरम्भ हुई।"

"मुझे बड़ा ताज्जुब होता है यह सोचकर कि कैसा अजीब संसार है यह। जिसमें एक तरफ संत पीटर और पाल जैसे लोग हैं और दूसरी ओर सीजर जैसे लोग। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि आज पाल से शिक्षा लेने के बाद मैं शाम के समय नीरो के साथ था। पहले तो उसने ट्राय के जलने के बारे में अपनी एक कविता सुनाई और फिर बड़े अफसोस के साथ कहा कि मैंने आज तक किसी शहर को जलते हुए नहीं देखा। उसे उस प्राचीन कवि से ईर्ष्या हो रही थी, क्योंकि उसने ट्राय को भस्म होते हुए देखा था और फिर अपना महाकाव्य लिखा था। उसके यह कहने पर उस चापलूस टिजेलिनस ने कहा, "अगर हुजूर जरा-सा इशारा कर दें तो मैं खुद मशाल लेकर इस पूरे एंटियम शहर में आग लगा दूँ और सुबह होने के पहले ही आप इस शहर को जलता हुआ देख सकेंगे। लेकिन सीजर को यह एक बेवकूफी से भरी बात मालूम हुई। वह बोला, "और भला तब मैं कहाँ जाऊँगा ? तब फिर समुद्र किनारे छुट्टियाँ बिताने के लिए और कुछ आराम करने के लिए मुझे कहाँ जगह मिलेगी ? क्या तुम्हें यह नहीं लगता कि असल में रोम में रहना मेरे लिए नुकसानदेह है, वहाँ मजदूरों की गन्दी बस्ती और घुटी हुई हवा मेरा दम घोंटती है। क्या रोम को भस्म होते हुए देखना ज्यादा अच्छा नहीं रहेगा ?" उसकी इस बात पर वहाँ बैठे हुए दरबारियों ने बहुत खुश होकर उसकी तारीफ की। वह बोला, "रोम को जलता हुआ देखकर मैं जो कविता लिखूँगा वह महाकवि होमर की कविता से भी अच्छी होगी। और फिर भला उस शहर के क्या कहने जिसे मैं बाद में स्थापित करना चाहता हूँ, सदियों तक लोग उस पर आश्चर्य करते रहेंगे।" इस पर उसके शराबी मेहमानों ने खुश होकर उसकी दाद दी और कहा, "हुजूर, यही कीजिये !" इस पर उसने जवाब दिया कि इसके लिए उसे बहुत ही वफादार और विश्वसनीय मित्रों की जरूरत है।

"उस पागल का यह प्रस्ताव सुनकर मुझे सबसे पहले तुम्हारी चिंता हुई, क्योंकि तुम रोम में ही हो। लेकिन फिर मुझे अपनी इस घबराहट पर हँसी आई। यह सही है कि सीजर और उसके दोस्त पागल हैं, लेकिन ऐसा काम वे कभी नहीं करेंगे।

"लीजिया मैं चाहता हूँ कि तुम खूब आराम से रहो इसलिए अच्छा है कि तुम फिर से ओलस के घर लौट जाओ। अगर सीजर रोम में होता तो तुम्हारे लौटने

की खबर गुलामों के जरिये किसी न किसी तरह महल में पहुँच सकती थी, लेकिन अभी वह बहुत दिनों तक यहीं रहेगा और जब वह वहाँ लौटेगा तब तक लोग तुम्हारे बारे में बातचीत करना बन्द कर चुके होंगे। लीनस और यूरसस भी तुम्हारे साथ ही रह सकते हैं और फिर तुम मेरे यहाँ आ ही जाओगी। मेरे लिए वह कितने सौभाग्य का दिन होगा जब तुम मेरे घर में पैर रखोगी और ईसा की कृपा से, जिसमें अब मैं धीरे-धीरे विश्वास करने लगा हूँ, मेरी इच्छा जरूर पूर्ण होगी। इसके बाद मैं जिन्दगी भर ईसा के गुण गाऊँगा और अपना जीवन उनके लिए अर्पित कर दूँगा। इस समय मैं ठीक से अपने मन की बात प्रकट नहीं कर पा रहा हूँ, लेकिन हम दोनों आखिरी क्षण तक ईसा की सेवा करते रहेंगे।

"इस पत्र के द्वारा मैं तुम तक अपना प्यार भेजता हूँ।"

## १७

यूरसस कुएँ पर पानी भर रहा था। वह दो बाल्टियाँ एक साथ खींच रहा था और चुपचाप अपनी भाषा का एक गीत गुनगुना रहा था। बार-बार वह लीनस के बाग में मनोवर के पेड़ों के पीछे टहलते हुए विनिसियस और लीजिया को संतोष से देख लेता था। आसमान में सोना बिखरा हुआ था, सांझ की नीरवता में वे दोनों हाथ में हाथ दिये चुपचाप बातें कर रहे थे।

"मार्कस्, तुम बिना सीजर की आज्ञा के चले आये हो, इसलिए तुम पर कोई आफत तो नहीं आयेगी?" लीजिया ने पूछा।

"नहीं, रानी! सीजर ने खुद ऐलान किया था कि वह दो दिन तरपनोस के साथ एकांत में रहना चाहता है, ताकि कुछ नये गीत तैयार कर सके। और फिर जब मैं तुम्हारे साथ हूँ तो फिर सीजर को कौन पूछता है, मेरी प्रियतमे!"

"मैं जानती थी कि तुम जरूर आओगे। मेरे कहने पर यूरसस कारिनी तक दो बार तुम्हारे बारे में पता लगाने गया था। इसके लिए यह और लीनस दोनों मुझ पर हँसा करते थे।"

सचमुच वह उसका इन्तजार कर रही थी, क्योंकि उसने अपनी काली पोशाक की जगह बढ़िया सफेद कपड़े रखे थे। सफेद पोशाक में वह और भी खूबसूरत मालूम होती थी। विनिसियस ने अपनी प्रेमिका के हाथों को अपने ओठों से लगा लिया, फिर वे दोनों एक झाड़ी के पास पत्थर के चबूतरे पर जा बैठे। विनिसियस ने धीमी आवाज में कहा, "कितना सकून है इस वक्त जिन्दगी में! इतना

खुश मैं आज तक कभी नहीं हो सका। बताओ, लीजिया आखिर ऐसा मुझे क्यों लगता है ? आज तक मैंने कभी ऐसे प्रेम की कल्पना तक नहीं की थी। मैं तो अब तक प्रेम को एक प्रकार का नशा ही मानता था, जो खून में गर्मी ला देता है और वासना की आग भड़का देता है। और अब मैं अनुभव करता हूँ कि आदमी अपने खून के एक-एक कतरे से प्यार कर सकता है, और फिर भी एक तरह का संतोष और शान्ति का अनुभव कर सकता है, ऐसा लगता है, जैसे वह नींद के पालने में सो रहा हो!"

लीजिया ने उसके कंधों पर अपना सिर रख दिया और कहा, "मार्कस्, मेरे प्रिय!"

इसके अलावा वह और कुछ नहीं कह सकी। आनन्द और स्नेह के आवेग से तथा इस निश्चितता के कारण कि अब उसे इस व्यक्ति को प्यार करने का हक मिला है, उसकी आँखों में हर्ष के आँसू आ गये। वह धीमे से बोली, "मार्कस्, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।"

इसके बाद फिर दोनों शान्त हो गये। बाग में अब हल्की-सी चाँदनी खिलने लगी थी। अन्त में विनिसियस बोला, "मैं जानता हूँ। तुम्हारे पास आते ही जो सबसे पहला सवाल मैंने तुम्हारी आँखों में पढ़ा वह यही था कि क्या उस धर्म की पवित्र शिक्षा, जिसे मैं इतना मान देती हूँ, तुम्हारे हृदय तक पहुँच सकी, क्या तुम्हें धर्म की दीक्षा मिली ? नहीं, अभी मुझे दीक्षा नहीं मिली है। पाल का कहना है कि उन्होंने मुझे इतना तो अच्छी तरह समझा दिया कि प्रभु इस संसार में आये और मानवता के कल्याण के लिए सूली पर चढ़े थे। लेकिन मुझे धर्म में दीक्षित करने का काम स्वयं पीटर करेंगे, क्योंकि सबसे पहले उन्होंने ही मुझे आशीर्वाद दिया था। इसके अलावा अपने बपतिस्मे के वक्त मैं तुम्हें भी मौजूद देखना चाहता हूँ, और मैं ओलस की पत्नी पोम्पोनिया को अपनी धर्ममाता बनाना चाहता हूँ। इसीलिए अभी तक मेरा बपतिस्मा रुका हुआ है, हालाँकि अब ईसा और उनकी शिक्षाओं पर मेरी आस्था हो गई है। भला अब इससे बढ़कर बुरी बात और क्या होगी कि मैं असत्य पर सत्य की विजय, पाप पर पुण्य की विजय और अनास्था पर आस्था की विजय में विश्वास खो बैठूँ!"

लीजिया अपनी नीली आँखों से मार्कस् की आँखों में देखती रही और फिर बोली, "हाँ, मार्कस्, तुम ठीक कह रहे हो!" और उसने उसके अधिक पास सरककर अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया।

विनिसियस ने हर्षातिरेक में कहा, "तुम मेरे प्राणों की प्राण हो, इस दुनिया में मेरी सबसे कीमती चीज हो! हम दोनों सदा एक रहेंगे। प्रिये, उस आनन्द की कल्पना तो करो जब हम साथ रहेंगे, साथ-साथ अपने प्रभु की पूजा करेंगे और इस

बात में विश्वास करेंगे कि मृत्यु के बाद हमें भी मुक्ति मिलेगी ! तुम बस जरा कह दो और मैं तुम्हें लेकर रोम से चला जाऊँ, कहीं दूर !"

"हाँ, मार्कस्। तुमने सिसिली के बारे में कहा था। वहीं ओलस भी अपने परिवार के साथ अपनी बुढ़ौती के दिन काटना चाहते हैं।"

"हाँ, हम लोग वहाँ पास-पास ही रहते हैं। वह बड़ी अच्छी जगह है और वहाँ का मौसम भी रोम से अच्छा है। वहाँ रोम जैसी भाग-दौड़ भी नहीं है।"

दोनों भविष्य की कल्पना में खोये कुछ देर तक चुप बैठे रहे। विनिसियस ने उसे और अधिक समीप खींच लिया। आसपास गरीब लोगों की बस्ती थी, जहाँ इस समय तक सब कुछ शान्त हो चुका था।

"और तब मैं पोम्पोनिया से मिल सकूँगी ?"

"हाँ-हाँ। हम लोग उन्हें अपने घर बुलायेंगे और उनके घर जायेंगे। सन्त पीटर को भी हम साथ लेते चलें ? वे अब अपनी ढलती हुई उम्र और बराबर तक-लीफ सहते रहने के कारण बहुत कमजोर हो गये हैं। पाल भी अक्सर हमसे मिलने आया करेंगे। वे ओलस को भी ईसाई बना लेंगे और तब हम लोग पुराने सिपाहियों की तरह अपनी एक अलग बस्ती बसा लेंगे, ईसाई बस्ती।"

"ओह, तुम कितने अच्छे हो !"

उसने लीजिया के हाथ अपने ओठों से लगा लिए। एक क्षण के लिए वहाँ निस्तब्धता छा गई और वे दोनों एक-दूसरे के दिल का धड़कना सुनते रहे। अचानक एक विचित्र-सी आवाज से आसपास की शान्ति भंग हो गई।

"शेर अपने पिंजड़ों में गरज रहे हैं।" विनिसियस ने कहा।

वे दोनों कुछ देर तक सुनते रहे। एक गरज के बाद उसके जवाब में दूसरी और फिर तीसरी सुनाई दी। कभी-कभी शहर के अखाड़ों में बनी मांदों में कई हजार की तादाद में शेर बन्द रहते थे। रात के वक्त वे सीखचों के पास अपने मुँह लाकर गरजते रहते थे, और उनकी गरज से सारा शहर गूँजता रहता था।

लीजिया सुनती रही। उसका मन एक अज्ञात भय से भर उठा। विनिसियस ने उसे अपनी बाहों में कस लिया।

"डरो मत, रानी। असल में खेल-तमाशों के दिन पास आ रहे हैं, इसीलिए शेरों के सभी पिंजड़े भरे हुए हैं।"

वे लोग घर में लौट आये। शेर और भी जोरों से गरजते रहे।

## १८

एंटियम में पेट्रोनियस प्रति दिन सीजर के अन्य मित्रों को परास्त करके सीजर की नजर में उठता जा रहा था। सीजर पर टिजेलिनस का जो प्रभाव था अब वह बिल्कुल समाप्त हो चुका था। हालाँकि रोम में उसकी स्थिति सीजर के दरबार में बहुत ही महत्वपूर्ण थी और राज-विरोधियों का दमन करने के लिए या लूटमार करने के लिए, और राजनीतिक संकटों का सामना करने के लिए तथा तरह-तरह के खेल-तमाशों का आयोजन करके सीजर को खुश करने के लिए सिर्फ उस पर ही निर्भर रहा जाता था। लेकिन एंटियम में सीजर जरा अधिक सांस्कृतिक वातावरण में रहा करता था। सुबह से शाम तक कविता-पाठ चलता था और काव्य पर विचार-विमर्श हुआ करता था। संगीत और नाटक में काफी समय लगाया जाता था। इन विषयों में पेट्रोनियस टिजेलिनस से कहीं अधिक योग्य सिद्ध होता था, कोई भी दरबारी इसमें उसकी बराबरी नहीं कर सकता था। वह पर्याप्त सुसंकृत, बुद्धिमान और विचारशील था, वाणी पर उसका अधिकार था, और इसीलिए वह दूसरों से आगे बढ़ सकता था। स्वयं सीजर भी उसकी संगत चाहने लगा था, वह उसकी राय की बहुत कीमत करता था, उससे सलाह लेने लगा था और उसके प्रति मित्रता का प्रदर्शन करता था। अब सीजर के सभी दरबारी यह समझ गये थे कि पेट्रोनियस की प्रतिष्ठा को हिलाना संभव नहीं है, उसकी जगह सबसे आगे है।

लेकिन पेट्रोनियस आदत से ही बड़ा निर्विकार व्यक्ति था, वह अपनी स्थिति को कोई विशेष महत्व नहीं देता था। अक्सर लोगों को ऐसा लगता था जैसे वह उन पर हँस रहा है, खुद अपने आप पर और सीजर पर तथा पूरी दुनिया पर हँस रहा है। कभी-कभी तो वह स्वयं सीजर तक की आलोचना करने का साहस कर बैठता था और वह भी उसके मुँह पर ही! और जब लोगों को ऐसा लगता कि सीजर की आलोचना करके पेट्रोनियस अपना सर्वनाश करने जा रहा है, तभी वह ऐसे ढंग से अपनी बात बदल देता था कि उसकी स्थिति नाजुक होने की जगह और भी मजबूत हो जाती थी।

एक दिन सीजर अपने मित्रों को अपनी एक नई कविता सुना रहा था, जो एक महाकाव्य का अंश थी। जब वह सुना चुका तो उसने अन्य लोगों की वाह-वाह के बीच पेट्रोनियस की ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा।

पेट्रोनियस ने उत्तर दिया, "हाँ, यह चूल्हे में जलाने के काम आ सकती है।"

दरबार में सन्नाटा छा गया।

लोग डर से काँपने लगे, क्योंकि आज तक नीरो को किसी ने इस तरह कहने की हिम्मत नहीं की थी। टिजेलिनस मन ही मन बहुत खुश था। विनिसियस का चेहरा पीला पड़ गया, उसने सोचा कि आज शायद पेट्रोनियस ने ज्यादा पी ली है।

नीरो को बुरा तो लगा था, और उसके स्वर से भी यह स्पष्ट था, लेकिन फिर भी उसने अपना स्वर मधुर बनाते हुए पूछा, "और तुम्हें इसमें खामी क्या मालूम पड़ती है?"

पेट्रोनियस ने वहाँ उपस्थित लोगों की ओर इशारा करते हुए कहा, "आप इन लोगों की राय पर न जाइये, ये कविता के बारे में कुछ नहीं जानते। आप पूछ रहे हैं कि इस कविता में खामी क्या है! अगर आप सच पूछते हैं तो मैं कहूँगा कि यह विर्जिल और ओविद और यहाँ तक कि महाकवि होमर के लिए ठीक हो सकती है, लेकिन आपके लिए नहीं। आपको इस तरह की हलकी चीज लिखने का कोई हक नहीं है। आपने जिस अग्निकांड का वर्णन किया है, उसकी आग जैसे बहुत ठंडी लगती है, उसमें कोई गर्मी ही नहीं मालूम होती। लूकान अगर ऐसी कविता लिखता है, तो ठीक है, मैं यह भी मान लूँगा कि उसमें प्रतिभा है। लेकिन आप ऐसी कविता लिखें! आप तो उन सब कवियों से बड़े हैं। देवताओं ने आपको सर्वगुणसम्पन्न बनाया है, इसलिए हम आपसे और अच्छी चीज की आशा करने का हक रखते हैं। लेकिन आप कविता लिखने में इधर जैसे कुछ कम रुचि लेने लगे हैं। आप सुबह के नाश्ते के बाद अक्सर आराम करने चले जाते हैं, जब कि आपको खूब श्रम करना चाहिए। मैं यह बात आपके मुँह पर कह रहा हूँ क्योंकि आप ऐसा काव्य लिख सकते हैं, जो सबको मात कर सकता है, इसलिए कृपया इससे अच्छी कविता लिखिये।" वह यह सब इस तरह कह रहा था जैसे उसे किसी बात की परवाह न हो। लेकिन यह सुनकर सीज़र की आँखों में प्रसन्नता के आँसू छलक आये।

वह बोला, "यह ठीक है कि देवताओं ने मुझे बुद्धि और प्रतिभा दी है, लेकिन उन्होंने मुझे इससे भी अधिक कुछ दिया है—और वह है मित्र के रूप में एक जन्मजात आलोचक, जो सच्ची बात को मेरे सामने कहने की हिम्मत रखता है।"

यह कहकर सीज़र ने अपना हाथ बढ़ाकर कविताओं को जलाने के लिए मोमबत्ती को उठाना चाहा, लेकिन तभी पेट्रोनियस ने आगे बढ़कर उसके हाथ से कागज छीन लिया और कहा, "नहीं-नहीं, यह आपके योग्य भले ही न हो, लेकिन अब तो यह मानवता की सम्पत्ति हो गई है। इसे आप मुझे दे दें।"

"अच्छा, ठीक है, मैं इसे तुम्हें एक अच्छे से डिब्बे में रखकर भेजूँगा," यह कहकर सीजर ने उसे गले से लगा लिया और कहा, "तुम ठीक कहते हो। मैंने ट्राय के अग्निकांड का जो वर्णन किया है वह कुछ हल्का ही है। लेकिन फिर भी मैंने सोचा था कि अगर मैं महाकवि होमर के बराबर लिख सका तो इतना मेरे लिए काफी होगा, लेकिन आज तुमने मेरी आँखें खोल दीं। जानते हो इसका कारण क्या है? जब कोई मूर्तिकार किसी देवता की मूर्ति बनाना चाहता है तो वह उसके लिए मॉडल की तलाश करता है और उसे खोज ही निकालता है, लेकिन मेरे पास तो कोई मॉडल नहीं है—मैंने आज तक कभी किसी शहर को जलते हुए नहीं देखा।"

"अगर यह बात है तब तो आपने जिस दृश्य की कल्पना की है वह एक बहुत बड़े कलाकार से ही सम्भव है।"

नीरो एक क्षण तक सोचता रहा और फिर बोला, "पेट्रोनियस, मेरे एक सवाल का जवाब तो दो, क्या तुम्हें इस बात का अफसोस है कि ट्राय जैसा शहर भस्म हो गया?"

"अफसोस? उल्टे मुझे तो खुशी है कि अगर प्रोमेथ्यूस ने मानव को अग्नि न दी होती और यूनानियों ने प्रियाम पर हमला न किया होता तो ट्राय जलता ही क्यों और अगर अग्नि नहीं मिलती तो कवि एस्काइलस अपना प्रसिद्ध काव्य कैसे लिखता और अगर युद्ध न होता तो होमर ने अपना इलियड कैसे लिखा होता। और साहित्यप्रेमी होने के नाते मैं इन महान् रचनाओं को किसी शहर के नष्ट हो जाने से अधिक महत्व देता हूँ।"

"यह अक्ल की बात हुई, हमें इस बात का अधिकार है, बल्कि हमारा कर्तव्य है कि हम कविता और कला के लिए किसी तरह का बलिदान देने से पीछे न रहें। लेकिन होमर जैसे मेरे पहले होनेवाले कवि कितने भाग्यशाली थे और एक मैं हूँ, जिसने आज तक किसी शहर को जलते हुए नहीं देखा!"

दरबार में कुछ देर के लिए चुप्पी छा गई, अंत में टिजेलिनस बोला, "हुजूर, मैं तो पहले ही कह चुका हूँ कि हुक्म दीजिये और मैं एंटियम में आग लगा दूँ। या, अगर आपको यह सोच हो कि ये भवन और अट्टालिकाएँ नष्ट हो जायँगी तो कहिये तो बन्दरगाह में खड़े जहाजों को जलवा दूँ या अलबान पर्वत पर लड़की का एक शहर बसाया जाय और उसमें आप खुद अपने हाथों आग लगायें। तो, आप आज्ञा दे रहे हैं?"

नीरो ने घृणा से उसकी ओर देखा और कहा, "क्या? आखिर मतलब क्या है तुम्हारा? लकड़ी के खिलौनों को जलते हुए देखने से मुझे क्या मिलेगा? टिजेलिनस तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। इसके अलावा तुम मेरी बुद्धि और प्रतिभा

को ठीक से समझ भी नहीं पाते, क्योंकि मेरी कविता को तुम पूरा महत्व नहीं देते और उसे ऐसे छोटे से बलिदान के योग्य समझते हो।"

यह सुनकर टिजेलिनस का रंग उड़ गया। नीरो ने विषय बदलते हुए कहा, "गर्मी शुरू हो गई है, इस समय रोम में कितनी बदबू होगी और वहाँ की हवा कितनी भारी होगी, और हमें मजबूरन गर्मी के उत्सवों में भाग लेने के लिए वहाँ जाना ही पड़ेगा।"

अचानक टिजेलिनस बोला, "सीजर, जब आप दरबार खत्म करें, तो कृपया एक क्षण मुझे एकान्त में कुछ अर्ज़ करने का मौका दें।"

कोई एक घंटे बाद विनिसियस पेट्रोनियस के साथ महल से लौट आया। रास्ते में वह बोला, "तुमने तो मुझे घबरा ही दिया था, मैंने सोचा कि कहीं तुम नशे में तो नहीं हो। तुम यह न भूलो कि इस तरह की आलोचना करके तुम मौत के साथ खिलवाड़ कर रहे हो।"

पेट्रोनियस ने बेपरवाही से उत्तर दिया, "कविता का क्षेत्र तो मेरा अपना है, मैं उसमें किसी से भी मुकाबला कर सकता हूँ और आज ही तुमने देखा कि इस तरह मैं अपनी प्रतिष्ठा और बढ़ा लेता हूँ। अगर इसी तरह कुछ दिनों तक चलता रहा तो मैं दरबार में टिजेलिनस की हालत नाजुक बना दूँगा और देखते-देखते उसे सिपाहियों की एक छोटी-सी टुकड़ी का सरदार बनाकर दरबार से हटा दिया जायगा और तब मैं उस पगले नीरो को अपनी मुट्ठी में रखूँगा। लेकिन इसमें बहुत झंझट है और मैं जरा आराम से जिन्दगी बिताना चाहता हूँ।"

## १६

नीरो अपना बनाया हुआ एक गीत गा रहा था। इस समय उसका गला कुछ ठीक था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे आसपास बैठे लोग उसके स्वर पर मुग्ध हैं। गीत खत्म करते-करते वह आवेश में आ गया। आज उसे किसी की तारीफ सुनने की इच्छा नहीं थी। कुछ देर तक वह चुपचाप बैठा सिर झुकाये सोचता रहा और फिर अचानक खड़ा होते हुए बोला, "मैं बहुत थक गया हूँ, मेरा दम घुट रहा है, मैं जरा ताजी हवा खाना चाहता हूँ। जरा मेरा सितार ठीक करवाओ, फौरन!"

फिर उसने अपना रेशमी रूमाल गले में लपेटा और पेट्रोनियस और विनिसियस की ओर मुड़कर कहा, "चलो, जरा मेरे साथ। विनिसियस जरा मुझे सहारा

दो, क्योंकि मुझे कुछ कमजोरी महसूस हो रही है। पेट्रोनियस तुम संगीत के बारे में कुछ चर्चा करो।"

वे लोग बाहर बाग में बने चबूतरे पर निकल आये जिस पर फूल बिखरे हुए थे। नीरो बोला, "यहाँ हवा कुछ हल्की है। मेरा दिल कुछ बैठा हुआ है, लेकिन फिर भी मुझे लगता है कि जिस तरह अभी मैंने तुम लोगों को गीत सुनाया है उससे मैं आम जनता के सामने गाने की हिम्मत कर सकता हूँ और मुझे विश्वास है कि मुझे संगीत में ऐसी सफलता मिलेगी जैसी आज तक किसी रोमन को नहीं मिल सकी।"

"मुझे तो हर समय और हर हालत में आप का देवतुल्य संगीत पसन्द है," पेट्रोनियस बोला।

"हाँ, मैं यह जानता हूँ। लेकिन आलस्यवश तुम बराबर मेरी तारीफ नहीं करते। लेकिन तुम जो कुछ कहते हो वह ईमानदारी से कहते हो और अच्छे-बुरे का तुम्हें जितना ज्ञान है ऐसा आज तक किसी कलापारखी में मैंने नहीं देखा।"

कुछ तेर तक वे चुपचाप टहलते रहे। अन्त में नीरो बोला, "आज मैं तुमसे कुछ मन की बात करना चाहता हूँ। क्या तुम समझते हो कि मैं अंधा हूँ? क्या तुम यह सोचते हो कि रोम की दीवारों पर मेरे नाम जो गालियाँ लिखी रहती हैं उनका पता मुझे नहीं? क्या मैं यह नहीं जानता कि लोग मुझे अपनी माँ और अपनी पत्नी का हत्यारा मानते हैं, वे मुझे राक्षस और खूँखार समझते हैं, क्योंकि टिजेलिनस ने मेरे कुछ दुश्मनों को मौत के घाट उतारा है? रोम की जनता में मेरी क्रूरता की कहानियाँ इस कदर फैली हुई है कि कभी-कभी तो मुझे भी लगता है कि कहीं सचमुच मैं क्रूर तो नहीं हूँ। लेकिन वे लोग यह नहीं जानते कि कभी-कभी किसी आदमी के काम क्रूरतापूर्ण लगते है, हालाँकि वह खुद क्रूर नहीं होता। कोई नहीं जानता, मेरे दोस्त, शायद तुम भी इसपर विश्वास नहीं करोगे कि अक्सर जब संगीत से मेरे मन को कुछ शान्ति मिलती है तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं एक बच्चे से भी ज्यादा नादान हूँ, भोला हूँ!"

"असल में जिस तरह मैं आपको जानता हूँ, और लोग नहीं जानते, और न जान ही सकते हैं," पेट्रोनियस ने कहा। "असल में, रोम आज तक आपकी सही कीमत नहीं आँक पाया है।"

सीजर विनिसियस के कन्धे पर और झुक आया और बोला, "टिजेलिनस ने मुझे बताया है कि सीनेट में कुछ लोगों का ख्याल है कि डियोडोरस और तरपनोस मुझसे अच्छा संगीत जानते हैं। लेकिन तुम तो हमेशा सच बोलते हो, जरा ईमानदारी से बताओ कि क्या सचमुच वे मुझसे अच्छा संगीत जानते हैं, या उतना ही जितना कि मैं जानता हूँ!"

"जी नहीं, बिल्कुल नहीं, आपके संगीत में एक विशेष माधुर्य है, और उनसे अधिक शक्ति है। वे लोग अच्छा गा-बजा लेते हैं! लेकिन आप तो कलाकार हैं!"

नीरो बोला, "तुममें और टिजेलिनस में कितना फर्क है। तुम समझते हो कि मैं एक कलाकार हूँ और यह भी जानते हो कि कला के लिए मैं सब कुछ कर सकता हूँ। लोग मुझे पागल कहते हैं। मैं पागल नहीं हूँ, लेकिन मैं चाहता हूँ कि—"

फिर उसने पेट्रोनियस के कान के पास मुँह ले जाकर कहा, ताकि विनिसियस न सुन सके, "इसीलिए मैंने बड़ा से बड़ा बलिदान दिया है। इसीलिए मेरी माँ और पत्नी को मरना पड़ा। लेकिन इतना ही काफी नहीं है कला और संस्कृति के द्वार खोलने के लिए इससे भी बड़े बलिदान की आवश्यकता है और देवतागण यही चाहते हैं।"

"हुजूर, आपकी इच्छा क्या है?"

"सब तुम्हें मालूम हो जायगा। लेकिन इस बीच तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि नीरो असल में दो हैं—एक तो वह जिसे आम लोग जानते हैं और एक वह जिसकी कद्र सिर्फ तुम जानते हो—कलाकार नीरो, जो अगर नष्ट करता है तो मृत्यु भी उसकी बराबरी नहीं कर सकती, और नष्ट वह इसीलिए करता है कि ऐसी चीजें जो गन्दी और घिनौनी मालूम होती हैं नष्ट होनी ही चाहियें। एक प्रतिभा-सम्पन्न कलाकार होने के साथ-साथ इतने बड़े साम्राज्य का शासक होना कितना मुश्किल काम है!"

"आपका कष्ट देखकर, सीजर, मेरा मन भर आता है और विनिसियस भी इससे दुखी रहता है, क्योंकि यह भी तन-मन से आपकी पूजा करता है।"

"मैंने हमेशा इसे पसन्द किया है, हालाँकि यह शक्ति का पुजारी है, कला और संस्कृति का नहीं।"

पेट्रोनियस ने फौरन मौका देखकर विनिसियस की ओर से सीजर की खुशामद करनी शुरू की, "लेकिन सबसे बड़ी बात तो यह है हुजूर, कि यह प्रेम की देवी का पुजारी है। यह एक लड़की के प्यार में बुरी तरह फँसा है। आप कृपया इसे रोम जाने दें, वरना यह यहीं घुलघुल कर मर जायगा। आप को तो मालूम ही होगा कि वह लीजियन लड़की जिसे आपने मुझे दे डाला था, मिल गई है। मैंने यह आपको पहले इसलिए नहीं बताया कि तब आप संगीत में व्यस्त थे। विनिसियस पहले तो उसे अपने घर में डाल लेना चाहता था, लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं हुई और अब विनिसियस उस पर इतना फिदा है कि उससे शादी करना चाहता है। वह लड़की भी राजघराने की है, इस तरह विनिसियस उससे प्यार करके अपने को

गिरा नहीं रहा है। लेकिन यहाँ आहें भरते हुए उसकी जान निकली जा रही है, और वह हुजूर के हुक्म का इंतजार कर रहा है।"

"सम्राट् अपने सैनिकों के शादी-ब्याह के मामले में दखल नहीं देते, इसलिए इसमें मेरे हुक्म की क्या जरूरत ?"

"मैंने कहा न सरकार, कि उसने अपने आपको आपकी सेवा के लिए अर्पित कर रखा है।"

"खैर ठीक है, मैं इजाजत देता हूँ। वह लड़की सुन्दर है। लेकिन महारानी ने एक बार उसकी शिकायत की थी कि उसने महल में राजकुमारी को डरा दिया।"

"और सरकार मैंने टिजेलिनस को कहा था कि देवताओं पर टोने-टोटके का असर नहीं होता।"

"हाँ, मुझे याद है।" फिर उसने विनिसियस की ओर मुड़कर कहा, "क्या तुम सचमुच उस लड़की के प्यार में इतने फँस गये हो ?"

"हाँ, सरकार, मैं उसे चाहता हूँ।"

"ठीक है, मेरी आज्ञा है कि तुम कल ही रोम वापस लौट जाओ, उससे विवाह कर लो और बिना विवाह किए मेरे सामने मत आना।"

"तो सरकार, हम पर एक कृपा और कीजिये। अपनी यह इच्छा आप कृपया महारानी के सामने प्रकट करें, क्योंकि विनिसियस ऐसी लड़की से शादी करने की हिम्मत नहीं कर सकता, जिससे महारानी को कभी कोई शिकायत रही हो।"

"ठीक है, मैं तुम्हारी और विनिसियस की कोई माँग अस्वीकार नहीं कर सकता," सीजर ने कहा। यह कहकर वह महल की ओर लौट पड़ा। वे दोनों भी खुशी-खुशी उसके पीछे हो लिये।

महल में जाकर नीरो ने अपना गहने का डिब्बा लाने का हुक्म दिया। जब डिब्बा आ गया तो उसमें से एक हार निकालकर उसने कहा, "इस मौके के लिए यही ठीक होगा।"

रानी पोपिया वहीं बैठी थी। उसने समझा कि यह हार उसके लिए ही आया है। वह बोली, "हाँ, यह बहुत ही खूबसूरत है।"

सीजर कुछ देर तक उस हार में लगे हुए कीमती जवाहरातों को देखता रहा और फिर बोला, "विनिसियस, यह हार मेरी तरफ से उस लीजियन राजकुमारी को भेंट कर देना जिससे मैंने तुम्हें विवाह करने की आज्ञा दी है।"

पोपिया दंग रह गई और क्रुद्ध दृष्टि से सीजर और विनिसियस तथा पेट्रोनियस की ओर उसने देखा। लेकिन पेट्रोनियस एक वाद्य-यंत्र पर झुका उसे गौर से देख रहा था।

विनिसियस ने झुक कर सम्राट् को धन्यवाद दिया और फिर वह पेट्रोनियस

के पास लौट आया। उसने पेट्रोनियस को भी धन्यवाद दिया। पेट्रोनियस ने कहा, "जाओ, तुम सुखी रहो, लेकिन देखो सीजर, फिर से गाने जा रहे हैं, जरा ध्यान से सुनो और इस स्वर्गीय संगीत का आनन्द लूटो!"

सचमुच नीरो अपने हाथ में 'लायर' लेकर और आकाश की ओर आँखें उठाये हुए कुछ सुनाने की तैयारी करने लगा। वहाँ जो भी लोग बैठे थे सब दम साधकर चुप बैठ गये। सिर्फ डियोडोरस और तरपनोस, जो गाने में सीज़र का साथ देनेवाले थे बार-बार एक-दूसरे की तरफ और सीजर की तरफ देखकर गीत शुरू होने का इंतजार करने लगे।

अचानक कुछ शोर सुनाई दिया। पर्दा उठा और सम्राट् का खास सेवक फाओन और सलाहकार लेकानियस हाँफते हुए अन्दर आया। नीरो ने भौंहें सिकोड़ लीं।

फाओन हाँफते हुए बोला, "महाराज, क्षमा करें, लेकिन रोम में आग लग गई है! शहर का काफी बड़ा हिस्सा जल रहा है!"

सब लोग हड़बड़ाकर उठ खड़े हुए। नीरो ने भी अपनी 'लायर' एक तरफ रख दी और कहा, "धन्य हो! तो आज मैं एक शहर को जलते हुए देख सकूँगा और अपना महाकाव्य पूरा कर सकूँगा!" फिर उसने अपने सलाहकार की ओर मुड़ कर पूछा, "क्यों जी, अगर मैं इसी वक्त यहाँ से रवाना हो जाऊँ तो क्या मैं ठीक समय पर रोम पहुँच जाऊँगा, ताकि आग देख सकूँ?"

उसका सलाहकार बुरी तरह घबराया हुआ था, वह बोला, "सरकार, पूरा शहर जल रहा है, लोग भाग रहे हैं और कुछ घबराकर अपने आपको आग में झोंक दे रहे हैं। रोम का बचना मुश्किल है, सरकार!"

अचानक विनिसियस ने चिल्लाकर कहा, "मेरा तो सर्वनाश हो गया!" और वह दौड़ता हुआ महल से बाहर निकल आया।

नीरो ने आकाश की ओर हाथ उठाकर कहा, "देवगणों को धन्यवाद, उन्होंने मुझपर कृपा की। आज मैं एक शहर को जलते हुए देख सकूँगा!"

## तीसरा भाग

### १

कुछ दासों को अपने पीछे आने के लिए कहकर विनिसियस फौरन घोड़े पर सवार हुआ। घोड़े को तेजी से दौड़ाते हुए और अंधेरे में एन्टियम की सूनी सड़कों को पार करते हुए लारेन्तम की ओर बढ़ चला। घोड़े की गर्दन से अपना सिर सटाये हुए वह आँख मूँदकर भागा जा रहा था, रास्ते में आनेवाली रुकावटों की ओर से बिल्कुल बेखबर, यहाँ तक कि वह सामने भी नहीं देख रहा था। उसका घोड़ा कीमती नस्ल का था और तीर की तरह भागा जा रहा था। उसकी टापों की आवाज से सड़क के पत्थर गूँज उठते थे और कभी-कभी कोई कुत्ता चौंककर भूंकने लगता था। विनिसियस के पीछे उसके दास अपने-अपने घोड़े दौड़ाते हुए चले आ रहे थे। लेकिन थोड़ी ही देर में वे काफी पीछे रह गये। विनिसियस ने अकेले ही लारेन्तम के सोते हुए नगर को पार किया, और आरदिया की ओर मुड़ चला, जहाँ उसने बीच में पड़नेवाले और दो-तीन मुकामों की तरह अपने लिए नये घोड़े तैयार करा रखे थे।

आरदिया को पार करते-करते उसने देखा कि उत्तर की ओर आसमान लाल होता जा रहा है। हो सकता है, यह सूर्योदय की लाली रही हो, क्योंकि रात खत्म होने आई थी। लेकिन विनिसियस ने यह सोचकर क्रोध और निराशा से एक आह भरी कि बहुत मुमकिन है, यह जलते हुए रोम की आग हो। उसे लेकानियस के ये शब्द याद आये, "पूरा शहर जैसे आग का एक सागर बन गया है"! और उसे लगा कि वह पागल हो जायगा क्योंकि उसकी यह आशा कम होती जा रही थी कि वह लीजिया को बचा पायेगा। जब तक वह रोम के नगर-द्वार तक पहुँचेगा तब तक शहर जल कर राख हो जायेगा। डर और सन्देह से भरे उसके ये विचार अशुभ पक्षियों के एक काले बादल की तरह उसके सिर पर मंडरा रहे थे। उसे यह पता नहीं था कि आग शहर के किस हिस्से में शुरू हुई है। लेकिन उसने अनुमान लगा लिया कि टाइबर नदी के पारवाला इलाका ही सबसे पहले आग का शिकार हुआ होगा, जहाँ लकड़ी के गोदाम हैं और गुलामों की झोपड़ियाँ हैं।

उसे यूरसस की याद आई और यह भी याद आया कि वह बहुत ताकतवर आदमी है। लेकिन भला एक आदमी या कोई देव भी आग की भयानक लपटों के साथ क्या कर सकता है! लोगों का कहना था कि बरसों से रोम के सैकड़ों-हजारों गुलाम अपने आदिविद्रोही स्पार्टेकस के जमाने के सपने देख रहे थे और अपने

शोषकों और पूरे रोम के खिलाफ हथियार उठाने का मौका ढूँढ़ रहे थे, और अब वह मौका आ गया था। हो सकता है, इस आग के साथ साथ रोम में गृह-युद्ध और कत्ले-आम की शुरुआत भी हो गई हो।

उसे याद आया कि इधर सीज़र अक्सर उन शहरों के बारे में बड़ी निर्दयता से बातें किया करता था, जो आग में नष्ट हो चुके थे। इसमें कोई शक नहीं था कि उसी ने रोम में आग लगाने का हुक्म दिया था। यही ऐसे पाप का योजना बना सकता था, जिसे उसका चाटुकार टिजेलिनस ही पूरा भी कर सकता था और अगर उसी की आज्ञा से रोम भस्म किया गया है तो कोई आश्चर्य नहीं कि उसने अपने सैनिकों को जनता के कत्ले-आम का भी आदेश दिया हो।

इतने में सामने से एक घुड़सवार बहुत तेजी से भागता हुआ निकल गया और विनिसियस को कहता गया, "रोम बरबाद हो गया!" उसने और भी कुछ कहा लेकिन घोड़ों के दौड़ने के शोर में उसकी आवाज डूब गयी। शायद उसने देवताओं का नाम लिया था। देवताओं के नाम से विनिसियस को एक बार फिर आशा बँधी। उसने सिर उठाया और तारों भरे आसमान की ओर हाथ उठाकर प्रार्थना की, "मैं उन देवताओं की परवाह नहीं करता जिनके मन्दिर आज भस्म हो रहे हैं। लेकिन हे भगवान, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। तुम जानते हो कि कष्ट क्या है, तुम जानते हो कि मनुष्य की पीड़ा क्या है! तुम हमें दया का पाठ पढ़ाने के लिए इस धरती पर आते हो। लेकिन आज मैं तुमसे दया के भीख माँग रहा हूँ। अगर तुम्हारी दयालुता के बारे में सन्त पीटर और पाल का कहना सही है तो तुम मेरी लीजिया को बचा लो। उसे अपने दयामय हाथों में उठा लो और इस आग से बचा लो! हे भगवान, लीजिया को मुझे दे दो और मैं अपना जीवन तुम्हें दे दूँगा! मेरे लिए नहीं तो कम से कम उसके लिए इतना अवश्य करो। वह तुम पर श्रद्धा करती है, तुम्हारी भक्ति करती है। यह ठीक है कि मृत्यु के बाद तुम जीवन और आनन्द देने का आश्वासन देते हो, लेकिन वह अभी मरना नहीं चाहती। उसे जीने दो। अगर तुम चाहो तो सब कुछ सम्भव है।"

लेकिन फिर उसने अपनी प्रार्थना बन्द कर दी। क्योंकि उसे लगा कि उसका स्वर अविनीत और दम्भपूर्ण होता जा रहा है। वह अपने घोड़े पर चाबुक बरसाने लगा और उसे अधिक से अधिक तेज दौड़ाने लगा। अब उसे चाँदनी में एरीकिया की सफेद चमकती हुई दीवारें दिखाई देने लगीं। रोम यहाँ से आधी दूर था। अचानक विनिसियस ने लगाम खींची। घोड़ा लड़खड़ाकर झुका और एक सराय के आगे खड़ा हो गया। यहाँ विनिसियस के कुछ घोड़े तैयार खड़े थे। सराय के नौकर-चाकर फौरन काम में लग गये, इतने में विनिसियस ने देखा कि एक तरफ दस शाही

घुड़सवार खड़े हैं। निश्चय ही वे समाचार लेकर सीजर के पास जा रहे थे। विनिसियस ने पास जाकर पूछा, "शहर के किस हिस्से में आग लगी है?"

"कौन हो तुम?" घुड़सवारों के नायक ने पूछा।

"विनिसियस, सैनिक ट्रिब्यून और रईस कायटे से जवाब दो, अगर तुम्हें अपनी जिन्दगी प्यारी हो!"

वह सैनिक चौंका और सँभलकर बोला, "हुजूर, मैक्सिमस चौराहे के पास की झोपड़ी में आग शुरू हुई। जब हम लोग वहाँ से चले तब तक आग शहर के बीच में पहुँच चुकी थी।"

"और नदी के पारवाले इलाके का क्या हाल है?"

"अभी तो साहब, वह बचा हुआ है, लेकिन आग बड़ी तेजी से फैल रही है और काबू में नहीं आ पा रही है।"

विनिसियस के लिए एक नया घोड़ा लाया गया। वह उस पर उछलकर सवार हुआ और चल पड़ा। आलबा की सुन्दर झील के पास से सड़क काफी ढलुआँ हो गई थी। इसलिए आगे का दृश्य छिप गया। लेकिन विनिसियस जानता था कि जब ढाल पार करके वह चढ़ाई शुरू करेगा तो वहाँ से दूसरे नगरों के अलावा रोम भी साफ-साफ दिखाई देगा।

"मुझे वहाँ से आग की लपटें दिखाई देंगी!" यह सोचकर विनिसियस ने घोड़े पर चाबुक फटकारना शुरू किया।

लेकिन अब रात बीत चुकी थी और सवेरा हो रहा था। आसपास की पहाड़ियों के सिरे गुलाबी और सुनहरे हो रहे थे, जिससे चारों तरफ आग लगने का भ्रम होता था। अब विनिसियस चढ़ाई पार करके काफी ऊँचे पर पहुँच गया था। वहाँ से उसने देखा कि पूरी घाटी पर धुएँ का एक बादल टँगा हुआ है और सात पहाड़ियों पर बसा रोम नगर पूरा जल रहा है। लेकिन आग सब जगह बराबर नहीं लगी थी। कहीं धुआँ कम उठ रहा था और कहीं सिर्फ धुआँ ही धुआँ दिखाई दे रहा था। क्षितिज में बहुत दूर तक धुएँ का बादल फैला हुआ था। यहाँ तक कि पीछे की पहाड़ियाँ छिप गई थीं।

विनिसियस को ऐसा लगा जैसे न सिर्फ रोम बल्कि पूरा संसार जल रहा है और धुएँ के इस सागर से कोई नहीं बच सकेगा। जब वह आलबेनम से गुजर रहा था तो उसने देखा कि नगर के सारे लोग छतों और पेड़ों पर चढ़कर दूर जलते हुए रोम को देख रहे थे। अब तक विनिसियस को यह सोचकर थोड़ी-सी आशा बँध गई कि यूरसस और संत पीटर रोम में ही हैं, वे जरूर लीजिया की देखभाल करेंगे। जैसे-

जैसे वह रोम के समीप पहुँचता जाता था रास्ते में भीड़ बढ़ती जा रही थी। उसे अपनी रफ्तार धीमी करनी पड़ी।

यूस्ट्रिनम में भीड़ बहुत ज्यादा थी। लोग अपने-अपने सामान लेकर भागे आ रहे थे। घोड़े और खच्चर, गाड़ियाँ और पालकियाँ घरेलू सामान और बच्चे-बूढ़ों से लदी हुई थीं। नगर के चौक, बाजार और मन्दिर भागकर आये हुए लोगों से ठसाठस भरे थे। जगह-जगह लोगों ने खेमे गाड़ रखे थे। बहुत से लोग खुले ही में पड़े थे और रो-रोकर अपने भाग्य को कोस रहे थे और देवताओं से दया की भीख माँग रहे थे। इस भीड़-भाड़ में रोम का समाचार जानना बड़ा मुश्किल था। जिन लोगों से विनिसियस ने कुछ पूछा भी तो वे फटी-फटी आँखों से सिर्फ उसे देखते रह गये और कुछ ने कहा, कि रोम बरबाद हो गया! उसके साथ-साथ दुनिया बरबाद हो जायगी! शोर बढ़ता जा रहा था और रोम से भागकर आनेवालों की भीड़ के रेले के रेले आ रहे थे।

रोम में गुलामों और ग्लेडियेटरों ने मकानों को लूटना शुरू कर दिया था। जो सिपाही बचे हुए लोगों की हिफाजत के लिए वहाँ रह गये थे उन पर भी गुलामों ने हमले शुरू कर दिये। जूनियस नाम का एक सिनेटर कुछ गुलामों की भीड़ में एक सराय के पास खड़ा था। उसी से विनिसियस को पहली बार अग्निकांड का पूरा ब्यौरा मालूम हुआ। आग शुरू तो हुई थी सेक्सिमस चौराहे के पास की बस्ती में, लेकिन देखते ही देखते पूरे शहर में फैल गई थी।

"और टाइबर के पारवाली बस्ती में?" विनिसियस ने पूछा।

जूनियस आश्चर्य से उसकी ओर देखकर बोला, "उसकी तुम्हें क्या फिक्र पड़ी है?"

"उसकी मुझे जितनी फिक्र है उतनी इस समय पूरे रोम की नहीं है।"

"वहाँ तक तुम सिर्फ एक ही रास्ते से जा सकते हो। बाकी हिस्से में धुआँ ही धुआँ भरा है। मुझे पता नहीं कि आग कहाँ तक फैली है लेकिन लगता है कि अब तक शहर का शायद ही कोई हिस्सा बचा हो।"

विनिसियस फौरन अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ एपियन मार्ग पर निकल गया। उसके सामने रोम फैला पड़ा था, धुएँ से भरा और भट्ठी की तरह तपता हुआ। लोगों की चीख-चिल्लाहट में इमारतों की चटख और लपलपाती हुई लपटों के झपट्टे भी सुनाई देते थे।

## २

यूस्ट्रिनम में जो हड़बड़ी मची हुई थी उसको देखकर अन्दाज लगाया जा सकता था कि रोम की क्या हालत होगी। अब वहाँ कानून की किसी को परवाह नहीं थी। सिपाहियों का कोई मान नहीं था और पारिवारिक सम्बन्धों या वर्ग-विभेदों का कोई महत्व नहीं था। गुलामों ने नागरिकों पर हमले शुरू कर दिये थे। ग्लेडियेटर लोग दूकानें तोड़कर खूब शराब पी रहे थे और रोमन नागरिकों को आतंकित करते हुए घूम रहे थे। बर्बर जाति के युद्ध-बन्दी जिन्हें गुलामों की तरह बेचने के लिए लाया गया था अपने घेरे तोड़कर भाग निकले थे। आग क्या लगी जैसे उन्हें गुलामी से आजादी मिल गई और बदला लेने का मौका मिल गया। जब रोम के नागरिक इस मुसीबत से बचने के लिये आसमान की ओर हाथ उठा रहे थे, तो ये लोग नागरिकों को लूटते हुए और स्त्रियों को तंग करते हुए घूम रहे थे। उनके साथ-साथ शहर के दूसरे गुलाम भी मिल गये थे, ऐसे गुलाम जिन्हें उनके मालिक कमर में लपेटने के लिए कम्बल के एक टुकड़े के अलावा कुछ नहीं देते थे और जिनके लिए दिन में सड़कों पर निकलना मना था। एशियावासी, अफ्रीकी, यूनानी, थ्रेसियन, जर्मन और अंग्रेज जाति के गुलाम आज वर्षों के शोषण का बदला लेने के लिए सड़कों पर निकल आये थे।

विनिसियस ने देखा कि टाइबर पार के इलाके तक पहुँचने के लिए उसे एपियन मार्ग छोड़कर दूसरा रास्ता अपनाना पड़ेगा। लेकिन यह भी आसान नहीं था, क्योंकि उस तरफ भी बहुत भीड़ थी और रास्ता पाने के लिए लोगों को डराना-धमकाना जरूरी था। अचानक उसने देखा कि करीब एक दर्जन शाही सैनिक एक मन्दिर के दरवाजे पर खड़े हुए भीड़ को उधर जाने से रोक रहे थे। विनिसियस ने उनके नायक को अपने साथ चलने के लिए कहा। नायक ने पहचान लिया कि यह एक सैनिक ट्रिब्यून है। वह उसका हुक्म मानने से इन्कार नहीं कर सका और अपने सैनिकों को साथ लेकर विनिसियस के पीछे चल पड़ा।

बड़ी मुश्किल से लोगों को हटाते-बढ़ाते हुए और रास्ते में मिलनेवाली गाड़ियों, पालकियों और लोगों के सिर पर रखे हुए घरेलू सामानों पर अपनी छड़ी से चोट करते हुए विनिसियस सैनिकों के साथ किसी तरह आगे बढ़ने लगा। भागनेवालों से उसे पता चला कि नदी के पार केवल थोड़ी-सी ही गलियों तक

आग पहुँच सकी है लेकिन थोड़ी ही देर में वह चारों तरफ फैल जायगी, क्योंकि कुछ लोग जान-बूझकर आग फैलाने के काम में लगे हैं। वे लोग आग बुझाने से मना करते थे और कहते थे कि उनको यही हुक्म मिला है। अब विनिसियस को जरा भी संदेह नहीं रह गया था कि सीजर ने ही शहर को जला डालने का हुक्म दिया था। भला रोम का कट्टर दुश्मन भी इससे ज्यादा और क्या नुकसान कर सकता था। विनिसियस जानता था कि अब नीरो के पतन की घड़ी आ पहुँची है, इस शहर को जलाकर इसके खँडहरों से वह अपनी कविता के लिए प्रेरणा पाना चाहता है, मूर्ख! शेखचिल्ली! विनिसियस के दिमाग में उसे सबक सिखाने और बदला लेने की योजनाएँ बनने लगीं। विनिसियस का परिवार बड़ा प्रसिद्ध रह चुका था। रोम का हर नागरिक उसे जानता था। सिर्फ लोगों को इशारा करने भर की देर थी। क्या वह खुद उसकी जगह नहीं ले सकता! क्या प्रभु ईसा इस पवित्र काम में उसकी मदद नहीं कर सकते? हो सकता है, किसी एक खास उद्देश्य से ही ईश्वर इस तरह के भाव उसके मन में उत्पन्न कर रहा हो। वह अपने मन में कहने लगा, लीजिया को जिन मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है उनके लिए मैं नीरो से बदला लिए बिना चैन नहीं लूँगा। मैं सत्य और न्याय का शासन स्थापित करूँगा। मैं दुनिया में ईसा के उपदेशों को फैला दूँगा और अपनी लीजिया को सारे संसार की रानी बना दूँगा।

अब वह पोरतेन्सिस सड़क पार करके टाइबर के दूसरे किनारे के इलाके में पहुँच गया था। सड़कें और गलियाँ घुएँ और भागते हुए लोगों की भीड़ से भरी हुई थीं। इन लोगों के बीच से निकलना लगभग असम्भव था। विनिसियस के साथ जो सिपाही आ रहे थे वे बहुत पीछे ही रह गये थे। किसी ने उसके घोड़े के सिर पर हथौड़ी से चोट की। घोड़ा बिदकने लगा। लोगों ने विनिसियस की कीमती पोशाक से समझ लिया कि यह कोई रईस है और उन्होंने नारे लगाने शुरू किये, "नीरो और उसके आग लगानेवालों का नाश हो!" सैकड़ों आदमी गुस्से में भरकर विनिसियस की ओर अपनी मुट्ठियाँ हिलाने लगे। लेकिन तभी उसका घोड़ा बहुत तेजी से भड़का और फौरन वहाँ से भाग निकला। किसी तरह विनिसियस की जान बची। लेकिन आगे चलने पर विनिसियस को लगा कि अब घोड़े पर बैठकर चलना मुश्किल है। इसलिए उसने घोड़ा छोड़ दिया और पैदल ही दौड़ना शुरू किया। वह दीवाल से सटकर आगे बढ़ रहा था।

बार-बार उसका मन कहता था कि उसकी यह कोशिश बेकार है। लीजिया शायद अब तक शहर छोड़कर भाग गई होगी। इस भीड़-भाड़ में उसे खोजना बालू में सुई खोजने की तरह है। बड़ी मुश्किल से गिरते-पड़ते वह लीनस के घर तक पहुँच सका।

विनिसियस को याद था कि लीनस के घर के आसपास एक बगीचा लगा है और मकान के पीछे एक खेत है जो नदी तक चला गया है। जैसे-जैसे वह पास आता जाता था उसकी हिम्मत बढ़ती जाती थी। उसने सोचा कि मकान के आस-पास इतनी खुली जगह है, इसलिए वहाँ तक आग का पहुँचना मुश्किल है। अब वह दौड़ने लगा। हवा में धूल और धुँआ इतना भरा हुआ था कि साँस लेना मुश्किल हो रहा था। उसने अपने अँगरखे से कपड़े का एक टुकड़ा फाड़ा और उसे नाक पर बाँध लिया। हवा में अब आसपास जलती हुई इमारतों की चिनगारियाँ उड़ रही थीं जिनसे आग बराबर फैलती जा रही थी।

अंत में धुएँ के एक बादल के पीछे अचानक उसकी नजर लीनस के बगीचे में लगे सनोवर के पेड़ों पर पड़ी। आसपास के मकान धू-धू करके जल रहे थे, लेकिन लीनस का मकान अभी बचा हुआ था। विनिसियस ने ईश्वर को धन्यवाद दिया। अब गरम हवा उसके शरीर को झुलसाने लगी थी। लेकिन फिर भी वह दौड़ता हुआ मकान के दरवाजे तक पहुँच गया। दरवाजा खुला था। वह उसे खोलकर अन्दर चला गया। बाग में कोई नहीं था। मकान भी सूना मालूम पड़ता था। "लीजिया, लीजिया!" उसने पुकारा। कोई जवाब नहीं मिला। मकान में बिल्कुल सन्नाटा था। दूर से शोर की आवाज आ रही थी।

"लीजिया!" उसने एक आवाज और दी और अन्दर घुस गया। मकान बिल्कुल खाली पड़ा था। वह दौड़ता हुआ सोने के कमरे के पास पहुँचा। वहाँ अँधेरा था। लेकिन पासवाले कमरे में जो उस परिवार का पूजागृह था, एक क्रास के आगे दीया टिमटिमा रहा था। विनिसियस ने दीया उठा लिया और फिर वह सोने के कमरे की ओर लपका।

लेकिन वह कमरा भी खाली पड़ा था। उसने समझ लिया कि यह लीजिया का ही कमरा है। क्योंकि उसके कुछ कपड़े खूँटियों पर टँगे थे। उसके बिस्तर पर भी कुछ कपड़े पड़े थे। विनिसियस ने एक कपड़ा उठाकर अपने ओठों से लगा लिया और उसे कन्धे पर डालकर वह मकान के दूसरे कमरे देखने लगा। यहाँ तक कि उसने तहखाना भी देख डाला, लेकिन कहीं कोई नहीं मिला। "लीजिया लीनस और यूरसस के साथ आग से बचने के लिए यहाँ से भाग गई होगी। मुझे शहर के दरवाजों के बाहर उसे खोजना पड़ेगा। "उसने सोचा।"

अब उसे अपनी हिफाजत के बारे में सोचना था। क्योंकि आग की लपटें अब मकान की ओर बढ़ी चली आ रही थीं और मकान के सामनेवाली गली धुएँ के बादलों में छिप गई थी। हवा के एक झोंके से दीया बुझ गया। घर में अँधेरा हो गया। विनिसियस भागकर सड़क पर आ गया और जिस रास्ते से आया था उसी ओर तेजी से दौड़ने लगा। ऐसा लगता था जैसे आग उसका पीछा कर रही

हो। कभी वह धुएँ के बादल में छिप जाता था और कभी उसके ऊपर जलते हुए मकानों से चिनगारियाँ बरसने लगती थीं। उसके अँगरखे का एक कोना जल उठा। लेकिन उसने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह जान छोड़कर भाग रहा था। क्योंकि अब धुएँ से उसका दम घुटने लगा था। उसके मुँह और फेफड़ों में धुएँ की तीखी कड़वाहट भर गई थी। उसका सिर फटने लगा। उसने सोचा कि आग मेरे पीछे पड़ी है। अब बचकर निकलना मुश्किल है। यहीं कहीं मैं गिर पड़ूँगा और मर जाऊँगा। एकाएक वह बहुत निराश होने लगा। वह पसीने से तर था और आग की लपटों से उसका बदन झुलसा जा रहा था। वह लीजिया को बार बार याद कर रहा था। उसके कपड़े को नाक से लगाकर धुएँ से बचने की कोशिश करते हुए वह किसी तरह अपने को गिरने से बचा सका। सड़क उसे दिखाई ही नहीं दे रही थी। एक शराबी की तरह लड़खड़ाते हुए वह आगे बढ़ा जा रहा था।

सड़क के आखिरी सिरे पर भी धुएँ का एक बड़ा सा बादल दिखाई दे रहा था। अब अगर वह थोड़ी-सी भी देर कर देता तो उसका बचना मुश्किल था। उसका अँगरखा काफी जल गया था। उसने उसे उतार कर फेंक दिया। अब सिर्फ लीजिया के कपड़े से अपना सिर और मुँह ढँककर वह खूब तेजी से दौड़ने लगा। लेकिन जब वह सड़क के अन्त में पहुँचा तो उसने देखा कि वह धुएँ का नहीं बल्कि धूल का गुब्बार था और वहाँ खूब शोर मच रहा था। कुछ लोग खाली मकानों को लूट रहे थे। उनकी आवाज सुनकर विनिसियस उधर ही दौड़ने लगा। उसने सोचा कि शायद वे लोग उसकी कुछ मदद कर सकें। वह बुरी तरह थक गया था। यह उसकी आखिरी कोशिश थी। धीरे-धीरे उसकी आँखों के आगे लाल पर्दा आने लगा और वह हाँफता हुआ जमीन पर गिर पड़ा। कुछ लोगों ने उसे गिरते हुए देख लिया। दो आदमी पानी के बर्तन लेकर दौड़ पड़े। विनिसियस एक साँस में ही बहुत-सा पानी पी गया और बोला, "धन्यवाद, अब मुझे खड़ा कर दो। अब मैं चला जाऊँगा।"

उन लोगों ने थोड़ा पानी उसके सिर पर छिड़का और उसे उठाकर अपने साथियों के पास ले आये, सब उसे घेरकर खड़े हो गये और पूछने लगे कि तुम्हें ज्यादा चोट तो नहीं आई है। उनकी आवाज में एक तरह की मिठास थी, जिससे विनिसियस को कुछ आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "तुम लोग कौन हो?"

"हम लोग यहीं के रहने वाले हैं। हम इधर के मकानों को गिरा रहे हैं ताकि आग हमारे मुहल्ले तक न पहुँच सके।"

"तुम लोगों ने मुझे बचाया है। इसके लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।"

"पड़ोसियों की मदद करना हम अपना धर्म समझते हैं," उनमें से कुछ बोले। अब तक विनिसियस ऐसे ही लोगों के बीच से गुजरा था जो आग का लाभ

उठाकर लोगों को लूटने और मकानों के तहस-नहस करने में लगे थे। इन भले आदमियों को देखकर उसे कुछ संतोष हुआ। वह बोला, "प्रभु ईसा तुम्हारा भला करें। लीनस कहाँ है?"

लेकिन अपने इस प्रश्न का वह कोई उत्तर नहीं सुन सका। क्योंकि वह इतना थक गया था कि फिर से बेहोश हो गया। जब वह होश में आया तो उसने अपने को एक बगीचे में पड़ा पाया। कुछ स्त्री-पुरुष उसको घेरकर खड़े थे। आँखें खोलते ही उसने पूछा, "लीनियस कहाँ है?"

पहले तो उसके प्रश्न का उत्तर किसी ने नहीं दिया। फिर कोई बोला, "वह तो नोमेन्ताना दरवाजे से बाहर निकल गया। शायद दो दिन हुए वह ओस्त्रेनम चला गया है।" विनिसियस को बोलनेवाले की आवाज कुछ पहचानी हुई-सी लगी। विनिसियस ने अपने को कुहनियों के बल उठाते हुए उसकी ओर देखा और दूसरे ही क्षण निराश होकर जमीन पर गिर पड़ा। उसने देखा, सामने क्रिलन खड़ा था। उससे उसने पूछा, "क्या तुमने उन लोगों को देखा है?"

"हाँ, मालिक! बोलो, मेरे लायक क्या सेवा है। तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है, बोलो, मैं किस तरह तुम्हारा बदला चुकाऊँ?"

शाम हो आई थी और अँधेरा भी होने लगा था। लेकिन आसपास जलते हुए मकानों की रोशनी में बगीचा साफ दिखाई दे रहा था। ऐसा लगता था कि शहर के कुछ इलाकों में ही आग नहीं लगी है बल्कि शुरू से आखीर तक पूरा रोम जल रहा है। जहाँ तक नजर जाती थी, आसमान लाल दिखाई देता था, यहाँ तक कि रात की परछाइयाँ भी लाल दिखाई दे रही थीं।

## ३

शहर अपने पूरे विस्तार में जल रहा था। इससे पूरा क्षितिज लाल हो गया था। तभी पूर्णिमा का चाँद अपने पूरे सौन्दर्य के साथ निकल आया। शाम भी तपते हुए ताँबे की एक थाली की तरह लग रहा था। लाल आसमान में एक के बाद एक निकलते हुए तारे भी लाल दिखाई दे रहे थे। आज की रात दूसरी रातों से बिल्कुल भिन्न थी। आज पृथ्वी पर आकाश से अधिक प्रकाश था। शहर का काफी बड़ा हिस्सा ऊँची नीची पहाड़ियों पर बसा था। अब आग वहाँ से बढ़ती हुई शहर के उन निचले हिस्सों तक पहुँच गई थी जहाँ पाँच-पाँच छः-छः मंजिल की इमारतें थीं, जहाँ घनी सड़कों में बाजार और दूकानें थीं, कपड़े, लकड़ी, तेल, अनाज और रुई के गोदाम

थे। शहर में तरह-तरह की अफवाहें उड़ रही थीं। कोई कहता था कि धरती फट गई है और पाताल के देवता जुपिटर की आज्ञा पर संसार को भस्म कर देना चाहते हैं, और कुछ लोग कह रहे थे कि सीजर ने ही शहर को जलवा दिया है ताकि गरीब लोगों की गन्दी वस्तुओं से उठनेवाली दुर्गन्ध समाप्त हो जाय और एक नये नगर को बसाने के लिए जगह निकल आये। इस नगर का नाम नेरोनिया रखा जाने वाला था। कुछ लोग देवताओं से दया की भीख माँग रहे थे और कुछ देवताओं को कोस रहे थे, क्योंकि उन्होंने इस शहर को बरबाद कर डाला था। नगर के बड़े-बूढ़े जुपिटर के मन्दिर की ओर हाथ उठाकर कह रहे थे, "तुम तो संसार के रक्षक हो। अपने शहर और अपने देश की तो रक्षा करो!" जनता का क्रोध विशेष रूप से रोम के उन प्राचीन देवताओं पर उमड़ रहा था जिनका काम इस नगर की रक्षा करना था और जो इस समय निकम्मे सिद्ध हो रहे थे। लोगों ने विरोधी देवताओं की प्रार्थना शुरू कर दी थी। जब कुछ मिस्री पुजारी आइसिस की मूर्ति लेकर उधर से निकले तो भीड़ का बहुत बड़ा हिस्सा उसके रथ के साथ हो गया। फिर लोगों ने जाकर उसे मंगल के मन्दिर में स्थापित कर दिया। वहाँ के पुजारियों ने विरोध किया तो उन्हें मार भगाया गया। इसी तरह दूसरे इलाकों में भी विरोधी देवताओं की पूजा होने लगी।

जगह-जगह बच्चे-बूढ़े और स्त्री पुरुष इकट्ठे होकर देवताओं से प्रार्थना कर रहे थे और तरह तरह की मनौतियाँ मना रहे थे।

## ४

विनिसियस को एक जुलाहे के घर पहुँचाया गया। उसका नाम मैक्रिनस था। उसने विनिसियस को नहलाया-धुलाया और अच्छे कपड़े पहनने को दिये। फिर उसने उसे खाना खिलाया। आराम के बाद जब विनिसियस की शक्ति लौट आई तो उसने कहा कि मैं लीनस को खोजना चाहता हूँ। वह जुलाहा ईसाई था। उसने भी चिलन की बात की पुष्टि की और कहा, कि लीनस कुछ ईसाइयों के साथ आस्ट्रिएनम चला गया है। वहाँ संत पीटर कुछ नये लोगों को इसाई धर्म की दीक्षा देंगे। उस मुहल्ले में रहनेवाले दूसरे ईसाइयों ने भी इस बात को सही बताया। चिलन ने विनिसियस को बचाकर शहर से बाहर निकलने के कई रास्ते बताये और खुद उसकी मदद को तैयार हो गया। विनिसियस पहले तो कुछ हिचकिचाया, लेकिन फिर उसने उसकी बात मान ली। जुलाहा उनके लिए दो खच्चर लाया। दोनों फौरन

वहाँ से चल पड़े। वे लोग नदी के किनारे किनारे या बगीचों में होकर आगे बढ़ आये। जब वे सड़क पर पहुँचे तब सड़क पर भीड़ कम हो गई थी। लेकिन अब गाँव के लोग न मालूम क्यों बहुत बड़ी तादाद में शहर की ओर बढ़ रहे थे। विनिसियस अपने खच्चर पर आगे-आगे था। उसके पीछे चिलन अपने आपसे बातें करता चल रहा था और बड़बड़ा रहा था, "अभी तक जल रहा है, शहर अभी तक जल रहा है! थोड़ी ही देर में धरती के चेहरे पर से इसका नामोनिशान मिट जायगा और फिर दुनिया की राजधानी कहाँ रहेगी? लोग गल्ला और पैसे कहाँ भेजेंगे? किसको दुनिया रो-रोकर कर देगी? संसार की यह राजधानी नष्ट हो जायगी और राजमहल ढह जायगा। रोम संसार का नेतृत्व करता था। अब क्या होगा?"

विनिसियस ने उसे पुकारा, "चलो, चलो न, क्या कर रहे हो वहाँ?"

"रोम को देखकर रो रहा हूँ, मालिक!" चिलन बोला, "कैसा खूबसूरत शहर था यह।"

"जब आग शुरू हुई तब तुम कहाँ थे?"

"मैं मैक्सिमस चौराहे पर एक दूकान पर अपने मित्र यूरिसियस से मिलने जा रहा था कि इतने में आग लगने का हल्ला हुआ। थोड़ी ही देर में आग फैलने लगी और मैं भी अपनी हिफाजत का इंतजाम करने लगा।"

"क्या तुमने कुछ लोगों को मकानों में आग लगाते देखा?"

"अरे, मालिक, मैंने क्या-क्या नहीं देखा! मैंने लोगों को तलवारें लेकर भीड़ से गुजरते देखा, लड़ाइयाँ देखीं, और लोगों को सड़कों पर पैसे लूटे जाते देखा। अगर तुम यह देख लेते तो सोचते कि शहर पर बर्बर लोगों ने हमला कर दिया है और कत्लेआम मचा दिया है। चारों तरफ लोग चीख-चिल्ला रहे थे। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जो खुशी से चीख रहे थे। क्योंकि मालिक, दुनिया में ऐसे भी बहुत से गये-बीते लोग हैं जो रोम के न्यायपूर्ण शासन को नष्ट करना चाहते हैं! लोगों को यह पता ही नहीं कि ईश्वर की इच्छा का किस तरह सम्मान करना चाहिए।"

विनिसियस अपने विचारों में इतना डूबा हुआ था कि उसका ध्यान चिलन की व्यंग्यपूर्ण बातों की ओर नहीं गया। वह बार बार उससे एक ही तरह के सवाल पूछ रहा था, "क्या तुमने लीजिया और दूसरे लोगों को ओस्त्रेनम में देखा था?"

"हाँ हुजूर, मैंने उस सुन्दरता की देवी लीजिया को, उस पुण्यात्मा लीनस को और संत पीटर को वहाँ देखा था।"

"अग्नि-कुंड के पास?"

"जी, हाँ!"

तभी अचानक विनिसियस को लगा कि कहीं यह झूठ तो नहीं बोल रहा है।

उसने अपने खच्चर को रोका और उस बुड्ढे को घूरते हुए कहा, "और तुम वहाँ क्या कर रहे थे ?"

यह सुनकर चिलन घबराया। हालाँकि अन्य लोगों की तरह उसे भी लगता था कि अब रोमन आधिपत्य के दिन लद गये, उनसे डरने की जरूरत नहीं है, लेकिन इस समय वह विनिसियस के सामने अकेला था और उसे यह भी याद था कि विनिसियस उसे एक बार धमका चुका है और ईसाइयों, और खास तौर से लीनस और लीजिया के खिलाफ खुफियागीरी करने से मना कर चुका है।

वह बोला, "मालिक, आखिर आप मुझपर विश्वास क्यों नहीं करते ? मैं भी तो उन लोगों को चाहता हूँ। मैं ओस्त्रेनम इसीलिए गया था कि मैं भी तो आधा ईसाई हूँ ! मैं एक गरीब आदमी हूँ और जब आप यहाँ से चले गये थे तो भगवान जुपिटर की कसम, मेरी हालत इतनी खराब हो गई थी कि भूखों मरते-मरते मेरे प्राण ही निकल गये होते। इस तरह भूख से मजबूर होकर मैं ओस्त्रेनम की दीवार के पास खड़ा होकर भीख माँगा करता था क्योंकि ईसाई लोग दूसरों से ज्यादा गरीब भले ही हों, लेकिन दान खूब देते हैं !"

विनिसियस ने उस समय उसकी बात पर विश्वास कर लिया और जरा नरमी से कहा, "और तुम्हें यह नहीं मालूम कि लीनस इस बीच कहाँ रहता था ?"

"मालिक, इस तरह की बातों को जानने की इच्छा के कारण एक बार मुझे सजा मिल चुकी है और फिर—"

अब वे लोग वेटिकन पर्वत के पास से गुजर रहे थे जो आग की लपटों से चमक रहा था। वहाँ से वे लोग नदी पार करने के लिए दाहिनी तरफ मुड़ गये। अचानक चिलन ने अपने खच्चर का लगाम खींचकर कहा, "मालिक, एक बात है।"

"क्या है, बोलो ?"

"बात यह है कि अभी तक ईसाइयों के खिलाफ़ सरकारी तौर पर कुछ नहीं कहा गया। लेकिन यहूदियों ने अफवाहें उड़ाना शुरू कर दिया है और शहर कोतवाल से शिकायत भी की है कि ईसाई गड्हे को एक पवित्र जानवर मानते हैं, बच्चों को मार डालते हैं और ऐसे धर्म का प्रचार करते हैं जिसका सिनेट ने समर्थन नहीं किया है। उन्होंने ईसाइयों पर हमले भी शुरू कर दिये हैं और वे उनके मकानों पर इस तरह पत्थर फेंकते हैं कि उन्हें सिर छिपाने की जगह नहीं मिलती।"

"तुम्हारा मतलब क्या है ?"

"यही कि टाइबर के इस पार के इलाके में यहूदियों के कई मन्दिर और प्रार्थनाभवन है। लेकिन ईसाइयों को अपनी पूजा-प्रार्थना छिपकर करनी पड़ती है। उन्हें शहर के बाहर के टूटे-फूटे झोपड़ों या गड्ढों में छिपकर पूजा करनी पड़ती है। अब कुछ ईसाइयों ने अपनी प्रार्थना के लिए पत्थर की उन खदानों को चुना है जहाँ

से नीरो के महल के लिए पत्थर जाते हैं। इसके अलावा उन्होंने नदी किनारे मकानों और वेटिकन की झोपड़ियों में भी प्रार्थना के लिए इकट्ठा होना तय किया है। शहर में आग लगी है और ईसा के सच्चे अनुयायी अपनी पूजा में लगे हैं। वहाँ हमें किसी गड्ढे वगैरह में बहुत से ईसाई अब भी प्रार्थना करते हुए मिलेंगे। आप वहीं चलकर उन लोगों को खोजिये। वह हमारे रास्ते में भी पड़ेगा।"

"लेकिन तुम तो अभी कह रहे थे कि लीनस ओस्त्रेनम गया है!" विनिसियस ने चौंककर कहा।

"असल में मैं चाहता हूँ कि जहाँ-जहाँ लीजिया के होने की सम्भावना हो, उन सब जगहों को एक बार देख डाला जाय। वे लोग इस समय सुरंगों में छिपकर प्रार्थना कर रहे होंगे। किसी भी हालत में हमें उनका सही-सही पता तो मालूम हो जायगा।

बिना किसी संकोच के चिलन बायीं ओर मुड़ गया। एक सँकरे रास्ते से आगे बढ़ते-बढ़ते वह काफी सँकरी जगह में जा पहुँचा जहाँ अँधेरा छाया हुआ था। इस अँधेरे में कई दीये टिमटिमा रहे थे। चिलन बोला, "यहीं कहीं हैं वे लोग।"

"हाँ, गाने की आवाज तो मुझे भी सुनाई दे रही है," विनिसियस बोला। सचमुच, आगे के टेढ़े मेढ़े अँधेरे रास्ते में आगे बढ़ने पर ईसाइयों के गाने की आवाज साफ होती जा रही थी, धीरे-धीरे दीये आँखों से ओझल होते जा रहे थे। लेकिन अब आसपास से आनेवालों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। चिलन ने अपने खच्चर पर से उतर कर एक लड़के को पास बुलाया और कहा, "बेटा, मैं एक पादरी हूँ। यों कहो, कि एक बिशप हूँ तुम जरा हमारे खच्चरों की निगरानी करो। मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा और तुम्हारे सारे पाप क्षमा कर दूँगा।" लड़के को खच्चर सँभला कर वे दोनों खदान में आगे बढ़ गये। दीयों की हल्की रोशनी में रास्ता टटोलते हुए वे किसी तरह आगे बढ़े जा रहे थे। गलियारा आगे चलकर जमीन के नीचे एक बड़ी-सी खदान में खत्म होता था। यहाँ काफी उजाला था। दीयों और मोमबत्तियों के अलावा मशालें भी जल रही थीं। लोग प्रार्थना की मुद्रा में झुककर बैठे थे। लेकिन उनके बीच विनिसियस को न लीजिया दिखाई दी और न लीनस वगैरह दिखाई दिये। लोगों के चेहरों पर भय और आशा के चिन्ह थे। दीयों की रोशनी में आसमान की ओर उठी हुई उनकी आँखें चमक रही थीं। उनमें से कई के माथे पर पसीना आ गया था। कुछ लोग भजन गा रहे थे और कुछ ईसा का नाम स्मरण कर रहे थे, लेकिन लगता था जैसे सब लोग किसी आश्चर्यजनक घटना की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अचानक गाना रुक गया और सामने एक पत्थर को हटाकर बनाये गये दरवाजे से क्रिसपस ने प्रवेश किया। उसका चेहरा उतरा हुआ था और आँखों से

धर्मजिज्ञासुओं के प्रति श्रद्धा टपक रही थी। उसने आकर भीड़ के सामने क्रास का चिह्न बनाया और फिर अजीब तीखी-सी आवाज में जोरों से कहना शुरू किया, "अंतिम समय आ चुका है! अपने पाप के लिए क्षमा माँग लो! इस आरामतलब और व्यभिचारी शहर पर प्रभु का क्रोध बरस पड़ा है। यह नया बेबिलन बनना चाहता है। इसीलिए आग में जलकर नष्ट हो रहा है। कयामत का दिन आ पहुँचा है। प्रभु ने कहा था कि जब तुम मुझे चाहोगे तो मैं फौरन चला आऊँगा। लेकिन अब वह हमारे न्यायकर्ता के रूप में आ रहा है और पापियों को कठिन दंड देना चाहता है। अब इस संसार का और इसके साथ-साथ इसके पापियों का अन्त समय आ गया है। अब हम ईश्वर की दया के पात्र नहीं बन सकेंगे। आसमान से तारे गिर रहे हैं और सूरज अपना प्रकाश खोता जा रहा है। हे प्रभो, मेरे ईसा, मैं जानता हूँ कि यह प्रभु के अवतरण का समय है! मैं जानता हूँ!"

वह रुक गया और अपना सिर उठाकर सामने की ओर देखने लगा जैसे वह दूर किसी भयावनी चीज को देख रहा हो। अचानक पूरी गुफा किसी धमाके से गूँज उठी। फिर दूसरा और तीसरा धमाका हुआ। अब जलते हुए शहर में बड़ी-बड़ी इमारतें जलकर ढह रही थीं। यह उन्हीं के गिरने की आवाज थी। लेकिन ईसाइयों ने सोचा कि सचमुच कयामत का दिन आ गया है, सब लोग डर गये। कुछ चीख पड़े और कुछ बुरी तरह काँपने लगे। कुछ लोगों ने यह समझा कि धरती फट रही है और उसकी दरारों से बड़े भयानक जन्तु निकलनेवाले हैं और उन्होंने हाथों से अपने चेहरे छिपा लिये। कुछ लोग सिसकते हुए बोले, "हे ईसा, हम पर दया करो, दया करो!" कुछ लोग अपने पाप गिनाने लगे और दूसरे कसकर अपने साथियों से चिपट गये। लेकिन कुछ चेहरे ऐसे भी थे जो बिल्कुल शांत और भयरहित थे। इतने में एक बार फिर क्रिसपस की आवाज गुफा में गूँजने लगी।

"सांसारिक मोह-माया छोड़ दो, क्योंकि अब तुम्हारे पैरों के नीचे की जमीन खिसकनेवाली है। नाते-रिश्ते का मोह छोड़ दो, क्योंकि ईश्वर उन लोगों को दंड देगा जो उससे अधिक अपने बाल-बच्चों को प्यार करते हैं। ईश्वर को भूलकर संसार के माया-जाल में फँसनेवालों का नाश हो! नाश हो उन लोगों का जो धन बटोर कर रखते हैं। नाश हो उनका जो कृपण और हृदयहीन हैं!"

फिर से एक जोर का धमाका हुआ। पूरी गुफा काँप उठी। लोगों ने अपने सिर पर हाथों से क्रास के चिन्ह बना लिये, कुछ लोग चीख पड़े, "हे भगवान, हे प्रभु ईसा!" तभी एक बच्चा रोने लगा। अचानक एक शांत गम्भीर स्वर सुनाई दिया, "सबका कल्याण हो!" ये संत पीटर थे, जो अभी-अभी आये थे। पीटर को देखकर लोगों का भय जाता रहा। सब खड़े हो गये। जो उनके पास थे उन्होंने ललककर उनके पैर पकड़ लिये। पीटर ने हाथ फैलाकर सबको आशीष दिया।

"तुम लोग इस तरह बेचैन क्यों हो ? जब तक अंतिम घड़ी नहीं आ जाती, तब तक भला तुममें से कौन है जो यह कह सकता है कि आगे क्या होगा। परमात्मा ने बेबिलन को भस्म कर दिया, उस बेबिलन को जिसने दुनिया को अनाचार की मदिरा में डुबाने की कोशिश की थी। लेकिन तुम लोग जो धर्म की दीक्षा से पवित्र हो चुके हो, जिनके पाप परमात्मा ने क्षमा कर दिये हैं तुम पर सदा उसकी दया की छाया रहेगी। और अंत समय में तुम्हारे ओठों पर उसी का नाम रहेगा। ईश्वर तुम्हें शांति दे !"

क्रिसपस की धमकियों और चीख-चिल्लाहट के बाद पीटर के इन शब्दों ने जैसे घाव पर मरहम का काम किया। लोगों के मन में ईश्वर से डरने के बजाय उसके प्रति प्रेम और श्रद्धा उत्पन्न हुई।

हर तरफ से लोग पुकारने लगे, "हम आपकी शरण में हैं, संत पीटर !" जो लोग पास आ खड़े थे, वे पीटर के पैरों पर गिर पड़े और कहने लगे, "इस सर्वनाश के समय में हमें बेआसरे करके न जाइये !" विनिसियस ने आगे बढ़कर उनके अँगरखे का एक सिरा अपनी आँखों से लगाते हुए कहा, "महात्मा, मेरी सहायता कीजिये ! मैं उसे आग की लपटों के बीच और भीड़ के रेलों में खोजता रहा हूँ। लेकिन वह मुझे कहीं नहीं मिली। लेकिन, मुझे उम्मीद है कि आप मुझे उससे मिला देंगे।"

संत पीटर ने विनिसियस के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, "ईश्वर पर भरोसा करो और आओ, मेरे साथ आओ।"

## ५

आग अब तेजी से महल की ओर बढ़ता जा रही थी। टिजेलिनस ने सारे सिपाहियों को इकट्ठा कर लिया था। एक के बाद एक आदमी संदेश लेकर सीजर के पास भेजा जा रहा था, यह सूचित करने के लिए कि अग्निकांड के इस गौरवमय दृश्य को देखने के लिए फौरन आ जाइये। आग पूरे शहर में फैल चुकी थी। नीरो हालाँकि रोम के लिए चल पड़ा था, लेकिन अंधेरा होने के पहले वहाँ नहीं पहुँचना चाहता था—वह रात के अँधेरे में उस जलते हुए शहर का सौन्दर्य देखना चाहता था। इसलिए वह रास्ते में अलबाना झील के पास रुक गया था। फिर उसने एलीटूरस नामक एक अभिनेता को अपने खेमे में बुलाया और उससे इस प्रश्न पर विचार-विमर्श करना

शुरू किया कि अपनी कविता की पंक्ति पढ़ते समय उसे अपने दोनों हाथ आसमान की ओर उठा देने चाहिये या सिर्फ एक हाथ उठाना चाहिये। फिर उसने पेट्रोनियस से पूछा कि इस अग्निकांड के बारे में जो कविता तैयार की जाय उसमें देवताओं के विरुद्ध काफी जोर के साथ कहा जाय या नहीं। क्या ऐसा करना उसके लिए स्वाभाविक माना जायगा जो अपने सबसे प्यारे शहर को अपनी आँखों के आगे नष्ट होते हुए देख रहा हो।

जब तक शहर की दीवारों के पास पहुँचा तब तक आधी रात बीत चुकी थी, वह अपने पूरे शाही ठाट-बाट के साथ जलते हुए रोम की ओर बढ़ रहा था। उसके पीछे दरबारियों, सिनेटरों, सैनिक नेताओं, नौकर-चाकर और गुलामों के अलावा औरतों-बच्चों की भीड़ थी। सम्राट नगर-प्रवेश कर रहा था! उसके सम्मान में सोलह हजार शाही सैनिक सड़क के किनारे कतार बाँधे खड़े थे। सम्राट के जुलूस को देखकर आसपास खड़ी जनता ताने और गालियाँ दे रही थी। लोग दाँत पीस रहे थे और फुसफुसा रहे थे। लेकिन कोई हाथापाई करने की हिम्मत नहीं कर सकता था।

कुछ जगह तो लोगों ने सम्राट के जुलूस का हार्दिक स्वागत भी किया। लेकिन ऐसे लोग वही थे जिनका इस अग्निकांड में कोई नुकसान नहीं हुआ था और जिन्हें इस बात की उम्मीद थी कि अब राज्य की ओर से खाना, कपड़ा और पैसे बाँटे जायेंगे। लेकिन तभी टिजेलिनस के आदेश से तुरही और सिंहे बज उठे और लोगों का शोर उनमें डूब गया। पहला दरवाजा पार करने के बाद नीरो अचानक रुक गया और सिसकते हुए बोला, "हाय, इन बेघर-बार लोगों का यह बेघरबार बादशाह आज की रात अपना दुख के भार से लदा सिर कहाँ छिपायेगा?"

फिर वह आगे बढ़कर एपियन पुल के पास इस अवसर के लिए विशेष रूप से निर्मित मंच पर चढ़ने लगा। उसके साथ साथ उसके मित्र और गायकों का समूह भी अपने वाद्य-यंत्रों के साथ मंच पर चढ़ गया।

अपने दिव्य प्रतिभासम्पन्न सम्राट के मुख से कुछ बहुत ही सुन्दर और प्रेरणापूर्ण शब्द सुनने की आशा में सब लोग खामोश हो गये। लेकिन वह अपने कंधों पर नीला उत्तरीय डाले बहुत शांत और गम्भीर होकर जलते हुए रोम को देख रहा था। तभी तरपनोस ने धीरे से बीन उसके हाथ में थमा दी। नीरो ने जलते हुए आसमान की ओर आँखें उठायीं जैसे वह किसी प्रेरणा की प्रतीक्षा में हो।

दूर खड़ी जनता मंच पर अपने बादशाह की ओर संकेत कर रही थी, जो आग की लपटों के कारण बिल्कुल लाल-सुर्ख लग रहा था। ऊँची-ऊँची लपटें किसी भयानक सर्प की जिह्वाओं की भाँति लपलपा रही थीं। सारी इमारतें जल रही थीं। पुराने ऐतिहासिक मन्दिर जल रहे थे। यह रोम का अतीत जल रहा था, और

सीजर बीन हाथ में लिये गम्भीरता से खड़ा था। वह अपनी उस राजधानी के बारे में नहीं सोच रहा था जो उसकी आँखों के आगे बरबाद हो रही थी। वह तो सोच रहा था कि इस महान विनाश के क्षण में मुझे कैसे शब्द कहने चाहिये और किस हाव-भाव से कहने चाहिये।

उसने अपनी भुजा फैला दी और एक प्राचीन कवि के शब्दों को दोहराया, "ओ मेरे रोम, मेरे हृदय के शृंगार! मेरे पूर्वजों के पवित्र नीड़!"

लेकिन उस खुली जगह में और उस शोर-शराबे के बीच नीरो की महीन आवाज न मालूम कहाँ खो गई। फिर भी उसके दरबारियों और सिनेटरों ने आदर से सिर झुका दिया और बहुत ध्यान से सुनना शुरू किया। नीरो काफी देर तक गाता रहा। कभी-कभी उसकी आवाज में थोड़ा-सा दर्द मालूम हो जाता था। जब वह रुकता था तो दूसरे गानेवाले उसकी गीत की कड़ी को दोहराते थे और नीरो एक खास अदा में अभिनेताओं के पहनने योग्य अपनी पोशाक को ठीक करता था और बीन बजाते हुए गाने लगता था। जब उसका गाना खत्म हो गया तो धीरे-धीरे उसके चेहरे का भाव बदलने लगा। अपनी जन्मभूमि के इस विनाश का उसके मन-पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। लेकिन अपने वेदनापूर्ण शब्दों के प्रभाव से वह इतना भावुक हो उठा कि अचानक उसकी आँख गीली हो गईं। उसने बीन फेंक दी जो झनझनाकर एक तरफ आ गिरी और फिर वह अपने महल की पत्थर और काँसे की बनी हुई गौरवपूर्ण मूर्तियों के अंदाज में खड़ा रहा।

मंच पर उपस्थित लोगों ने जोरों से तालियाँ बजायीं, जिसका जवाब दूर खड़ी हुई भीड़ ने गुस्से से चीखकर दिया। अब किसी को यह शक नहीं रह गया था कि सीजर ने जानबूझकर शहर में आग लगवाई थी ताकि यह दृश्य उसको देखने को मिल सके और वह इसपर कविता लिख सके। हजारों आदमियों को इस तरह चीखते-चिल्लाते देखकर नीरो ने बहुत दुखी होकर अपने मित्रों की ओर देखा। उसके चेहरे पर एक मुस्कान थी जैसी कि उस आदमी के चेहरे पर होती है जो लोगों के अन्याय का शिकार होता है। वह बोला, "देखो, ये रोम के नागरिक हैं और किस तरह मेरा सम्मान कर रहे हैं! कलाकार का ये इस तरह सम्मान करते हैं!"

"बदमाश हैं सब, हुजूर, सिपाहियों को हुक्म दीजिये कि इन लोगों को मार भगाये!"

नीरो टिजेलिनस की ओर मुड़कर बोला, "क्यों, सिपाहियों पर तो मैं भरोसा कर सकता हूँ न?"

"जी हाँ, महाराज!" सेनापति ने उत्तर दिया।

लेकिन पेट्रोनियस ने कंधे सिकोड़ते हुए कहा, "हाँ, लेकिन, सिपाहियों की

तादाद काफी नहीं है। इस मंच पर तो आप पूरी तरह सुरक्षित हैं। लेकिन जनता को बहलाना जरूरी है!"

दो-तीन और दरबारियों ने उसका समर्थन किया। तब तक भीड़ में शोर और बढ़ता जा रहा था। लोग पत्थर, डंडे, लोहे की छड़ें और इसी तरह की चीजों को बटोरकर हमले के लिये तैयार होने लगे। नीचे से शाही सेना के सरदारों ने सूचना भेजी कि भीड़ का दबाव बढ़ रहा है। सिपाही हल्के पड़ते जा रहे हैं। सिपाहियों की समझ में नहीं आ रहा है कि उन्हें क्या करना चाहिये, क्योंकि जनता पर आक्रमण करने का आदेश उन्हें अभी नहीं मिला था।

नीरो बोला, "ओ रोम के पवित्र देवताओ, यह कैसी रात है! एक तरफ तो आग लगी हुई है और दूसरी तरफ जनता बेकाबू होती जा रही है।" और वह बराबर इस महत्वपूर्ण अवसर को शोभा दें, ऐसे सुन्दर और गम्भीर शब्दों को खोजने में लगा था। लेकिन जब उसने अपने दरबारियों के डरे हुए और परेशान चेहरे देखे तो वह भी हिम्मत खो बैठा और बोला, "मेरा काला लबादा कहाँ है? क्या सचमुच लड़ाई होनेवाली है?"

अब टिजेलिनस का स्वर भी उतना दृढ़ नहीं था। वह कहने लगा, "महाराज, मुझसे जो कुछ हो सकता था वह मैंने किया, लेकिन अब भी संकट टला नहीं। आप जरा इन लोगों से कुछ कह दीजिये। जरा अपनी प्रजा को हिम्मत बँधाइये और कुछ वादे कर दीजिये।"

"क्या? मैं, सीजर, इन तुच्छ लोगों से बात करूँ? मेरी जगह कोई और बात कर ले, बोलो, तुममें से कौन तैयार है?"

"मैं तैयार हूँ!" पेट्रोनियस ने बहुत शांति से कहा।

"जाओ, मित्र। तुम हर संकट के समय मेरे काम आते हो। जाओ जो उचित समझो, इन पतितों को कह दो।"

पेट्रोनियस ने नीरो के दरबारियों की ओर देखा और कहा, "ये सब सिनेटर मेरे साथ जायेंगे।" यह कहकर वह मंच की सीढ़ियाँ उतरने लगा। जिन लोगों की ओर उसने संकेत किया था, उनके चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लेकिन उसे शांत देखकर उन्होंने भी नीचे उतरने की हिम्मत की। पेट्रोनियस ने नीचे उतरकर एक सफेद घोड़ा मँगवाया, उस पर चढ़कर अपने साथियों के साथ वह जनता की भीड़ की ओर बढ़ चला। वह बिल्कुल निहत्था था। सिर्फ हमेशा की तरह हाथी-दाँत की एक छड़ी उसके हाथ में थी। वह घोड़े को भीड़ के बीच बढ़ा ले गया। अब लोगों ने और भी जोरों से चीखना शुरू किया। वे अपने लाठी-डंडे और तलवारें उसकी ओर घुमाने लगे। कुछ लोगों ने झपटकर उस पर और उसके घोड़े पर चोट करना चाहा। लेकिन वह चुपचाप शांति से अपनी जगह जा खड़ा हुआ।

कभी-कभी वह अपनी छड़ी से आगे बढ़ते हुए लोगों को धीरे से हटा देता था। अन्त में लोगों ने उसे पहचान लिया और कई लोग एकसाथ बोले, "यह तो पेट्रोनियस है!"

उसका नाम भीड़ में इस छोर से उस छोर तक पहुँच गया। लोग पहले से अधिक शांत हो गये। उसने अपना सफेद लबादा उतार कर हवा में हिलाना शुरू किया, ताकि लोग समझ जायें कि वह उनसे बात करने आया है। थोड़ी ही देर में लोग खामोश हो गये। पेट्रोनियस ने गम्भीर स्वर में कहा, "रोम के नागरिको, मेरी बात ध्यान से सुनो! पास में जो लोग खड़े हैं, वे अपने पीछेवाले लोगों तक मेरी बात पहुँचा दें। और, जरा आप लोग इन्सानों की तरह पेश आइये, जंगली जानवरों की तरह नहीं। शहर फिर से बसाया जायगा। महल के बाग-बगीचे जनता के लिए खोल दिये जायँगे। कल से अनाज, शराब, तेल वगैरह मुफ्त बँटना शुरू हो जायगा। इसके बाद सीजर की कृपा से शहर में ऐसे उत्सव होंगे जैसे आज तक किसी ने नहीं देखे होंगे। रोज दावतें हुआ करेंगी। जनता को पहले से ज्यादा आराम मिलेगा!"

उसकी बात सुनकर लोग आपस में फुसफुसाने लगे। जो कुछ उसने कहा था, वह देखते-देखते पूरी भीड़ को मालूम हो गया और पेट्रोनियस ने उसी तरह अपनी बाँह उठाकर फिर से दोहराया, "हाँ, मैं वादा करता हूँ कि तुम लोगों के खाने-पीने का पूरा इन्तजाम किया जायगा।"

यह कहकर पेट्रोनियस ने अपना घोड़ा घुमाया। एक-दो आदमियों ने उसका घोड़ा रोकने की कोशिश की। लेकिन उसने अपनी छड़ी से आहिस्ते से उन्हें अलग कर दिया और फिर वह सिपाहियों के पास जा खड़ा हुआ।

मंच पर जो लोग खड़े थे उन्हें आशा नहीं थी कि ऐसी खूंखार भीड़ से बचकर पेट्रोनियस वापस आ सकेगा। जब नीरो ने उसे ऊपर आते देखा तो आगे बढ़कर उसका स्वागत किया और पूछा, "क्यों, वहाँ क्या हुआ? क्या वे लोग लड़ना चाहते हैं?"

पेट्रोनियस बोला, "उफ्, इन जंगलियों के बीच कैसी बदबू आती है! इतनी ही देर में मेरी तो नाक फटने लगी!" फिर उसने सीजर की ओर मुड़कर कहा, "मैंने उन लोगों से वादा किया है कि राज्य की ओर से खाना, कपड़ा और शराब बाँटी जायगी। खेल दिखाये जायेंगे और शाही बाग-बगीचों में रहने की छूट दे दी जायगी। बस फिर क्या था, वे लोग आपकी जयजयकार करने लगे। लेकिन उफ् कितनी बदबू आती है इन लोगों के बीच।"

परन्तु तभी टिजेलिनस कहने लगा, "मेरे सिपाही तो तैयार खड़े थे। अगर तुम बेकार ही उन लोगों को मनाने की कोशिश न करते तो मेरे सिपाही एक क्षण

में उनकी अक्ल दुरुस्त कर देते। महाराज, आपने मुझे उन लोगों से निपटने का मौका नहीं दिया। वरना—"

पेट्रोनियस ने एक क्षण उसकी ओर देखा और कहा, "अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। चाहो तो कल अपने मन की मुराद पूरी कर सकते हो!"

"नहीं-नहीं।" सीजर ने कहा, "मैं अपने बगीचे खुलवा दूँगा और कल से खाना बँटवाऊँगा। धन्यवाद, पेट्रोनियस, तुमने बहुत ठीक किया, मैं उनके लिए तमाशे कराऊँगा और आज शाम को जो कविता मैंने तुम्हें सुनाई थी वह मैं खुले-आम सुनाऊँगा।" यह कहते-कहते उसने पेट्रोनियस के कन्धे पर हाथ रख दिया और एक क्षण रुककर कहा, "अच्छा, ईमानदारी से बताओ, मैं तुम्हें कैसा लगता हूँ?"

"आप इस अवसर के योग्य हैं और यह अवसर आपके योग्य है।" पेट्रोनियस ने उत्तर दिया।

नीरो ने जलते हुए शहर की ओर मुड़कर कहा, "आओ, एक बार फिर हम इसे देख लें और पुराने रोम को अलविदा कहें!"

## ६

संत पीटर के शब्दों से ईसाइयों की कुछ हिम्मत बँधी। एक-एक करके सब अपने खेमे छोड़-छोड़कर अस्थायी झोपड़ों में रहने के लिए जाने लगे। कुछ लोग टाइबर पार के इलाके में चले गये, क्योंकि उन्होंने सुना था कि हवा ने अपना रुख बदल दिया है और आग का फैलना बन्द हो गया है।

पीटर भी विनिसियस और चिलन के साथ गुफा से बाहर आ गये। लोगों ने उन्हें घेर लिया और उनके हाथ और वस्त्रों को चूमना शुरू किया। माताओं ने अपने बच्चों के सिर उनके चरणों में झुका दिये। कुछ लोग उनके साथ हो लिये और कुछ लोग अँधेरे में दीया लेकर उन्हें रास्ता दिखाने लगे। जब वे खुले मैदान में आये तो उन्होंने देखा कि सामने रोम जल रहा था। पीटर ने तीन बार क्रास का चिह्न बनाया और विनिसियस से कहा, "डरो मत, उस मजदूर की झोपड़ी पास ही है। वहीं लीजिया हमें लानस और अपने वफादार नौकर यूरसस के साथ मिलेगी। ईश्वर उसे तुमको सौंपना चाहता है और इसी कारण तुम्हारे लिए उसने उसकी रक्षा की है।" विनिसियस का गला भर आया। उसने झुककर संत के पैर पकड़ लिये। लेकिन वह कुछ कह नहीं सका। पीटर समझ गये कि वह उन्हें धन्यवाद देना चाहता है। इसलिए उसे रोकते हुए बोले, "मुझे नहीं, ईसा को धन्यवाद दो।"

चिलन पीछे-पीछे आ रहा था। वह बोला, "सचमुच ये बहुत बड़े संत हैं, लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आ रहा है कि इन खच्चरों का क्या किया जाय ?"

"इन्हें मैक्रिनस को वापस लौटा आओ," विनिसियस बोला। फिर वहाँ से वे लोग दाहिनी तरफ पहाड़ियों की ओर मुड़ गये। रास्ते में विनिसियस कहने लगा, "महात्मन, मुझे भी आप धर्म में दीक्षित कर लीजिये, ताकि मैं अपने को ईसा का सच्चा सेवक कह सकूँ। मुझे ईसा पर पूरी श्रद्धा है। मुझे बपतिस्मा दे दीजिये, क्योंकि अब मैं पूरे मन से ईसाई होना चाहता हूँ। मैं ईश्वर के आदेशों का पालन करूँगा। आप बताइये कि मुझे क्या-क्या करना चाहिए।"

"हर आदमी को प्यार करो और उसे अपने भाई की तरह मानो। इसी तरह तुम ईश्वर की सेवा कर सकोगे।"

जिस मजदूर के यहाँ ये लोग जा रहे थे, उसकी झोपड़ी बड़ी अजीब-सी थी। वह एक गुफा की तरह थी। उसके पीछे एक चट्टान थी और आगे मिट्टी की एक दीवार खड़ी करके उसपर टट्टर लगा दिया गया था। बाहर से दरवाजा बन्द था। लेकिन जो थोड़ी सी खुली हुई जगह रह गई थी उसमें से अन्दर का हिस्सा नजर आ रहा था। अन्दर अँगीठी में आग जल रही थी। आगन्तुकों की आहट पाकर एक विशालकाय व्यक्ति बाहर आया। वह यूरसस ही था। पीटर को देखकर उसने झुककर नमस्कार किया। फिर उसने विनिसियस को भी पहचान लिया और उसका हाथ अपने ओठों से लगाते हुए कहा, "आप भी आ गये मालिक, आइये! ईश्वर की कितनी कृपा है! आपको देखकर मालकिन कितनी खुश होंगी!"

उसने दरवाजा खोल दिया। सब लोग अन्दर आ गये। लीनस बीमार था और एक कोने में पुआल पर लेटा था। उसका चेहरा सूख गया था और भौंहें सफेद हो चली थीं। लीजिया उसके पास ही अँगीठी के करीब बैठी थी और शाम के भोजन के लिये मछली बना रही थी। वह अपने काम में इतनी मशगूल थी कि उसने आने-वाले की ओर ध्यान ही नहीं दिया। लेकिन जब उसके पास जाकर विनिसियस ने उसे पुकारते हुए अपनी बाँहें फैला दीं तो वह चौंककर उठ खड़ी हुई। उसके चेहरे पर आश्चर्य और आनन्द की रेखाएँ उभर आईं। वह बिना कुछ बोले उस बच्चे की तरह जो एक लंबे समय के बाद अपने माता-पिता से मिलता है, विनिसियस की बाँहों में बँध गयी। विनिसियस ने अपनी भुजाओं को कस लिया और फिर उसके सिर को अपने दोनों हाथों में लेते हुए उसके माथे और उसकी आँखों पर चुम्बनों की वर्षा कर दी।

विनिसियस ने उसे बताया कि किस तरह वह एन्टियम से भागा हुआ रोम आया और उसे खोजता फिरा। जब तक सन्त पीटर ने उसे उसका पता नहीं दिया, तब तक वह उसके लिए कितना परेशान था। वह कहने लगा, "लेकिन अब मैंने

तुम्हें पा लिया है और अब तुम्हें मैं यहाँ नहीं रहने दूँगा। मैं तुम्हें बचाऊँगा। तुम सबको बचाऊँगा। लीजिया, प्रिये, तुम मेरे साथ एन्टियम चलोगी न? वहाँ से हम सिसिनी के लिए रवाना हो जायेंगे। अब मेरी सारी जमीन-जायदाद और मकान, सब तुम्हारे हैं। सिसिली में ही हमें ओलस का परिवार भी मिल जायेगा। मैं तुम्हें पोम्पोनिया को सुपुर्द कर दूँगा और फिर कायदे से उसके हाथ से तुम्हें प्राप्त करूँगा। तुम चलोगी न? बोलो! अब तो तुम्हें मुझसे कोई डर नहीं है? अभी धर्म की दीक्षा प्राप्त करके मैं पवित्र नहीं हुआ हूँ। लेकिन तुम संत पीटर से पूछ लो। मैंने उनसे कहा है कि मैं ईसाई बनना चाहता हूँ। तुम मुझपर विश्वास करो। मैं तुम सब लोगों का विश्वास चाहता हूँ।"

लीजिया उसकी बातें सुनती रही और प्रसन्नता से उसका चेहरा खिलता रहा। सिसिली के शांत वातावरण में पहुँच जाना सबके लिए सुखदायी होगा। अगर विनिसियस ने उसी से चलने को कहा होता तो शायद वह हिचकिचाती क्योंकि वह संत पीटर और लीनस को छोड़ना नहीं चाहती थी। लेकिन विनिसियस कह रहा था कि मेरी सारी जमीन-जायदाद और मकान तुम्हारे हैं। लीजिया ने झुककर उसका हाथ चूम लिया।

फिर अचानक वह सकुचा उठी और उसके चेहरे पर लाज की लाली फैल गई। विनिसियस ने पीटर की ओर मुड़कर कहा, "रोम को सीज़र के हुक्म से जलाया गया है। और पता नहीं अब वह अपने सिपाहियों के हाथ कितने लोगों को मौत के घाट उतरवायेगा! यह किसे पता है कि इस आग के बाद क्या नहीं होगा! गृह-युद्ध, अकाल, हत्याएँ, न मालूम क्या-क्या!"

पीटर ने कहा, "पाप का घड़ा भर चुका है। अब जो मुसीबतें आयेंगी उनके बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता—हम पर संकट का जैसे सागर उमड़ पड़ेगा!" फिर उन्होंने लीजिया की ओर संकेत करते हुए कहा, "इस बच्ची को अब तुम्हीं सँभालो, ईश्वर ने इसे तुम्हें ही दिया है। लीनस और यूरसस भी तुम्हारे साथ जायेंगे।"

लेकिन विनिसियस अब तक संत पीटर से बहुत प्रभावित हो चुका था और उन्हें चाहने लगा था। वह बोला, "लेकिन मैं आपको यहाँ अकेले नहीं छोड़ूँगा!"

"इस दयालुता के लिए ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे। लेकिन क्या तुम्हें यह नहीं मालूम है कि प्रभु ईसा ने मुझे तीन बार आज्ञा दी थी, मेरे अनुयायियों, की रक्षा करना! लेकिन अब तुम कहते हो कि तुम यहाँ नहीं रहने दोगे। पर भला यह तो बताओ कि संकट के समय मैं इन लोगों को अकेला छोड़कर कैसे जा सकता हूँ?" लेकिन लीनस ने अपना बीमार चेहरा उनकी ओर उठाकर कहा, "मुझे आप क्यों भेज रहे हैं? क्या मैं भी आपके साथ नहीं रह सकता?" विनिसियस कुछ सोच में पड़

गया। फिर अचानक उसने लीजिया का हाथ अपने हाथ में लिया और अपने सैनिक स्वर में कहने लगा, "मेरी बात सुनिये ! संत पीटर, लीनस, लीजिया सब कोई सुनो, असल में मैंने एक इन्सान के रूप में जो कुछ सोचा वही कह दिया। लेकिन मुझे लगता है कि मैंने गलती की। असल में सोचने-समझने का मेरा पुराना तरीका अभी पूरी तरह से बदला नहीं है। लेकिन मैं ईसा को प्यार करता हूँ और उनकी सेवा करता हूँ। इसलिए मैं शपथ लेता हूँ कि मैं भी अपने भाइयों को इस संकट की घड़ी में अकेला छोड़कर नहीं जाऊँगा।" यह कहकर वह घुटनों के बल बैठ गया और आसमान की ओर बाँहें फैलाकर बोला, "हे प्रभु, क्या अब भी मुझमें ज्ञान नहीं आया ? क्या अब भी मैं आपकी सेवा के योग्य नहीं हूँ ?"

उसके हाथ काँप रहे थे। आँखों में आँसू आ गये थे। पीटर ने पत्थर का एक घड़ा उठाया और उसके पास आकर गम्भीर स्वर में कहा, "लो, मैं इसी समय तुम्हें परम पिता परमात्मा और प्रभु ईसा के नाम पर धर्म की दीक्षा देता हूँ। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे !"

वह छोटी-सी झोपड़ी एक विचित्र आध्यात्मिक प्रकाश से भर उठी। उन्हें लगा जैसे वे लोग स्वर्ग का संगीत सुन रहे हैं, उनके सिर पर चट्टान की छत खुल गई है। देवदूत उनकी ओर बढ़े आ रहे हैं। आसमान में जैसे एक पवित्र क्रास चमक रहा है और ईसा के वे हाथ उन्हें आशिष दे रहे हैं, जिनमें सूली पर चढ़ने के कारण छेद हो गये थे।

झोपड़ी से कुछ दूर जलते हुए मकान ढह रहे थे और लोगों का शोर बढ़ रहा था।

## ७

जनता के लिए शाही बाग-बगीचों के दरवाजे खोल दिये गये थे। लोगों ने बगीचों के आसपास अपने खेमे गाड़ रखे थे। जिसको जहाँ जगह मिली थी वह वहीं सिर झुका कर पड़ा था। महलों की विशाल बारहदरी में, नाचने के बड़े-बड़े कमरों में, बादशाह की उन खूबसूरत इमारतों में जहाँ वह गर्मी का मौसम बिताया करता था या फिर जंगली जानवरों के पिंजड़ों के आसपास जहाँ भी जगह मिली लोग शरण ले रहे थे। आसपास के शहरों से इतना सामान आ गया कि नदी में नावों की कतारें लग गईं। खाने-पीने की चीजों, तेल और शराब के गोदाम खोल दिये गये।

आसपास के पहाड़ी इलाकों से हर रोज बहुत बड़ी तादाद में भेड़-बकरी और खाने के दूसरे जानवर आने लगे। लेकिन सीजर की यह दरियादिली लोगों को विशेष प्रभावित नहीं कर पा रही थी। वे अब भी उसको गालियाँ दे रहे थे। अगर कोई प्रसन्न और सन्तुष्ट था तो वे थे, शहर के चोर, उचक्के और लुटेरे जो बेरोक-टोक लूट मचा रहे थे और खूब खा-पी रहे थे। लेकिन वे लोग, जो अपना सब कुछ गँवा बैठे थे जिनके स्वजन, आत्मीय इस अग्निकांड की भेंट हो गये थे, खुश नहीं थे। उनपर इस बात का कोई असर नहीं हो रहा था कि सम्राट् ने बगीचे खुलवा दिये हैं, मुफ्त खाना बँट रहा है और फिर खेल और दंगल भी होंगे।

अपने चापलूसों के बार-बार कसमें खाने पर भी और टिजेलिनस के झूठे वादों के बावजूद भी नीरो अपने मन में डर रहा था कि सिनेट और राजघराने के बीच चलनेवाले षड्यन्त्रों में अब जनता का साथ उसे नहीं मिल सकेगा। खुद उसके साथी घबराये हुए थे। टिजेलिनस तुर्की से अपनी फौजें वापस बुला लेना चाहता था। विटिनियस, जो हमेशा हँसमुख रहा करता था, अब मुँह लटकाये घूमता था और विटेलियस कहता था कि उसका हाजमा खराब हो गया है। टिजेलिनस अपने मित्र और शत्रु सभी तरह के दरबारियों से राय ले रहा था। महारानी पोपिया अच्छी तरह जानती थी कि नीरो का पतन उसके लिए तो मौत की घंटी ही साबित होगा। इसलिए वह अपने रिश्तेदारों और यहूदी पुरोहितों से सलाह-मशविरे कर रही थी। नीरो अपने अजीब-अजीब से सुझाव पेश करता था, जो बहुत बेकार और हास्यास्पद हुआ करते थे।

विचार-विमर्श, टिबेरियस की कोठी में हो रहा था जो जलने से बच गई थी। पेट्रोनियस की यह राय थी कि इस तरह बेकार चिन्ता करने के बजाय, चलो, यूनान, मिस्र, तुर्की घूम आया जाय। सीज़र बहुत पहले ही अपनी इच्छा इसके लिए प्रकट कर चुके थे। अब देर क्यों की जाय? सीजर को यह बात पसन्द आ गई। लेकिन सेनेका ने फौरन विरोध प्रकट करते हुए कहा, "यहाँ से जाना तो आसान है। लेकिन फिर लौटकर आना मुश्किल हो जायगा।" पेट्रोनियस ने उसे उत्तर दिया, "क्या, कहते हो! हम लोग लड़ेंगे और फिर जरूरत हुई तो एशिया से फौजें लेकर लौटेंगे!"

"हाँ, ठीक है। मैं यही करूँगा!" नीरो बोला।

दरबारियों ने देखा कि एक बार फिर पेट्रोनियस की बात मानी जानेवाली है। अचानक टिजेलिनस बोला, "नहीं-नहीं, महाराज, यह बड़ी खतरनाक सलाह है। यहाँ से आप थोड़ी ही दूर जायँगे कि लड़ाई छिड़ जायगी और शाही परिवार का कोई साधारण आदमी बादशाह बन बैठेगा।"

नीरो ने फौरन जवाब दिया, "ठीक है, हम इसका इन्तजाम भी कर लेंगे कि

शाही परिवार में ऐसे महत्वाकांक्षियों की कमी हो जाय। लेकिन जो लोग बचे हैं, उन्हें आसानी से हमेशा के लिए रास्ते से हटाया जा सकता।"

"जी हाँ, सरकार ठीक कह रहे हैं। लेकिन और लोगों से भी खतरा हो सकता है। कल मेरे सिपाहियों ने भीड़ में कुछ लोगों को यह कहते सुना कि थ्रेसिया जैसे लोगों को सम्राट बनाना चाहिए।"

नीरो ने गुस्से में अपने ओंट काट लिए और कहा, "बड़े कृतघ्न हैं ये लोग! इन लोगों को खाने-पीने की कोई कमी नहीं होगी। अब और ये क्या चाहते हैं?"

"ये लोग बदला लेना चाहते हैं!" टिजेलिनस ने कहा।

दरबार में सन्नाटा छा गया। अचानक सीजर खड़ा हो गया और अपना हाथ उठाकर एक कविता सुनाने लगा और फिर सब कुछ भूलकर उसने कहा, "लाओ, मेरी कलम कहाँ है और तख्ती कहाँ है? ऐसी कविता तो महाकवि लुकान भी नहीं कर सकता था और देखा तुम लोगों ने, पलक मारते ही मैंने एक कविता बना ली!"

"महाराज की काव्य-प्रतिभा अद्भुत है" किसी ने कहा।

नीरो ने कविता पूरी की और फिर अपने आसपास के लोगों पर नजर घुमाकर बोला, "ठीक है, बदला तो चुकाना ही होगा! अच्छा, यह कैसा रहेगा, अगर लोगों से यह कह दिया जाय कि वेटिनियस ने शहर में आग लगायी है और जनता को खुश करने के लिए इसको सूली पर चढ़ा दिया जाय!"

वेटिनियस काँपते हुए बोला, "मैं? दुहाई महाराज! भला मैं किस काबिल हूँ?"

"हाँ, ठीक है। हाँ, ठीक है! तुम से ज्यादा मशहूर और कोई खास आदमी होना चाहिए। विटेलियस कैसा रहेगा?"

विटेलियस के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लेकिन फिर संभालकर हँसते हुए वह बोला, "भला, मुझे कौन खास आदमी मानता है?"

लेकिन अब नीरो सचमुच में किसी ऐसे आदमी की खोज में था जिसे जनता के गुस्से का शिकार बनाया जा सके। अचानक उसकी आँखें चमक उठीं। जैसे उसे आदमी मिल गया हो। वह बोला, "टिजेलिनस! ठीक है न, तुमने ही तो रोम में आग लगायी है?"

दरबारियों में सनसनी फैल गयी। उन्हें लगा कि सीजर ने मजाक बन्द कर दिया है और अब थोड़ी ही देर में उनकी किस्मत का फैसला होनेवाला है। टिजेलिनस ने कुत्ते की तरह दाँत दिखाते हुए कहा, "हाँ, सरकार मैंने रोम में आग लगायी है, लेकिन आपके हुक्म पर!" इस समय दोनों एक-दूसरे को देख रहे थे। दरबार में ऐसा सन्नाटा था कि मक्खियों के उड़ने तक की आवाज आ रही थी। अचानक नीरो ने पूछा, "टिजेलिनस, तुम मुझे प्यार करते हो न?"

"हाँ सरकार, करता हूँ।"

"तो मेरे लिए अपनी बलि दे दो।"

टिजेलिनस बोला, "आदरणीय साम्राट, आप मुझे यह सम्मान क्यों सौंप रहे हैं? और फिर आप तो जानते ही हैं कि शाही सैनिक मुझे कितना मानते हैं। जनता तो भड़क ही रही है। अब क्या आप सिपाहियों को भी भड़काना चाहते हैं?"

टिजेलिनस शाही सेना का सेनापति था, उसके इन शब्दों में एक धमकी भरी हुई थी। नीरो फौरन समझ गया और उसका चेहरा तमतमा उठा। लेकिन उसी समय एक नौकर ने आकर टिजेलिनस से कहा, "महारानी ने आपको बुलाया है। वहाँ कुछ लोग आये हैं, जिनसे महारानी आपको मिलाना चाहती हैं।"

टिजेलिनस ने जान बचाने का मौका देखा, वह सीजर के सामने सिर झुकाकर वहाँ से चलता बना। सीजर ने देखा कि और लोगों ने तो बचने की कोशिश की लेकिन टिजेलिनस उल्टे धमकी दे रहा था। वह सीजर का खास आदमी था। वह कुछ देर चुप रहा और फिर बोला, "आज मुझे मालूम हुआ कि मैंने एक साँप को पाल रखा है।"

इस पर पेट्रोनियस ने इस तरह कंधे उचकाये जैसे वह कह रहा हो कि ऐसे साँप का सिर कुचलना कोई मुश्किल काम नहीं है। नीरो ने कहा, "बोलो, कुछ तुम भी राय दो। मुझे सिर्फ तुम पर ही भरोसा है। क्योंकि तुम इन सबसे अधिक बुद्धिमान हो और तुम मुझे चाहते हो।"

पेट्रोनियस बोला, "मेरी तो राय है कि आप यूनान घूमने चलिये।"

नीरो निराश होकर कहने लगा, "यह क्या कह रहे हो तुम! मैं तो तुमसे कुछ अच्छी बात की उम्मीद करता हूँ। अगर मैं तुम्हारी बात मान लूँ तो भला यह बताओ कि सिनेटवाले, जो मुझसे नफरत करते हैं, क्या मौका पाते ही अपने किसी समर्थक को सम्राट नहीं बना देंगे? एक जमाना था जब जनता मेरे प्रति ज्यादा वफादार थी। लेकिन आज वह मेरे खिलाफ है। आज जनता सिनेटवालों के साथ हो गई है।"

पेट्रोनियस मुस्कराकर बोला, "सरकार, मैं अर्ज करता हूँ न कि अगर आप रोम पर काबू रखना चाहते हैं तो यह सिर्फ चुने हुए लोगों के बल पर ही हो सकता है!"

"अरे छोड़ो भी, मेरे लिए रोम या रोमन लोगों का क्या महत्व है। यूनान में लोग मेरी बात तो सुनेंगे। यहाँ तो चारों तरफ बस विश्वासघात और षड्यंत्र ही है। सब लोग मेरा साथ छोड़ रहे हैं। यहाँ तक कि तुम भी मुझे अकेला छोड़ देना चाहते हो। मैं जानता हूँ, मैं सब जानता हूँ। लेकिन पेट्रोनियस, तुम भूल रहे हो

कि आगे आनेवाली पीढ़ी तुम्हें लानत देगी, क्योंकि तुम मेरे जैसे एक कलाकार को संकट के समय छोड़ देना चाहते हो।"

इसी समय महारानी पोपिया, टिजेलिनस के साथ वहाँ आ पहुँची। उस समय टिजेलिनस के चेहरे पर जो गर्व और अभिमान था वैसा शायद उस विजेता के चेहरे पर भी नहीं हो सकता जो विजय के बाद अपनी राजधानी में प्रवेश करता है। वह सीजर के सामने आ खड़ा हुआ और बहुत साफ आवाज में बोला, "सीजर सुनिये, मैंने एक बहुत बड़ी बात मालूम की है। जनता बदले में अपना गुस्सा उतारने के लिए शिकार चाहती है, लेकिन एक शिकार नहीं, सैकड़ों और हजारों की तादाद में। क्या सरकार ने कभी क्रिस्टोस का नाम सुना है?—जिसे सूली पर चढ़ाया गया था? क्या आप जानते हैं कि क्रिश्चियन या ईसाई कौन लोग होते हैं? मैं पहले भी एक बार आपको उनके अपराधों के बारे में बता चुका हूँ। मैंने यह भी शायद अर्ज किया है कि वे लोग बड़े अजीब से रीति-रिवाज पालते हैं और कहा करते हैं कि किसी दिन यह दुनिया जलकर राख हो जायगी। हमारे देशवासी उन लोगों से नफरत करते हैं और उनपर शक करते हैं। आज तक उनमें से किसी को मन्दिर में पूजा के लिए जाते नहीं देखा गया। क्योंकि उनका कहना है कि हमारे देवी-देवता अशुभ हैं। वे लोग कभी स्टेडियम में भी नहीं जाते, क्योंकि वे खुड़दौड़ को नापसन्द करते हैं। आज तक किसी ईसाई ने आपके सम्मान में ताली नहीं बजायी, आज तक आपको उनमें से किसी ने देवपुत्र नहीं माना। वे लोग मानवता के शत्रु हैं, नागरिक सभ्यता के शत्रु हैं। वे लोग आपके शत्रु हैं! लोग भले ही आपके खिलाफ कुछ का कुछ कहते रहें लेकिन सच्चाई तो यह है कि न तो आपने मुझसे रोम में आग लगाने को कहा, और न मैंने आग लगायी। लोग बदला लेने के लिए पागल हैं और उन्हें अपना गुस्सा निकालने का मौका मिलना चाहिए। वे खेल-तमाशे देखना चाहते हैं और खून देखना चाहते हैं—और उन्हें इसका मौका मिलना चाहिये। वे लोग आप पर शक करते हैं। लेकिन हमें उनका शक किसी दूसरे की ओर मोड़ देना चाहिये।"

जब टिजेलिनस बोल रहा था तो सम्राट के चेहरे पर एक साथ कई तरह के भाव आ रहे थे। कभी वह चिढ़ता था और कभी नाराज होता था। फिर अचानक वह खड़ा हो गया और अपना दुपट्टा फेंककर कुछ देर चुपचाप दोनों हाथ आसमान की ओर उठाकर खड़ा रहा। अन्त में वह बड़ी दर्दभरी आवाज में बोला, "हे अपोलो, और हेरा, और दूसरे देवगणो, यह कैसा संकट आ पड़ा है! आखिर इस सुन्दर नगर ने इन पागलों का क्या बिगाड़ा था कि उन्होंने इसे भस्म कर डाला!"

इतने में महारानी पोपिया बोली, "वे मानवता के शत्रु हैं, वे आपके शत्रु हैं!"

सभी लोग कहने लगे, "उन्हें सजा दी जाय ! आग लगाने वालों को कड़ी सजा दी जाय ! देवगण इसीसे प्रसन्न होंगे ।"

नीरो बैठ गया । कुछ देर तक वह सिर झुकाकर बैठा रहा जैसे कुछ सोच रहा हो और फिर अपने हाथ हिलाते हुए जोर से बोला, "ऐसे अपराध के लिए कौन-सा दंड उचित होगा ? फिर भी देवताओं की प्रेरणा से मैं अपनी निरीह जनता को ऐसा दृश्य दिखाऊँगा कि हमेशा-हमेशा के लिए रोमन जाति बहुत आभार के साथ मुझे याद करेगी । मैं उन लोगों को उचित दंड दूँगा ।"

पेट्रोनियस आनेवाले संकट के बारे में सोचने लगा । उसने सोचा कि नीरो की इस योजना से लीजिया और विनिसियस पर और उन सभी लोगों पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ेगा जिनके मजहब को वह अस्वीकार करता था; लेकिन जिन्हें वह निरपराध मानता था । वह अपने उस खास अन्दाज में बोला जिसमें कभी-कभी वह सीजर और उसके मित्रों की आलोचना किया करता था, "हाँ, ईसाइयों को भीड़ के हवाले कर दीजिये और उन्हें यातना दीजिये । लेकिन यह मानने का साहस जरूर होना चाहिये कि ईसाइयों ने रोम में आग नहीं लगायी है, बल्कि नीरो ने जो ईश्वर के अंश हैं और जो संसार के स्वामी हैं उन्होंने ही रोम को जलाया है । इस पृथ्वी पर नीरो ही सर्वशक्तिमान है । नीरो कवि हैं और वे कविता को इतना चाहते हैं कि उसके लिए उन्होंने अपनी जन्म-भूमि का बलि कर दिया ! रोम को जला देना उचित रहा या अनुचित, इसका कोई महत्व नहीं, बड़ी बात तो यह है कि इतनी बड़ी घटना हुई जो इतिहास में बेजोड़ है । सीजर, इतना सावधानी आप जरूर बरतिये कि आपसे कोई ऐसा काम न हो जो आपके योग्य न हो, आप केवल भविष्य का, आनेवाली पीढ़ियों का ध्यान रखिये । कहीं ऐसा न हो कि आगे आनेवाली पीढ़ियाँ यह कहें कि नीरो ने रोम तो जलाया, लेकिन एक सम्राट और एक कवि के रूप में वह कायर सिद्ध हुआ । क्योंकि उसने अपने एक बहुत बड़े कारनामे को मानने से इन्कार कर दिया और उसका दोष निरपराध लोगों पर मढ़ दिया !"

पेट्रोनियस अच्छी तरह जानता था कि अगर उसके इस कथन का नीरो पर उल्टा असर हुआ तो उसका क्या हशर होगा । लेकिन वह हमेशा इस तरह का साहसिक खेल पसन्द करता था । उसने सोचा कि कोई बात नहीं, जो मुझे कहना था वह मैंने कह दिया । अब देखना है कि यह बन्दर अपनी चमड़ी बचाने की कोशिश करता है या महान् कहलाने की अपनी महत्वाकांक्षा के लिए कोई भी खतरा मोल लेने की हिम्मत दिखाता है । पर वह अपने मन में अच्छी तरह जानता था कि नीरो सचमुच में कायर और डरपोक है ।

दरबार में सन्नाटा छा गया । नीरो यह तय नहीं कर पा रहा था कि क्या

कहे क्या न कहे। ऐसे अनिश्चय के अवसर पर आमतौर पर क्या बाहर की ओर लटक आया करती थी।

इतने में टिजेलिनस कहने लगा, "सरकार, मैं यहाँ नहीं ठहर सकता! आपको सलाह दी जा रही है कि आप जान-बूझकर एक बहुत बड़ा खतरा मोल लें। इस 'कीमती' सलाह के साथ-साथ आपको एक कायर सम्राट् और कायर कवि कहा जा रहा है। और यह भी कहा जा रहा है कि आप पाखंडी हैं और आग लगवाते हैं। इस बकवास को मैं अपने कानों से सुनना गवारा नहीं कर सकता!"

पेट्रोनियस ने सोचा कि पासा पलट गया। मैं बरबाद हो गया! लेकिन वह इस तरह हारनेवाला नहीं था। उसने टिजेलिनस की ओर मुड़कर पहले तो उसे ऊपर से नीचे तक देखा। उसकी इस नजर में उस चाटुकार के प्रति घृणा भरी हुई थी। फिर वह बोला, "टिजेलिनस, तुम पाखंडी हो! मेरा मतलब तुमसे था।"

"क्यों? क्या इसलिए कि मैं तुम्हारे इन अपमान भरे शब्दों को सुनने के लिए तैयार नहीं हूँ?"

"नहीं, इसलिए कि तुम सीजर के प्रति अपार श्रद्धा और प्रेम का स्वाँग भरते हो और अभी एक क्षण पहले ही तुम उन्हें अपने सिपाहियों का भय दिखा रहे थे। तुम्हारी इस धमकी को हम सबने समझ लिया था और सीजर ने भी समझ लिया!"

टिजेलिनस को उम्मीद नहीं थी कि पेट्रोनियस इतने साहस के साथ उसकी चाल काट देगा। उसका चेहरा उतर गया और उससे कोई जवाब देते न बना। उसे लगा कि उसका अन्त समीप आ गया है। लेकिन तभी महारानी पोपिया बोली, "सीजर, भला आपके सामने किसी को ऐसी बात कहने की हिम्मत कैसे हुई? पेट्रोनियस ने जो कुछ कहा, ताज्जुब है, आपने सुना कैसे?"

"पेट्रोनियस को इस अपमान का दण्ड दिया जायगा।" विटेलियस ने कहा।

नीरो ने एक बार फिर अपने ओंठ सिकोड़े। फिर पेट्रोनियस की ओर देखकर कहा, "तो, अब तक मैंने तुमसे जो दोस्ती निभायी है, उसका तुम इसी तरह बदला चुकाना चाहते हो?"

"अगर मैंने गलती की है तो आप मुझे बताइये, मैंने क्या गलत कहा है? लेकिन इतना विश्वास रखिये कि मैंने जो कुछ कहा है वह आपके प्रति प्रेम और श्रद्धा की भावना से ही कहा है।"

"इस अपमान के लिए पेट्रोनियस को दण्ड दिया जाय!" विटेलियस ने दोहराया।

दूसरे दरबारी भी चिल्लाने लगे, "हाँ, दंड दिया जाय!" और वे लोग पेट्रो-

नियस के पास से खिसककर अलग खड़े हो गये। यहाँ तक कि दरबारियों में जो अब तक पेट्रोनियस के मित्र थे, उन्होंने भी उसका साथ छोड़ दिया। अब वह अकेला रह गया। लेकिन वह एक हाथ से अपने दुपट्टे को ठीक करता हुआ मुस्कराता रहा और सीजर के बोलने का इन्तजार करता रहा।

सम्राट् ने कहा, "तुम लोग चाहते हो कि मैं इसे सजा दूँ। लेकिन यह मेरा मित्र और साथी है, इसलिए हालाँकि इसने मेरे दिल को चोट पहुँचायी है, लेकिन मैं इसे बता देना चाहता हूँ कि मेरे दिल में अपने मित्रों के लिए हमेशा क्षमा का भाव रहता है।"

पेट्रोनियस ने सोचा कि अब मैं हार गया। मेरे लिए अब कोई उम्मीद नहीं रही। सीजर उठ खड़ा हुआ और दरबार खत्म हो गया।

## ८

पेट्रोनियस घर लौट आया।

नीरो उठकर टिजेलिनस के साथ पोपिया के कमरे की ओर गया, जहाँ कुछ लोगों को उसके सामने पेश करने के लिए रोक रखा गया था। इनमें टाइबर पार से आये हुए दो यहूदी थे और चिलन था। इन यहूदियों को वह अपने सहायकों के रूप में लाया था। सीजर को देखते ही वे सब खड़े हो गये। सीजर ने पूछा, "तो तुम लोगों का कहना है कि रोम में ईसाइयों ने आग लगायी?"

"हाँ, महाराज, वे लोग मानवता के शत्रु हैं। वे रोम के और आपके शत्रु हैं। वे लोग कई दिनों से यह कह रहे थे कि रोम भस्म हो जायगा, दुनिया भस्म हो जायगी। मैं तो सरकार इतना ही जानता हूँ। बाकी मेरे गुरु जी बतायेंगे, जिन्होंने आज तक कभी झूठ नहीं बोला।"

नीरो ने चिलन की ओर मुड़कर पूछा, "कौन हो तुम?"

"मैं आपका एक दास हूँ। आप मेरे लिए ईश्वर के बराबर हैं।"

नीरो ने खुश होकर पूछा, "तुम उन लोगों के बारे में क्या जानते हो?"

"सरकार, मैं क्या बताऊँ, उन लोगों की करतूत देखकर रोना आ रहा है।"

"मुझे रोना-धोना पसन्द नहीं है, साफ-साफ अपनी बात कहो!"

तभी महारानी बोली, "ईसाइयों के बारे में तुम क्या जानते हो, बताओ?"

"जी हाँ, जी हाँ, ईसाई बहुत दुष्ट लोग हैं। दुर्भाग्य का मारा मैं न मालूम

कैसे एक हकीम के चक्कर में पड़ गया, जिसका नाम है—ग्लोकस। उसी से धीरे-धीरे मुझे मालूम हुआ कि ईसाई लोग जिसकी पूजा करते हैं उसका नाम है—ईसा, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह दुनिया से सारे इन्सानों को मिटा देगा और सारे शहरों को बरबाद कर देगा। ईसाइयों को उसने इसी शर्त पर छोड़ देने का वादा किया है वे इस काम में उसकी मदद करेंगे। इसीलिए सरकार ये ईसाई लोग रोमन बच्चों से नफ़रत करते हैं, कुओं में जहर छोड़ते हैं, पूरे रोम की दीवारों पर यहाँ तक कि मन्दिरों पर भी गालियाँ लिखते फिरते हैं। ईसा को सूली पर चढ़ा दिया गया था लेकिन उसने कहा था कि जिस दिन रोम बरबाद हो जायगा उसी दिन मैं धरती पर अवतार लूँगा और ईसाइयों को दुनिया की बादशाहत सौंप दूँगा!"

"तो यही वजह है कि रोम में आग लगायी गयी?" टिजेलिनस बोला।

"जी, जी हुजूर, बहुत से लोग तो इस बात को जानते भी हैं! मैंने खुद यह खबर बहुतों को बतायी है। अगर आप मेरी बात पूरी सुन लें तो आपको मालूम हो जायगा कि मैं क्यों उन लोगों से बदला लेना चाहता हूँ। उस हकीम ने पहले मुझे यह नहीं बताया था कि ईसाई लोगों का मजहब उन्हें मनुष्य मात्र से घृणा करना सिखाता है। बल्कि उलटे वह मुझसे कहा करता था कि ईसा तो बड़ा दयालू था और सबको प्रेम की सीख दिया करता था। मैं भोला आदमी हूँ। ग्लोकस की बातों में आ गया। यहाँ तक कि मैं आधी रोटी खाता था तो आधी उसको खिलाता था, इतना मैं उसे चाहने लगा था। लेकिन उसने इसका क्या बदला चुकाया? जब मैं नेपल्स से उसके साथ रोम आ रहा था तो रास्ते में छुरे से उसने मुझ पर हमला कर दिया और मेरी स्त्री और मेरी भतीजी को गुलामों के सौदागर के हाथ बेच दिया। यह है मेरी कहानी! काश, महाकवि सोफोक्लीज को मेरी कहानी मालूम होती। हाय, मैं भी कितना बड़ा मूर्ख हूँ—जिनको मैं अपनी दुखभरी कहानी सुना रहा हूँ वे तो खुद सोफोक्लीज से भी बड़े कवि हैं!"

"बेचारा गरीब!" महारानी ने बीच में कहा।

"नहीं देवि, जो इस समय आपके रूप में सौन्दर्य की देवी एफ्रोदाइते को देख रहा है वह बेचारा और गरीब कैसे हो सकता है! हाँ, तो जब मैं रोम पहुँचा तो मैं ईसाइयों के बड़े बूढ़ों से मिलकर ग्लोकस की शिकायत करने लगा। मैंने न्याय की माँग की। मैंने सोचा कि शायद वे लोग मुझे अपनी स्त्री वापस दिलवा देंगे। इसी सिलसिले में पाल नाम के उनके एक पुरोहित से मेरी मुलाकात हुई। यह आदमी कुछ दिन तक जेल में रह चुका है। मैं लीनस, क्लिटस, और कई ईसाइयों को जानता हूँ। अमिकांड के पहले वे लोग क्या कहाँ रहते थे और कहाँ वे अपनी बैठकें किया करते थे, सब मुझे मालूम है। मैं आपको वेटिकन पहाड़ के पास एक गुफा और नोमेन्ताना दरवाजे के बाहर एक कब्रिस्तान दिखा सकता हूँ, जहाँ ये लोग

अपनी भद्दी पूजा किया करते थे। वहीं मैंने पीटर नाम के इनके एक सन्त को भी देखा। वहीं मैंने देखा कि वह हकीम रोमन बच्चों को बलि देता था और यह सन्त नये ईसाइयों के सिर पर उन बच्चों का खून छिड़ककर उन्हें आशीर्वाद देता था। वहीं मैंने पोम्पोनिया की गोद ली हुई लड़की लीजिया को यह कहते सुना कि किसी बच्चे का खून वह नहीं ला सकी, इसके लिए उसे क्षमा किया जाय। हालाँकि वह एक काम कर आयी थी और वह था आपके महल में नन्हीं राजकुमारी पर जादू करना। उसी के जादू से राजकुमारी के प्राण गये।"

"सीजर, सुना आपने?" महारानी बोली।

"क्या यह मुमकिन है?" नीरो ने कहा।

चिलन कहने लगा, "मेरा जो कुछ नुकसान उन लोगों ने किया उसे मैं सह भी सकता हूँ। लेकिन जब उसने यह बताया कि उसी ने राजकुमारी पर जादू किया था तो मेरा खून खौल उठा। मैं उसे वहीं मार डालना चाहता था। लेकिन दुर्भाग्य से सरदार विनिसियस ने मुझे रोक लिया।"

"क्या? विनिसियस? लेकिन वह लड़की तो भाग गई थी –"

"वह भाग गई थी, लेकिन विनिसियस ने उसको फिर ढूँढ़ निकाला। वह बिना उसके रह नहीं सकता। मैंने ही विनिसियस को वह मकान बताया था जहाँ लीजिया छिपी हुई थी। वहाँ हम दोनों साथ गये थे। विनिसियस अपनी हिफ़ाजत के लिए आपके ग्लेडियेटर क्रोटन को भी अपने साथ ले गया था। लेकिन लीजिया के एक गुलाम यूरसस ने उसका गला घोंट दिया। यह गुलाम बड़ा ताकतवर आदमी है। यह किसी साँड़ की भी गर्दन मरोड़ सकता है!"

"वाह, जो आदमी क्रोटन जैसे पहलवान को मार सकता है उसकी तो मूर्ति बनवाकर चौक में रखवानी चाहिए। लेकिन बुड्ढे, या तो तुम गलती कर रहे हो या झूठ बोल रहे हो। क्योंकि क्रोटन तो विनिसियस की तलवार से मरा था," नीरो ने कहा।

"देखिये सरकार, लोग कितनी गलत बातें आप तक पहुँचाते हैं! यूरसस ने मेरी आँखों के सामने क्रोटन की पसलियाँ तोड़ी थीं और फिर वह विनिसियस पर भी झपटा था। उसने विनिसियस को भी मार डाला होता लेकिन लीजिया ने उसे रोक दिया। विनिसियस कई दिनों तक बिस्तर पर पड़ा रहा। इस बीच ईसाई लोग उसकी देखभाल करते रहे। उनका ख्याल था कि इस तरह वे विनिसियस को ईसाई बनने के लिए राजी कर सकेंगे और सच पूछा जाय तो इसमें वे सफल भी हो गये।"

"क्या? विनिसियस को ईसाई बनाने में वे सफल हो गये?"

"जी हाँ, सरकार।"

"और पेट्रोनियस को भी तो—?" टिजेलिनस ने आतुरता से पूछा।

चिलन ने दाँत निपोर दिये और हाथ मलते हुए कहा, "ही ही, हुजूर कितनी जल्दी ताड़ लेते हैं ! मुमकिन है पेट्रोनियस भी—"

"अब मेरी समझ में आया कि वह क्यों ईसाईयों को बचाना चाहता था ?"

लेकिन नीरो ने खिलखिला कर हँसते हुए कहा, "हिश्, पेट्रोनियस और ईसाई ! बको मत ! पेट्रोनियस भला कभी ऐसा कर सकता है ? फिर इस तरह की बात बकना मत, वरना मैं तुम्हें बिल्कुल झूठा समझूँगा।"

"जी हुजूर, लेकिन···लेकिन सरदार विनिसियस ईसाई हो गये हैं। सरकार झूठ से मुझे बहुत नफरत है। मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह शपथ खाकर कह रहा हूँ कि यह सच है। पोम्पोनिया, पोलस, लीजिया और विनिसियस ईसाई हो गये हैं। मैं विनिसियस की सेवा करता था और उसने मुझे उस हकीम के कहने पर बेकार ही अपने गुलामों से मुझे पिटवाया था, हालाँकि मैं तब भूखा और बीमार था। यह सब मैं भूल नहीं सकता। सरकार, उन लोगों ने मेरे साथ अन्याय किया है। इसके लिए उन्हें सजा मिलनी चाहिए। मैं पीटर, लीनस, ग्लोकस, लीजिया, यूरसस और दूसरे सैकड़ों-हजारों का पता बता सकता हूँ। मैं उनके छिपने की जगहें बता सकता हूँ। वे लोग तादाद में इतने ज्यादा हैं कि उनके लिए आपके जेलखाने छोटे पड़ जायँगे। अपने इसी दुःख-कष्ट को भुलाने के लिए मैं दर्शन में मन लगाता रहा हूँ। लेकिन अगर आपकी कृपा हुई तो अब मैं भी जरा संसार की सुख-सुविधा का उपभोग कर सकूँगा। मुझ गरीब पर भी कुछ दया हो जाय, प्रभु !"

"खूब, तुम तो दार्शनिक हो और साथ ही चाहते हो कि तुम्हारा पेट भी भर जाय !" नीरो ने कहा।

"सरकार, जो आपकी सेवा करता है उसका पेट तो भरता ही है।" लेकिन महारानी समय नहीं गँवाना चाहती थी। वह बोली, "महाराज आप राजकुमारी की मृत्यु का बदला जरूर चुकाइये, है न ?"

चिलन बोला, "जल्दी, हाँ सरकार, जरा जल्दी कर, वरना विनिसियस कहीं गायब हो जायगा। मैं वह मकान बता सकता हूँ जहाँ अब ५ लोग आग लगने के बाद रह रहे हैं।"

टिजेलिनस बोला, "मैं तुम्हारे साथ दस सिपाही भेजता हूँ। तुम फौरन चले जाओ।"

"मैं जान को तैयार हूँ। लेकिन आपने यूरसस के हाथों क्रोटन को मरते नहीं देखा। वह बड़ा भयानक आदमी है। अगर आप पचास आदमी भी मुझे दें तब भी मैं दूर से ही मकान बताऊँगा। इसके अलावा अगर आपने विनिसियस को भी जेल में बन्द नहीं किया तो मेरी तो मौत ही समझिये।"

टिजेलिनस ने नीरो की ओर देखा और पूछा, "महाराज, क्यों न इन दोनों चाचा और भतीजे को एक साथ खतम कर दिया जाय ?"

एक क्षण सोचने के बाद नीरो बोला, "नहीं, अभी नहीं। किसी को इस बात पर विश्वास नहीं होगा कि पेट्रोनियस, विनिसियस या पोम्पोनिया जैसे लोगों ने आग लगायी है। इन लोगों की कोठियाँ बहुत खूबसूरत थीं। आज तो अभी हमें दूसरे शिकारों को ही पकड़ना चाहिए। इन लोगों की बारी बाद में आयेगी।"

"सरकार, मेरी हिफाजत के लिए कुछ सिपाही—" चिलन गिड़गिड़ाया।

"इसका इन्तजाम टिजेलिनस करेगा।"

"इस बीच तुम मेरे घर में रहो," सेनापति ने कहा।

मारे खुशी के चिलन का चेहरा चमक उठा। वह गद्‌गद् होकर बोला, "तो, हुजूर, जल्दी कीजिये ! इन सब को पकड़ लीजिये।"

## ६

महल से पेट्रोनियस सीधे अपने घर आया। उसके घर के तीन तरफ बहुत बड़ा बाग था। इसीलिए वहाँ तक आग पहुँच नहीं सकी थी, पेट्रोनियस जानता था कि उसकी स्थिति अब डाँवाडोल है। लेकिन फिर भी अभी खतरे की कोई बात नहीं है। नीरो ने अपनी मित्र-परायणता और क्षमाशीलता के बारे में जो इतनी लच्छेदार बातें कही थीं, वे इसीलिए कि अभी उसके हाथ बँधे थे। उसे कोई न कोई बहाना ढूँढ़ना पड़ेगा और इसमें उसे देर लगेगा।

इसलिए इस समय वह सिर्फ विनिसियस के बारे में सोच रहा था, क्योंकि वह उसे बचाना चाहता था। उसके गुलाम उसकी पालकी को उठाये तेज कदमों से जले हुए मकानों के मलबे और राख के ढेरों के बीच से चले जा रहे थे। लेकिन फिर भी पेट्रोनियस उन्हें और तेज चलने के लिए कह रहा था। विनिसियस का मकान जल गया था। इसलिए वह अपने चाचा के साथ रह रहा था। घर पहुँचते ही पेट्रोनियस ने विनिसियस से पूछा, "क्यों, आज तुम लीजिया से मिले थे ?"

"मैं अभी उसके पास से ही आ रहा हूँ।"

"तो, मैं जो कुछ कह रहा हूँ उसे जरा ध्यान से सुनो और फौरन तय कर लो कि तुम्हें क्या करना चाहिए। आज राजमहल में यह तय हुआ है कि रोम को जलाने का अपराध ईसाइयों के मत्थे मढ़ा जाय। अब जल्दी ही मुकदमे शुरू होंगे।

शोरगुल मचाया जायगा और यातना दी जायगी। तुम लीजिया को लेकर फौरन कहीं दूर आल्प्स पर्वत के पास या अफ्रीका चले जाओ। जल्दी करो!"

विनिसियस एक सैनिक था और जानता था कि बेकार के सवालों पर समय खर्च करने से कोई लाभ नहीं है। पेट्रोनियस की बात को वह ध्यान से सुन रहा था। हालाँकि इससे उसे कोई आश्चर्य नहीं हो रहा था। लेकिन भागने की बजाय उसकी इच्छा लड़ने की हो रही थी। वह बोला, "मैं अभी चला जाऊँगा।"

"एक बात और सुनो, अपने साथ सारा सोना लेते जाना। हथियार ले लेना और कुछ ईसाइयों को भी अपने साथ ले लेना। अगर तुम्हें लीजिया को ले जाने में कुछ दिक्कत हो तो तुम जबरदस्ती ले जाना।" तब तक विनिसियस दरवाजे तक पहुँच चुका था। पेट्रोनियस ने पुकार कर कहा, "अपने किसी गुलाम के हाथ मुझे खबर भेज देना।"

उसके जाने के बाद पेट्रोनियस फिर से अपनी कोठी के बरामदे में टहलने लगा। वह सोच रहा था कि इस सबका नतीजा क्या होगा। उसी समय यूनिस अन्दर आई। उसे देखकर पेट्रोनियस सीजर और उसकी अप्रसन्नता को भूल गया। वह उस समय दरबारियों के षड्यन्त्र और विनिसियस और लीजिया को भी भूल गया--इस समय वह सिर्फ यूनिस को देख रहा था। उसके सुगठित शरीर के सौंदर्य से मुग्ध हुआ वह उसे एक प्रेमी की दृष्टि से देख रहा था। अपनी बैंजनी रंग की महीन पोशाक में, जिसमें उसके शरीर का गुलाबी रंग मुश्किल से छिप रहा था, वह किसी अप्सरा की भाँति लग रही थी। यूनिस उसे बहुत चाहती थी और उसकी प्रतिभा पर मुग्ध थी। इस समय यह किसी बच्चो की तरह शरमा रही थी। पेट्रोनियस ने उसकी ओर अपने हाथ फैला दिये और कहा, "बोलो, सौन्दर्य और गरिमा की देवी, कैसे आना हुआ?"

यूनिस ने अपना सुनहरे बालोंवाला सिर झुकाकर धीरे-धीरे से मुस्कराकर कहा, "एथिमोस अपने साथियों के साथ गाने के लिए आया है। उसने पुछवाया है कि क्या आज उसका गाना आप सुनियेगा?"

"उससे कहो कि रुक जाय। जब हम लोग खाना खायेंगे—तब उससे अपोलो का भजन सुनेंगे। सच कहता हूँ, जब तुम्हें मैं इस महीन पोशाक में देखता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है जैसे एफ्रोदाइते की रूह आसमान से उतर कर जमीन पर आ गई है!"

"ओह, मालिक!"

"यूनिस, आओ, मेरे करीब आओ। तुम मुझे प्यार करती हो न?"

"इतना प्रेम तो मैं ईश्वर से नहीं कर सकूँगी," यह कहकर यूनिस एक बार

काँपी और फिर उसने उसके ओठों पर अपने ओठ रख दिये। लेकिन पेट्रोनियस कहने लगा, "और अगर हम दोनों को अलग होना पड़ा तो ?"

यूनिस ने घबराकर उसकी ओर देखा, "क्या कह रहे हैं मालिक आप ?"

"डरो मत, लेकिन हो सकता है, मुझे एक लम्बे सफर पर जाना पड़ जाय।"

"तुम मुझे भी अपने साथ लेते चलो।"

पेट्रोनियस ने बातचीत का विषय बदलते हुए पूछा, "बाग में आज कौन-कौन से फूल खिले हैं।"

"कैसे फूल ? शहर में आग लगने के बाद से पूरा बगीचा झुलस गया है। ऐसा लगता है जैसे सारे पेड़-पौधे मर गये।"

"पेड़-पौधे क्या, लगता है जैसे शहर ही मर गया। बहुत जल्दी ही पूरा रोम मरघट बन जायगा ! क्या तुम्हें मालूम है कि बहुत जल्दी ही ईसाइयों के खिलाफ शाही फरमान निकलनेवाला है ? उन पर मुकदमे चलेंगे और हजारों की तादाद में आदमी मारे जायँगे।"

"उन्हें किस बात की सजा मिलेगी। वे लोग तो बहुत ही सीधे-सादे और भले आदमी होते हैं।"

"इसीलिए तो।"

"तो, मालिक चलिये हम लोग कहीं समुद्र के किनारे चलें। इस तरह का खून-खराबा देखना आपको पसन्द नहीं है।"

"हाँ, ठीक कह रही हो तुम। लेकिन इस बीच अब मैं जरा नहाना चाहता हूँ। चलो, मालिशघर में चलें। जरा मेरे कन्धों की मालिश कर दो। वीनस की कसम, इतनी सुन्दर तुम आज तक कभी नहीं लगी। मैं तुम्हारे नहाने के लिए सीप के आकार का एक हौज बनवाऊँगा। उसमें तुम मोती की तरह लगोगी। तो चल रही हो न ?"

एक घण्टे भर बाद दोनों गुलाब के फूलों की माला पहने और नहाकर ताजे हुए भोजन के कमरे में पहुँचे। मेज पर खाना लगा हुआ था और सोने की एक बड़ी सी थाल से ढँका हुआ था। कामदेव जैसी पोशाक पहने कुछ नौजवान गुलाम खाना परोस रहे थे। जब उन दोनों ने भोजन शुरू किया तो गानेवालों के एक दल ने अपोलो के सम्मान में एक गीत सुनाना शुरू किया। भजन के खत्म होते-होते एक चौकीदार दौड़ता हुआ पहुँचा और घबराये हुए स्वर में बोला, "मालिक, कुछ सिपाहियों की टुकड़ी साथ लेकर एक नायक दरवाजे पर खड़ा है। वह कह रहा है कि सम्राट की आज्ञा से वह आपसे कुछ कहना चाहता है।"

गाना बन्द हो गया और सब के चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगीं, क्योंकि सम्राट कभी शाही सैनिकों को केवल संदेश लेकर अपने मित्रों के यहाँ नहीं भेजता था। इसके

अलावा ऐसे मौके पर शाही सैनिकों का आना शुभ नहीं हो सकता था। फिर भी पेट्रोनियस बिल्कुल नहीं घबराया और कुछ चिढ़कर बोला, "मुझे ये लोग आराम से खाना भी खाने देंगे या नहीं ? खैर, उसको अन्दर भेज दो।"

चौकीदार फौरन परदों के पीछे गायब हो गया। थोड़ी ही देर में किसी सैनिक के भारी और नपे-तुले कदमों की आवाज सुनाई देने लगी और एक नायक बाकायदा हथियारों से लैस और पूरी वर्दी पहने अन्दर आ खड़ा हुआ। वह बोला, "हुजूर, महामान्य सीजर ने यह सन्देश भेजा है !"

पेट्रोनियस ने बेपरवाही से अपना गोरा हाथ फैला दिया और तख्ती ले ली। उसे पढ़कर बहुत शान्ति से उसने यूनिस की ओर बढ़ा दिया और कहा, "आज सीज़र रात को अपने एक महाकाव्य के कुछ अंश सुनाना चाहते हैं। मुझे सुनने के लिए बुलाया है।" फिर उसने नायक से कहा, "ठीक है, उत्तर देने की जरूरत नहीं है। लेकिन तुम एक मिनट बैठो, आराम करो। एकाध जाम पीयो !"

"नहीं, हुजूर, धन्यवाद ! आपकी सेहत के लिए एक जाम मैं जरूर पी लूँगा। लेकिन मैं रुक नहीं सकता, क्योंकि इस समय मैं कुछ काम के लिए तैनात किया गया हूँ।"

"इस तरह लिखकर सन्देश क्यों भेजा गया और वह भी तुम्हारे हाथ ? किसी गुलाम के हाथ भेज दिया होता है ?"

"इसका कारण मुझे नहीं मालूम हुजूर, हो सकता है कि इस इलाके में मुझे दूसरे काम से भी आना था, इसलिए मुझे ही यहाँ भी भेज दिया गया।"

"हाँ, हाँ। मैं जानता हूँ, तुम्हें ईसाइयों को पकड़ने का काम सौंपा गया है, है न ?"

"जी हाँ।"

"क्या काफी देर से तुम इस काम में लगे हो ?"

"जी, दोपहर से कुछ सिपाहियों को नदी पार के इलाके में भेजा गया है।" फिर एक प्याला शराब पीकर वह वहाँ से चला गया। पेट्रोनियस ने संकेत किया और गाना फिर से शुरू हो गया। यूनिस बोली, "सीजर ने लिखा है कि अगर आना चाहो तो आ जाना। तो मालिक क्या आप जायेंगे ?"

"हाँ, जाना तो पड़ेगा ही। खास तौर से इसलिए कि विनिसियस नहीं जा सकेगा।"

भोजन के बाद उसके बाल सँवारे गये और पोशाक को ढंग से सजाया गया। फिर करीब एक घण्टे भर बाद वह पूरे ठाटबाट से महल के लिए रवाना हुआ।

वहाँ वे दरबारी उसे देखकर कुछ चौंके जो अब तक उसके मित्र माने जाते थे। उन्होंने उससे दूर रहना ही ठीक समझा। लेकिन पेट्रोनियस ने इसकी कोई

परवाह नहीं की। वह इस तरह पूरे विश्वास के साथ उनके बीच घूमता रहा जैसे अब भी सीजर उसके पक्ष में हो। उसकी इस बेपरवाही को देखकर उसके कुछ अभिन्न मित्र परेशान भी हुए, क्योंकि उन्हें लगा कि उन्होंने पेट्रोनियस से सम्बन्ध तोड़ने में जरूरत से ज्यादा जल्दी की है। वे अपने मुँह छिपाने लगे।

लेकिन सीजर ने जान-बूझकर उसकी ओर नहीं देखा और उसके अभिवादन का कोई उत्तर दिये बिना ही दूसरे दरबारियों से बातचीत करता रहा। इतने में टिजेलिनस उसके पास आया और बोला, "कहिये जनाब, कैसे मिजाज हैं! अच्छा, यह बताइये, क्या अब भी आप यही मानते हैं कि ईसाइयों ने रोम में आग नहीं लगायी थी?"

पेट्रोनियस उसका कन्धा थपथपाते हुए कहा, "आप इस मामले में उतना ही जानते हैं जितना कि मैं जानता हूँ।"

"बुद्धिमानी में मैं आपसे होड़ लेना नहीं चाहता।"

"यह आप ठीक करते हैं, क्योंकि जब सीजर अपनी कविताएँ सुनायेंगे तब आपको अपनी बुद्धिमानी का प्रदर्शन करते हुए कविताओं के बारे में अपनी राय देनी पड़ेगी, जो निःसन्देह हास्यस्पद होगी।"

टिजेलिनस ने अपने ओंठ काट लिये। वह नहीं चाहता था कि नीरो आज अपनी कविता सुनाये, क्योंकि तब फिर पेट्रोनियस को अपनी जगह बनाने का मौका मिल जायेगा और सचमुच कविता सुनाते समय बार-बार नीरो रोज की आदत के अनुसार पेट्रोनियस की ओर देखता जाता था। पेट्रोनियस बहुत ध्यान से उसकी कविता सुनता रहा और मौके-बे-मौके अपना सिर हिलाकर दाद देता रहा। अन्त में उसने कविता की प्रशंसा की। कुछ चीजों की आलोचना की और एक-दो पंक्तियों को और अधिक सुन्दर बनाने के बारे में अपने सुझाव भी दिये। नीरो को लगा कि बाकी दूसरे दरबारी तारीफ के पुल बाँधकर अपना-अपना मतलब सीधा करना चाहते हैं, लेकिन पेट्रोनियस ही एक ऐसा आदमी है जो काव्य का सच्चा मर्मज्ञ है और केवल साहित्यिक उद्देश्य से ही अपना मत प्रकट करता है। नीरो उससे विचार-विमर्श करने लगा। जब पेट्रोनियस एक शब्द के बारे में कुछ आपत्ति करने लगा तो नीरो अचानक बोला, "तुम ठहरो तो जब तुम इस महाकाव्य की आखिरी पंक्तियाँ सुनोगे, तब तुम्हारी समझ में आयेगा कि इस शब्द को मैं यहाँ क्यों लाया हूँ।"

पेट्रोनियस ने सोचा, तो अभी मेरे दिन कुछ बाकी हैं। कम से कम इसके आखिरी छन्द सुनने तक तो मैं जिन्दा रहूँगा ही, उधर जब दूसरे दरबारियों ने नीरो को फिर से इस तरह पेट्रोनियस से घुल-मिलकर बातें करते देखा, तो उन्हें लगा कि पेट्रोनियस ने पासा पलट दिया। हो सकता है, वह फिर से नीरो का प्रशंसामात्र बन जाय और टिजेलिनस का तख्ता उलट दे। यह सोचकर फिर से वे लोग पेट्रोनियस

को अपनी दोस्ती दिखाने लगे। लेकिन जब दरबार खत्म हो गया और पेट्रोनियस जाने लगा तो अचानक सीजर ने शरारत से मुस्कराते हुए पूछा, "क्यों, विनिसियस क्यों नहीं आया?"

अगर पेट्रोनियस को यह मालूम होता कि विनिसियस और लीजिया शहर से दूर निकल गये हैं तो वह जवाब देता कि विनिसियस ने शादी कर ली है और आपकी आज्ञा से यह बाहर चला गया है, लेकिन उसने नीरो की रहस्यमय मुस्कान देख ली और उत्तर दिया, "महाराज, शायद आपका निमन्त्रण जब उसके पास पहुँचा तब वह घर पर नहीं था।"

नीरो बोला, "विनिसियस से कहना कि उससे मिलकर मुझे बड़ी खुशी होगी और उसे मेरी यह सलाह भी दे देना कि कल जो खेल-तमाशे होनेवाले हैं, उन्हें देखना न भूले, क्योंकि उनमें सभी ईसाई भाग ले रहे हैं।"

पेट्रोनियस उसके ये शब्द सुनकर घबरा गया। क्योंकि वह जानता था कि अब लीजिया पर क्या बीतेगी। वह अपनी पालकी में जा बैठा और गुलामों से अधिक से अधिक तेज चलने के लिए कहने लगा। रास्ते में शराबखाने के पास लोगों की बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी थी। करीब-करीब सभी नशे में थे। लेकिन हमेशा की तरह आज गाने-नाचने के बजाय वे बहुत गुस्से में मालूम पड़ रहे थे। चारों तरफ शोर हो रहा था। पेट्रोनियस ने सुना, एक जगह लोग चीख रहे थे, "ईसाई कुत्तों को शेरों के आगे फेंक दो!"

भीड़ बढ़ती जा रही थी। लोगों के झुण्ड के झुण्ड, जले हुए मकानों से भरी गलियों और सड़कों में उमड़ रहे थे। शहर में तेजी से यह खबर फैल गयी थी कि सबेरे से खोज जारी है और जिन लोगों ने शहर में आग लगायी है उनमें से बहुत से गिरफ्तार कर लिये गये हैं। इतना अब सभी को मालूम हो गया था कि ईसाइयों ने ही शहर में आग लगायी है। पूरा शहर ईसाइयों के खिलाफ गुस्से से भरता जा रहा है। चारों ओर लोग बदला लेने के लिए चीख रहे थे, "ईसाइयों को शेरों के आगे फेंक दिया जाय! ईसाइयों को शेरों से नुचवाया जाय!"

पेट्रोनियस ने दाँत पीसकर अपने मन में कहा, "कमीने, बिल्कुल नाली के कीड़े हैं! लेकिन ऐसे राजा की प्रजा और क्या हो सकती है!"

पेट्रोनियस सोचने लगा कि जिस राष्ट्र में ऐसी जनता हो वह ज्यादा दिनों तक टिक नहीं सकता। रोम अब भी संसार की राजधानी है। लेकिन अब उसका दिल सड़ गया है। इसमें अब मरघट की बदबू आने लगी है। घर पहुँचते ही उसने पूछा, "क्या सरदार विनिसियस लौट आये?"

"जी, अभी कुछ देर हुई, लौटे हैं," एक गुलाम ने बताया।

पेट्रोनियस ने सोचा कि इसका मतलब यह है कि वह लीजिया को नहीं बचा

सका। वह अपना लबादा एक कोने में फेंककर सीधा अन्दर पहुँचा। विनिसियस एक तिपाई पर अपना सिर थामे बैठा था। पेट्रोनियस को आते देखकर उसने अपना सिर उठाया। पेट्रोनियस ने पूछा, "क्या तुम देरी से पहुँचे थे?"

"हाँ, वे दोपहर में ही उसे पकड़ ले गये।"

एक क्षण रुककर पेट्रोनियस बोला, "क्या तुम उससे मिले?"

"हाँ।"

"कहाँ है वह?"

"मेमरटाईन जेल में!"

पेट्रोनियस काँप उठा और फटी-फटी आँखों से विनिसियस की ओर देखने लगा। विनिसियस बोला, "नहीं, उसे जेल के तहखाने में रखा गया है। एक सिपाही को बहुत-सा रुपया घूस में दिया गया है। उसने अपनी कोठरी में उसे जगह दे दी है और यूरसस उसके दरवाजे पर बैठा रहता है।"

"यूरसस ने उसे बचाने की कोशिश क्यों नहीं की?"

"उसे पकड़ने के लिए करीब पचास सिपाही भेजे गये थे। इसके अलावा लीनस ने उसे लड़ने से रोक दिया था।"

"और लीनस का क्या हुआ?"

"वह अपनी आखिरी घड़ियाँ गिन रहा है। सिपाहियों ने उसे बिस्तर पर ही पड़ा रहने दिया।"

"अब तुम क्या करना चाहते हो?"

"उसे बचाऊँगा या उसके साथ मर जाऊँगा। मैं भी ईसाई हूँ," विनिसियस बहुत शान्ति से बोला, लेकिन उसकी आवाज में इतना दर्द भरा था कि पेट्रोनियस भी दुःखी हो गया। वह बोला, "मैं समझता हूँ। लेकिन आखिर तुम उसे बचाओगे किस तरह?"

"मैंने जेल के सिपाहियों को काफी घूस दी है, ताकि जेल में वे उसका अपमान न करें और अगर उसको भगाने की कोशिश की गई तो उधर से आँख मूँद लें।"

"और कब छुड़वाओगे उसे?"

"सिपाहियों ने बताया है कि अभी फौरन तो वे उसे नहीं छोड़ सकते, क्योंकि उन्हें डर है कि बात फैल जायगी। लेकिन जब कैदखाने भर जायेंगे और कैदियों की गिनती रखना मुश्किल हो जायगा, तब वे उसे बाहर निकाल देंगे। बस, यही आखिरी आशा है। लेकिन तब तक तुम हम दोनों को बचाने का इन्तजाम कर लेना। तुम सीजर के मित्र हो। खुद सीजर ने ही मुझे लीजिया को सौंपा है। जाओ, हम दोनों को बचाने की कोशिश करो।"

पेट्रोनियस ने कोई उत्तर नहीं दिया और एक गुलाम ने बुलाकर दो काले लबादे और दो तलवारें लाने को कहा।

जब दोनों सड़क पर आ गये तो पेट्रोनियस बोला, "सुनो, विनिसियस, नीरो मुझसे नाराज हो गया है और खुद मेरी जिन्दगी जैसे एक धागे में लटक रही है। इसलिए मैं सीजर से कुछ नहीं कह सकता। इसके अलावा मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं जो कुछ कहूँगा उसका वह ठीक उल्टा करेगा। अगर ऐसा न होता तो भला मैं तुम्हें लीजिया को लेकर कहीं दूर भागने की राय देता। तुम जानते हो कि अगर तुम किसी तरह बच निकलते तो सीजर का सारा गुस्सा मुझ पर उतरता। आज तो हालत यह है कि वह मेरे बजाय तुम्हारी बात मान सकता है। लेकिन इस तरह न सोचो, यह सब बेकार होगा। उसे जेल से किसी तरह निकालो और चुपचाप भाग निकलो। अगर इसमें सफलता नहीं मिलती है तो अभी थोड़ा और मौका है, कोई दूसरा उपाय किया जा सकता है।"

जब तक वे लोग चौक के करीब पहुँचे तब तक रात खत्म होने आई थी। दूर अँधेरे में किले की दीवारें दिखायी दे रही थीं, जिसके पास ही मेमरटाईन जेल थी। अचानक पेट्रोनियस ने रुकते हुए कहा, "विनिसियस, सब बेकार है। बहुत देर हो गई। देखो, जेल को शाही सैनिकों ने घेर रखा है।" जेल के आसपास शाही सेना का दोहरा घेरा पड़ा हुआ था। उनके लोहे के टोप और भाले की नोकें सुबह के बढ़ते हुए उजाले में चमचमा रहे थे। विनिसियस बोला, "आओ, चलो तो।"

वे लोग सिपाहियों के करीब पहुँचे। पेट्रोनियस की याददाश्त बहुत अच्छी थी। वह शाही सेना के अधिकारियों को ही नहीं बल्कि साधारण सैनिकों तक को पहचानता था। उसने इशारे से एक सिपाही को अपने पास बुलाया और पूछा, "क्यों जी, क्या मामला है? तुम लोग आज जेल पर पहरा क्यों दे रहे हो?"

"हाँ सरदार साहब, बात यह है कि सेनापति को डर है कि कुछ कैदियों को छुड़ाने की कोशिश होनेवाली है।"

"क्या तुम लोगों को यह भी हुक्म मिला है कि किसी को अन्दर न जाने दिया जाय?" विनिसियस ने पूछा।

"जी नहीं साहब, इन लोगों से मिलने के लिए इनके मित्र लोग आयेंगे और इस तरह हम दूसरे ईसाइयों को भी पकड़ सकेंगे।"

"तो मुझे तो अन्दर जाने दो।"

उसी समय पत्थर की दीवारों के पीछे से और जमीन के नीचे बनी काल-कोठरियों से गाने की आवाज उठने लगी। पहले आवाज बहुत धीमी थी, फिर धीरे-धीरे बढ़ती गई। जेल में बन्द ईसाई अपने भजन गा रहे थे। उनकी आवाज में एक

विचित्र शान्ति और सन्तोष था। ऐसा लगता था जैसे वे जीत की खुशी में गा रहे हों। जेल के सिपाही आश्चर्य से एक दूरे का मुँह देखने लगे।

उधर पूरब में सुबह की सुनहरी और गुलाबी किरणें फूट रही थीं।

## १०

रोम की हर सड़क और हर गली में लोग चिल्ला रहे थे, "ईसाइयों को शेरों से नुचवा डालो! एक भी ईसाई को जिन्दा मत छोड़ो!"

किसी को इस बात पर शक नहीं था कि ईसाइयों ने ही शहर में आग लगायी है। वे ही उनकी सारी मुसीबतों की जड़ हैं। न कोई इस बात पर शक करना चाहता था, क्योंकि इतने हजार ईसाइयों को जो दण्ड मिलनेवाला था उससे रोम की जनता को मनोरंजन होने की संभावना थी। इसके अलावा लोग यह भी कहने लगे कि रोम के देवता भी अप्रसन्न हैं वरना विपत्ति ने इतना भयानक रूप न लिया होता। इसलिए मन्दिरों में पूजा-पाठ और बलिदान शुरू हो गये। पूरा रोम जैसे अपने पापों से छुटकारा पाने के लिए देवताओं से दया की भीख माँगने लगा। अचानक रोम ईश्वरपरायण और धर्मात्मा हो उठा।

शहर का मलवा हटाया जाने लगा और पुरानी सड़कों की जगह नई और ज्यादा चौड़ी सड़कें बनायी जाने लगीं। नयी कोठियों और अट्टालिकाओं तथा विशाल मन्दिरों की नींव पड़ने लगी। लेकिन सबसे पहले और बहुत तेजी से जहाँ काम शुरू हुआ वे थे लकड़ी और पत्थर के विशालकाय क्रीड़ांगन जहाँ ईसाइयों को मृत्यु-दण्ड दिया जानेवाला था। आसपास के शिकारियों और दलालों को आदेश भेज दिये गये कि जल्दी से जल्दी खूंखार जानवरों को रोम पहुँचाया जाय। टिजेलिनस ने इटली के लगभग सभी शहरों को फौजी हुक्म भेज दिये कि नरभक्षी शेर-चीते और दूसरे जानवरों को तुरन्त रोम भेजा जाय। सीजर ने तय किया कि अग्निकांड की सारी दुखमय स्मृतियों को खून की नदियों में डुबो दिया जाय। इतने बड़े कत्लेआम का आयोजन आज तक कभी इतिहास में नहीं हुआ था। जनता इन तैयारियों से इतनी खुश थी और इतनी उत्सुकता से इस विशाल हत्याकांड की प्रतीक्षा कर रही थी कि लोग अपने सारे कामकाज भूलकर ज्यादा से ज्यादा ईसाइयों को पकड़वाने में सिपाहियों की मदद करने लगे। यह कोई मुश्किल काम नहीं था क्योंकि ईसाइयों के दल के दल अन्य लोगों के साथ खुले बाग-बगीचों में शरणार्थी बनकर पड़े थे और

वे अपने धर्म को गुप्त नहीं रखते थे। जब उन्हें सिपाही घेर लेते थे तो मार-पीटकर भागने के बजाय वे घुटनों के बल बैठकर अपने भजन गाने लगते थे और चुपचाप सिपाहियों के साथ हो जाते थे, कैदखाने ठसाठस भरे हुए थे और हर रोज शाही सैनिक दर्रों नये कैदियों को जेल में ठूँसते जाते थे।

पेट्रोनियस यह नहीं भूला था कि लीजिया को ओलस के घर से भगा लाने की उसने शुरू में सलाह न दी होती तो आज वह भी आजाद होती। इसलिए वह दिन-रात उसको किसी न किसी तरह छुड़ाने की कोशिश में लगा रहता था। कुछ ही दिनों में वह रोम की उन सब अभिजात रमणियों से मिल चुका जो महारानी पोपिया के निवास में आती-जाती थीं और उसकी सहेलियाँ मानी जाती थीं। वह नीरो के चाटुकार दरबारियों से भी मिला और उन खूबसूरत और कमसिन छोकरों से भी मिला जिन्हें नीरो ने पाल रखा था और जिनकी कोई भी बात वह टालता नहीं था। यहाँ तक कि वह अपने विरोधी दरबारियों की नई से नई रखेलों तक से मिला और उनसे अपनी सहायता की भीख माँगने लगा। जहाँ घूस और इनाम की जरूरत होती थी वहाँ भी वह पीछे नहीं हटा।

लेकिन उसकी सारी कोशिशें नाकाम रहीं। सेनेका नाम के एक दरबारी ने उससे कहा कि अगर ईसाइयों ने रोम में आग नहीं लगायी है तब भी शहर की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है कि उनकी गर्दन उड़ा दी जाय। तरपनोस और डिओडोरस नामक दो दरबारियों ने उससे घूस भी ली और सीजर से शिकायत भी कर दी कि "हुजूर, मुझे घूस देने और भ्रष्ट करने की कोशिशें हो रही हैं।" सिर्फ एलीनूरस नाम का एक दरबारी, जो पहले ईसाइयों के विरुद्ध था लेकिन अब उन पर तरस खाने लगा था, लीजिया के लिए नीरो से बात करने की हिम्मत कर सका। लेकिन सम्राट् ने उसे उत्तर दिया, "क्या तुम मुझे ब्रूटस् से कम कठोर समझते हो, जिसने रोम की सुरक्षा के लिए अपने बच्चों के जीवन तक की परवाह नहीं की।"

जब पेट्रोनियस ने यह सुना तो उसने कहा, "ओह, अगर वह ब्रूटस् से अपनी तुलना करने लगा है तब तो अपना खात्मा ही समझो!"

## ११

समय बीतता गया और अंत में एम्फीथियेटर (क्रीड़ांगन) भी तैयार हो गये। सुबह के खेलों के लिए निमंत्रण-पत्र भी बँटने लगे। इतने बड़े पैमाने पर खेलों का आयोजन

आज तक कभी नहीं हुआ था। अपराधियों की संख्या इतनी अधिक थी कि खेलों के कई दिनों बल्कि कई हफ्तों तक चलने की उम्मीद थी। जेलों में इतनी भीड़ थी कि कैदियों के बीच महामारियाँ फैलने लगीं। अधिकारी चिन्तित थे कि किस तरह जल्दी से जल्दी ईसाइयों का सफाया किया जाय, क्योंकि जेल से बीमारी शहर में भी फैल सकती थी।

विनिसियस को भी इसकी खबर मिली और उसकी अंतिम आशा भी जाती रही। धीरे-धीरे उसका दिमाग सुन्न होता जा रहा था। वह जैसे अर्द्धविक्षिप्त हो गया था। निराशा ने जीवन के प्रति उसका सारा उत्साह छीन लिया था। अगर कोई उससे कुछ कहता था तो वह अपना सिर थाम लेता था और फटी-फटी आँखों से उसकी ओर देखने लगता था। रात में वह जेल में चला जाता था और लीजिया की कोठरी के दरवाजे पर यूरसस के साथ पड़ा रहता था। फिर पेट्रोनियस के घर लौटकर वह बाकी रात बरामदे में इधर से उधर चक्कर काटते हुए बिता देता था। उसके गुलाम अक्सर सवेरे उसे जमीन पर मुँह के बल पड़ा हुआ या घुटने के बल बैठकर हाथ फैलाये हुए प्रार्थना में लीन पाते थे। वह ईसा से प्रार्थना करता था, क्योंकि अब ईसा पर ही उसकी अंतिम आशा टिकी हुई थी।

इतना वह अब भी जानता था कि उसके बजाय पीटर की प्रार्थनाओं का ज्यादा असर होगा। पीटर पर ईश्वर की कृपा थी। उन्होंने ही उसे धर्म में दीक्षित किया था और उन्होंने ही लीजिया का हाथ उसके हाथ में सौंपा था। तो, उनके रहते क्या लीजिया उससे छिन जायगी! वह पीटर से मिलने के लिए उस मजदूर के घर गया। वहाँ जाने पर उसे मालूम हुआ कि सेलेरिया दरवाजे के बाहर एक अंगूर के बाग में ईसाइयों की एक सभा होनेवाली है। रात को वह भी दूसरे लोगों के साथ सिपाहियों की नजर बचाते हुए वहाँ जा पहुँचा।

वहाँ पहुँचने पर उसने देखा कि गिरफ्तारी से बचे हुए कुछ ईसाई प्रार्थना में लीन हैं। उनकी संख्या लगभग दस रही होगी। दीवार पर एक क्रास टँगा हुआ था जिसके सामने पीटर भी सिर झुकाये बैठे थे। विनिसियस ने दूर से ही उन्हें पहचान लिया। वह फौरन उनके चरणों में गिर पड़ा होता, लेकिन अवसर की गम्भीरता को देखकर जहाँ खड़ा था वहीं रुका रहा। वह भी दरवाजे के पास घुटने टेककर बैठ गया और अन्य लोगों के साथ कहने लगा, "हे ईसा, हम पर दया करो!"

वहाँ उसके आसपास जो भी लोग बैठे थे उन सबको आशा थी कि प्रभु ईसा जरूर उनकी विनती सुनेंगे और अपने भक्तों का दुःख दूर करेंगे। नीरो का पतन हो जायगा और संसार में ईश्वर के राज्य की स्थापना होगी। विनिसियस ने हाथों से अपना चेहरा छिपा लिया। सब लोग इस समय चुप थे जैसे आतंक के कारण उनकी वाणी मूक हो गई हो।

विनिसियस को लगा कि इस समय जरूर कोई दैवी घटना घटेगी। हो सकता है, जब मैं आँख खोलूँ तो एक दिव्य प्रकाश दिखाई दे जिससे साधारण मनुष्यों की आँखें चौंधिया जाती हैं और ऐसी वाणी सुनायी दे जिससे पापियों के दिल दहल जाते हैं। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। एक स्त्री जोर से सिसकने लगी और वहाँ की शान्ति भंग हो गई। जिस छप्पर के नीचे ये लोग बैठे थे वहाँ कोई दिव्य प्रकाश नहीं दिखाई दिया बल्कि दो चार मोमबत्तियाँ टिमटिमाती रहीं। दरवाजे के सूराखों से होकर धुंधली चाँदनी अन्दर आ रही थी। दूर से सिपाहियों की सीटी की आवाज आ रही थी। वे ईसाइयों की खोज में निकले थे।

पीटर खड़े हो गये और अपने साथियों की ओर मुड़कर बोले, "भाइयो, उस सर्वशक्तिमान पर विश्वास रखो। अपनी आस्था न खोओ, उसके चरणों पर अपने आँसुओं का अर्घ्य दो!"

वे क्षण भर रुके। इतने में एक कोने से दुखभरी आवाज आई, "मैं विधवा हूँ। मेरा एक बेटा है, वही मेरे लिए सब कुछ है। हे भगवान, उसे छुड़वा दो!"

एक बार फिर वहाँ चुप्पी छा गई। पीटर हताश से उन सब के सामने खड़े थे। इतने में एक दूसरी स्त्री ने रोते हुए कहा, "इन कसाइयों ने मेरी बेटियों की इज्जत लूट ली। और प्रभु ईसा देखते रहे!"

दूसरी तरफ से आवाज आई, "घर में मैं ही अकेला कमाने-धमानेवाला हूँ। मेरे बच्चों को सिर्फ मेरा ही आसरा है। अगर सिपाहियों ने मुझे पकड़ लिया तो मेरे बच्चों का क्या होगा? उन्हें रोटी कौन देगा?"

"पहले तो सिपाहियों ने लीनस को छोड़ दिया, लेकिन अब वे उसे भी पकड़ ले गये और यातना दे रहे हैं!"

"अगर हम घर लौटेंगे तो सिपाही हमें भी पकड़ लेंगे। हम कहाँ जाकर अपने को छिपायें? हमारी कौन रक्षा करेगा?"

लेकिन अब पीटर ने बोलना शुरू किया। पहले तो बहुत धीमी आवाज में वे कहने लगे, "बच्चो, मैंने गोल-गोथा में प्रभु के दर्शन किये थे। उन्हें कीलें ठोंककर सूली पर टाँग दिया गया था! मैंने उस हथौड़ी की आवाज सुनी है जिससे ईसा की हथेलियों में कीलें गाड़ी गई थीं, उन्होंने ईसा की टिखटी सबसे ऊँची रखी थी, ताकि दूर-दूर तक के लोग देख सकें कि मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ सन्तान का अन्त किस तरह हुआ। जब उनकी पसलियों में कीलें ठोंकी गईं तब भी मैं देख रहा था और जब उनका शरीर निर्जीव हो गया तब भी मैं वहीं खड़ा था।

"जब मैं वहाँ से लौटा तो बहुत जोर से रो पड़ा था। मैं कह रहा था—"हे प्रभु आप तो ईश्वर के अंश हैं, आपका ऐसा अन्त क्यों हुआ? हमारे देखते-देखते आपने इतनी यातना भोगी और अन्त में हमें अकेला छोड़ गये और हम तो यह विश्वास

किये बैठे थे कि संसार में कभी आपका, धर्म का राज होगा।" लेकिन तीसरे दिन ईसा फिर से जी उठे और हमारे देखते-देखते उन्होंने स्वर्गारोहण किया। उस दिन के बाद से हमारी आस्था और हमारा विश्वास प्रभु पर और भी दृढ़ हो गया।"

जिस स्त्री ने सबसे पहले अपना दुःख प्रकट किया था उसकी ओर मुड़कर वे जरा जोर से कहने लगे, "तुम लोग इस तरह अपना दुखड़ा रोते क्यों हो? प्रभु ईसा को याद करो। उनके रास्ते पर चलो। उनका रास्ता ही स्वर्ग और पुण्य का रास्ता है। इस तरह हिम्मत न हारो। इस तरह डरो मत। मैं ईसा के नाम पर तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारे आगे यह मौत का नहीं जिन्दगी का रास्ता खुल रहा है। यह दुःख का नहीं अनंत आनन्द का रास्ता है। यह गुलामी का नहीं ईश्वर के वरदान का रास्ता है। ओ विधवा माँ, मैं, महाप्रभु ईसा का शिष्य पीटर, भी कहता हूँ कि तुम्हारा बच्चा मरेगा नहीं। उसे अनन्त जीवन का वरदान मिलेगा और तुम उसे फिर से देख सकोगी!

"और वह पिता जिसकी बेटियों को इन दुष्टों ने अपवित्र किया है, देखेगा कि उन्हें स्वर्ग की देवियों से भी अधिक पवित्रता प्राप्त होगी। और तुम सब लोग, जो अपने प्रिय व्यक्तियों को मरते देखोगे और वे सब जो आज दुःखी हैं, आतंक से पीड़ित है, और वे जो शहीद होने जा रहे हैं- इन सब के लिए मैं कहता हूँ कि उन सबको अनन्त जीवन प्राप्त होगा! मृत्यु की नींद से उन्हें स्वर्ग का स्वप्नलोक प्राप्त होगा। मैं ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि वे तुममें श्रद्धा की ज्योति जगा दें और तुम्हारी आँखों को दिव्य दृष्टि प्रदान करें।"

यह कहते-कहते पीटर ने अपना हाथ इस तरह उठाया जैसे वे आदेश दे रहे हों। उनके शब्दों से वहाँ बैठे हुए लोगों को रोमांच हो आया। उन्होंने देखा कि इस समय उनके सामने एक दुबला-पतला और काँपता हुआ शरीरवाला बूढ़ा नहीं खड़ा है बल्कि एक अनंत शक्तिसम्पन्न व्यक्ति खड़ा है जो उनकी आत्माओं को निराशा के गहरे गड्ढे से निकालकर एक लम्बी यात्रा के लिए प्रेरित कर रहा है।

पीटर बोल रहे थे, "आज अपने आँसुओं को बोओगे तो कल दिव्य आनन्द की लहलहाती खेती पर तुम्हारा अधिकार होगा! इसलिए पाप के दानवों से डरते क्यों हो?

"ईश्वर इस पाप और अन्याय की राजधानी को नष्ट करने के लिए आगे बढ़ रहा है। तुम लोग ही उसकी सेना के सिपाही हो। जिस तरह प्रभु ईसा ने स्वयं यातना सहकर और अपने रक्त का दान देकर संसार को पाप मुक्त किया था, उसी तरह आज उनकी इच्छा है कि तुम भी यातना सहकर और अपने रक्त का दान देकर संसार में पाप के इस गढ़ को नष्ट कर दो, और ईश्वर का यह आदेश तुम मेरे मुँह से सुन रहे हो!"

उस सन्त ने अपने हाथ फैला दिये। हाथ फैलाकर अपनी आँखें आसमान की ओर उठायीं। एक दिव्य प्रकाश से उनका मुखमण्डल आलोकित हो उठा और वे बोले, "हे ईश्वर, तू ही हमें रास्ता दिखा रहा है। जेरुसलम में नहीं, हे प्रभु, शैतान की इस नगरी में तेरे पुण्यलोक की राजधानी स्थापित होगी। यहाँ खून और आँसू के इस दरिया में तुम्हारा कीर्ति-स्तम्भ चमकेगा। यहाँ, जहाँ नीरो का राज्य है, तुम्हारे अनन्त साम्राज्य की नींव पड़ेगी!"

तभी अचानक बिजली के कड़कने की आवाज हुई। सब लोग उनके आसपास इकट्ठे हो गये और उनसे कहने लगे, "हम तैयार हैं महात्मा, हम अपना जीवन देने के लिए तैयार हैं। लेकिन ईश्वर के नाम पर आप अब रोम से चले जाइये। यह जगह आपके लिए ठीक नहीं है और फिर अभी आपको ईश्वर के धर्म का प्रचार करना है।"

वे लोग सिर झुकाकर पीटर के आसपास खड़े थे और पीटर सब के सिर पर आशीष दे रहे थे, जैसे कोई पिता एक लम्बी यात्रा पर जाने के पहले अपने बच्चों के सिर पर हाथ फेर रहा हो।

पीटर एक आदमी के साथ वहाँ से चल पड़ा। विनिसियस भी चुपचाप उनके पीछे चलने लगा। जब वे उस मजदूर की झोपड़ी के पास पहुँचे तो विनिसियस उनके चरणों पर गिर पड़ा, पीटर ने उसे पहचान लिया और कहा, "बेटा, तुम क्या चाहते हो?" लेकिन विनिसियस इतना सब सुनने के बाद और कुछ पूछने की हिम्मत नहीं कर सका। उसने चुपचाप सन्त के पैर चूम लिये और सिर झुका लिया।

"मैं जानता हूँ, तुम जिस लड़की को चाहते हो उसे सिपाही पकड़ ले गये हैं। तुम उसकी मुक्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करो।"

विनिसियस उनके पैर पकड़कर कहने लगा, "पिता, मैं एक तुच्छ जीव हूँ। लेकिन आप ईसा को पहचानते हैं, धर्म को पहचानते हैं। आप मेरी ओर से लीजिया के लिए प्रार्थना कीजिये।"

पीटर उसके दुःख से विचलित हो उठे। उनके ओंठ काँपने लगे। फिर धीरे से उन्होंने कहा, "विनिसियस, क्या धर्म पर तुम्हारी श्रद्धा है?"

"हाँ, महात्मन्, अगर ऐसा न होता तो मैं यहाँ क्यों आता?"

"तो ठीक है, तुम आखिर तक विश्वास न खोओ, विश्वास से पहाड़ हिल जाते हैं। और याद रखो कि अगर तुम उस लड़की को जल्लाद की तलवार के नीचे या शेर के मुँह में देखो तब भी अपने इस विश्वास को न खोना, क्योंकि प्रभु उसे बचा सकते हैं। विश्वास रखो और ईश्वर से प्रार्थना करो। मैं भी तुम्हारे साथ प्रार्थना करूँगा।"

पीटर ने वहीं आसमान की ओर देखते हुए प्रार्थना शुरू कर दी। विनिसि-

यस ने भी सितारों की ओर हाथ फैलाकर कहा, "प्रभु ईसा, मैं तुम्हारा हूँ, लीजिया की जगह मुझे उठा लो !"

और पूरब में सवेरे की लाली फैलने लगी।

## १२

सन्त पीटर को छोड़कर विनिसियस वापस जेल लौट आया। जेल के आसपास जो सिपाही तैनात थे अब तक वे सब उसे पहचान गये थे और बिना किसी रोक-टोक के उसे अन्दर जाने देते थे। लेकिन इस बार सिपाहियों ने उसके लिए रास्ता नहीं छोड़ा। एक नायक पास आकर बोला, "माफ कीजियेगा साहब, लेकिन हम लोगों को आज हुक्म मिला है कि किसी को अन्दर न जाने दिया जाय।"

"हुक्म मिला है ?" विनिसियस ने पूछा और उसका चेहरा उतर गया। सिपाही ने उससे कुछ हमदर्दी दिखाते हुए कहा, "जी हाँ, सीजर का हुक्म है। जेल में बड़ी तेजी से बीमारी फैली है और अधिकारियों को डर है कि जो लोग अन्दर जायँगे वे अपने साथ बीमारी ले आयेंगे।"

"लेकिन तुम तो अभी कह रहे थे कि यह हुक्म आज भर के लिए है ?"

"जी, हाँ, हमें आज दोपहर को छुट्टी मिल जायगी तब तक हमें इस हुक्म को पालना है।" फिर वह उसके और पास आकर बोला, "घबराइये मत साहब, यूरसस, और जेल के सिपाही उसका ख्याल रख रहे हैं।" यह कह कर उसने अपनी तलवार की नोक से जमीन पर मछली का चिह्न बना दिया। विनिसियस ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और पूछा, "लेकिन तुम तो शाही सैनिक हो ?"

"जी हाँ, तब तक, जब तक कि मुझे भी यहाँ नहीं ठूँस दिया जाता !" यह कह कर उसने जेल की ओर इशारा किया।

"मैं भी ईसा की पूजा करता हूँ," विनिसियस बोला।

"हाँ, साहब, मैं जानता हूँ।" लेकिन मैं आपको अन्दर नहीं जाने दे सकता। हाँ, अगर आप कोई चिट्ठी दें तो मैं जेल के सिपाहियों के हाथ उसके पास तक पहुँचा सकता हूँ।"

"धन्यवाद, मेरे भाई।"

घर लौटने पर पेट्रोनियस से उसकी मुलाकात हुई। पेट्रोनियस अपनी रोज की आदत के मुताबिक नहा-धोकर दिन में सोने जाने के पहले इत्र की मालिश करा रहा था। विनिसियस को देखकर वह बोला, "मैं तुम्हारे

लिए कुछ खबर लाया हूँ। कल सिनेकियो के यहाँ सीजर का कविता-पाठ था। मैं भी वहाँ गया था। पता नहीं, आज महारानी को क्या सूझा कि दुर्भाग्य से अपने साथ रूफियस को भी लेती आयी। शायद उस छोकरे की खूबसूरती से वह सीजर को लुभाना चाहती थी। जब नीरो अपनी कविता सुना रहा था तब बदकिस्मती से लड़का सो गया। यह देखकर नीरो आपे से बाहर हो गया। उसने शराब का एक प्याला लड़के के सिर पर दे मारा। लड़का बुरी तरह घायल हो गया। पोपिया बेहोश हो गई। सब लोगों ने सुना, सीजर कह रहा था, मैं तो ऊब गया इस बेहयाई से!" तुम जानते हो कि उसका यह कहना किसी के लिए मौत की सजा सुनाने के बराबर होता है। रानी को अपने किये का फल मिलेगा।"

"लेकिन इस कहानी से मेरा क्या ताल्लुक?"

"मैंने यह तुम्हें इस लिए बताया कि अब वह खुद मुसीबत में फँस गयी है। इसलिए तुम्हारे खिलाफ कुछ करने का उसे मौका नहीं मिलेगा। इसके अलावा अब उसे आसानी से प्रभावित भी किया जा सकता है। आज शाम को मैं उससे मिलूँगा और उससे बातें करूँगा।"

"धन्यवाद, पेट्रोनियस।"

"अब जाओ, तुम नहा लो और कुछ देर आराम करो। तुम्हारे आँख सूख रहे हैं। तुम बिल्कुल आधे रह गये हो।"

"अच्छा, यह बताओ, कुछ मालूम हुआ कि खेल कब से शुरू होंगे?"

"दस दिन बाद, लेकिन अभी उस जेल की बारी नहीं आयेगी। मैं आज महारानी से कहूँगा कि तुम विनिसियस के लिए लीजिया को बचा लो और मैं तुम्हारे लिए रूफियस को बचा लूँगा। इसके अलावा मैं और भी सोचूँगा। मौका देखकर अगर उस पगले नीरो से कुछ कहा जाय तो मुमकिन है वह भी मान जाय।"

विनिसियस वहाँ से पुस्तकालयवाले कमरे में गया और बैठकर लीजिया को चिट्ठी लिखने लगा। फिर वह खुद चिट्ठी लिखकर शाही सेना के नायक को दे आया, जो गुप्त रूप से ईसाई धर्म को मानता था। वह चिट्ठी अन्दर पहुँचा आया और लौटकर बोला, "लीजिया ने आपको नमस्कार कहा है। उसका जवाब मैं कल आप तक पहुँचा दूँगा।"

लेकिन विनिसियस वहाँ से घर नहीं लौटा। वह एक पत्थर पर बैठकर लीजिया के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। अब सूरज आसमान में काफी उठ आया था और सड़कों में लोगों की भीड़ बढ़ने लगी थी। अचानक पास से कुछ शोर आने लगा। पीली वर्दी पहने दो नौकर चिल्लाते हुए और छड़ी घुमाते हुए लोगों को रास्ते से हटाने लगे। उनके में पीछे चार मिस्री गुलाम एक पालकी को उठाये दौड़े आ रहे थे। पालकी में एक आदमी सफेद कपड़े पहने बैठा था। उसका चेहरा ठीक

से दिखाई नहीं दे रहा था क्योंकि वह कोई चीज पढ़ रहा था। उसके गुलाम चिल्ला रहे थे, "रास्ता छोड़ो, रास्ता छोड़ो !"

लेकिन सड़क में इतनी भीड़ थी कि पालकी को रुक जाना पड़ा। उसमें बैठे हुए आदमी ने अपनी गर्दन बाहर निकाली और कहा, "इन कमीनों को डंडे मारकर अलग क्यों नहीं कर देते ? जल्दी चलो !"

उसकी नजर विनिसियस से मिल गयी, फौरन उसने अपनी आँखें किताब पर झुका लीं। विनिसियस को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि पालकी में चिलन बैठा था। उसके नौकरों ने भीड़ को अलग करके रास्ता बना लिया था और उसकी पालकी चलने वाली ही थी कि इतने में विनिसियस लपककर पालकी के पास जा पहुँचा, क्योंकि कई दिनों से एक सवाल उसके दिमाग में उठ रहा था। उसने कहा, "कहो, चिलन ! क्या हाल हैं !"

"क्या है जी ? अरे नौजवान, तुम मेरा रास्ता क्यों रोक रहे हो, हट जाओ ! मुझे देर हो रही है। मैं अपने मित्र महामान्य टिजेलिनस से मिलने जा रहा हूँ।"

विनिसियस उसकी पालकी पर और झुक आया और उसकी आँखों में आँखें गड़ाकर दाँत पीसते हुए बोला, "तुमने लीजिया को बेच डाला !"

"हाय, मरा ! बचाओ, बचाओ !" वह बूढ़ा यूनानी चिल्लाया। लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी हिम्मत लौट आई, क्योंकि उसने देखा कि विनिसियस उसे धमका नहीं रहा था। इसके अलावा उसने सोचा कि टिजेलिनस और सीजर जैसी हस्तियाँ आज उसकी पीठ पर हैं और इस समय भी वह अपने तगड़े गुलामों के साथ है। ऐसे में भला उसका कोई क्या कर सकता है। इसके अलावा वह जानता था कि आजकल विनिसियस की हालत पतली है। इसलिए उसने बड़ी अकड़ के साथ विनिसियस को घूरते हुए जवाब दिया, "हाँ, और जब मैं भूखों मर रहा था तब तुमने मुझे कोड़े लगवाये थे !"

कुछ देर दोनों चुप रहे। फिर विनिसियस धीरे-धीरे कहने लगा, "हाँ चिलन, मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया है।"

उस बूढ़े यूनानी ने अपनी गर्दन उठायी और अँगुलियाँ चटकाते हुए इतनी जोर से कहा कि आसपास के लोग भी सुन सकें, "भले आदमी, अगर मुझसे तुम्हें कोई काम है तो सबेरे मेरी कोठी पर आओ, वहीं मैं नहाने के बाद गरीबों का दुख सुनता हूँ।"

फिर उसने अपने गुलामों को इशारा किया। वे लोग पालकी उठाकर छड़ियाँ हिलाते हुए और चिल्लाते हुए आगे बढ़ चले, "हट जाओ, हट जाओ ! सरदार चिलोनिदीस की पालकी के लिए रास्ता छोड़ो, हट जाओ !"

# १३

लीजिया ने जल्दी से एक लम्बा पत्र लिखा और उसने हमेशा के लिए विनिसियस से विदा माँगी। उसे मालूम था कि अब किसी को भी जेल में नहीं आने दिया जाता और अब वह विनिसियस को सिर्फ तभी देख सकेगी जब उसे एम्फीथियेटर के मैदान में छोड़ा जायगा। इसलिए पत्र में उसने विनिसियस से प्रार्थना की थी कि वह खेल देखने जरूर आये क्योंकि वह मरने से पहले उसे एक बार जरूर देखना चाहती थी। उसने लिखा था, "चाहे ईसा मुझे आज मुक्त करे, चाहे मृत्यु के बाद, लेकिन संत पीटर के जरिये उन्होंने मुझे तुम्हारे हाथ में सौंप दिया है, इसलिए मैं तुम्हारी हो हूँ!"

पूरा पत्र जैसे आनन्द और उत्साह से भरा हुआ था। उसमें कहीं दुख या पाश्चाताप का संकेत तक नहीं था। अन्त में उसने विनिसियस से माँग की थी कि मरने के बाद वह उसके शरीर को कुड़ेखाने से ढूँढ़ निकाले और अपनी पत्नी के रूप में उस जगह दफन कर दे जहाँ मृत्यु के बाद उसे भी दफन किया जायगा।

दूसरे दिन विनिसियस जेल के दरवाजे पर पहुँचा। वह नायक उसके पास आया और कहने लगा, "साहब, प्रभु ईसा ने आप पर एक कृपा की है। कल रात सम्राट् और टिजेलिनस के कुछ नौकर सम्राट् के लिए कुछ ईसाई कुमारियों को ले जाने के लिए आये थे। वे उस लड़की को भी ले जाना चाहते थे जिसे आप प्यार करते हैं। लेकिन ईश्वर की कृपा से वह बुखार में पड़ी हैं इसलिए उसे नहीं ले गये। कल शाम को वह बेहोश पड़ी थी, ईश्वर करे जिस बीमारी ने उसको अपमान से बचाया है वही उसे मृत्यु से बचाये।"

विनिसियस उस सैनिक के कन्धे का सहारा लेकर इस तरह खड़ा हो गया जैसे उसे डर हो कि कहीं वह गिर न पड़े। वह सिपाही यह बता रहा था, "ईश्वर अपने भक्तों पर जो कृपा कर रहा है, उसके लिए हम बड़े आभारी हैं। कल वे लोग लीनस को ले गये और उसे यातना देने लगे। लेकिन जब उन्होंने देखा कि वह वैसे ही मर रहा है तो उन्होंने उसे छोड़ दिया। हो सकता है कि उस लड़की को इसी तरह छोड़ दिया जाय।"

"तुम ठीक कहते हो। जिस ईसा ने उसे अपमान से बचाया है वही उसे मृत्यु से भी बचायेगा," विनिसियस धीरे से बोला। वह शाम तक जेल की दीवारों के पास ही भटकता रहा और फिर घर लौट आया। आते ही उसने अपने गुलामों को

कहा, "जाओ, लीनस को ढूँढ़ निकालो और उसे मेरे किसी देहाती बँगले में आराम से रखो।"

उधर पेट्रोनियस ने एक और कोशिश करने का निश्चय किया। वह एक बार महारानी से मिल चुका था और फिर उससे मिलने पहुँचा। महारानी राजकुमार रूफियस के बिस्तर के पास बैठी थी। राजकुमार का सिर बुरी तरह फट गया था और वह सन्निपात में चिल्ला रहा था। महारानी पोपिया अपने दुख में इतनी व्याकुल थीं कि पहले तो उसने लीजिया और विनिसियस का नाम सुनना ही पसन्द नहीं किया। लेकिन पेट्रोनियस अपनी बातों से उसे डराने लगा, "महारानी, अपने एक नये और अनजान देवता को अप्रसन्न कर लिया है। आप शायद यहूदी देवता जेहोवा की पूजा करती हैं, लेकिन ईसाइयों का कहना है कि क्राइस्ट उसी का बेटा था। जरा सोचिये, कि कहीं क्राइस्ट के पिता का गुस्सा तो आप पर नहीं है? कहीं ऐसा तो नहीं है कि उसी देवता के क्रोध के कारण बच्चा बीमार पड़ा है।"

"तो तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ?"

"देवताओं के क्रोध को ठंडा कीजिये।"

"किस तरह?"

"लीजिया बीमार पड़ी है। आप सीजर और टिजेलिनस को किसी तरह समझाकर उसे विनिसियस को दिलवा दें।"

"भला यह क्या कह रहे हो! मेरी बात आजकल इतना असर कहाँ रखती है?" महारानी ने निराशा से कहा।

"खैर, एक दूसरा रास्ता भी है। अगर लीजिया ठीक हो जायगी तो उसे मृत्यु-दंड दिया जायगा। वेस्ता के मन्दिर में बड़ी पुजारिन की जरूरत है। उसे आप ही चुना करती हैं। जब कैदियों को मृत्यु-दण्ड के लिए ले जाया जाय तब आप उसमें से लीजिया को मन्दिर की पुजारिन बनाने के लिए छुड़वा लें।"

"लेकिन अगर लीजिया बुखार में मर गई तो?"

"ईसाइयों का कहना है कि ईसा बदला जरूर लेते हैं, लेकिन वे अन्याय नहीं करते। इसलिए आप चाहे तो ईसा को खुश करने की कोशिश कर सकती हैं।"

"ठीक है, लेकिन पहले इस बात का सबूत मिल जाने दो कि ईसा, रूफियस को बचा लेगा।"

पेट्रोनियस ने अपने कंधे सिकोड़े और कहा, "महारानी, मैं कोई ईसा का दूत थोड़े ही हूँ, मैं तो आपसे सिर्फ यही कहने आया हूँ कि आपको चाहिए कि सब देवताओं को खुश रखें चाहे वे रोमन हों चाहे कोई दूसरे।"

रूफियस को बचाने के लिए महारानी पोपिया सारी दुनिया के देवी-देवताओं को मना सकती थी। वह उसी दिन शाम को रूफियस को अपनी एक वफादार दासी

सिलविया की देखरेख में छोड़कर वेस्ता के मन्दिर में पूजा करने गई। लेकिन महल में रूफियस के भाग्य का निर्णय हो चुका था। जैसे ही महारानी की पालकी महल के बड़े फाटक के बाहर हुई उधर नीरो के दो विश्वस्त नौकर उस कमरे में घुस आये जहाँ रूफियस लेटा था। उनमें से एक बूढ़ी सिलविया पर टूट पड़ा। उसने उसके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया और काँसे की एक मूर्ति उठाकर उसके सिर पर दे मारी। सिलविया फौरन बेहोश हो गई। बच्चा कुछ समझ ही नहीं पाया कि यह सब क्या हो रहा है। उल्टे वह हत्यारों को देखकर मुस्कराने लगा। उन लोगों ने बुढ़िया का कमरबन्द निकाला और उसी से रूफियस का गला घोंट दिया। लड़का एक बार "माँ" चिल्लाया और फौरन मर गया। फिर उन्होंने उसे एक कपड़े में लपेटा और फौरन घोड़े दौड़ाते हुए महल के बाहर हो गये। उन्होंने लड़के की लाश समुद्र में फेंक दी।

इधर मन्दिर में बड़ी पुजारिन से पोपिया की मुलाकात नहीं हो सकी और वह वहाँ से लौट आई। अपने कमरे में आकर जब उसने सूना पालना और सिलविया की ठंडी देह देखी तो उसे गश आ गया। जैसे ही होश आया वह जोर-जोर से चीखने लगी। उस रात और दूसरे दिन बराबर वह रोती-चिल्लाती रही।

लेकिन तीसरे दिन सीजर की आज्ञा पर उसे एक भोज में शरीक होना पड़ा। उसे सज-धजकर जाना ही पड़ा। वह भोज में चुपचाप पत्थर बनी बैठी रही। दो दिन तक रोने से उसकी सुन्दरता और भी खिल आई थी।

## १४

जिस दिन खेल शुरू होनेवाले थे उस दिन सबेरे से शहर के निठल्ले खेल के मैदान के बाहरी दरवाजों पर आ बैठे और बड़े सन्तोष के साथ भूखे शेरों की दहाड़, चीतों की गुर्राहट और खूँखार कुत्तों का शोर सुनने लगे। इन जानवरों को दो दिन से भूखा रखा गया था और अक्सर कच्चे गोश्त के बड़े-बड़े टुकड़े पिंजड़े के बाहर दिखाकर हटा लिये जाते थे ताकि भूख और गुस्से से वे और भी खूँखार हो जायें। कभी-कभी तो उनका शोरगुल इतना बढ़ जाता था कि बाहर बैठे हुए लोग आपस में एक-दूसरे की बात नहीं सुन पाते थे। जानवरों के शोरगुल के साथ ही बड़े तड़के सबेरे से सरकस में ईसाइयों के शान्तिपूर्ण भजनों की गूँज भी उठने लगी थी। बाहर सुननेवाले आश्चर्य से कहते, "ईसाई लोग गा रहे हैं!" रात में बहुत से ईसाई

कैदी खेल के मैदान में लाकर बन्द कर दिये गये थे, सबेरे बहुत से ग्लेडियेटर अपने शिक्षकों के साथ वहाँ पहुँचने लगे। जब तक कुश्ती शुरू न हो तब तक उन्हें अधिक से अधिक आराम देने के लिए उनके हथियार वगैरह गाड़ियों पर लादकर लाये जा रहे थे, उनमें से कोई फूल की माला हाथ में लिये था, कोई फूल सूँघ रहा था। उनके दैत्याकार शरीर, जिनपर तेल लगा हुआ था, सुबह की धूप में चमक रहे थे। उनके कमाये हुए पुट्ठों और मांसपेशियों को लोग मंत्रमुग्ध होकर देख रहे थे और जाने-पहचान पहलवानों के नाम ले लेकर उनकी जय बोल रहे थे। युवतियाँ उनकी ओर इच्छाभरी नजरों से देख रही थीं और वे उनमें से सुन्दर लड़कियों की ओर इशारे कर रहे थे और हवा में चुम्बन भेजते हुए कहते थे, "आओ, मौत मुझे ले जाय, उसके पहले तुम मुझसे जिन्दगी का सुख उठा लो!" जब सारे ग्लेडियेटर अन्दर चले गये, तो फाटक बन्द कर दिये गये।

लेकिन बाहर खड़े हुए लोगों को एक के बाद एक दृश्य देखने को मिल रहे थे। ग्लेडियेटरों के बाद उन खूँखार आदमियों के दल आये जो पहलवानों पर कोड़े बरसाते थे और इस तरह उनको लड़ने के लिए मजबूर करते थे। इनके बाद बहुत-सी खच्चर गाड़ियाँ आईं, जिनमें मुर्दों को दफनाने के लिए ताबूत लदे हुए थे। ये गाड़ियाँ मुर्दाघर की ओर चली गयीं। इतने सारे ताबूतों को देखकर लोगों ने बड़ी प्रसन्नता से सोचा कि उनके मनोरंजन के लिए बड़े भारी पैमाने पर खेल का आयोजन हो रहा है। इनके बाद उन लोगों का दल आया जो दंगल में घायल होनेवालों के सिर काटने का काम करते थे। ये एक खास किस्म की वर्दी पहने हुए थे। इनके बाद उन नौकरों की भीड़ आई जो मैदान की व्यवस्था का काम देखते थे और लोगों को उनकी निश्चित जगह पर बैठाते थे। फिर उन गुलामों का दल आया जो मेहमानों को खाने-पीने की चीजें पहुँचाते थे। इनके बाद शाही सैनिकों की कई पल्टनें आईं। रोम के बादशाह ऐसे खेलों के समय हमेशा काफ़ी बड़ी फौज मैदान में तैयार रखते थे।

इसके बाद दरवाजे खोल दिये गये और लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। भीड़ इतनी ज्यादा थी कि लोगों को अपनी-अपनी जगह बैठने में कई घण्टे लग गये। मनुष्य के मांस की गन्ध पाकर भूखे जानवर और जोरों से गुर्राने और दहाड़ने लगे। उधर मैदान में लोगों का शोर बढ़ता जा रहा था। अन्त में शहर कोतवाल अपने सिपाहियों के साथ आया। उसके बाद सिनेटरों, दरबारियों, बड़े-बड़े रईसों और प्रतिष्ठित नागरिकों के अलावा राज्य के उच्च अधिकारी, सैनिक अफसर, महाजन और नगर की सुन्दर रमणियाँ अपनी-अपनी पालकियों में पहुँचने लगीं।

सम्मानित अतिथियों के आगमन पर जनता नारे लगाकर उनका स्वागत करती थी। विभिन्न मन्दिरों के पुजारी और पुरोहित जरा देर में पहुँचे। उनके पीछे पुजा-

रिनों और युवती संन्यासियों के दल आये। नीरो भी इस बार जनता को अधिक प्रतीक्षा कराये बिना समय से ही पहुँचा। उनके साथ-साथ महारानी पोपिया और राज-परिवार के दूसरे लोग तथा बड़े-बड़े सरदार पधारे, जिनमें पेट्रोनियस और विनिसियस भी थे। ये दोनों एक ही पालकी में बैठे थे।

विनिसियस ने जेल के सारे अधिकारियों, खेल के मैदान के सारे नौकर-चाकरों को बड़ी-बड़ी रकमें घूस में दीं और इसका इन्तज़ाम कर दिया कि लीजिया को कालकोठरी के किसी अँधेरे कोने में छिपा दिया जायगा और फिर उसके खास जो उसे फौरन अलबान पर्वत की ओर ले जायगा। इस योजना में पेट्रोनियस भी नौकर को सौंप दिया जायगा, विनिसियस के साथ था। उसने विनिसियस को राय दी थी कि खुले आम मेरे साथ खेल के मैदान में चलो और वहाँ से भीड़-भाड़ में बचकर भाग निकलना। विनिसियस भीड़ में से खेल के मैदान के तहखानों में जानेवाला था ताकि वहाँ वह लीजिया को खोजकर सिपाहियों को पहचनवा सके।

मौका पाकर विनिसियस नीचे जा पहुँचा। सिपाहियों ने पीछे के दरवाजे से उसे अन्दर ले लिया। तहखाने के गलियारे में एक सिपाही उससे कहने लगा, "पता नहीं साहब, इस अँधेरे में और ईसाइयों की भीड़-भाड़ में आप उस लड़की को कैसे खोज सकेंगे। हमने जब लीजिया नाम की लड़की के बारे में पूछताछ की तो किसी ने जवाब ही नहीं दिया। शायद वे लोग हमारा विश्वास नहीं करते।"

फिर उस सिपाही ने एक दरवाजा खोला। अब वे दोनों एक बड़े भारी और अँधेरे कमरे में पहुँचे जिसकी छत बहुत पहुँची थी। यह कमरा मैदान के नीचे बना था और इसमें बहुत छोटे-छोटे रोशनदानों से ही उजाला आता था। पहले तो विनिसियस को कुछ नहीं दिखायी दिया। रोशनदानों से बाहर का शोर अन्दर भी आ रहा था। जब अँधेरे में उसे कुछ दिखाई देने लगा तो उसने देखा कि भेड़िये या भालू की शक्लों में कुछ लोग घूम रहे हैं। ये सब ईसाई ही थे जिनपर तरह-तरह के जानवरों की खालें सिल दी गई थीं। कुछ लोग खड़े थे और कुछ लोग प्रार्थना में झुके हुए थे। जानवरों की रोएँदार खालों पर कभी-कभी किसी के सिर के लम्बे बाल लहराते हुए दिखाई पड़ते थे और तभी मालूम पड़ता था कि यह कोई स्त्री है। भेड़ियों की खालों में लिपटी हुई कई माताएँ अपने बच्चों को सीने से लगाये सिसक रही थीं। बच्चों को भी जानवरों की खालों में लपेट दिया गया था।

लेकिन जानवरों की खालों में लिपटे हुए शरीर महत्वहीन हो जाते थे जब कि कोई उन लोगों के मुस्कराते हुए चेहरों को देखता था। लगता था, जैसे ये चेहरे एक विचित्र प्रकाश से आलोकित हो रहे हैं। जब विनिसियस ने उन लोगों से लीजिया के बारे में पूछा तो उनमें से कुछ फटी-फटी आँखों से उसे देखते रह गये। कुछ नींद से चौंककर उठ बैठे और फिर ऊँघने लगे। कुछ लोग उसकी ओर देखकर

मुस्कराने लगे। दूसरे ने उन सीखचों की ओर इशारा कर दिया जहाँ से थोड़ा-सा प्रकाश अन्दर आ रहा था। कुछ बड़ी उम्र के बच्चे भी जानवरों की दहाड़ों से घबराकर और अपने माता-पिता की इन डरावनी पोशाकों को देखकर रोने लगे।

विनिसियस उस सिपाही के साथ आगे बढ़ता गया। कभी-कभी अँधेरे में वह किसी के शरीर से ठोकर खा जाता था। अचानक उसे किसी की पहचानी हुई आवाज सुनायी दी। वह मुड़कर भीड़ में होता हुआ उस आदमी के पास पहुँचने लगा। वह आदमी भेड़िये की खाल पहने खड़ा अपने साथियों से बातें कर रहा था। विनिसियस ने उसे पहचान लिया। वह क्रिस्पस था।

वह कह रहा था, "मौत की आखिरी घड़ी आ पहुँची है दोस्तो, अपने पापों के लिए ईश्वर से क्षमा माँग लो। कहीं ऐसा न सोचना कि आज की शहादत से तुम्हारे पाप भी माफ कर दिये जायँगे बल्कि इस तरह सोचकर तुम उल्टे एक पाप और करोगे। तुम्हारा हर पाप तुम्हें ईश्वर से दूर करता जायगा। यह हमारे पाप का ही फल है कि आज हमें इतनी कड़ी सजा दी जा रही है। शेर और चीते हमें फाड़ खायेंगे। लेकिन फिर भी हमें ईश्वर की कृपा नहीं मिलेगी, क्योंकि उसके लिए इससे भी अधिक यातना सहने की जरूरत है!"

यह सुनकर विनिसियस काँप उठा। उसने तो ईसा की दयालुता पर विश्वास किया था। लेकिन आज उसे सुनना पड़ रहा है कि इस तरह मौत के मैदान में शेर की दाढ़ों में अपना सिर देकर भी ईसा की कृपा नहीं पायी जा सकती। उसी समय उसे ख्याल आया कि अगर आज यहाँ पीटर होते तो उन लोगों के बीच इस तरह नहीं बोलते जो थोड़ी ही देर में मृत्यु यात्रा के लिए जानेवाले थे। लेकिन यह सब सोचने के लिए अभी समय नहीं था। किसी भी क्षण काल कोठरी का दरवाजा खुल सकता था और कैदियों को मौत के मैदान की ओर हकाला जा सकता था। वह जोर-जोर से लीजिया और यूरसस को पुकारने लगा ताकि उनके बारे में अगर कोई कुछ जानता हो तो उसे बता दे।

उसकी पुकार सुनकर एक आदमी, जो भालू की खाल पहने था, उसके पास आकर बोला, "साहब, वे दोनों तो जेल में ही छूट गये। मैं वहाँ से आनेवाला सबसे आखिरी आदमी हूँ। मैंने चलते समय देखा था कि लीजिया अपने बिस्तर पर बीमार पड़ी थी।"

"तुम कौन हो?" विनिसियस ने पूछा।

"मैं वही मजदूर हूँ जिसकी झोपड़ी में आपको सन्त पीटर ने ईसाई बनाया था। तीन दिन पहले मुझे गिरफ्तार किया गया और आज मुझे मरना है।"

विनिसियस दौड़ता हुआ तहखाने से निकल आया और बाहर मैदान में पेट्रोनियस के पास आ बैठा। पेट्रोनियस ने पूछा, "क्या वह अन्दर है?"

"नहीं, वह अभी जेल में ही है। अच्छा, मुझे एक और बात सूझ रही है। लेकिन तुम जरा आगे बैठी हुई उस औरत को देखकर बात करो ताकि लोग यह समझें कि हम लोग उसके बालों की तारीफ कर रहे हैं, क्योंकि टिजेलिनस और चिलन की नजर हम लोगों पर है। ऐसा करो, रात में लीजिया को मुर्दों के साथ एक ताबूत में बन्द करवा दो और मुर्दों के साथ ही उसे जेल से बाहर निकलवा दो। लोगों में खबर उड़ा देना कि लीजिया मर गई। बाकी तुम जानते ही हो कि आगे क्या करना चाहिए।"

"हाँ, यह ठीक रहेगा।"

जैसा कि खेल का नियम था, सबसे पहले उत्तर और दक्षिण से आये बर्बर जाति के शिकारी जंगली जानवरों के शिकार का प्रदर्शन किया करते थे। लेकिन इस बार खेल की शुरूआत 'अन्धे युद्ध' से हुई। इस युद्ध में ग्लेडियेटरों को लोहे के ऐसे टोप पहनाये जाते थे जिनमें उनकी आँखें भी ढँक जाती थीं। फिर वे नंगी तलवारें या भाले लेकर अन्धों की तरह एक-दूसरे पर टूट पड़ते थे।

इस तरह के करीब बारह ग्लेडियेटर मैदान में छोड़े गये। कोड़े मारनेवाले उन्हें एक-दूसरे की ओर ढकेल रहे थे। उन लोगों ने युद्ध शुरू कर दिया। अन्धों के इस युद्ध से वहाँ उपस्थित संभ्रान्त नागरिक कुछ विशेष प्रभावित नहीं हुए। लेकिन आम जनता को यह खेल काफी अच्छा लगा। जब वे एक-दूसरे पर हमला करने के बहाने हवा में तलवार चलाते थे या एक-दूसरे पर हमला करने के बहाने पीठ के बल आपस में टकरा जाते थे तो लोग खुशी से चीखने लगते थे और लड़नेवालों को संकेत करते थे, "बायें, बायें हटो! अरे, दाहिने वार करो! सामने, सामने!" और इस तरह जान-बूझकर उन्हें गलत रास्ता बताते थे। लेकिन अब तक इनमें से कुछ लोग गुँथ चुके थे और उनमें बड़ी खूंखार कुश्ती शुरू हो गई थी। कुछ लोगों ने अपनी ढालें फेंक दी थीं और अपने विरोधी को बायें हाथ से पकड़कर दाहिने हाथ से उस पर वार कर रहे थे। जो लोग जमीन पर गिर जाते थे वे दया की भीख माँगने लगते थे। लेकिन खेल के शुरू में जनता ने यह पसन्द नहीं किया। वह घायलों को उसी जगह मार डालने की माँग करने लगी।

लेकिन इसके बाद जो खेल होनेवाला था उसे सुरुचिपूर्ण नागरिक और आम जनता दोनों पसन्द करते थे। आमतौर से इस खेल में अमीरों और सरदारों के लड़के काफी बड़ी रकम दाँव पर लगाया करते थे। अब ग्लेडियेटरों की कुश्ती शुरू होने वाली थी। एक साथ कई तुरहियाँ बज उठीं। मैदान में सन्नाटा छा गया। हजारों आँखें उस बड़े दरवाजे पर जम गयीं जहाँ एक आदमी बड़ा-सा हथौड़ा लेकर दरवाजे पर चोट कर रहा था। जैसे अन्दर के लोगों को बाहर मैदान में आने का

आदेश दे रहा हो। दरवाजे के दोनों पल्ले धीरे-धीरे खुले और धीरे-धीरे एक-एक ग्लेडियेटर अँधेरे से निकलकर मैदान में आने लगा।

कई बड़े-बड़े और प्रसिद्ध पहलवान लोगों की जय-जयकारों के बीच बाहर आने लगे। उनकी संख्या करीब पचीस थी और वे सब हथियारों से लदे थे। उनके बाद एक दूसरे किस्म के पहलवान आये, जो एक हाथ में बड़ी-सी जाली और दूसरे में एक लम्बा-सा त्रिशूल लिये हुए थे। ये सब ग्लेडियेटर शान से चलते हुए मैदान के बीच की ओर बढ़ने लगे। उनके हथियार धूप में चमचमा रहे थे। वे सब बहुत शान के साथ सम्राट् के मंच के सामने जा खड़े हुए और हाथ उठाकर सीजर की जय बोलने लगे।

फिर पलक मारते ही वे इधर-उधर बिखर गये और पूरे मैदान में फैल गये। इनके साथ, बाद में, इनके बीस-बीस सहायक भी आ खड़े हुए। अब यह एक छोटा-सा युद्ध होनेवाला था, जिसमें हर आदमी एक-दूसरे की जान लेने को तैयार था। लेकिन सबसे पहले दो परमवीर और बहुत प्रसिद्ध पहलवान अकेले युद्ध करके अपनी वीरता और शारीरिक क्षमता का परिचय देनेवाले थे। एक तरफ से लानिओ नामक ग्लेडियेटर आगे बढ़ा, जिसे रोम की जनता भली-भाँति जानती थी। वह कई युद्धों में विजयी हो चुका था। वह लोहे के बड़े से टोप और लोहे की चद्दरों का लबादा ओढ़े था। इससे उसका विशाल शरीर और भी विशाल मालूम पड़ता था। दूसरी तरफ से कालेन्डिओ नामक एक दूसरा पहलवान आगे बढ़ा और भीड़ में दाँव बदे जाने लगे।

"लानिओ पर पाँच-सौ रुपये (सेस्टरसेस)!"

"कालेन्डिओ पर सात सौ!"

"हरक्यूलिस की कसम, एक हजार!"

"दो हजार!"

लानिओ मैदान के बीच में आया और फिर तलवार सामने तानकर पीछे खिसकने लगा। उसने अपना सिर थोड़ा-सा झुका रखा था ताकि अपनी लोहे की नकाब के सूराखों से दुश्मन को अच्छी तरह देख सके। दूसरी तरफ कालेन्डिओ कमर में सिर्फ एक कपड़ा लपेटे बिल्कुल नंगे बदन था। लेकिन उसके पास जाली और त्रिशूल था। वह अपने शत्रु पर बड़े अन्दाज के साथ जाली फेंकने और उसे फँसाने की कोशिश करने लगा। साथ ही वह एक गाना भी गा रहा था जिसका मतलब था, "मैं तुम्हें नहीं, एक मछली को फँसाना चाहता हूँ। तुम क्यों भाग रहे हो?"

लेकिन लानिओ ने पीछे हटना बन्द कर दिया। वह एक ही जगह खड़ा होकर शत्रु के जाल से बचने की कोशिश करने लगा। उसके हाव-भाव से ऐसा लगता था जैसे अभी वह उछलकर उस पर टूट पड़ेगा।

लेकिन अब उसका विरोधी जाली फेंकता हुआ और त्रिशूल घुमाता हुआ कभी आगे बढ़ता था और कभी पीछे हट जाता था। एक बार उसका त्रिशूल अपने विरोधी की ढाल से जा टकराया लेकिन उसके विरोधी ने इसकी कोई परवाह नहीं की। उसकी आँखें अपने सिर पर चक्कर काटते हुए जाल पर लगी थीं। मैदान में बैठे हुए हजारों लोग साँस रोककर इस खेल को देख रहे थे। अचानक लानिओ ने मौका देखकर अपने शत्रु पर एक वार किया। दूसरा बड़ी फुर्ती से उछलकर बच गया और पलक मारते ही उसने अपना जाल उस पर फेंका।

लानिओ ने ढाल से उसके जाल को रोक लिया और दोनों दूर जा खड़े हुए। अब तक सीजर रूब्रिया नाम की एक संन्यासिनी से बातें कर रहा था और इधर कोई ध्यान नहीं दे रहा था। लेकिन अब उसे भी खेल में आनन्द आने लगा। दोनों पहलवान एक बार फिर से एक-दूसरे पर टूटे। यह खेल किसी की जान लेने के लिए नहीं था। यह केवल अपनी-अपनी कुशलता दिखाने के लिए था। दो बार लानिओ जाल से बच गया और फिर घेरे की ओर हटने लगा।

लेकिन जिन लोगों ने उसपर दाँव लगाये थे वे उसे कोई मौका नहीं देना चाहते थे। वे चिल्लाने लगे, "लड़ो, लड़ो! आगे बढ़ो! और लड़ो!" लानिओ को उनकी बात माननी पड़ी। वह फिर से अपने विरोधी पर झपटा। कालेन्डिओ काफी घायल हो गया था। उसके शरीर से खून बह रहा था। लानिओ आखिरी वार करने के लिए उसके पास पहुँच गया। कालेन्डिओ ने ऐसा बहाना बनाया जैसे अब उससे जाल उठाने और लड़ते नहीं बन रहा है। नीचे झुककर वह लानिओ की तलवार से बच गया और फिर पलक मारते ही उसने अपना त्रिशूल लानिओ के पैर में फँसाकर उसे नीचे बालू पर गिरा दिया। लानिओ उठकर खड़ा हो जाता लेकिन दूसरे ही क्षण उसके ऊपर जाल आ गिरा। अब वह उसमें से जितना ही निकलने की कोशिश करता था उतना ही फँसता जाता था। इसके अलावा कालेन्डिओ ने त्रिशूल से उसे जमीन पर दबोच रखा था।

उसने एक बार उठने की और कोशिश की, हाथ-पैर फेंके: लेकिन जाल में फँसकर उसकी तलवार हाथ से छूट गयी। कालेन्डिओ ने उसकी गर्दन पर अपना त्रिशूल दबा दिया और फिर शाही मंच की ओर देखा। पूरे मैदान में लोग उत्तेजित होकर चिल्ला रहे थे और हवा में मुट्ठियाँ फेंक रहे थे। जिन लोगों ने कालेन्डिओ पर दाँव लगाये थे उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। वे लेनिओ को भी धन्यवाद दे रहे थे क्योंकि वह अपनी जान देकर उनकी थैलियाँ भर रहा था।

दर्शकों में दो दल हो गये थे। कुछ लोग चाहते थे कि अब लानिओ को छोड़ दिया जाय और कुछ लोग चाहते थे कि नहीं उसे वहीं मार डाला जाय। लेकिन कालेन्डिओ किसी की बात न सुनकर सीधे शाही मंच की ओर देख रहा था जहाँ

सीजर और पुरोहित-गण बैठे हुए थे। लेकिन दुर्भाग्य से लानिओ नीरो का प्रिय पहलवान नहीं था। क्योंकि पिछली बार एक दंगल में नीरो ने उस पर बड़ा भारी दाँव लगाया था जिससे उसे हारना पड़ा था। इसलिए उसने मंच के छज्जे पर से अपना हाथ बाहर फैलाया और अपना अँगूठा नीचे कर दिया। उसे देखकर पुरोहितों ने भी अपने अँगूठे नीचे कर दिये। तब क्रालेन्डिओ ने लानिओ की छाती पर अपना घुटना रखा और उसकी गर्दन के पास उसका बख्तर ढीला किया और फिर त्रिशूल की तीनों नोक उसकी गर्दन में घुसेड़ दीं।

"शाबाश!" लोग चिल्लाये।

लानिओ जिबह किये गये एक साँड़ की तरह तड़पा, पैरों से जमीन पीटने लगा और फिर ठंडा हो गया। घायलों का सिर काटनेवालों को वहाँ आकर और उसके शरीर को गरम लोहा छुआकर यह देखने की जरूरत नहीं पड़ी कि वह जिन्दा है या मर गया।

फौरन उसकी लाश को वहाँ से हटाया गया। दूसरे पहलवान मैदान में आये और पहलवानों की पूरी भीड़ आपस में युद्ध करने लगी। उत्तेजित भीड़ के आनन्द और उत्साह की सीमा नहीं रही, वे मंत्रमुग्ध होकर इस खूनी दृश्य को देख रहे थे। लोग खुशी से चिल्ला रहे थे। तालियाँ और सीटियाँ बजा रहे थे और उछल-उछल-कर अपनी पसन्द के पहलवानों को बढ़ावा दे रहे थे। मैदान में ग्लेडियेटरों के दो दल जंगली जानवरों की तरह आपस में लड़ रहे थे।

जिरह-बख्तर और ढालों पर जब चोट होती थी तो वे झनझना उठती थीं। कभी दो आदमी मौत के दाँव में एक-दूसरे को फँसाने की कोशिश करते हुए जमीन पर लुढ़कते थे तो कभी हड्डियाँ टूटती थीं और तलवारें पेट या छाती में सपाक् से घुस जाती थीं। देखते-देखते कोई खून उगलने लगता था। अन्त में कुछ नौसिखये पहलवान इस हत्याकांड से घबराकर भागने लगे। लेकिन तभी कोड़ेवाले अपने वजनी कोड़ों से पीटते हुए उन्हें वापस ढकेलने लगे। उस बालू के मैदान पर कई जगह खून के धब्बे फैल रहे थे। जो लोग गिर पड़ते थे, उनकी लाशें खींचकर अलग कर दी जाती थीं और उनकी जगह नये ग्लेडियेटर आ पहुँचते थे।

अन्त में जो हार गये थे वे निर्जीव होकर जमीन पर पड़े थे, केवल कुछ ही लोग जीवित बचे। लेकिन वे भी बुरी तरह घायल और थके हुए थे। वे अपने हाथ फैलाकर दर्शकों से प्राणों की भीख माँगने लगे। जो लोग जीत गये थे उनपर फूलों के गुच्छे और मालाएँ फेंकी जा रही थीं। इतने में सर्वशक्तिमान सम्राट् के आदेश से कुछ देर की छुट्टी हो गई और खेल रोक दिया गया। इस अवसर पर सम्राट् ने एक भोज का इन्तजाम किया था। सुगन्धित धूप और अगरबत्तियाँ जलायी गईं और भीड़ पर गुलाबजल की फुहारें बरसने लगीं। ठंडे पेय बाँटे गये और मिठाई,

फल और भुने हुए गोश्त के टोकरे दर्शकों के आगे रख दिये गये। लोग भोजन पर टूट पड़े और अपने दयालु सीजर को धन्यवाद देने लगे। खेल कुछ देर के लिए बन्द था। इसलिए कुछ लोग अपने पैरों को सीधा करने के लिए इधर-उधर टहलने लगे। उधर दरबारी लोग चिलन को चिढ़ा रहे थे और डरपोक प्रकृति का होने के कारण उसका मजाक बना रहे थे। वेटिनियस बोला, "हमारे यूनानी दोस्त को फटे हुए चमड़ों और इस तरह के खूनखराबे को देखकर कोई मजा नहीं आता।"

चिलन अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोला, "कोई चमार थोड़े ही हूँ! जो चमड़े और गोश्त में रुचि लूँ!"

एक दरबारी बोला, "क्यों चिलन, तुम तो ईसाइयों से बदला लेना चाहते हो न? क्या तुम भी जंगली कुत्तों के साथ कुत्ता बनकर उन्हें काटना पसन्द नहीं करोगे?"

"लेकिन मैं तुम्हारा भाई बनना नहीं चाहता।"

"लगता है, तुम्हारी पीठ खुजला रही है? बोलो, खुजला दूँ?"

"खुद ही अपनी पीठ खुजलाओ, ताकि जो खुजली तुम्हें मची हुई है वह शान्त हो जाय और तुम चार आदमियों के बीच चुप मारकर बैठ सको!"

इस तरह दरबारी उसे गालियाँ देते थे और वह चिढ़कर जवाब देता था। सीजर यह सुनकर खुश हो रहा था। इतने में पेट्रोनियस चिलन के पास पहुँचा और अपनी हाथी दाँत की छड़ी से उसे थपथपाते हुए शान्ति से बोला, "वाह, खूब कहा, फिलासफर साहब, लेकिन तुमने एक बहुत बड़ी गलती की है। असल में ईश्वर ने तुम्हें जेबकतरा बनाना चाहा था, लेकिन तुम अपने को फिलासफर बनाना चाहते हो। तुम ज्यादा देर तक इन दरबारियों से जबानदराजी नहीं कर पाओगे। इसलिए अच्छा है, अब चुप हो जाओ।"

वह बूढ़ा उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगा। उसकी समझ में नहीं आया कि इसका क्या जवाब दूँ, वह कुछ कहने ही जा रहा था कि इतने में फिर से बिगुल बजे और मध्यान्तर समाप्त हो गया।

लोग अपनी-अपनी जगह पर लौटने लगे। उधर मैदान में बालू पर खून के थक्के जमे थे, उन्हें नौकर आकर साफ करने लगे।

अब ईसाइयों की बारी थी। कोतवाल के संकेत पर यमदूत की शक्ल में एक आदमी मैदान में आया और धीरे-धीरे उस दरवाजे की ओर बढ़ा। फिर उसने तीन बार एक बड़े हथौड़े से दरवाजे पर चोट की। भीड़ में फुसफुसाहट शुरू हो गई, "ईसाई! अब ईसाई आयेंगे!"

लोहे का बड़ा भारी दरवाजा आवाज करते हुए खुला और अँधेरे गलियारे से कोड़ा मारनेवालों की पहचानी हुई आवाजें आने लगीं, "चलो, जल्दी चलो! उधर बालू पर चलो!" और देखते-देखते मैदान में भालू और दूसरे जानवरों की खालें

पहने हास्यास्पद प्राणियों की भीड़ बढ़ने लगी। ईसाई दौड़ते हुए मैदान के बीच बालू पर आ खड़े हुए और घुटनों के बल बैठकर और हाथ उठाकर प्रार्थना करने लगे।

लोगों ने यह सोचा कि ईसाई दया की भीख माँग रहे हैं। ऐसे कायरों के प्रति उनका गुस्सा बढ़ने लगा। लोग उन पर जूठी तश्तरियाँ और हड्डियाँ फेंकते हुए चिल्लाने लगे, "शेरों को छोड़ो, इन कायरों पर जंगली जानवरों को छोड़ो!" लेकिन तभी एक ऐसी बात हुई जिसकी किसी ने कल्पना नहीं की थी। ईसाइयों की वह भीड़ आसमान की ओर हाथ उठाकर एक स्वर में भजन गाने लगी। उस खूनी रोमन क्रीड़ांगन में यह पहली बार भजन की आवाज गूँज रही थी। रोमन नागरिक चकित रह गये। अब जाकर उन्हें मालूम हुआ कि वे उनसे दया की भीख नहीं माँग रहे थे। वे सीजर या सिनेटरों या भीड़ में से किसी की तरफ नहीं देख रहे थे। बल्कि उनकी आँखें आसमान की ओर उठी हुई थीं और उनके पीले चेहरों पर एक अजीब-सी मुस्कान थी।

इतने में एक दूसरा दरवाजा खुला। और उसमें से बहुत बड़े-बड़े जंगली कुत्ते, जो कई दिनों से भूखे थे, भूंकते और गुर्राते हुए बाहर आ गये। इनमें कई तरह के खूंखार और शिकारी कुत्ते भी थे। पूरा एम्फीथियेटर कुत्तों के शोर से भर उठा। ईसाई अपना भजन खत्म करके जमीन पर ही झुके रहे।

जानवरों की खाल में छिपे हुए इन्सानों की गन्ध पाकर कुत्ते गुर्राते हुए दुम हिलाने लगे। लेकिन पास जाने की उन्हें हिम्मत नहीं हो रही थी। भीड़ की उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। हजारों आदमी कुत्तों को आगे बढ़ने के लिए ललकार रहे थे। कुत्ते उछलते हुए ईसाइयों के पास तक जाते थे और फिर दाँत निकालकर लौटने लगते थे। इतने में एक शिकारी कुत्ता हिम्मत करके आगे बढ़ा। उसने जमीन पर सिर झुकाये बैठी एक स्त्री के कन्धे में अपने पैने दाँत घुसेड़ दिये और मुँह झटककर दूसरे ही क्षण मुट्ठी भर मांस नोच लिया। अब तो दूसरे कुत्ते भी ईसाइयों पर टूट पड़े। मैदान में थोड़ी देर के लिए खामोशी छा गई। लोग चुप होकर तमाशा देखने लगे। थोड़ी ही देर में कुत्तों के झुण्ड ने ईसाइयों को लहूलुहान कर डाला। औरतें, बच्चे दर्द से चीखने लगे। कुत्ते गुर्रा-गुर्राकर मांस नोच रहे थे। ईसाइयों ने कुत्तों का कोई विरोध नहीं किया। कटे हुए हाथ-पैर और मांस के बड़े टुकड़ों पर कुत्ते आपस में झगड़ने लगे। थोड़ी ही देर में ईसाइयों की करीब-करीब पूरी भीड़ को कुत्तों ने फाड़ खाया। रक्त और मांस की बदबू पूरे मैदान में फैल गयी। इसके बाद कोड़े मारते हुए दूसरे लोगों का दल मैदान में लाया गया। वे लोग भी आकर उसी तरह जमीन पर झुक गये। लेकिन अब कुत्ते थक चुके थे। उन्होंने उधर देखा तक नहीं। यह देखकर रोमन दर्शकों की भीड़ उत्तेजित होकर चिल्लाने लगी, "शेरों को निकालो! कुत्ते थक चुके हैं। शेर छोड़े जायँ!"

असल में शेरों को दूसरे दिन के लिए रखा गया था। लेकिन दर्शकों की माँग बढ़ती जा रही थी, यहाँ तक कि सीजर से भी नहीं रहा गया। उसने अपनी प्रजा को खुश करने के लिए नौकरों को इशारा किया। दूसरे दरवाजे खोल दिये गये। उनमें से दहाड़ते हुए शेर और चीते शान से अपनी गर्दनें झटकाते हुए बाहर निकल आये। दर्शकों में एक आनन्दमय शान्ति छा गई। सीजर ने दृश्य को अच्छी तरह से देखने के लिए अपनी आँख के आगे एक कीमती पन्ना लगा लिया। दरबारी भी अपनी-अपनी कुर्सियों में उचकने लगे और दर्शकों ने अपनी उँगलियों पर शेरों को गिनना शुरू किया। सब लोग उत्सुकता से यह देख रहे थे कि अब क्या होता है। लेकिन ईसाई अब भी अपने भजन गा रहे थे, जिनके शब्द किसी की समझ में नहीं आ रहे थे।

शेर हालाँकि भूखे थे लेकिन अपने शिकारों पर हमला करने से सकुचा रहे थे। इसीलिए वे पलकें झपका रहे थे। उनमें से कुछ हाथ-पैर फैलाकर आलस तोड़ रहे थे और कुछ बार-बार मुँह फाड़कर जँभाई ले रहे थे, जैसे अपने भयानक दाँत दिखाना चाहते हों। लेकिन धीरे-धीरे खून और चिथड़े-चिथड़े हुए मनुष्य शरीरों की गन्ध से उनकी भूख बढ़ने लगी। वे बेचैनी से इधर-उधर सूँघते हुए पूँछ हिलाने लगे। अचानक उनमें से एक एक स्त्री के मृत शरीर पर झपटा और उसके कटे हुए चेहरे पर अपना पंजा रखकर उसका खून चाटने लगा। इतने में दूसरा शेर एक ईसाई की ओर बढ़ा जो अपनी गोदी में एक बच्चे को लिये हुए था। बच्चे पर भालू की खाल सिली हुई थी। शेर को अपनी ओर बढ़ते देखकर बच्चा चीखने लगा और अपने पिता से चिपट गया। पिता उसको बचाने की कोशिश करने लगा। लेकिन इस चीख-चिल्लाहट से जैसे शेर को गुस्सा आ गया। वह जोर से दहाड़ा और अपने पंजे के एक थप्पड़ में ही उसने बच्चे के प्राण ले लिये और फिर वह उछलकर बच्चे के पिता के कन्धों पर कूदा और दूसरे ही क्षण उसका सिर उसने अपनी दाढ़ों में दबोच कर तोड़ डाला।

अब क्या था, दूसरे शेर भी टूट पड़े। कुछ ईसाई औरतें डर कर चीखने लगीं। लेकिन उनकी चीखें दर्शकों के शोर में डूब गईं।

मैदान का दृश्य बड़ा भयानक था। एक ही झपट्टे में शेर लोगों के सीने फाड़ देते थे और हड्डियाँ चबा रहे थे। कुछ अपने शिकारों को मुँह में उठाकर इधर-उधर दौड़ रहे थे ताकि एकान्त में बैठकर आराम से खा सकें। दर्शकों में उत्तेजना फैल रही थी। लोग अपनी-अपनी जगहों से उठकर नीचे की पंक्तियों की ओर आने लगे ताकि दृश्य को समीप से देख सकें। भगदड़ मच गई। भीड़भाड़ में कुछ लोग कुचलकर मर भी गये। ऐसा लगता था जैसे दर्शकगण सीधे मैदान में पहुँच जाना चाहते हैं और ईसाइयों को फाड़कर खाने में शेरों की मदद करना चाहते हैं।

सीजर बहुत ध्यान से अपनी एक आँख के आगे पन्ने का चश्मा लगाये यह सब देख रहा था। पेट्रोनियस के चेहरे पर घृणा और क्रोध के चिन्ह थे। चिलन तो बेहोश ही हो गया था और उसे वहाँ से हटाया जा रहा था।

लेकिन फिर भी अभी ईसाई खत्म नहीं हुए थे, उनके दल के दल मैदान की ओर ढकेले जा रहे थे।

उस विशाल भवन की सबसे ऊँची बुर्जी पर से सन्त पीटर यह सब देख रहे थे। उनकी ओर किसी ने नहीं देखा क्योंकि सब की नजर मैदान की ओर थी। वे खड़े हुए और नीचे मैदान में शहीद होते हुए अपने शिष्यों को आशीर्वाद देने लगे। उन्होंने क्रास का चिन्ह बनाया और ईश्वर से प्रार्थना की कि इन लोगों को यातना सहने की शक्ति दो और इनके लिए स्वर्ग का द्वार खोल दो। अचानक ईसाइयों की नजर उस ओर गई और उन्होंने पीटर को पहचान लिया। यह देखकर उनके चेहरे खिल उठे कि मरते समय सन्त पीटर का आशीर्वाद उन्हें मिल रहा है और उनके सिर पर क्रास का पवित्र चिन्ह बना हुआ है।

लेकिन अचानक सीजर ने कोतवाल को अपने पास बुलाया और उससे कुछ कहा। कोतवाल दौड़ता हुआ नीचे तहखाने में चला गया और लोगों ने बड़े आश्चर्य से देखा कि दूसरे दरवाजे भी खोल दिये गये हैं और उनसे होकर दूसरे जङ्गली जानवर भी बाहर निकलने लगे हैं। उनमें चीते, भालू, भेड़िये, लकड़बग्घे और इसी तरह के दूसरे खूंखार जानवर थे। देखते-देखते मैदान जंगली जानवरों से भर गया। मैदान में भयानक हत्याकांड मच गया। आज तक रोमवासियों ने ऐसा दृश्य नहीं देखा था। थोड़ी ही देर में उनका मन भर गया। कुछ औरतें अब घबराकर चीखने लगीं। कुछ पुरुष भी चिल्लाने लगे, "बन्द करो! बन्द करो! बस करो! बस करो!"

लेकिन जानवरों को छोड़ना जितना आसान था, उन्हें लौटाना इतना ही मुश्किल था। लेकिन सीजर ने अपनी प्रिय प्रजा को आज नये से नये दृश्य दिखाने का निश्चय किया था। थोड़ी देर बाद ही चारों ओर से अफ्रीका के हबशी मैदान में आने लगे। उनके बालों में पंख खुंसे हुए थे। कानों में बड़ी-बड़ी बालियाँ थीं और हाथों में बड़े-बड़े धनुष। दर्शक फिर से खुश होकर चिल्लाने लगे और इस नये खेल के लिए सीज़र की जय के नारे लगाने लगे। हबशी लोग चारों ओर फैल गये और जानवरों पर तीर चलाने लगे। उनके काले-काले लेकिन बहुत सुन्दर बनावटवाले शरीरों को लोग प्रशंसा की दृष्टि से देख रहे थे।

हबशियों के विष-बुझे तीर सनसनाते हुए जानवरों पर बरस रहे थे। जो ईसाई घायल थे या जानवरों के खाने से बच गये थे वे इनके तीरों से ठंडे होने लगे। देखते-देखते बहुत से जानवर ढेर हो गये। फिर भी तीर बराबर बरसते रहे। कुछ देर बाद मैदान में एक भी प्राणी जीवित नहीं बचा, न मनुष्य न पशु।

इसके बाद सैकड़ों गुलाम फावड़े कुदाल, झाड़ू और कूड़ा ढोने वाली गाड़ियाँ तथा बालू के बोरे और टोकरियाँ लेकर मैदान में निकल आये। उन्होंने जल्दी-जल्दी मैदान साफ करना शुरू किया। कुछ ही क्षणों में पूरा मैदान साफ हो गया। सारी लाशें हटा दी गईं। खून से सनी हुई बालू अलग करके उसकी जगह नयी साफ बालू बिछा दी गयी। इसके बाद कामदेव का भेस बनाये हुए कुछ युवक मैदान में निकल आये और गुलाब की पंखुड़ियाँ बिखेरने लगे। एक बार फिर से धूप और अगर जलाया गया। सूरज डूब रहा था, इसलिए शामियाने हटा दिये गये।

लोग आश्चर्य से एक-दूसरे का मुँह देखने लगे कि अब क्या होने वाला है। सीजर कुछ देर पहले अपने मंच से उठकर कहीं चला गया था। अचानक वह मैदान में दिखाई दिया। वह गुलाबी पोशाक पहने था और सिर पर सोने का मुकुट लगाये था। बारह गायक बीनें लिये हुए उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। नीरो के हाथ में चाँदी की बीन थी। बहुत शान से चलते हुए वह बीच मैदान में पहुँचा। फिर कई बार झुककर उसने आसमान की ओर आँखें उठाईं। कुछ देर तक वह इसी तरह खड़ा रहा जैसे वह कुछ प्रेरणा ले रहा हो। फिर बीन बजाते हुए और विभिन्न रोमन देवताओं का नाम लेते हुए वह अपना बनाया हुआ भजन गाने लगा। धीरे-धीरे उसकी आवाज में एक तरह का दर्द आने लगा। पूरे मैदान में सन्नाटा छाया हुआ था। सीजर की महीन आवाज गूँज रही थी। जब उसने गाना बन्द किया तो उसकी आँखें भींग आईं। पुरोहितों की आँखें भर आईं और फिर हजारों आदमियों ने तालियाँ बजाकर नीरो का सम्मान किया।

उधर मैदान में प्रवेश करने के दरवाजे खोल दिये गये थे ताकि वहाँ शुद्ध हवा आ सके। ईसाई स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों की लाशें और उनके कटे-फटे अंगों के ढेर के ढेर गाड़ियों में लादकर ले जाये जा रहे थे। इन्हें शहर से दूर उन गड्ढों में फेंका जाने वाला था जिनकी बदबू और गन्दगी का वर्णन करना कठिन है।

## १५

इस तरह यह नाटक खत्म हुआ। लोगों की भीड़ मैदान से शहर की ओर लौटने लगी। पेट्रोनियस और विनिसियस रास्ते में कुछ नहीं बोले। जब उनकी पालकी घर के दरवाजे तक आ गई तो दोनों चुपचाप उतर पड़े। इतने में अचानक एक काली आकृति उनके पास आई। उसने पूछा, "क्या सरदार विनिसियस घर पर हैं?"

"हाँ," विनिसियस ने उत्तर दिया। "कौन हो तुम ?"

"मैं मरियम का लड़का नजारियस हूँ। मैं जेल से लीजिया की खबर लाया हूँ।"

विनिसियस मशाल की रोशनी में चुपचाप उसकी आँखों में देखने लगा। उसके ओंठ कुछ काँपे लेकिन वह बोल नहीं सका। नजारियस उसके प्रश्न को ताड़ गया और बोला, "वह अभी जिन्दी है। यूरसस ने मुझे यह कहने के लिए आपके पास भेजा है कि लीजिया बुखार में जब बड़बड़ाती है तो ईश्वर का और आपका नाम लेती है।"

"ईसा परम दयालु हैं। उन्होंने चाहा तो मुझे लीजिया वापस मिल जायगी," विनिसियस ने कहा। वह उसे अध्ययन-कक्ष में ले गया। वहीं पेट्रोनियस भी आ गया। पेट्रोनियस ने उस लड़के के खूबसूरत चेहरे और नीली आँखों तथा घने काले बालों को गौर से देखा और पूछा, "तुम किस देश के रहने वाले हो ?"

"साहब, मैं गैलिली का रहनेवाला हूँ।"

"अगर लीजिया छूट जाय तो क्या तुम्हें खुशी होगी ?"

"जी हाँ, क्यों नहीं। इसके लिए मैं अपनी जान तक दे सकता हूँ।"

विनिसियस बोला, "सुनो, जेल के सिपाहियों से कहना कि लीजिया को भी दूसरे मुर्दों के साथ किसी ताबूत में बन्द कर दें। फिर रात में तुम कुछ लोगों की मदद से उसे बाहर उठवा लाना। मरघट में तुम्हें कुछ लोग पालकी लेकर तैयार मिलेंगे। उन्हें लीजिया का ताबूत सौंप देना। जेल के सिपाहियों से कहना कि यहाँ आयें और जितना चाहें, सोना मुझसे ले जायें।" यह कहते कहते विनिसियस के उतरे हुए चेहरे में एक अजीब-सी चमक आ गई।

पेट्रोनियस ने पूछा, "क्या तुम सोचते हो कि सिपाही उसे इस तरह छोड़ देंगे ?"

"हाँ," विनिसियस बोला, "वे तो बहुत पहले ही से उसे छोड़ने को तैयार हैं। अब तो वे और आसानी से राजी हो जायँगे, क्योंकि लीजिया मुर्दों के साथ बाहर आयेगी। इस तरह उनपर कोई खतरा नहीं आयेगा।"

"जेल में एक आदमी का काम बाहर जानेवाले मुर्दों को गरम लोहे से छूकर यह देखना रहता है कि वह मर गया है या नहीं। लेकिन अगर उसे कुछ सोना दे दिया जाय तो वह सिर्फ कफन छूकर छोड़ देगा।"

पेट्रोनियस कुछ देर सोचता रहा और फिर बोला, "हर आदमी को यह विश्वास हो जाना चाहिए कि वह मर गई है। क्या मरघटवाली पहाड़ी पर तुम्हारा कोई विश्वसनीय नौकर नहीं है ?"

"वहाँ भी है और कोरिओली पहाड़ी पर जो जमींदारी है वहाँ भी मेरा एक खास आदमी है जो बचपन में मुझे खिलाया करता था।"

पेट्रोनियस ने उसे कुछ तख्तियाँ दीं और कहा, "लो, इसपर उसे एक चिट्ठी लिख दो और कल उसे यहाँ बुला लो। मेरा आदमी अभी चिट्ठी लेकर चला जायगा।"

थोड़ी ही देर बाद पेट्रोनियस का एक गुलाम चिट्ठी लेकर घोड़े पर सवार होकर वहाँ से चल पड़ा। दूसरे ही दिन विनिसियस का नौकर आ पहुँचा। शहर के बाहर वह एक जगह पर अपने चार बहुत तगड़े और विश्वसनीय नौकरों को एक पालकी और कुछ खच्चरों के साथ तैयार खड़ा करके आया था। वह बुड्ढा इतने दिनों बाद अपने मालिक को देखकर गद्‌गद् हो गया और उसका हाथ अपनी आँखों से लगाकर बोला, "मालिक, आपका चेहरा कैसा उतरा हुआ है! क्या आपकी तबियत ठीक नहीं है? आप तो जैसे पहचान में नहीं आ रहे हैं।"

विनिसियस उसे अन्दर ले गया और सारा किस्सा बताने लगा।

बूढ़ा आश्चर्य से उसकी ओर देखकर बोला, "अच्छा, तो वह लड़की ईसाई है?"

"हाँ, और मैं भी हूँ।"

यह सुनकर उसकी आँखों में आनन्द के आँसू छलक आये। वह बोला, "हे भगवान्, आखिर तुमने मेरे मालिक की आँखों पर से भी पर्दा हटा लिया!"

इतने में पेट्रोनियस नेजारियस के साथ अन्दर आया और बोला, "बड़ी बढ़िया खबर मिली है।" और सचमुच उसके पास अच्छी खबर सुनाने को थी। ग्लोकस नाम का ईसाई हकीम लीजिया के इलाज के लिए तैयार था और उधर जेल के सभी नौकरों को घूस देकर खरीद लिया गया था। वह लड़का कहने लगा, "हम लोगों ने कफन के डिब्बे में छेद कर दिये हैं। ताकि वह आसानी से साँस ले सके। ग्लोकस उसे नींद लानेवाली एक दवा खिला देगा। कफन का डिब्बा बन्द नहीं किया जायगा। उसमें से आसानी से आप लीजिया को डिब्बे से निकाल सकेंगे। बाद में हम लोग बाजू का बोरा कफन में रखवा देंगे।"

"क्या उस समय जेल से और भी मुर्दे निकाले जायेंगे?" पेट्रोनियस ने पूछा।

नेजारियस बताने लगा, "पिछली रात करीब बीस आदमी मरे हैं। आज शाम तक कुछ और मर जायँगे। शुरू में तो हमें सबके साथ ही चलना होगा। लेकिन बाद में हम पिछड़ जायेंगे। पहले मोड़ पर ही मेरे कुछ साथी लँगड़ाने

लगेंगे। जब वे लोग आगे निकल जायें तो आप लिबितीना के मन्दिर के पास हमें मिल जाइयेगा। भगवान करे रात अँधेरी हो।"

फिर विनिसियस का बूढ़ा नौकर शहर के बाहर चला गया और नेजारियस जेल के सिपाहियों को बाँटने के लिए सोने के सिक्कों से भरी एक थैली लेकर वहाँ से चल पड़ा। शाम को काफी तेज बारिश हुई और रात में भी कई बार पानी बरसा। मौसम खराब होने की वजह से सड़कें सूनी हो गईं। विनिनियस और पेट्रोनियस काले लबादों में मुँह ढँककर निकल पड़े। कभी-कभी बिजली चमक जाती थी और उसके प्रकाश में नये आधे बने हुए मकान दिखाई दे जाते थे। कुछ ही देर में वे लोग लिबितीना के मन्दिर के आगे पहुँच गये। यहाँ बहुत से घोड़े और खच्चर तैयार खड़े थे। विनिसियस ने धीरे से अपने नौकर को आवाज दी और पूछा, "क्यों, सब कुछ तैयार है न?"

"हाँ, मालिक, सब तैयार है! आप इधर आ जाइये। वहाँ भींग जायेंगे। उफ्, कैसी रात है! मुझे तो लगता है ओले पड़नेवाले हैं।"

सचमुच थोड़ी ही देर बाद ओले पड़ने लगे। हवा काफी ठंडी हो गई। वे लोग हर आहट को बहुत ध्यान से सुन रहे थे। ओलों के बाद तेजी से पानी बरसने लगा। हवा का एक झोंका मरघट की तरफ से आया और मारे बदबू के जैसे नाक फटने लगी। इतने में विनिसियस का नौकर बोला, "मालिक, शायद वे लोग आ रहे हैं। वह देखिये, दूर कुछ मशालें दिखाई दे रही हैं।"

धीरे-धीरे मशालें पास आने लगीं। पेट्रोनियस, विनिसियस और दूसरे लोग जमीन पर लेटकर उत्सुकता से इन्तजार करने लगे। थोड़ी ही देर में मुर्दा ढोने वालों का काफिला पास आया और एक क्षण के लिए मन्दिर के सामने रुका। उन लोगों ने बदबू से बचने के लिए अपनी नाक पर कपड़े बाँधे और आगे बढ़ गये। फिर एक ताबूत वहीं रुका रहा। विनिसियस और उसके साथी एक पालकी लेकर उधर दौड़े, लेकिन इतने में ताबूत के पास ही खड़ा हुआ नेजारियस सिसकते हुए बोला, "मालिक यूरसस और लीजिया को दूसरे कैदखाने में भेज दिया गया है। उन्हें आधी रात के पहले ही हटा दिया गया। इस डिब्बे में दूसरा मुर्दा है।"

## १६

दूसरे दिन जब खेल फिर शुरू हुआ तो सबसे पहले कार्यक्रम के रूप में ईसाइयों का एक युद्ध था जिसमें वे आपस में लड़ने वाले थे। उन्हें ग्लेडियेटरों के योग्य हमला करने और बचने के सारे हथियार दिये गये और मैदान में ढकेल दिया गया। लेकिन

उनके बारे में अनुमान गलत निकला। उन्होंने अपने तलवार, छुरे, भाले, त्रिशूल, जाल और गदा वगैरह फेंक दिये और एक-दूसरे को गले से लगा लिया। फिर वे सब जमीन पर झुककर प्रार्थना करने लगे। अन्त में सीजर के हुक्म से उन पर पेशेवर पहलवान और हथियारबन्द ग्लेडियेटर छोड़े गये। देखते ही देखते सारे ईसाई साफ हो गये।

जब मैदान से लाशें और कटे हुए हाथ-पैर हटा दिये गये तो कुछ पौराणिक नाटकों के दृश्य पेश किये गये। दर्शक बराबर तालियाँ बजाते रहे। एक नाटक में एक दृश्य को सच्चा रूप देने के लिए एक आदमी को काफी ऊँचाई से नीचे गिराया गया। उसके खून के छींटों से शाही मंच की दीवार रंग गई और उसके चिथड़े-चिथड़े उड़ गये।

इसके बाद ईसाई युवतियों पर ग्लेडियेटरों को छोड़ा गया जो जंगली जानवरों की खालें पहने हुए थे। इस घिनौने दृश्य को दर्शकों ने बहुत पसन्द किया और खूब तालियाँ बजायीं। इसके बाद छोटी-छोटी बच्चियों पर जंगली घोड़े छोड़े गये। देखते-देखते उनके कोमल शरीर घोड़ों की टापों में आकर चिथड़े-चिथड़े हो गये।

इसके बाद मैदान फिर से साफ किया गया और बालू में जगह-जगह गड्ढे खोद दिये गये। एक गड्ढा सबसे आगे सम्राट के मञ्च के सामने खोदा गया। इसके बाद तहखाने का बड़ा दरवाजा खुला और ईसाइयों के दल के दल बाहर आने लगे। ये करीब-करीब नंगे थे और हर एक के कन्धे पर एक वजनी टिकठी लदी हुई थी, बूढ़े और कमजोर बड़ी मुश्किल से टिकठियों का भार सँभाल पा रहे थे। उनमें स्त्रियाँ भी थीं जो अपने बालों और चिथड़ों की सहायता से अपनी नग्नता छिपाने का प्रयत्न कर रही थीं और बच्चे भी उन टिकठियों को ढो रहे थे जिनपर उन्हें शहीद होना था। करीब-करीब सभी लोगों को और उनकी टिकठियों को फूलों की माला पहनायी गई थी। उन्हें कोड़े मार-मारकर आगे बढ़ने के लिए और बालू में खुदे हुए गड्ढों के आगे अपनी टिकठियाँ गाड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा था। इनमें वे लोग भी थे जिन पर पहले दिन कुत्ते और दूसरे जानवर नहीं छोड़े जा सके थे। हबशी गुलामों ने ईसाइयों के हाथों में कीलें जकड़कर उन्हें टिकठियों पर टाँगना शुरू किया। पूरे मैदान में हथौड़ियों की आवाजें आने लगीं। इन लोगों में क्रिस्पस भी था, उसे आज इस तरह शहीद होते हुए बड़ी खुशी हो रही थी, क्योंकि ईसा भी इसी तरह शहीद हुए थे। उसका पतला-दुबला शरीर बिल्कुल नंगा था। उसकी कमर में लम्बी पत्तियों की माला बँधी थी और सिर पर गुलाब के फूलों की माला थी। अब भी उसके चेहरे पर वही निर्ममता थी और अब भी वह अपने

साथियों को हिम्मत बँधाने के बजाय उन्हें पाप और ईश्वर के क्रोध वगैरह से डरा रहा था, "प्रभु ईसा को धन्यवाद दो कि आज तुम भी उसी तरह यातना सहकर सूली पर मरने जा रहे हो जिस तरह उनके साथ हुआ था। हो सकता है, प्रभु तुम्हें क्षमा कर दें। लेकिन आज का दिन ईश्वर के क्रोध का दिन है। ईश्वर के क्रोध से काँपो, डरो!"

लेकिन तभी मैदान के पास ही दर्शकों के बीच से किसी का शान्त और गंभीर स्वर सुनायी दिया, "नहीं, यह ईश्वर के क्रोध का दिन नहीं, उनकी दया का, अनुकम्पा का दिन है। आज का दिन तुम्हारे लिए मुक्ति का, अनन्त आनन्द की प्राप्ति का दिन है। मैं कहता हूँ कि ईसा तुम्हें अपने चरणों में जगह दें। तुम अपने विश्वास पर कायम रहो और देखो, स्वर्ग के द्वार तुम्हारे स्वागत के लिए खुल रहे हैं!"

सब की आँखें उधर मुड़ गयीं। जो लोग टिकठी पर टँगे हुए थे उनके भी यातनापीड़ित चेहरे उधर मुड़ गये। वह व्यक्ति दर्शकों के बीच से होता हुआ नीचे मैदान के पास पहुँच गया और अपने हाथों से क्रास का चिन्ह बनाकर उन्हें आशीर्वाद देने लगा। क्रिस्पस ने उसकी ओर इस तरह हाथ फैलाये जैसे उसे डाँटने जा रहा हो। लेकिन दूसरे ही क्षण उसे पहचानकर घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "सन्त पाल!"

लोगों ने आश्चर्य से देखा कि जो ईसाई अभी सूली पर नहीं चढ़े थे वे सब घुटनों के बल झुक गये। सन्त पाल ने क्रिस्पस की ओर मुड़कर कहा, "क्रिस्पस, इन्हें धमकियाँ न दो, क्योंकि आज तुम सब साथ-साथ स्वर्ग जा रहे हो। तुम सोचते हो कि इन्हें ईश्वर दण्ड देगा, लेकिन भला ऐसा कैसे हो सकता है? इन पुण्यात्माओं को ईश्वर ने आज अपने नाम पर मरने के लिए चुना है। वह भला इन्हें क्यों दण्ड देने लगा!"

क्रिस्पस ने अपनी छाती पीटते हुए कहा, "हाय, आज अन्तिम समय में मुझ से एक पाप हो गया। सन्त पाल, मैंने गलती की।" इतने में एक नौकर ने आकर सन्त से पूछा, "तुम कौन हो जो इस तरह कैदियों से बातें कर रहे हो?"

"मैं एक रोमन नागरिक हूँ।" सन्त पॉल ने शान्ति से कहा और फिर क्रिस्पस से बोले, "इस तरह घबराओ मत, क्रिस्पस। आज का दिन ईश्वर की दया का दिन है। तुम शान्ति से ईश्वर के नाम पर शहीद हो जाओ।"

इतने में दो हबशियों ने आकर क्रिस्पस को भी सूली पर टाँग दिया। थोड़ी ही देर में उसके चेहरे पर का सारा तनाव जाता रहा और उस पर एक विचित्र शांति और सौम्यता छा गयी, उसने खुद टिकटी पर अपने हाथ फैला दिये और जल्लादों को खूँटी गाड़ने में मदद की। फिर वह आसमान की ओर आँखें उठाकर प्रार्थनालीन हो गया।

अब पूरा मैदान एक जंगल की तरह लग रहा था। शहीदों के कीलों से जड़े हुए हाथों और झुके हुए सिरों पर सूरज चमक रहा था। नीचे बालू पर टेढ़ी-मेढ़ी छाया एक अजीब-सा नक्शा बना रही थी, जिसमें जगह-जगह ताजे खून के धब्बे पड़े हुए थे। दर्शकों को यह दृश्य काफी सन्तोषजनक लगा क्योंकि इसमें कैदियों को धीरे-धीरे यातना दी जा रही थी। सबसे आगे की टिकठियों पर स्त्रियों को टाँगा गया था। लेकिन क्रिस्पस की टिकठी सबसे आगे थी, जिसे अच्छी तरह फूलों से सजाया गया था, क्योंकि क्रिस्पस उनका नेता था।

उनमें से कोई भी मरा नहीं। लेकिन जो लोग पहले टाँगे गये थे उनमें से कुछ बेहोश हो चुके थे। लेकिन एक भी न तो दुःख से मरा और न तो किसी ने दया की भीख माँगी। उनमें से कई के सिर सीने पर झुक आये थे। ऐसा लगता था जैसे वे सिर झुकाकर कुछ सोच रहे हों। उनमें से कुछ अब भी आसमान की ओर देख रहे थे और प्रार्थना में अपने रक्तहीन ओंठ हिला रहे थे। शुरू में तो दर्शक प्रसन्नता से चीखते-चिल्लाते रहे, लेकिन फिर अचानक मैदान में खामोशी छा गयी। यहाँ तक कि स्त्रियों के यातना से ऐंठे हुए नंगे शरीर भी दर्शकों के लिए अपना आकर्षण खो बैठे।

इतने में क्रिस्पस ने अपनी आँखें खोलीं और नीरो की ओर देखा। उसके शांत चेहरे पर फिर से एक तनाव आ गया और उसकी आँखें गुस्से से भर उठीं। सीजर के साथियों में से कई उसकी ओर इशारे करके फुसफुसाने लगे। अन्त में सीजर ने भी अपना पन्ने का चश्मा आँख पर लगाकर गौर से क्रिस्पस को देखना शुरू किया। मैदान में खामोशी छायी हुई थी। सबकी आँखें इस समय क्रिस्पस पर लगी हुई थीं, जो अपने दाहिने हाथ को कील से छुड़ाने की कोशिश कर रहा था। अचानक उसका सीना तना और उसकी पसलियाँ उभर आईं और उसने चीखकर कहा, "नाश हो तेरा, ओ मातृ-हत्यारे!"

अपनी सारी प्रजा के सामने इस अपमान को सुनकर सीजर काँप उठा और उसके हाथ से पन्ने का चश्मा छूट गया। क्रिस्पस की आवाज पूरे मैदान में गूँजने लगी, "नाश हो तेरा! तूने अपनी माँ और अपने भाई का खून किया है और आज तू अन्याय के सिंहासन पर बैठा है। पापी, नाश हो तेरा! तेरी मौत आ गयी है। तेरे पैर नरक के गड्ढे में लटके हुए हैं। याद रख, तू बुरी मौत मरेगा और हमेशा के लिए इन्सानियत तेरे नाम पर थूकेगी। तू जिन्दा लाश की तरह घिनौना है!"

सबसे ऊँची टिकठी पर कीलों से जकड़ा हुआ क्रिस्पस का लहूलुहान शरीर बुरी तरह से ऐंठा और उसने अपनी सफेद दाढ़ी सम्राट् के मंच की ओर उठायी और फिर चीखकर कहा, "हत्यारे, तेरी मौत आ गई है। तेरा सर्वनाश हो जाय!"

क्रिस्पस ने अपना हाथ कील में से छुड़ाने की आखिरी कोशिश की और दूसरे

ही क्षण उसके हाथ ढीले हो गये और शरीर झूल आया, उसका अन्त हो गया। और दूसरे लोग भी जो जरा कमजोर थे, एक के बाद एक मरने लगे। ऐसा लगता था जैसे वे हाथ फैलाये हुए चिरनिद्रा में सो गये हों।

## १७

विनिसियस ने सोचा कि जब सारी रुकावटों के बावजूद नेजारियस मुर्दा ढोनेवालों के भेस में किले में घुसने में सफल हो गया तो मुझे भी यही करना चाहिये। मरघट का जमादार काफी बड़ी घूस लेकर विनिसियस को अपने उन मजदूरों में रखने के लिए राजी हो गया जो हर रोज रात में मुर्दा ढोने के लिए जेलों में जाया करते थे। विनिसियस ने एक गरीब गुलाम की शक्ल बना रखी थी। दूसरे मजदूरों के साथ वह भी उस जेल के दरवाजे पर जा पहुँचा, जिसमें लीजिया हाल में बन्द की गयी थी। सिपाहियों ने सबके बिल्ले देखे और उन्हें फाटक के अन्दर कर लिया।

विनिसियस अन्दर एक बड़े भारी कमरे में पहुँचा। जिसमें से हर दिशा में अँधेरे गलियारे गये हुए थे। मोमबत्तियों की हल्की रोशनी में उसने देखा, वह कमरा कैदियों से भरा था। उनमें से कुछ दीवारों के पास पड़े थे जो शायद मर चुके थे या शायद सो रहे थे। बीच में एक नाद में पानी भरा हुआ था जिसे दो-तीन आदमी उकड़ूँ होकर पी रहे थे। कुछ लोग सिर पकड़कर जमीन पर बैठे थे। दो-तीन बच्चे अपनी माताओं के पास पड़े सो रहे थे। हर तरफ से बीमारों के कराहने की आवाज के साथ-साथ किसी के सिसकने और किसी के प्रार्थना करने की आवाज आ रही थी। साथ ही साथ जेल के सिपाहियों की गालियाँ भी सुनाई दे रही थीं। यह सब देखकर विनिसियस काँप उठा। इस नरक में लीजिया को रहना पड़ रहा है यह सोचकर उसके रोंगटे खड़े हो गये। सड़ते हुए शरीरों की बदबू से भरी हुई इस काल-कोठरी के बजाय तो सूली पर चढ़कर मरना ज्यादा अच्छा है, उसने सोचा।

मरघट के जमादार ने जेल के चौकीदार से पूछा, "आज कितने आदमी मरे?"

"करीब एक दर्जन! लेकिन सबेरा होने पर कुछ और मर जायेंगे। क्योंकि जो लोग दीवार के पास पड़े हैं उनमें से कई आखिरी साँस ले रहे है।" फिर चौकीदार स्त्रियों के बारे में बताने लगा, जो अपने मरे हुए बच्चों को इधर-उधर छिपा देती थीं ताकि ज्यादा से ज्यादा देर उन्हें अपने पास रख सकें। उसने बताया, "बच्चों की इन लाशों का पता तभी चलता है जब वे सड़कर बदबू देने लगती हैं।"

उधर विनिसियस को अभी तक लीजिया का कुछ पता नहीं चला। इतने में जमादार उसके पास आकर कहने लगा, "मुर्दों को जल्दी-जल्दी हटा दो। वरना, थोड़ी देर में तुम लोग भी यहाँ घुटकर मर जाओगे।"

इसके बाद जमादार चार मजदूरों को मुर्दा ढूँढ़कर लाने का काम सौंपकर चौकीदार के साथ बाहर निकल गया। इन चार मजदूरों में विनिसियस भी था। वह भी दूसरों के साथ मुर्दों को गाड़ी पर लादने लगा। फिर वह मुर्दों को खोजने के बहाने दूसरी कोठरियों में भी घूमने लगा। पहली तीन कोठरियों में उसे लीजिया नहीं मिली। फिर वह चौथी कोठरी में घुसा। यह दूसरों से छोटी थी।

उसने बत्ती उठाकर इधर-उधर देखा। अचानक उसे एक कोने में यूरसस पड़ा हुआ दिखाई दे गया। उसने फौरन बत्ती बुझा दी और उसकी ओर बढ़ना शुरू किया। उसने पुकारा, "यूरसस!"

"कौन हो तुम?"

"क्या तुमने मुझे पहचाना नहीं?"

"तुमने बत्ती तो बुझा दी, फिर कैसे पहचान सकता हूँ।"

लेकिन इतने में विनिसियस को दीवार के पास पड़ी हुई लीजिया दिखाई दी। वह झुककर उसके पास बैठ गया। अब यूरसस ने भी उसे पहचान लिया। वह बोला, "ईश्वर की कृपा है, लेकिन आप यहाँ कैसे? ठहरिये, ठहरिये, लीजिया को न जगाइये। अभी-अभी उसकी आँख लगी है।"

विनिसियस आँखों में आँसू भरकर लीजिया को देख रहा था। अँधेरा होने पर भी वह साफ-साफ देख रहा था कि लीजिया बहुत दुबली हो गई है और उसका चेहरा सूख गया है, और उसका गला भर आया। उसने झुककर अपने काँपते हुए होठों से उस चिथड़े को चूम लिया जिसपर लीजिया लेटी हुई थी। अचानक लीजिया ने आँखें खोलीं और बुखार में तपते हुए अपने हाथों से विनिसियस के हाथ पकड़ लिए वह बोली, "मैं जानती थी कि तुम आओगे।"

"हाँ, लीजिया मैं आ गया हूँ। प्रभु ईसा तुम्हारी रक्षा करें।" वह इससे अधिक और कुछ नहीं कह सका। बार-बार उसका गला भर आता था।

लीजिया बोली, "मार्कस्, मैं बीमार हूँ। यहाँ या मौत के मैदान में मुझे मरना ही है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती रहती हूँ कि मरने के पहले तुम्हें एक बार देख सकूँ। तुम आ गये। ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली!"

विनिसियस कुछ नहीं बोल सका। उसने लीजिया को आहिस्ते से अपनी बाँहों में भर लिया। वह कह रही थी, "मैं जानती थी कि तुम जरूर आओगे। परमात्मा की कृपा से आज हम एक-दूसरे से विदा ले सकते हैं। मैं अब ईश्वर के पास ही जा रही हूँ मार्कस्, लेकिन मैं तुमसे प्रेम करती हूँ और हमेशा करती रहूँगी।"

बड़ी मुश्किल से विनिसियस अपनी आवाज को सँभालकर बोला, "नहीं लीजिया, तुम नहीं मरोगी ! संत पीटर ने मुझे ईश्वर पर विश्वास रखने को कहा है, वह तुम्हारे लिए प्रार्थना करेंगे। मुर्दों के साथ आज मैं तुम्हें ले जाना चाहता था। लेकिन आज जेल से बाहर ले जाने के पहले हर मुर्दे का गला काट दिया जायगा। लेकिन प्रभु ईसा मुझपर कृपा करेंगे। तुम मरोगी नहीं।"

कोठरी का दीया बुझ चुका था। छोटे-से रोशनदान से होकर चाँदनी अन्दर आ रही थी। एक कोने में अचानक एक बच्चा चिल्लाया और चुप हो गया। बाहर से उन सिपाहियों की भी आवाजें आ रही थीं जो इस समय छुट्टी पर थे और जेल की दीवार के पास जुआ खेल रहे थे।

कुछ देर तक चुप रहकर लीजिया बोली, "जब सिपाही हम लोगों को पहले-पहल पकड़ने आये तब मैं मौत और यातना से बहुत डर रही थी। लेकिन अब मुझे कोई डर नहीं है। इस भयानक कैदखाने को देखो। यहाँ यह नरक है और यहीं से मैं स्वर्ग जानेवाली हूँ ! यहाँ सीजर का राज है और वहाँ परमपिता परमात्मा का, जो बहुत ही उदार और दयालु हैं। मैं वहाँ सुखी रहूँगी, विनिसियस। मैं वहाँ तुम्हारा इन्तजार करूँगी।" फिर उसने विनिसियस का हाथ अपने ओंठों से लगाकर कहा, "मार्कस् !

"हाँ, लीजिया।"

"तुम मेरे लिए दुखी न होओ ! याद रखो कि अन्त में हम दोनों मिलेंगे। मेरी जिन्दगी बहुत छोटी रही है। लेकिन ईश्वर की कृपा से मैंने यहाँ तुम्हें पाया है। मैं स्वर्ग में ईश्वर से कह सकती हूँ कि हालाँकि मैंने तुम्हारी आँखों के सामने यातना सही, तुम्हारे देखते-देखते मेरा अन्त हुआ, लेकिन फिर भी तुमने ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध एक शब्द नहीं कहा। उसकी कृपा से हम दोनों जरूर मिलेंगे। मैं तुम्हें चाहती हूँ और स्वर्ग में तुम्हारे साथ रहना चाहती हूँ। बोलो, मार्कस्, तुम मुझे अपने पास जगह दोगे न ?"

"हाँ, लीजिया, हम तुम हमेशा साथ रहेंगे।"

बाहर सिपाहियों के आपस में झगड़ने का शोर होने लगा। लेकिन ये दोनों जैसे थोड़ी देर के लिए सब कुछ भूल गये—जेल की दम घुटनेवाली बदबू, चौकीदार, यह दुख और अन्याय से भरा हुआ संसार, सब कुछ भूलकर वे ईश्वर से प्रार्थना करने लगे।

## १८

अँधेरा होने में अभी कुछ देर थी। लोगों के दल के दल शाही बगीचों की ओर उमड़े चले आ रहे थे। वहाँ आज एक नया खेल दिखाया जानेवाला था। लोग अच्छे-अच्छे कपड़े पहने फूलों के गजरे लिये हुए जैसे त्योहार मनाने जा रहे थे। लगभग सभी नशे में थे। उनके शोर-गुल से सड़कें गूँज रही थीं।

शहर में महामारी बहुत तेजी से फैल रही थी। उसे रोकने के लिए और ईसाइयों को जल्दी से जल्दी खत्म कर देने के उद्देश्य से सीजर और टिजेलिनस ने बड़े-बड़े खेलों का आयोजन करके करीब-करीब सभी कैदखाने खाली कर दिये थे। आखिरी दिन के खेल के लिए सिर्फ कुछ दर्जन कैदी बच रहे थे।

जैसे ही लोग बड़े-बड़े फाटक पार करके बगीचों में घुसे, उन्होंने एक अजीब-दृश्य देखा। सभी दंग रह गये। बगीचे के हर रास्ते और हर पगडन्डी के किनारे यहाँ तक कि फूलों से लदे हुए कुँजों, कमल से भरी हुई झीलों और फव्वारों के आसपास पेड़ों के कुन्दे गड़े हुए थे और उनमें एक-एक ईसाई बँधा हुआ था। उन सब के शरीर फूल-मालाओं और पत्तियों से सजाये गये थे और सब के आसपास लकड़ियों के ढेर लगे हुए थे। जब अँधेरा हो गया और आसमान में दो-चार तारे चमकने लगे तब एक-एक गुलाम हाथ में मशाल लेकर लकड़ी के ढेरों के पास आ खड़ा हुआ। जैसे ही खेल शुरू होने का बिगुल बजा, गुलामों ने हरेक ढेर में आग लगा दी। असल में फूलों के ढेर के नीचे जल्दी आग पकड़ लेनेवाला मसाला लगा हुआ था जिससे पूरा ढेर थोड़ी ही देर में भभक उठे। थोड़ी देर में लपटें उन लोगों के पैरों तक उठने लगीं जो ऊपर लट्ठों पर बँधे थे। भीड़ में खामोशी छा गई और पूरा बाग हजारों ईसाइयों की कराह में भर उठा। लोग दम साधे सुनते रहे। कुछ ईसाइयों ने भजन गाना शुरू कर दिया।

लेकिन कड़े से कड़े दिल उन बच्चों की चीखों से काँप उठे जिन्हें छोटे-छोटे जलते हुए ढेरों पर बाँधा गया था। जब बच्चे आग की लपटों में झुलसकर और धुएँ से घबराकर पास ही बँधी हुई अपनी माँ को आवाज देते थे तो रोम के बड़े से बड़े पियक्कड़ का नशा हिरन हो जाता था। ज्योंही मनुष्य के जलते हुए मांस की चिरायँध से पूरा बगीचा भर उठा, नौकरों ने बड़े-बड़े धूपदानों में सुगन्धित धूप और लोहबान जलाना शुरू किया।

इस खेल के शुरू होते ही सम्राट् ने चार खूबसूरत घोड़ों द्वारा खींचे जाने-वाले एक बढ़िया रथ में बैठकर जनता को दर्शन दिया। वह आज रथ-दौड़ में भाग लेनेवाले सैनिकों के ढंग की एक बढ़िया हरी पोशाक पहने था। उसके पीछे-पीछे कई घोड़ागाड़ियाँ थीं जिनमें बहुत कीमती पीशाकें पहने सिनेटर और पुरोहित-गण थे, नशे में धुत्त नंगी औरतें थीं, जो अपने सिर पर गुलाब के फूलों की मालाएँ बाँधे थीं और हाथों में शराब की बड़ी-बड़ी सुराहियाँ लिये हुए जोर-जोर से चिल्ला रही थीं। इनके बाद संगीतज्ञों और गायकों की भीड़ थी जो विदूषकों और मसखरों के भेस बनाये और तरह-तरह के वाद्य-यन्त्र बजाते हुए चल रहे थे। इनके बाद रथों की एक दूसरी कतार थी जिनमें रोमन पुजारिनें और कुँआरी संन्यासनियाँ लदी हुई थीं। वे भी अर्द्धनग्न और नशे में चूर थीं। इनके आसपास नौजवानों की भीड़ थी जो झाँझ और करताल बजा रहे थे और घोड़ों के रास्ते में फूल बिछा रहे थे।

रास्ते के दोनों ओर जलती हुई इन्सानी मशालों और धुएँ के बीच से सीजर का जुलूस आगे बढ़ रहा था। उसकी एक तरफ टिजेलिनस और दूसरी तरफ चिलन बैटा था, जो इस दृश्य को देखकर घबरा रहा था। उसे इस तरह घबराते देखकर सीजर की हँसी नहीं थमती थी। सीजर का शानदार रथ जैसे-जैसे आगे बढ़ता था, दर्शक उसकी जय-जयकार करते थे और वह मुस्कराते हुए अपनी आँखों को आधी मूँदकर अपने लम्बे-चौड़े हाथ फैला देता था जैसे जनता को आशीर्वाद दे रहा हो। सिर पर सुनहरा मुकुट लगाये वह सचमुच में कोई देवता मालूम होता था।

अन्त में जब नीरो का रथ बड़े फव्वारे के पास पहुँचा, जहाँ से दो सड़कें निकलती थीं, तो वह रथ से उतर गया और अपने दरबारियों और साथियों के साथ रोमनों की भीड़ में मिल गया। वह बार-बार रुककर कभी जलते हुए ईसाइयों पर व्यंग्य करता था तो कभी चिलन को चिढ़ाता था, जिसका चेहरा बिल्कुल उतर गया था। वे लोग एक ऊँचे से लकड़ी के ढेर के पास पहुँचे जिसकी लकड़ियाँ अभी पूरी तरह से जली नहीं थीं और काफी धुआँ उठ रहा था। आग की लपटें अभी ऊपर बँधे हुए एक बूढ़े के घुटनों को छू रही थीं। अचानक चिलन ने उस भूरी दाढ़ी वाले को पहचान लिया। दूसरे ही क्षण चिलन का शरीर एक घायल साँप की तरह तड़पा और उसके मुँह से एक चीख निकल गई, "ग्लोकस ! ग्लोकस !"

लकड़ी के उस जलते हुए ढेर पर हकीम ग्लोकस बँधा हुआ था और चिलन को घूर कर देख रहा था। यही वह आदमी था जिसने ग्लोकस की जिन्दगी हराम कर दी थी। जिसने उसके साथ दगा किया था, उसकी स्त्री और बच्चों को उससे छीनकर गुलामों की तरह बेच दिया था। जिसने उसे हत्यारों के हवाले किया था लेकिन इतने पर भी उसने जिसे ईसा के नाम पर क्षमा कर दिया था। लेकिन आज फिर वह नीरो के जल्लादों का साथी बनकर घूम रहा था। ग्लोकस की तीखी नजर

चिलन के चेहरे पर जमी हुई थी। दोनों को एक-दूसरे की ओर इस तरह देखते हुए देखकर लोगों की हँसी बन्द हो गयी। उन्होंने आश्चर्य से देखा कि चिलन हाथ फैलाकर आग के ढेर के पास घुटनों के बल गिर पड़ा और बहुत दुखभरी आवाज में चीखा, "ग्लोकस! मुझे माफ कर दो, ग्लोकस! ईसा के नाम पर मुझ पापी को माफ कर दो।"

उसकी आवाज सुनकर दर्शक काँप उठे और आग के ढेर पर बँधे हुए उस बूढ़े की ओर देखने लगे। वह पीड़ा से कराहा, "माफ किया तुम्हें, चिलन!"

चिलन छाती पीट कर और फूट-फूट कर रोने लगा। आग अब ऊपर तक बढ़ गई थी और ग्लोकस का शरीर जलने लगा था।

अचानक चिलन खड़ा हो गया। दरबारियों और दूसरे लोगों ने देखा कि अब वह बिल्कुल बदला हुआ आदमी था। इसका चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था और आँखें जल रही थीं। वह तन कर सीधा खड़ा था। लोगों को लगा कि कहीं यह पागल तो नहीं हो गया है। चिलन भीड़ की ओर मुड़ा और अपना दाहिना हाथ उठाकर इतनी जोर से चीखा कि न सिर्फ नीरो के दरबारी बल्कि दूसरे लोग भी उसकी बात सुन सकें, "रोम के नागरिको! मैं कसम खाकर कहता हूँ कि ये लोग जो आज यहाँ जलाये जा रहे हैं ये निर्दोष हैं। असल में जिसने आग लगायी है वह पापी इधर खड़ा है!" यह कहकर उसने नीरो की ओर इशारा किया।

भीड़ में सन्नाटा छा गया। दरबारी एक दूसरे का मुँह देखने लगे। चिलन अब भी सीधा खड़ा था और उसकी काँपती हुई उँगली नीरो की ओर उठी हुई थी। अचानक लोगों में हड़बड़ी मच गई। वे उसे करीब से देखने के लिए धक्का-मुक्की करने लगे। कुछ लोगों ने कहा, "इसको गिरफ्तार कर लिया जाय!" लेकिन भीड़ अचानक उत्तेजित हो उठी और बहुत से लोग नीरो को गाली देने लगे। "खूनी! पापी! इसी ने रोम में आग लगवायी। हत्यारा!" अचानक कुछ जलते हुए लट्ठे, जिनमें आधे जले हुए शरीर भी बँधे हुए थे, नीचे आ गिरे और लोग भागने लगे। चिलन भी उन्हीं के धक्के में पड़कर दूर निकल गया। अब बगीचे के रास्ते और पगडंडियाँ चलने लायक नहीं रह गयी थीं। उनपर अंगारे, आधी जली हुई लकड़ियाँ और लट्ठों पर बँधे जलते हुए शरीर गिरने लगे। चिलन भीड़ में काफी दूर निकल गया। थोड़ी देर तक तो उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करे। लेकिन एक अज्ञात शक्ति से प्रेरित होकर वह उसी ढेर की ओर बढ़ चला जहाँ ग्लोकस जल रहा था। अचानक किसी का हाथ उसके कन्धे पर पड़ा। उसने घूमकर पीछे देखा, और एक अजनबी को देखकर बोला, "क्या है? कौन हो तुम?"

"मैं पाल हूँ। संत पीटर का शिष्य।"

"लेकिन मुझ पापी से आप क्या चाहते हैं?"

संत पाल ने शान्ति से कहा, "मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ।"

चिलन एक पेड़ का सहारा लेकर खड़ा हो गया और गिरी हुई आवाज में बोला, "लेकिन मुझे अब कौन बचा सकता है?"

"शायद तुम्हें यह नहीं मालूम कि प्रभु ईसा ने उस चोर को क्षमा कर दिया था जो अपने किये पर पछता रहा था।"

"लेकिन शायद आप यह नहीं जानते कि मैंने क्या किया?"

"मैं सब जानता हूँ और तुम्हारे दुख को भी जानता हूँ। लेकिन इस अंतिम घड़ी में मैं ईसा के नाम पर तुमको क्षमा करता हूँ। ईश्वर भी तुम्हें क्षमा करेंगे।"

चिलन ने अपना सिर पीट लिया और कराहकर कहा, "क्षमा! मेरे जैसे पापी को क्षमा?"

"हमारा ईश्वर दया और क्षमा का देवता है। उसकी कृपा का कोई अन्त नहीं।"

चिलन संत पाल के चरणों में झुक गया और सिसकते-सिसकते बोला, "प्रभु, ईसा, मुझे क्षमा करो!"

पाल फव्वारे तक गये और एक अंजुलि जल चिलन पर छींटकर बोले, "चिलन, मैं आज यहाँ तुम्हें धर्म की दीक्षा देता हूँ। आज से तुम प्रभु ईसा के सेवक हुए।"

चिलन ने चाँदनी से भरे आसमान की ओर सिर उठाया और फिर कहा, "मरने के पहले मुझे क्या करना चाहिए?"

"ईश्वर पर विश्वास रखो और सत्य की रक्षा करो!"

फिर दोनों भीड़ के साथ-साथ बगीचे से बाहर चल पड़े। दरवाजे के पास पहुँचकर चिलन पाल से अलग हो गया। क्योंकि वह जानता था कि सीजर और टिजेलिनस उसे फौरन गिरफ्तार करवा लेंगे और उसका सन्देह ठीक निकला। जब वह अपने घर पहुँचा तो शाही सैनिक उसका इन्तजार कर रहे थे। उन्होंने फौरन उसे गिरफ्तार कर लिया। उसे महल में पहुँचाया गया। सीजर सोने चला गया था लेकिन टिजेलिनस वहाँ उसकी राह देख रहा था। चिलन के आते ही वह उस पर बरस पड़ा और कहने लगा, "यूनानी बुड्ढे, क्यों इस तरह जान देना चाहता है? लेकिन अब सजा तुम्हें जरूर मिलेगी। लेकिन तुम्हारी सजा कुछ हलकी हो सकती है, अगर तुम कल मैदान में सबके सामने यह कह दो कि तुम शराब के नशे में थे और जो कुछ तुमने कहा है, सब गलत कहा है और आग ईसाइयों ने ही लगायी है।

"नहीं साहब!" चिलन ने शान्ति से उत्तर दिया।

टिजेलिनस आगबबूला हो उठा और चीखा, "क्या? क्या कहता है, यूनानी?

कुत्ते, तू नशे में नहीं था ! तू जानता नहीं, कि तेरे भाग्य में क्या बदा है। इधर देख !"

उसने एक कोने की ओर इशारा किया जहाँ लकड़ी की एक मेज के पास चार गुलाम हाथ में रस्सी, कोड़े और सड़सी लिये खड़े थे। चिलन ने उधर देखा और उत्तर दिया, "नहीं साहब, मैं ऐसा नहीं कर सकता।

टिजेलिनस गुस्से से काँप उठा लेकिन फिर भी अपने को काबू में रखकर कहने लगा, "चिलन, तुम जानते हो कि ईसाइयों पर क्या बीता है ? क्या तुम भी उसी तरह मरना चाहते हो ?"

चिलन ने अपना मुरझाया हुआ चेहरा आसमान की ओर उठाया और फिर धीरे से कहा, "मैं भी ईसा में विश्वास करता हूँ।"

टिजेलिनस ने आँखें फाड़कर कहा, "क्या बक रहा है ! पागल तो नहीं हो गया !" यह कहकर उसने चिलन की दाढ़ी पकड़कर जमीन पर दे मारा और उसपर लात और घूँसे बरसाने शुरू किये। लेकिन चिलन अपनी बात पर अड़ा रहा। अन्त में टिजेलिनस ने कहा, "ले जाओ इसे !"

गुलाम उसे खींचते हुए ले गये। उसे मेज पर पटककर उसके हाथ-पैर बाँध दिये गये। फिर संड़ासियों से मरोड़-मरोड़कर उसके हाथ-पैर तोड़ने शुरू किये। लेकिन चिलन ने कोई विरोध नहीं किया। उल्टे वह उनका हाथ चूमता रहा और आँख मूँदकर पड़ा रहा। चिलन अब भी जिन्दा था। टिजेलिनस ने झुककर उससे पूछा, "बोलो, क्या मरजी है ?"

चिलन बहुत धीमे से कराहा, "नहीं साहब, मुझसे यह नहीं होगा।" टिजेलिनस ने गुलामों को रोक दिया। वह इधर-उधर टहलने लगा। अचानक उसे एक चाल सूझी। उसने गुलामों से कहा, "इसकी जीभ काट दो !"

## १६

"ओलस" नामक नाटक आमतौर से रंगशालाओं में खेला जाता था और उसमें एक गुलाम को फाँसी की सजा होती थी और एक भालू उसे खा जाता था। एक आदमी को भालू की खाल ओढ़ाकर भालू बनाया जाता था। लेकिन इस बार एक जिन्दा भालू छोड़ने का निश्चय हुआ। यह टिजेलिनस की नई सूझ थी।

दूसरे दिन शाम होते-होते रंगशाला की सारी कुर्सियाँ भर गईं। यहाँ तक

कि लोग बाहर भी खड़े थे। दरबारी और रोम के संभ्रान्त नागरिकों में से एक भी नहीं छूटा। सब टिजेलिनस के पीछे बैठे थे। वे लोग नाटक देखने नहीं आये थे बल्कि कल शाम की घटना के बाद सम्राट् के प्रति अपनी वफादारी दिखाने आये थे। पूरे शहर में चिलन की चर्चा थी और दरबारी भी उसी के विषय में बात कर रहे थे।

नाटक के आखिरी दृश्य में लड़की की एक टिकटी लाकर गुलामों ने मंच के बीच में खड़ी कर दी। फिर दो आदमी चिलन को घसीटते हुए लाये क्योंकि उसके पैर तोड़ दिये थे और वह चल नहीं सकता था। तुरन्तु कीलें ठोंककर उसे टिकठी पर जड़ दिया गया। सब की आँखें उस पर जम गयीं।

टिजेलिनस ने कल उसे जो यातना दिलवायी थी, उससे उसका चेहरा बिल्कुल सफेद हो गया था। उसकी दाढ़ी पर जीभ के कटने से पड़े हुए खून के निशान अब भी दिखायी दे रहे थे। वह इतना दुबला-पतला था कि उसकी हड्डियाँ गिनी जा सकती थी। उसके चेहरे पर पीड़ा के साथ-साथ एक विचित्र संतोष और शान्ति का भाव था। उसे देखकर कोई भी नहीं हँस सका। क्योंकि वह इतना निरीह और लगभग मरा हुआ-सा दिखायी देता था कि लोग आपस में उल्टे यह कहने लगे, "इस आदमी को क्यों फाँसी पर चढ़ाया जा रहा है? यह तो वैसे ही मर रहा है।"

अन्त में एक खूँखार भालू उस पर छोड़ा गया। उसने टिकठी पर एक नंगा आदमी देखा तो वह अपने पिछले दो पैरों पर खड़ा होकर उसका मुँह सूँघने लगा। लेकिन फिर वह नीचे उतर आया और उसके पैरों के पास बैठकर गुर्राने लगा जैसे उसे उस बूढ़े पर दया आ गई हो।

नौकरों ने चिल्ला-चिल्लाकर भालू को गुस्से में लाने की कोशिश शुरू की। जनता चुपचाप बैठी रही। चिलन ने धीरे से अपना सिर उठाया और दर्शकों की ओर देखा। उसकी आँख, सबसे ऊपर की पंक्ति पर एक जगह ठहर गई। अचानक उसकी छाती फूल आयी और लोगों ने आश्चर्य से देखा कि उसका चेहरा एक संतोष भरी मुस्कान से चमक उठा। ऐसा लगता था जैसे उसके चेहरे के आसपास कुछ प्रकाश फैल गया हो। उसने अपनी थकी हुई आँखें आसमान की ओर उठा लीं। उसकी आँखों से दो बूँद आँसू ढलक पड़े और उसके प्राण निकल गये।

अचानक कहीं से एक गम्भीर आवाज आई, "ईश्वर, तुम्हें शान्ति दे!"

पूरी रंगशाला में मौत का सन्नाटा छा गया।

# २०

इधर पिछले दिनों में रोम के निवासियों की रक्त-पिपासा को शान्त करने के लिए कई खेल हो चुके थे। इसलिए अब इस तरह के खेलों में उन्हें कोई खास दिलचस्पी नहीं रह गयी थी। लेकिन फिर भी यह सुनकर कि आज ईसाइयों का आखिरी दल नष्ट किया जायगा मैदान में काफी बड़ी भीड़ जमा हो गई थी। दरबारियों में से तो एक भी गैरहाजिर नहीं था। क्योंकि सब जानते थे कि आज विनिसियस की प्रेमिका को मैदान में उतारा जायगा। टिजेलिनस ने ही यह खबर उन्हें दी थी लेकिन उसने यह नहीं बताया था कि उस लड़की को कैसी यातना दी जायगी। इसलिए सभी एक विचित्र उत्सुकता में भरकर वहाँ आ बैठे थे।

सीजर आज रोज से जल्दी आया था। आज उसके आगे रक्षकों के रूप में टिजेलिनस और विटेनियस के अलावा कैसियस नामक एक बहुत ही तगड़ा सैनिक था। आज मैदान में शाही सैनिकों की तादाद बढ़ा दी गयी थी। सीजर को डर था कि कहीं विनिसियस खीझकर कुछ उत्पात न कर बैठे। इसलिए उसने पूरी तैयारी कर रखी थी।

सब की आँखें आज उस अभागे प्रेमी विनिसियस पर लगी हुई थीं। उसका चेहरा उतरा हुआ था और माथे पर पसीने की बूँदें छलक आई थीं। अब भी उसके मन में रह-रहकर आशा की एक धुँधली-सी किरण चमक उठती थी। वह सोचता था कि हो सकता है लीजिया को छोड़ दिया जाय।

अन्त में, उस आदमी की तरह, जो किसी खन्दक में गिरते समय हर छोटे-से सहारे को ललककर पकड़ने की कोशिश करता है, विनिसियस इसी एक बात को पकड़ बैठा कि अब तो अपने विश्वास के बल पर ही वह उसे बचा सकता है। सब कुछ जा चुका था, केवल विश्वास और श्रद्धा ही बाकी थी। और क्या पीटर ने नहीं कहा था कि विश्वास पहाड़ों तक को हिला सकता है!

इसी आशा के बल पर वह अपने सारे भय को दबाने की कोशिश कर रहा था।

अन्त में कोतवाल ने आज के संकेत के रूप में एक लाल रूमाल मैदान में बालू पर फेंक दिया। शाही मंच के सामनेवाला बड़ा फाटक आवाज करते हुए खुला और अँधेरे गलियारे से यूरसस धूप में चमकते हुए मैदान में निकल आया। सीजर के साथी और दरबारी तथा बहुत से दर्शक जानते थे कि यही वह आदमी है

जिसने राज्य के सबसे बड़े पहलवान क्रोटन की गर्दन तोड़ दी। उसे देखकर भीड़ में एक हल्का-सा शोर उठ खड़ा हुआ। रोम में साधारण से अधिक तगड़े ग्लेडिएटर अक्सर दिखायी दे जाते थे लेकिन इसके जैसा दैत्याकार शरीर आज तक रोमन नागरिकों ने नहीं देखा था। वह मैदान के बीच में आकर इस तरह खड़ा हो गया जैसे चट्टान से काटकर बनी हुई कोई विशालकाय प्रतिमा हो। उसके चेहरे पर दुःख और वेदना की रेखाएँ उभरी हुई थीं। मैदान को खाली देखकर उसने आश्चर्य से अपनी भोली नीली आँखें दर्शकों की ओर उठायीं, सीजर की ओर देखा और फिर उन दरवाजों की ओर देखने लगा जहाँ से उसे आशा थी कि उसकी मृत्यु मैदान में प्रवेश करेगी।

जब वह मैदान में आया था तो यह सोचकर उसका हृदय आनन्द से भर गया था कि उसे भी क्रास पर मरने का मौका मिलेगा। लेकिन जब उसने देखा कि वहाँ कोई क्रास नहीं था तो उसे यह सोचकर बड़ा दुःख हुआ कि उसे इस सम्मान से वंचित रहना पड़ेगा और किसी खूँखार जानवर का शिकार बनना पड़ेगा। वह निहत्था था और एक सच्चे ईसाई की तरह बिना विरोध किये हुए मरना चाहता था। इसलिए एक बार फिर ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए उसने हाथ बाँधकर और घुटने के बल जमीन पर बैठकर अपनी आँखें आसमान की ओर उठा लीं।

दर्शकों को उसका इस तरह बैठना पसन्द नहीं आया। इतना तगड़ा आदमी यों भेड़ की तरह जान दे दे यह उन्हें गवारा नहीं था। अगर यह आदमी लड़कर नहीं मरा तो सारा मजा किरकिरा हो जायगा। कुछ लोग उतावली में राय देने लगे कि इसे कोड़े मारकर लड़ने के लिए मजबूर करना चाहिए लेकिन किसी को यह नहीं मालूम था कि इसके आगे क्या होने वाला है।

किन्तु उन्हें अधिक देर इन्तजार नहीं करना पड़ा। क्योंकि अचानक बहुत जोरों से बिगुल बज उठे और शाही मंच के सामनेवाला दरवाजा खुल गया। उसमें से एक बड़ा भारी जर्मन साँड़ दौड़ता हुआ मैदान में निकल आया। उसके सींगों पर एक अर्द्धनग्न स्त्री बँधी हुई थी।

"लीजिया!" विनिसियस चीखा।

दोनों हाथों से अपने सिर के बाल नोचते हुए वह इस तरह तड़पा जैसे किसी ने उसकी पसलियों में तलवार भोंक दी हो। वह कराह कर धीरे से बोला, "मुझे अब भी विश्वास है, ईसा, मुझे अब भी आपकी कृपा पर विश्वास है!"

विनिसियस यह भी नहीं जान सका कि पेट्रोनियस ने उसके सिर को अपने लबादे से ढंक दिया था। उसे यही लगा कि शायद दुःख या आसन्न मृत्यु के कारण उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया है। उसकी आँखें इस समय कुछ नहीं देख रही थीं और बार-बार उसके मुँह से ईसा का नाम निकल जाता था।

भीड़ में एक सन्नाटा छा गया। नीरो के साथी और दरबारी अचानक अपनी-अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए क्योंकि इस समय मैदान में एक अनहोनी और अनसुनी घटना घट रही थी। जैसे ही उस दैत्याकार यूरसस ने अपनी मालकिन को एक जङ्गली साँड़ के सींगों पर बँधे हुए देखा तो उसकी सारी विनम्रता और विरोधी दूर हो गयी, प्राण देने की उसकी सारी अभिलाषा जाती रही और दूसरे ही क्षण बिजली की तेजी से वह साँड़ की ओर झपट पड़ा। दर्शकों के मुँह से आश्चर्य की एक हल्की-सी चीख निकल गयी और फिर सब जैसे साँस रोककर देखने लगे। यूरसस ने उछलकर साँड़ के सींगों को दबोच लिया।

"देखो, जरा देखो।" पेट्रोनियस ने विनिसियस के सिर पर से कपड़ा हटाते हुए कहा। विनिसियस ने अपना चूने जैसा सफेद चेहरा मैदान की ओर घुमाया और फटी-फटी आँखों से इधर-उधर देखने लगा। सारे दर्शक जैसे मंत्रमुग्ध-से बैठे थे। मैदान में इतनी शान्ति थी कि मक्खियों के उड़ने की भी आवाज सुनायी दे सकती थी। आज तक रोमवासियों ने ऐसा दृश्य नहीं देखा था।

इस समय यूरसस ने साँड़ की गर्दन को जमीन की ओर दबा रखा था। उसके पैर बालू में धँस गये थे और उसकी पीठ धनुष की तरह मुड़ी हुई थी। उसका सिर उसके उभरे हुए कन्धों के बीच छिप गया था। उसकी पेशियाँ जैसे फटी पड़ रही थीं। उसने साँड़ को इस तरह दबोच रखा था कि वह जरा भी नहीं हिल पा रहा था। साँड़ के पैर भी बालू में धँस गये थे और उसकी भारी भरकम देह जोर से फुफकारने के कारण काँप रही थी। इन दो में से कौन पहले थकता है और हार कर पीछे हटता है, यह सवाल इस समय दर्शकों के लिए खुद अपनी जिन्दगी और मौत से बढ़कर महत्त्वपूर्ण हो उठा था। वे उस समय रोम और पूरे रोमन साम्राज्य को इस प्रश्न के लिए दाँव पर लगा सकते थे। इस समय यूरसस उन्हें एक अलौकिक देव-सा मालूम हो रहा था। खुद नीरो इस समय खड़ा हो गया था। उसने और टिजेलिनस ने ही साँठ-गाँठ करके इस खेल की योजना बनायी थी। वह अपने प्रिय पहलवान क्रोटन की हत्या का बदला लेना चाहता था।

भीड़ में करीब-करीब सभी लोग खड़े हो गये थे। वे इतने उत्तेजित थे कि उनके चेहरे पर पसीने की बूँदें छलक आई थीं जैसे वे खुद उस समय साँड़ से लड़ रहे हों। जलती हुई मोमबत्तियों और मशालों के चिटखने के अलावा वहाँ मौत की खामोशी छायी हुई थी। हर आदमी का दिल जोरों से धड़क रहा था और मुँह आधा खुल गया था। वहाँ मैदान में वह आदमी उस खूँखार साँड़ को अपनी फौलादी बाँहों में जकड़े खड़ा था। अचानक एक अजीब-सी कराह मैदान में गूँज गई। साँड़ बेचैनी से कराह रहा था। लोग जैसे सपना देख रहे थे। अचानक यूरसस ने अपना पूरा जोर लगाकर साँड़ की गर्दन मरोड़ दी। लोग उसकी ताकत देखकर दंग रह

गये। उसने साँड़ को एक इंच आगे नहीं बढ़ने दिया। देखते-देखते उसकी पेशियाँ कसमसायीं। वह साँड़ पर और झुक आया और दूसरे ही क्षण वह खूँखार जानवर एक अजीब भर्रायी हुई आवाज में कराहा और फिर उसकी लम्बी-सी जीभ जबड़ों के बाहर लटक आई।

थोड़ी देर बाद उन दर्शकों ने जो मैदान के समीप बैठे थे, साँड़ के सींगों के टूटने और उसकी हड्डियों के कड़कड़ाने की दबी हुई आवाज सुनी। देखते-देखते साँड़ वहीं ढेर हो गया।

यूरसस ने फिर फौरन बन्धन खोलकर लीजिया को साँड़ के सींगों से अलग किया और उसे अपनी बाँहों में उठा लिया। वह बुरी तरह हाँफ रहा था। उसके पीले चेहरे पर से पसीना बह रहा था और उसके हाथों और कन्धों पर पसीने के रेले बह रहे थे। एक क्षण के लिये वह चुपचाप खड़ा रहा और फिर उसने गर्दन उठाकर दर्शकों की ओर देखा। दर्शक तो जैसे खुशी से पागल हो उठे। मैदान की उस विशाल इमारत की दीवारें लोगों की चीखों और तालियों की गड़गड़ाहट से काँप उठीं। जो दर्शक ऊपरी पंक्तियों पर बैठे हुए थे वे दौड़-दौड़कर नीचे के घेरे के पास भीड़ लगाने लगे ताकि इस नये 'हरक्यूलीस' को देख सकें।

हर तरफ से लोग उसे छोड़ देने की माँग करने लगे। इस समय यूरसस भीड़ के सर आँखो पर था। वह दर्शकों के लिए इस समय सबसे अधिक सम्मानित व्यक्ति था। यूरसस जानता था कि इस समय जनता उसे छोड़ देने की माँग कर रही है लेकिन उसकी उसे परवाह नहीं थी। उसने एक बार चारों तरफ देखा और फिर वह लीजिया को अपनी बाँहों में उठाये हुए शाही मंच के सामने आ खड़ा हुआ। इस समय वह इस तरह देख रहा था जैसे कहना चाहता हो कि मैं इस लड़की के जीवन की भीख चाहता हूँ। इसी के लिए मैंने यह सब किया है।

उस दैत्याकार पहलवान के हाथों में बेहोश पड़ी हुई दुबली-पतली लड़की को देखकर हर आदमी का मन भर आया। कुछ लोगों ने सोचा कि यह इसका पिता है और अपनी बच्ची के लिए दया की भीख माँग रहा है। पूरी भीड़ में जैसे बिजली की तरह दया और ममता की भावना फैल गई। रोम के नागरिक, जिन्होंने इन पिछले दिनों में बड़े-बड़े हत्याकांड देखे थे, इस समय उन दोनों के लिए दया की भीख माँगने लगे।

अचानक विनिसियस उछलकर खड़ा हुआ और घेरे की दीवार फाँदकर मैदान में कूद पड़ा। वह दौड़ता हुआ लीजिया के पास पहुँच गया। उसने लीजिया के नंगे शरीर को अपनी चद्दर से ढंक दिया। फिर उसने अपना कुर्ता फाड़कर अपना सीना दर्शकों के सामने खोल दिया, जिसपर आरमीनिया के युद्ध में लगी हुई चोटों

के निशान साफ दिखाई दे रहे थे। फिर उसने जनता के आगे अपने हाथ फैला दिये।

दर्शकों में ऐसा हुल्लड़ मचा जैसा आज तक उस मैदान में कभी नहीं देखा गया था। लोगों की आँखों से जैसे आग बरस रही थी। हजारों मुट्ठियाँ नीरो की ओर हिलने लगीं। लोग पागलों की तरह चिल्लाने लगे।

नीरो चक्कर में पड़ गया।

उसे विनिसियस से कोई दुश्मनी नहीं थी और लीजिया की जान लेना भी वह कुछ जरूरी नहीं समझता था। लेकिन उसका अभिमान उसे जनता की इच्छा के आगे झुकने से रोक रहा था। लेकिन साथ ही बुजदिली के कारण वह उसकी माँग को ठुकराने से हिचकिचा रहा था। इसलिए उसने नजर घुमाकर इधर-उधर देखा कि शायद दरबारियों और उसके साथियों में से किसी ने कैदी को मृत्यु-दंड दिलाने के लिए अपना अँगूठा झुका रखा हो।

लेकिन पेट्रोनियस का अँगूठा उठा हुआ था और वह घूरकर उसकी ओर देख रहा था। उसकी आँखों में एक अदम्य विरोध का भाव था। कई दूसरे दरबारियों ने भी कैदी को छोड़ने के संकेत के रूप में अपने अँगूठे उठा दिये। यह देखकर सीजर ने चिढ़कर अपनी आँख के आगे से पन्ने का चश्मा हटा लिया। लेकिन तभी टिजेलिनस, जो किसी न किसी तरह पेट्रोनियस को नीचा दिखाना चाहता था, झुककर धीरे से सीजर से बोला, "सरकार, आप किसी की परवाह न कीजिये, फौज के और शाही सेना के सिपाही हमारे साथ हैं।" नीरो ने गर्दन घुमाकर अपने विश्वासपात्र सैनिक अधिकारी की ओर देखा। इसका नाम पज़ोवियस था, और यह नीरो का अंधभक्त था। लेकिन नीरो ने आश्चर्य से देखा कि इस समय वह आँसू बहा रहा था और उसने भी दया के संकेत के रूप में अपना दाहिना हाथ उठा रखा था।

परन्तु अब जनता पागल हो उठी थी। लोग इस कदर पैर पटक रहे थे कि पूरी इमारत धूल से भर उठी थी। लोगों ने नीरो को गालियाँ देना शुरू किया, "खूनी! हत्यारा! पगला! इसने रोम को जलाया है! इसने अपनी माँ का खून किया है!"

नीरो घबरा गया। उसे एक कवि, गायक और कलाकार के रूप में अपनी मूर्ख जनता की प्रशंसा की आवश्यकता थी। इसके अलावा वह जानता था कि राजमहल के अन्दरूनी झगड़ों और दरबारियों से मनमुटाव के समय उसे जनता के समर्थन की आवश्यकता होगी। शहर में आग लगाने के बाद से वह तरह-तरह के खेल दिखाकर और मुफ्त दावतें खिलाकर जनता को खुश करने की कोशिश कर रहा था। उसने अब तक जनता का सारा गुस्सा ईसाइयों के खिलाफ मोड़ दिया था। इसलिए उसे लग रहा था कि जनता को असन्तुष्ट नहीं करना चाहिए। हो सकता है यह असन्तोष खेल के मैदान से शहर में पहुँच जाय और न मालूम क्या शक्ल ले ले।

उसने एक बार फिर चारों ओर देखा। उसने देखा कि सिनेटरों और दरबारियों के अलावा शाही सेना के सिपाही तक जनता के साथ थे और उसकी ओर धमकी भरी नजरों से देख रहे थे। इसलिए उसने कैदियों को छोड़ देने का इशारा कर दिया। पूरा मैदान तालियों की गड़गड़ाहट से भर उठा। यूरसस और वह लड़की छोड़ दी जायगी, यह सोचकर जनता खुशी से नाच उठी। अब कोई उन दोनों का कुछ नहीं बिगाड़ सकता था, यहाँ तक कि सीजर भी उनके खिलाफ उँगली नहीं उठा सकता था।

## २१

चार गुलाम लीजिया की डोली को उठाये हुए पेट्रोनियस के घर की ओर ले चले। विनिसियस और यूरसस चुपचाप उनके साथ चल रहे थे। दोनों में बात करने तक की शक्ति नहीं बची थी। विनिसियस तो अभी तक कुछ घबराया हुआ था। वह बार-बार अपने मन में यह दोहराता था कि लीजिया सुरक्षित है। अब इसे किसी बात का डर नहीं है। अब हमारे सारे संकट समाप्त हो चुके हैं। अब यह कभी मुझसे अलग नहीं होगी। अब इसे मैं अपने घर ले जा रहा हूँ। लेकिन उसे इन सब बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह बार-बार पालकी में झाँककर सोती हुई लीजिया के चेहरे को देख लेता था और अपने मन में कहता था, ईश्वर ने इसे बचा लिया, अब यह मेरी है।

वे लोग जल्दी-जल्दी नये बने हुए मकानों के बीच से चले जा रहे थे। सड़कें करीब-करीब सूनी हो चुकी थीं। कहीं-कहीं कुछ लोग अब भी नाच-गा रहे थे और नशे में चिल्ला रहे थे।

जब वे घर पहुँचे तो घर के सारे नौकर-चाकर उन्हें अपने स्वागत में बाहर खड़े हुए मिले। उनमें से कई सन्त पाल से दीक्षा लेकर ईसाई हो चुके थे। उन्हें मालूम था कि विनिसियस अब तक किस मुसीबत में फँसा था। जब हकीम ने यह बताया कि लीजिया को खास कोई चोट नहीं आई है और वह जेल के बुखार से जल्द ही ठीक हो जायगी तो विनिसियस के नौकरों की खुशी की सीमा नहीं रही।

उसी रात लीजिया की बेहोशी दूर हो गयी। उसने आँख खोलकर पर अपने को एक शानदार शयनकक्ष में पाया जिसमें कीमती पर्दे लटके हुए थे, सुगन्धित धूप जल रहा था और कीमती कन्दीलों से हल्की रोशनी फैल रही थी। उसे सिर्फ तब तक

की याद थी जब उसे साँड़ के सींगों पर बाँधा जा रहा था। उसके बाद अब जब उसने विनिसियस के चेहरे को अपने ऊपर झुका हुआ पाया तो उसने सोचा कि मैं अब पृथ्वी पर नहीं स्वर्ग में हूँ। वह विनिसियस की ओर देखकर मुस्करायी। उसने कुछ पूछना चाहा लेकिन उसके मुँह से विनिसियस के नाम को छोड़कर और कोई बात साफ-साफ नहीं सुनायी दी। विनिसियस ने धीरे से उसके माथे पर हाथ रख कर कहा, "ईसा की कृपा से तुम बच गयीं और मुझे वापस मिल गयीं।" एक बार और लीजिया के ओंठ काँपे। वह कुछ बड़बड़ायी। फिर उसकी आँखें मुँद गईं और वह गहरी नींद में सो गयी। विनिसियस उसके बिस्तर के पास झुककर ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। उसका हृदय सन्तोष और आनन्द से भर गया। इस बीच हकीम कई बार अन्दर आया और पेट्रोनियस की प्रेमिका यूनिस कई बार झाँक गयी। अन्त में बाहर सवेरा होने पर बगुले बोलने लगे और विनिसियस का ध्यान टूट गया। वह अभी तक ईसा के ध्यान में झुका हुआ था।

## २२

अब तक संत पीटर लीजिया से मिलने पेट्रोनियस के घर नहीं आ सके थे। लेकिन एक दिन शाम को नेजारियस ने आकर बताया कि वे आनेवाले हैं। लीजिया अब चल-फिर सकती थी। वह विनिसियस के साथ सन्त पीटर के स्वागत के लिए बाहर तक गयी। उन दोनों ने पीटर के चरणों में सिर झुका दिये। पीटर ने बहुत प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद दिया। अब उनके बहुत कम ईसाई शिष्य बच रहे थे। विनिसियस ने कहा, "महात्मन्, आपकी ही कृपा से ईश्वर ने लीजिया को बचाया है।"

इस पर सन्त ने उत्तर दिया, "ईश्वर ने इसीलिए लीजिया को तुम्हें लौटाया है कि तुम्हारा उस सर्वशक्तिमान् पर विश्वास बना रहे और तुम उसके नाम का प्रचार कर सको।"

कुछ दिनों बाद एक दिन अचानक पेट्रोनियस महल से बड़ी चिन्ताजनक खबर लेकर लौटा। उसने बताया कि नीरो का एक नौकर ईसाई होने के जुर्म में पकड़ा गया है और उसके पास से सन्त पाल, पीटर, जेम्स, जुडास आदि सन्तों के खत बरामद हुए हैं। टिजेलिनस ने सोच रखा था कि उन हजारों ईसाइयों के साथ उनके ये सन्त और गुरू लोग भी खत्म हो चुके होंगे। और अब जब उसे यह मालूम हुआ

कि ईसाइयों के ये दो बड़े नेता अब भी जीवित हैं और रोम में हैं तो किसी न किसी तरह इन्हें भी खत्म कर देने के लिए वह बेचैन हो उठा। उसने सैनिकों के दल के दल टाइबर पार के झोपड़ों की तलाशी लेने के लिए भेजे।

सन्त पीटर को इसकी खबर देने के लिए विनिसियस उसी शाम को यूरसस के साथ मरियम के घर जा पहुँचा। वहाँ पीटर अपने दो-चार शिष्यों के साथ बैठे थे। विनिसियस ने उनसे कहा, "महात्मन्, आप कल सबेरे ही किसी के साथ आल-बान पर्वत की ओर चले जाइये। वहाँ से हम आपको एन्टियम पहुँचा देंगे, जहाँ हमारा एक जहाज तैयार खड़ा है। जहाज से हम नेपुल्स और फिर सिसिली चले चलेंगे।"

वहाँ उपस्थित दूसरे लोग भी सन्त पीटर को समझाने लगे, "आपको कुछ दिनों के लिए छिप जाना चाहिए। रोम में अब आपका बचना मुश्किल है। आपको अभी धर्म और सत्य का प्रचार करना है। आप जरूर चले जाइये!"

खुद संत पीटर कई बार इस प्रश्न पर विचार कर चुके थे और एकान्त में ईश्वर से अनेक बार पूछ चुके थे, "हे प्रभु, मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ?" ईसा के स्वर्गारोहण के बाद से आज चौंतीस साल हो गये, पीटर ने जरा भी विश्राम नहीं किया। अपने हाथ में एक छड़ी लेकर वे पूरे संसार में सत्य का प्रचार करते हुए घूम रहे थे। लम्बी यात्राओं और कठोर परिश्रम के कारण अब उनकी शक्ति क्षीण हो चुकी थी। बड़ी मेहनत से उन्होंने संसार के केन्द्र रोम नगर में अपने अनुयायियों का एक संगठन कायम किया था लेकिन वह एक पागल सम्राट की नादानी से बरबाद हो चुका था। इसलिए अब फिर से वे अपनी शक्ति बटोर रहे थे और संघर्ष की तैयारी कर रहे थे। और वह संघर्ष भी कैसा? एक तरफ था नीरो, सीनेट, रोम की अर्द्धविक्षिप्त जनता, रोम की अजेय सेनाएँ जिन्होंने पूरे संसार को अपनी फौलादी पकड़ में जकड़ रखा था और विशाल रोमन साम्राज्य, जो संसार के एक कोने से दूसरे कोने तक फैला हुआ था—ऐसी बड़ी ताकत जिसका जोड़ मानव इतिहास में मिलना मुश्किल था और दूसरी ओर थे संत पीटर बुढ़ौती और जिन्दगी की मार से झुके हुए अपने काँपते हुए हाथों में एक लाठी का सहारा लिये हुए।

कभी-कभी पीटर सोचने लगते थे कि इतने बड़े रोमन सम्राट से लोहा लेना उनके बूते की बात नहीं है। यह काम तो सिर्फ प्रभु ईसा ही कर सकते हैं। उनके शिष्य और स्नेही उनसे बार-बार कह रहे थे कि आप कहीं न कहीं छुप जाइये। वरना यह राक्षस आपको जिन्दा नहीं छोड़ेगा।

लीनस भी उन्हें समझाते हुए कह रहा था, "आपको अभी बहुत काम करना है। आपको फिर से धर्म की स्थापना करनी है। आप जेरुसलम या और किसी ऐसी ही जगह चले जाइये, जहाँ आज भी कुछ ईसाई बाकी हैं। अगर आप इस संसार में नहीं

रहेंगे तो इस राक्षस का अत्याचार बढ़ता ही जायेगा और धर्म का नाम लेनेवाला कोई नहीं बचेगा। संत पाल तो रोम के नागरिक हैं। इन्हें बिना मुकदमा चलाये मारा नहीं जा सकता। लेकिन आपको तो एक क्षण भी नहीं जीने देंगे और आप इस समय धर्म की नींव हैं। हमें ही शहीद होने दीजिये और आप अपनी रक्षा कीजिये। हम नहीं चाहते कि उस पापी के अपवित्र हाथ आप पर उठें।"

सन्त पीटर की आँखों से आँसू बहने लगे। उनके सभी शिष्य सिर झुकाये हुए उनसे रोम से चले जाने की प्रार्थना कर रहे थे। अन्त में उन्हें कहना पड़ा, "ठीक है, जैसी प्रभु की इच्छा!"

# २३

दूसरे दिन भोर के पहले एपियन मार्ग पर दो व्यक्ति खेतों की ओर बढ़े जा रहे थे। उनमें से एक नेजारियस नाम का लड़का था और दूसरे थे सन्त पीटर, जो अपने पीछे अपने आतंक पीड़ित अनुयायियों को छोड़कर रोम से विदा हो रहे थे। पूरब में सूर्योदय की हल्की-हल्की लाली फैल रही थी। अँधेरा धीरे-धीरे कम होता जा रहा था और सड़क के किनारे दूर-दूर बने हुए मकान और बाँध वगैरह की दीवारें उजली होती जा रही थीं। उगते हुए सूरज की किरणें सोना बरसा रही थीं। काँपते हुए पत्तों पर ओस की बूंदें चमक रही थीं। धीरे-धीरे कुहरा कम होता जा रहा था और खेत, मैदान, मकान, कब्रिस्तान, और बड़े-बड़े खम्भोंवाले मन्दिर एक के बाद एक दिखाई देने लगे।

इस समय सड़क बिल्कुल सूनी थी। हर रोज सबेरे कुँजड़े ताजी तरकारियाँ शहर में ले जाते थे। लेकिन इस समय उनकी गाड़ियों के आने में भी देर थी। सूनी सड़क पर इन दोनों यात्रियों के लकड़ी के जूते आवाज कर रहे थे। धीरे-धीरे सूरज और ऊपर उठ आया और अब पहाड़ की चोटी पार करके धूप नीचे मैदान में उतर आई।

अचानक पीटर रुक गये, और बोले "क्यों, सामने तुम्हें एक प्रकाश आता दिखाई दे रहा है?"

नेजारियस बोला, "नहीं, मुझे तो कुछ नहीं दिखाई देता!"

लेकिन संत पीटर ने हाथ से अपनी आँखों पर छाया करते हुए कहा, "सामने धूप की किरणों में जैसे कोई आ रहा है।"

लेकिन उनके कानों में किसी के आने की आवाज नहीं आयी। चारों तरफ घोर शान्ति थी। नेजारियस को कुछ नहीं दिखायी दे रहा था। सिर्फ दूर पेड़ों की पत्तियाँ हिल रही थीं और सामने मैदान में प्रकाश बढ़ता जा रहा था। उसने आश्चर्य से पीटर की ओर देखा और बहुत उत्सुकता से पूछा, "क्यों, क्या बात है?" संत पीटर की लाठी जमीन पर गिर पड़ी। उनकी आँखें सामने किसी चीज पर जमी हुई थीं और ओंठ कुछ खुल गये थे। उनके चेहरे पर एक विचित्र आनन्द और उत्सुकता का भाव था। अचानक वे हाथ फैलाकर घुटनों के बल जमीन पर बैठ गये और उनके अधखुले ओठों से सहसा निकल गया "ईसा! प्रभु ईसा!" और यह कहकर वे जमीन पर इस तरह झुक गये जैसे किसी के चरण चूम रहे हों। एक लम्बी चुप्पी के बाद पीटर ने सिसकते हुए काँपती आवाज में पूछा, "मैं कहाँ जाऊँ, प्रभु? किधर जाऊँ?"

इसका उत्तर नेजारियस नहीं सुन सका। लेकिन संत पीटर ने ईसा की मधुर वाणी सुनी, "तुम मेरे सेवकों को अकेला छोड़कर जा रहे हो। इसलिए मैं फिर से सूली पर चढ़ने के लिए रोम जा रहा हूँ।" यह सुनकर पीटर सड़क पर लेट गये जैसे किसी को साष्टांग नमस्कार कर रहे हों। नेजारियस को लगा कि कहीं ये बेहोश तो नहीं हो गये। लेकिन अचानक पीटर खड़े हो गये और काँपते हुए हाथ से लाठी उठाकर वे फिर से रोम की ओर मुड़ गये। लड़के ने फिर पूछा, "कहाँ, कहाँ जा रहे हो?"

"रोम को!" उन्होंने आहिस्ते से कहा।

और वे वापस रोम में लौट आये। संत पाल, लीनस और दूसरे ईसाई उन्हें देखकर चकित रह गये। क्योंकि पीटर के जाने के कुछ देर बाद ही शाही सैनिकों ने मरियम का झोपड़ा घेर लिया था और अब खतरा और बढ़ गया था। उन लोगों ने उनसे सवाल करने शुरू किये और फिर से समझाया कि आप रोम से चले जाइये। लेकिन सारे सवालों का उन्होंने एक ही उत्तर दिया, "मुझे प्रभु ने दर्शन दिया है!"

उस दिन शाम को संत पीटर कब्रिस्तान में होनेवाली एक गुप्त सभा में प्रवचन करने गये। वहाँ उन्होंने कुछ नये लोगों को धर्म की दीक्षा भी दी। इसके बाद से वे हर रोज वहाँ जाने लगे। धीरे-धीरे वहाँ भीड़ बढ़ने लगी। ऐसा लगता था जैसे जो ईसाई शहीद हो चुके थे उनकी जगह लेने के लिए कई गुना नये लोग आ रहे थे। कुछ ही दिनों में उनकी संख्या सैकड़ों तक पहुँच गई।

सीजर ने खून की नदियाँ बहा दी थीं। रोम और ऐसे ही दूसरे अत्याचारी नगर ईसाइयों के खून से लाल हो चुके थे। लेकिन फिर भी जो लोग उत्पीड़ित थे, दुख-दारिद्र्य के भार से दबे जा रहे थे, अपमानित और लांछित थे, जिनके लिए जिन्दगी एक लम्बी यातना और दुर्भाग्य का दूसरा नाम थी, ऐसे सारे दुखी और

आतंकित लोग ईसा के बलिदान की गाथा सुनने के लिए ज्यादा से ज्यादा तादाद में इकट्ठे होने लगे।

इस तरह उन दुखियों को एक ऐसा ईश्वर मिला जो दया का अनंत सागर था, प्रेम और सहिष्णुता का आगार था और इस ईश्वर के सम्पर्क में आकर उनके जीवन में पहली बार आशा और विश्वास की जोत जगी। पीटर जानते थे कि नीरो अपनी विशाल सेनाओं के बल पर भी जीवन-सत्य का गला नहीं घोंट सकेगा। वह खून और आँसुओं की चाहे जितनी नदियाँ बहा दे लेकिन अब सत्य की विजय समीप है। पीटर जानते थे कि प्रभु ने क्यों उन्हें रोम लौटने के लिए कहा। वे देख रहे थे कि धीरे-धीरे यह अभिमानी, कुटिल और नृशंस, लेकिन अत्यन्त शक्तिशाली नगर आज सत्य के पक्ष में होता जा रहा है। अब वह केवल पार्थिव शक्ति का केन्द्र ही नहीं रहेगा बल्कि वहाँ एक ऐसे साम्राज्य की स्थापना होगी जिसका शासन हर धर्म-प्रिय और सत्य-निष्ठ व्यक्ति की आत्मा पर होगा।

## २४

फिर शहादत की घड़ी आयी। नीरो रोम के बाहर कहीं गया था और अपने सारे अधिकार अपने नौकरों को सौंप गया था। ये लोग ही अब मृत्यु-दण्ड दिया करते थे। सबसे पहले सन्त पीटर की बारी थी। पहले उन्हें कानून के मुताबिक कोड़े लगाये गये और फिर उन्हें नगर-कोट के बाहर वेटिकन पहाड़ के पास लाया गया।

सिपाहियों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि उस दिन कैदखाने के बाहर बड़ी भीड़ थी। ये लोग कोई रोमन निठल्ले नहीं थे बल्कि उन वफादार ईसाइयों में से थे जो मृत्यु-स्थल तक अपने गुरु का साथ देना चाहते थे। अन्त में जेल के दरवाजे खुले और सिपाहियों से घिरे हुए सन्त पीटर दिखाई दिये।

उनकी उम्र का ख्याल करके उनसे क्रास नहीं उठवाया जा रहा था। उन्हें हथ-कड़ियाँ नहीं पहनाई गई थीं। ज्योंही जनता ने उनके सफेद बालों से लदे सिर को देखा, वह अपनी रुलाई नहीं रोक सकी। लेकिन उनके हँसते हुए चेहरे को देखकर लोगों को चुप हो जाना पड़ा। ऐसा लगता था जैसे कोई बन्दी मृत्यु-दण्ड के लिए नहीं जा रहा था बल्कि एक विजेता था जो विजय-प्राप्ति के लिए आगे बढ़ रहा था और सचमुच बात यही थी। सन्त पीटर आमतौर से बहुत झुककर चला करते थे लेकिन इस समय वे सीधे तनकर चल रहे थे और सिपाहियों से भी ऊँचे दिखायी दे रहे थे।

उनकी चाल में एक अजीब शान थी। वे इस तरह चल रहे थे जैसे कोई विश्वविजयी सम्राट् अपने अंग-रक्षकों के साथ चल रहा हो। उनका चेहरा आनन्द और सन्तोष से परिपूर्ण था। वे जानते थे कि मैं अपना काम पूरा कर चुका हूँ। जिस सत्य का उन्होंने जीवन भर प्रचार किया था आज उसकी विजय होनेवाली है।

जब वे मन्दिरों के पास से होकर गुजरे तो उन्होंने जोर से कहा, "ये मन्दिर ईसा के मन्दिर होंगे!" फिर उन्होंने अपने आसपास चलने वाले लोगों को सम्बन्धित करके कहा, "और तुम्हारे बच्चे ईसा के भक्त होंगे। आने वाली पीढ़ियाँ ईसा की राह पर चलेंगी।"

इस तरह बड़े आत्मविश्वास के साथ वे सिपाहियों के साथ घिरे हुए चले जा रहे थे। भीड़ में ईसाइयों की तादाद बढ़ती जा रही थी। सिपाही यह देखकर घबराने लगे। लेकिन साथ ही उन्हें आश्चर्य भी हो रहा था कि भीड़ में उत्तेजना या क्रोध का नाम नहीं था।

अन्त में पहाड़ी के पास पहुँचकर सब लोग रुक गये। क्रास को जमीन में गाड़ कर खड़ा किया गया और हथौड़ी तथा कीलें वगैरह निकाली गयीं। भीड़ अब भी शान्त थी। लोग घुटनों के बल बैठकर-प्रार्थना करने लगे। सूरज डूबने जा रहा था। पश्चिम दिशा में जैसे अग्नि की ज्वाला प्रज्ज्वलित थी। अब सिपाहियों ने पीटर के कपड़े उतारने शुरू किये। पीटर ने अपना हाथ ऊँचा उठाकर प्रार्थना शुरू की। सिपाही चौंककर पीछे हट गये। ईसाई दम साधकर सुनने लगे। चारों तरफ जैसे मौत का सन्नाटा छा गया। और पीटर बोलने लगे। उन्होंने क्रास का चिन्ह बनाया और लोगों को आशीर्वाद दिया।

उधर दूसरी तरफ ओस्तियन मार्ग के पास एक जगह सन्त पाल को भी गिरफ्तार करके ले जाया जा रहा था। उनके साथ भी उनके अपने शिष्यों की भीड़ थी। वे रोमन नागरिक थे। इसलिए सिपाहियों को कुछ देर रोक सकते थे और राह में मिलने वाले जान-पहचान के लोगों से बात करते चलते थे। शहर के एक दरवाजे के बाहर उन्हें एक छोटे सेनानायक की लड़की मिली। उसकी आँखों में आँसू देख कर वे कहने लगे, "बेटी, इस तरह दुःखी न होओ। ईश्वर तुम्हारी मदद करेगा। लाओ, जरा अपना रुमाल मुझे दे दो ताकि अन्त समय में जब मैं प्रभु से मिलने के लिए जाऊँ तो इसे अपनी आँखों पर बाँध सकूँ।"

रास्ता बड़ा लम्बा था और रात घिरती आ रही थी। पहाड़ों का रंग बदलता जा रहा था और उनकी तलहटी में अँधेरा गहरा हो रहा था। दिन भर मेहनत करके गुलाम अपने हरबे-हथियार लिये वापस लौट रहे थे। बच्चे अपने घरों के आगे खेल रहे थे और पाल के इस विचित्र से जुलूस को आश्चर्य से देख रहे थे।

पाल को कुछ बातें याद हो आईं।

वे उन शिक्षाओं के बारे में सोचने लगे जो उन्होंने अब तक अपने शिष्यों को दी थीं। दान की भावना पर उन्होंने विशेष जोर दिया था। वे कहा करते थे कि अभिमानरहित होकर पूरे विश्वास और श्रद्धा के साथ हमें उन लोगों को दान देना चाहिए जो अभावग्रस्त हैं, पीड़ित हैं और चिन्तित हैं।

जीवन भर उन्होंने दान की महिमा गायी थी और वे जानते थे कि उनके बताये हुए रास्ते पर उनके ईसाई शिष्य बराबर चलते रहेंगे। वरना ईश्वर पर किसी का विश्वास नहीं रह जायेगा।

अन्त में सिपाही उन्हें झरने के पास ले आये। अब उनका अन्तिम समय आ गया था। उन्होंने आसमान की ओर अपनी आँखें उठा दीं और प्रार्थना शुरू कर दी। वे बार-बार अपने मन में कह रहे थे, मैंने जीवन भर सत्य के लिए संघर्ष किया है और अपना विश्वास कभी नहीं खोया है। मेरी मुक्ति का द्वार खुला हुआ है। यह कह कर उन्होंने उस लड़की का रुमाल अपनी आँखों पर बाँध लिया और जल्लाद की तलवार के आगे सिर झुका दिया।

## २५

विनिसियस का पत्र पेट्रोनियस के नाम :

"यहाँ भी हम लोगों को कभी-कभी खबर मिल जाती कि रोम में क्या हो रहा है और तुम्हारे पत्रों से हमें विस्तृत समाचार मिलते ही रहते हैं। तुमने पूछा है कि क्या यहाँ हम लोग सुरक्षित हैं। लेकिन सुरक्षित ही नहीं, एकदम भुला दिये गये हैं और यह ठीक ही है।

"जिस जगह बैठकर यह पत्र मैं तुम्हें लिख रहा हूँ उसके सामने एक प्रशान्त खाड़ी फैली हुई है और यूरसस अपनी नाव में बैठा मछली पकड़ने के लिए जाल फेंक रहा है। लीजिया मेरे पास ही बैठी लाल ऊन का एक गोला बना रही है। बाहर बादाम के पेड़ों से भरे बगीचों में गुलाम गाना गा रहे हैं। पेट्रोनियस, यहाँ बड़ा सुकून है। यहाँ न आतंक है, न पीड़ा। बहुत आराम से हमारे दिन कट रहे हैं। हमारे नौकर-चाकर और गुलाम भी ईसा में विश्वास करते हैं और ईसा की शिक्षा के अनुसार हम सब एक-दूसरे से प्यार करते हैं। कभी-कभी मैं लीजिया के साथ चाँदनी रात में घूमने निकलता हूँ और बीते हुए दिन एक पुराने सपने की तरह याद हो आते हैं। कितनी मुश्किल से लीजिया मौत के जबड़ों से बची थी। इसके लिए मैं अपने प्रभु ईसा को धन्यवाद देना कभी नहीं भूलूँगा।

"पेट्रोनियस तुमने तो देखा ही है कि किस तरह इस धर्म के सिद्धान्त कड़ी से कड़ी परीक्षा के समय भी आदमी को हिम्मत बँधा सकते हैं। आओ, तुम भी यहीं आ जाओ और देखो कि किस तरह इन सिद्धान्तों को मानने से हमारा जीवन पवित्र और निश्छल होता जाता है। आज तक हम किसी ऐसे देवता को नहीं जानते थे जिसको हम प्यार कर सकते हैं और जो हमें क्षमा कर सकता हैं। न दार्शनिकों ने ही इसकी कभी कल्पना की। यूनान और रोम में आज तक कभी इस ईश्वर की स्थापना नहीं हुई।

"तुम खुद सन्त पाल को जानते हो। उनसे तुमने लम्बी-लम्बी बहसें भी की हैं। इससे तुम अच्छी तरह समझ सकते हो कि हमारे रोमन दार्शनिकों के सिद्धान्त कितने थोथे और महत्वहीन हैं। ईसाई धर्म में अनन्त आनन्द है। तुम इस बात को मानते नहीं हो। लेकिन अगर तुम आज का मेरा आनन्दपूर्ण जीवन देखो तो जरूर मान जाओगे।

"तुम कहोगे कि मेरा आनन्द और सुख लीजिया पर निर्भर है। हाँ, यह सही है। लेकिन हम दोनों एक-दूसरे को प्यार करते हैं और दोनों ईसा को प्यार करते है। जब यौवन और सौन्दर्य नष्ट हो जायगा, हमारा शरीर ढल जायगा और मौत दरवाजे पर दस्तक देगी तब भी हमारा प्रेम स्थायी रहेगा और हमारे बाद भी जीवित रहेगा, क्योंकि हमारी आत्मा जीवित रहेगी। एक जमाना वह भी था जब मैं लीजिया के प्यार में दीवाना हो गया था और अपने घर में आग लगाने को तैयार था। लेकिन अब मुझे लगता है कि तब मेरा प्यार सच्चा नहीं था। लेकिन अब प्रभु ईसा ने मुझे सिखाया है कि असली प्रेम क्या होता है और ईसा में शांति और आनन्द का अक्षय भंडार भरा है। तुम अपने जीवन की शान-शौकत और उसमें होनेवाले आखिरी नतीजे की तुलना उस जीवन से करो जो ईसा के सिद्धान्तों पर चलते हुए बिताया गया हो। हमारे लिए रोमन उत्सव और त्योहार जैसे मौत के त्योहार होते हैं और मैं जानता हूं कि इन सबसे तुम भी प्रसन्न और सन्तुष्ट नहीं हो। लेकिन तुम्हारे जैसे समझदार और बुद्धिमान आदमी को सन्तोष और सुख मिलना ही चाहिए। इसीलिए कहता हूं कि तुम ईसा के समीप आओ। यहां तुम्हें सुख और सन्तोष मिलेगा। हम दोनों यह जानकर बहुत खुश हैं कि तुम यहां आनेवाले हो। जितनी जल्दी हो सके, आ जाओ।"

पेट्रोनियस को यह पत्र क्यूमे में मिला जहाँ वह सीज़र के साथ घूमने गया था। सीजर अपने कलाकार, वीर और सर्वगुण सम्पन्न होने के झूठे प्रदर्शन में प्रति-दिन अपने को गिराता जा रहा था। इधर उसकी लम्पटता और व्यभिचार बहुत अधिक बढ़ गया था। यहाँ तक कि पेट्रोनियम की साफ सुथरी सुसंस्कृत रुचि से उसे चिढ़ होने लगी थी। जब पेट्रोनियस चुप रहता था तो उसकी चुप्पी से नीरो यह

समझता था कि यह मुझे नापसन्द कर रहा है और जब पेट्रोनियस उसकी प्रशंसा करता था तो उसे उसकी प्रशंसा में व्यंग्य की गन्ध आती थी। अब पेट्रोनियस की सुरुचि से नीरो को न सिर्फ ईर्ष्या होती थी, बल्कि इससे उसके अहं को भी चोट पहुँचती थी।

इसके अलावा नीरो और टिजेलिनस की नजर पेट्रोनियस की अतुल संपत्ति और देश-विदेश से इकट्ठे किये हुए अमूल्य कला-संग्राह पर भी थी। अब तक उन दोनों ने किसी तरह निभाने की कोशिश इसलिए की थी कि नीरो शीघ्र ही यूनान की यात्रा पर जानेवाला था और वहाँ पेट्रोनियस की कला-पारखी दृष्टि उसके काम आ सकती थी। लेकिन टिजेलिनस ने रात-दिन कोशिश करके नीरो को यह समझाना शुरू किया कि कोरिनास नामक दरबारी पेट्रोनियस से ज्यादा विद्वान और बुद्धिमान है। बस, तब से ही पेट्रोनियस का भाग्य निश्चित हो गया।

जब उसे क्यूमे की यात्रा के लिए आमंत्रित किया गया तो वह भी दूसरों के साथ चला आया। लेकिन उसे संदेह था कि यह उसके खिलाफ कोई चाल है। इसके अलावा वह शायद नीरो का खुलेआम विरोध नहीं करना चाहता था। या शायद एक बार फिर नीरो और उसके दरबारियों के सामने हँसमुख और निर्द्वन्द्व होकर आना चाहता था और टिजेलिनस को हराने का आखिरी प्रयत्न करना चाहता था।

वह रोम से अभी रवाना ही हुआ था कि टिजेलिनस ने उसके विरुद्ध यह आरोप लगाया कि हाल में ही केविनस नामक एक सिनेटर ने जिस असफल विद्रोह का षड़यन्त्र रचा था उसमें पेट्रोनियस का भी हाथ था। यह आरोप लगाकर उसने रोम में उसके बचे खुचे नौकर-चाकर और सहायकों को जेल भिजवा दिया और उसके मकान पर पहरा बिठवा दिया।

इतना सब होने पर भी पेट्रोनियस के चेहरे पर एक शिकन नहीं आई। वह बराबर मुस्कराता रहा और उसने नीरो और दूसरे दरबारियों को क्यूमे में अपनी जमींदारी में आमंत्रित किया था। उसने अपने दो-एक दोस्तों से कहा भी कि वह पगला पसन्द नहीं करता कि कोई इससे सीधे-सीधे सवाल पूछे। लेकिन देखना, मैं इससे पूछूँगा कि क्या इसी के हुक्म से मेरे गुलामों को जेल में बन्द किया गया है?

उसी दिन शाम को उसे विनिसियस का पत्र मिला। उसे पढ़कर एक बार तो वह कुछ उदास हो गया। लेकिन फिर उसने अपने को सँभाल लिया और पत्र का उत्तर दिया—

"मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि तुम दोनों प्रसन्न हो। चलो, तुमने मुझे याद तो किया। वरना मैं तो सोच रहा था कि तुम दोनों प्रेम में इतने दीवाने हो कि दीन-दुनिया को भूल गये हो। मुझे यह जानकर भी खुशी हुई कि तुम मुझे

भी सिसिली बुलाना चाहते हो और अपने ईसा के कुछ करिश्मे भी दिखाना चाहते हो जिसके बारे में तुम्हारा कहना है कि उसने तुम्हें आनन्द और सुख दिया है।

"अगर यह सही है तो ठीक है, तुम्हें उसका मान करना चाहिए। लेकिन मैं तुम्हें इतना जरूर कहना चाहूँगा कि ईसा के बारे में मैं नहीं जानता। लेकिन हाँ, इतना तय है कि यूरसस ने ही लीजिया को बचाया। इसके अलावा रोम की जनता ने भी तुम्हारी मदद की है। लेकिन फिर भी अगर तुम इसे ईसा की कृपा का फल मानते हो तो ठीक है। तुम मन लगाकर उसकी पूजा करो। तुम जानते हो कि प्रमिथ्यूस ने मानवता के लिए अपने को कुरबान कर दिया था। लेकिन प्रमिथ्यूस कवियों की कल्पनामात्र है। वही बात ईसा के साथ भी लागू हो सकती है। लेकिन कुछ लोगों का कहना है कि उन्होंने अपनी आँख से उसे देखा है। खैर, तुम्हारी तरह इतना मैं जरूर मानता हूँ कि वह देवताओं में सर्वोत्तम है। तुम्हारे सन्त पाल का यह कहना सही है कि अगर आज नीरो ईसाई होता तो इस राज में इतना आतंक और अन्याय न होता और मैं बेखटके तुमसे मिलने सिसिली आ सकता था।

"लेकिन भाई, तुम्हारा धर्म मेरे कुछ काम नहीं आ सकेगा। तुम्हारे सिद्धान्तों को मानने का मतलब यह हुआ कि मैं अपने सेवकों और गुलामों से प्यार करूँ, अपने गुसलखाने के नौकरों को अपने बराबर समझूँ; यही नहीं टिजेलिनस और इस पगले नीरो को भी प्यार करूँ। लेकिन भाई, यह मुझसे किसी हालत में नहीं हो सकेगा। रोम में करीब एक लाख बदसूरत आदमी रहते हैं जिनमें से कोई कुबड़ा है, किसी की टाँगें पतली हैं तो किसी का खोपड़ा बड़ा है। क्या तुम चाहते हो कि मैं इन सबको अपनी ही तरह प्यार करूँ? अगर तुम्हारा देवता यही चाहता है तो उसने इन लोगों को ऐसा क्यों नहीं बनाया कि कम से कम इनकी शक्ल देखकर आँखों में दर्द तो न हो। जो सौन्दर्य से प्रेम करता आया है, वह असुन्दर चीजों को पसन्द नहीं कर सकता। यहाँ यह सवाल नहीं उठता कि हम किस देवता को मानते हैं और किसको नहीं। इसके अलावा अगर मैं चाहूँ भी कि तुम्हारे रास्ते पर चल सकूँ तब भी नहीं चल सकता। तुम तो विश्वास करते हो कि कभी न कभी तुम्हें ईसा के दर्शन मिलेंगे। ठीक है, जरा उससे पूछना कि क्या वह मुझे अपने इन सारे जवाहरातों, खूबसूरत किताबों, अपनी सुनहरे बालोंवाली प्रेमिका और उन सब छोटी-बड़ी चीजों, जिन्हें मैं इस संसार में चाहता हूँ, उन सबके साथ मुझे स्वर्ग में जगह दे सकता है?

"यह सब सोचकर मुझे हँसी आती है! तुम्हारे सन्त पाल मुझसे कह रहे थे कि मुझे अपनी सारी सांसरिक सुख-सुविधा त्याग देनी चाहिए। इसके बदले में वे मुझे एक दूसरे प्रकार के आनन्द का आश्वासन दे रहे थे। लेकिन भला जब तक मेरे पास साधन हैं मैं इन सबको क्यों छोड़ दूँ? तो विनिसियस, तुम्हारा आनन्द मेरे लिए नहीं है। इसके अलावा मृत्यु मुझे पुकार रही है। तुम्हारे लिए तो अभी जिन्दगी

का सवेरा हुआ है लेकिन मेरा सूरज तो डूबने वाला है। टिजेलिनस ने मुझे हरा दिया है। अब मुझे कोई उम्मीद नहीं है। मैं जिस तरह रहना चाहता था उस तरह रह चुका और जिस तरह मरना चाहता हूँ उसी तरह मरूँगा।

"तुम इस सब का कोई ख्याल न करना। मुझे किसी देवता ने अमर रहने का आश्वासन नहीं दिया। इसलिए मृत्यु मेरे लिए कोई ऐसी चीज नहीं है जिसकी मैंने कभी आशा न की हो।

"मैं तुम्हारी सुन्दर प्रेमिका से उन्हीं शब्दों में विदा लेना चाहता हूँ जिनसे मैंने ओलस के घर एक बार उसका स्वागत किया था—"मैंने अपने जीवन में बहुत से लोगों को देखा है, लेकिन तुम्हारे जैसी स्त्री मैंने कहीं नहीं देखी!"

"वहाँ आना मेरे लिए एक तरह से असंभव है। लेकिन मेरी हार्दिक कामना है कि सिसिली का जीवन तुम्हारे लिए सुखदायी हो। तुम अधिक से अधिक दिनों तक निर्द्वन्द्व होकर वहाँ के अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य का उपयोग कर सको।"

## २६

दो दिन बाद रोम से पेट्रोनियस की एक प्रेमिका ने उसे नीरो के दरबार के ताजे समाचार सूचित किये। उसके भाग्य का निर्णय हो चुका था। दूसरे दिन शाम तक उसे यह हुक्म मिलनेवाला था कि अब वह क्यूमे के बाहर आ-जा नहीं सकता। इसके कुछ दिन बाद ही उसके मृत्यु-दंड की घोषणा होनेवाली थी। पेट्रोनियस ने यह समाचार बहुत शांति से सुना और उस आदमी से कहा, जो उस समाचार को लेकर आया था, "लो, ये कीमती फूलदान मेरी एक भेंट के रूप में नरवा के पास ले जाओ। कहना कि मैं उसका बड़ा आभारी हूँ।"

उसके जाने के बाद पेट्रोनियस दिल खोलकर हँसा और खूब हँसा। फिर उसी दिन शाम को उसने अपने गुलामों को भेजकर क्यूमे के लगभग सभी प्रतिष्ठित नागरिकों और महिलाओं को अपनी कोठी में एक भोज के लिए आमन्त्रित किया। इनमें वे लोग भी थे जो नीरो के साथ यहाँ आये थे और नीरो के लौटने के बाद यहीं रह गये थे। इनमें नीरो के दो-चार दरबारी भी थे।

इसके बाद दोपहर का समय पेट्रोनियस ने अपने अध्ययन-कक्ष में कुछ लिखने में लगाया। फिर उसने खूब अच्छी तरह स्नान किया और अपने नौकरों की सहायता से बढ़िया कपड़े पहने और कन्धे पर टोगा सजाया। फिर रसोईघर में जाकर

दावत की तैयारी देखी। इसके बाद वह बगीचे में टहलने के लिए गया, जहाँ उसके युवक दास-दासियाँ शाम के लिए गुलाब की माला और गुलदस्ते वगैरह तैयार कर रहे थे। उसके चेहरे पर दुःख या चिन्ता की एक रेखा तक नहीं थी। उसके नौकर-और गुलाम जानते थे कि आज दावत बड़ी शानदार होनेवाली है। जिन नौकरों से वह खुश था और जो खूब मन लगाकर काम कर रहे थे, उन्हें उसने बड़े-बड़े इनाम दिये और जिनका काम उसे पसन्द नहीं आया, उन्हें हल्की सजाएँ भी दीं। संगीतज्ञों और गायकों को पहले ही से बहुत बड़ी-बड़ी रकमें दी गईं। इसके बाद एक पेड़ की छाया में बैठकर उसने यूनिस को बुलाने का हुक्म दिया।

वह एक सफेद पोशाक पहने हुए आई। उस समय वह बहुत ही सुन्दर लग रही थी। पेट्रोनियस ने उसे अपने पास बिठा लिया और फिर आहिस्ते से उसकी कनपटियों पर हाथ रखकर उसका चेहरा अपनी ओर उठाया। काफी देर तक वह उसकी सुन्दर आँखों को देखता रहा। फिर धीमे से बोला, "यूनिस, तुम जानती हो न, कि बहुत दिनों से तुम्हें मैंने आजाद कर रखा है और अब तुम दासी नहीं हो।"

यूनिस ने अपनी गहरी नीली आँखें उसकी ओर उठायीं और धीरे से सिर हिलाकर कहा, "मालिक, मैं हमेशा तुम्हारी दासी रहूँगी।"

"लेकिन शायद तुम यह नहीं जानतीं ये सारे दास-दासियाँ जो उधर बैठकर माला गूँथ रहे हैं, यह कोठी और इसका सारा सामान, ये मेरे खेत और सारे जानवर, सब आज से तुम्हारे हो गये हैं।"

यूनिस कुछ चौंककर पीछे हटी और फिर कुछ काँपते हुए चिन्तित स्वर में बोली, "क्यों, हाय क्यों? आप मुझे यह क्यों कह रहे हैं?"

वह उसके और करीब आ गयी और उसकी ओर देखने लगी। एक अज्ञात आशंका से उसकी पलकें काँपने लगीं।

पेट्रोनियस जानता था कि वह क्या सोच रही है। उसने सिर्फ एक शब्द में उत्तर दिया, "हाँ!"

बगीचे में इस समय बिल्कुल शांति थी। सिर्फ पत्तियों में हल्की सरसराहट हो रही थी। पेट्रोनियस ने देखा कि उसके जवाब से यूनिस इस तरह धक्क् रह गई जैसे कोई पत्थर की मूरत हो। वह बोला, "यूनिस, मैं शांति से मरना चाहता हूँ।"

वह कुछ मुस्करायी। अजीब दर्द था उसके मुस्कराने में। कहने लगी, "मैं जानती हूँ, मालिक।"

शाम होते ही मेहमानों की भीड़ आने लगी। पेट्रोनियस जो दावतें देता था, उनके मुकाबिले में नीरो की दावतें ज्यादा आडम्बरपूर्ण और धूमधाम वाली हुआ करती थीं। पेट्रोनियस की दावतें हमेशा सुरुचिपूर्ण और शालीन हुआ करती थीं। लेकिन किसी को यह नहीं पता चल सका कि आज की दावत आखिरी दावत है।

दावत का बड़ा भारी कमरा तरह-तरह के सुगन्धित फूलों से भरा था। दीवों पर सिकन्दरिया के शीशे के कंदीलों से रंगबिरंगी रोशनी फैल रही थी। कई गद्देदार सिंहासन बिछे थे जहाँ छोटी-छोटी लड़कियाँ मेहमानों के पैरों में इत्र लगा रही थीं। दीवारों के पास गायकों की कतारें खड़ी थीं और संगीत आरम्भ करने के संकेत की प्रतीक्षा कर रही थीं। पेट्रोनियस मेहमानों से बातचीत कर रहा था। उसकी बातचीत के विषय थे रोम के ताजे समाचार, तलाकों के नये किस्से, लोगों की प्रेम-कहानियाँ, नये षड्यन्त्र, घुड़दौड़ के किस्से, किसी पहलवान की नयी करामात और प्रसिद्ध लेखकों की नवीनतम रचनाएँ, इत्यादि-इत्यादि।

फिर उसने संकेत किया और वाद्य-यन्त्र बज उठे। गायक अपने सुरीले गलों से तान छेड़ने लगे और सुन्दर नर्तकियाँ बारीक आवरणों में छिपे हुए अपने गुलाबी शरीरों के सौंदर्य का प्रदर्शन करने लगीं। इसके बाद मिस्र के जादूगर ने कुछ जादू दिखाया और मेहमानों के हाथ देखकर उनका भविष्य भी बताया।

जब यह खेल खत्म हो गया तो पेट्रोनियस उठकर बड़ी बेपरवाही से बोला, "मित्रो, दावत शुरू होने के पहले मैं आप सबको तोहफे के रूप में यह कीमती प्याला भेंट करना चाहता हूँ।" यह कहकर उसने अपना एक मणि-जटित प्याला उठाया। यह प्याला बहुत ही कीमती था और अपने ढंग का अकेला था। वह कहने लगा, "इस प्याले में मैं देवताओं को मद्य का भोग लगाता था। लेकिन आज के बाद अब यह प्याला नहीं रहेगा। किसी के ओंठ इसे छू नहीं सकेंगे और किसी के हाथ इसको देवताओं के सम्मान में उठा नहीं सकेंगे।" यह कहकर उसने उस प्याले को उठाकर जोर से कमरे के केशर बिछे हुए फर्श पर दे मारा। प्याला चूर-चूर हो गया। मेहमान भौंचक्के रह गये। वह कहने लगा, "दोस्तो, इसका गम न करो। पुरानी चीजों और बूढ़े इन्सानों का यही उपयोग रह जाता है। आज की हमारी जिन्दगी ही कुछ ऐसी है। मैं आज तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि एक शानदार आदमी मौत के हरकारों का इन्तजार करने के बजाय जैसे वह चाहता है वैसे एक दुनिया से कूच कर सकता है।"

"आखिर तुम करना क्या चाहते हो? आखिर तुम्हारा इरादा क्या है?"

"कुछ नहीं। मैं खुश रहना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं खाऊँ, पिऊँ, संगीत सुनूँ, और इस खूबसूरत रूह को देखता रहूँ जो इस समय मेरी बगल में बैठी है और इसके बाद गुलाब की माला पर सिर रखकर सो जाऊँ। मैंने सीजर से विदा ले ली है। मैंने उनके नाम एक खत लिखा है जिसे आप लोग भी सुनिये।"

इसके बाद उसने अपने गुलाबी गद्दे के नीचे से एक गोल लपेटा हुआ कागज़ निकाला और उसे पढ़ना शुरू किया—

"देवतुल्य सीजर, मैं जानता हूँ कि आप बड़ी उत्सुकता से मेरी प्रतीक्षा कर

रहे होंगे और अपने प्रिय मित्र से मिलने के लिए रात-दिन बेचैन होंगे। मैं जानता हूँ कि आप मुझपर कृपा करने के लिए तड़प रहे होंगे। सुना है कि आप जल्दी मुझे बुलाने वाले हैं। शायद आप मुझे अपना सेनापति बनाना चाहते हैं और टिजेलिनस को अपनी उस जमींदारी में खच्चरों की देखभाल का काम सौंपना चाहते हैं जिसे आप ने डोमीथिया को कृपापूर्वक जहर देकर प्राप्त किया है।

"लेकिन मेरा दुर्भाग्य है कि मुझे आप से विदा लेनी पड़ रही है। सच मानिये, आपकी माँ, पत्नी और आपके भाई तथा सेनेका—जिन्हें आपके देवतुल्य हाथों से विष का प्रसाद मिला, इन लोगों की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं आपके पास आने में अब असमर्थ हूँ। मेरे मित्र, जिन्दगी एक खजाना है जिसमें से मैं जो कुछ ले जा सकता हूँ ले जाऊँगा। लेकिन इस खजाने में कुछ ऐसी चीजें भी हैं जिन्हें मैं नहीं ले जा सकता उन्हें मैं आपके लिए छोड़ देता हूँ।

"कृपया आप यह न सोचें कि जब आपने अपनी माँ, अपनी पत्नी और अपने भाई की हत्या की तो मुझे इससे कोई घृणा हुई थी, या रोम में जब आप ने आग लगायी तो मुझे गुस्सा आया था, या जिस तरह आप ने अपने राज्य के ईमानदार नागरिकों को मौत के घाट उतारा है उससे मुझे कोई धक्का लगा है। नहीं, ऐसा कुछ नहीं, हममें से किसी को भी कभी आपके इन कारनामों पर कोई आश्चर्य नहीं होगा। ये आपके ही योग्य थे।

"लेकिन इतने सालों तक आप जो अपनी बेसुरी आवाज से संगीत के नाम पर मेरे कान फाड़ते रहे हैं, नृत्य के बहाने आप जो अपनी भद्दी टाँगों का प्रदर्शन करते रहे हैं, और सबसे ज्यादा कविता के नाम पर मुझे आपकी जो बेतुकी बकवास सुननी पड़ती रही है उससे मेरा मन इतना भर गया है कि अब मैं जल्दी से जल्दी अपने पुरखों के पास पहुँच जाना चाहता हूँ। रोम आपसे ऊब चुका है, और पूरी दुनिया आप पर हँसती है। अब और ज्यादा मैं यह सब सहने को तैयार नहीं हूँ। इसके अलावा दुनिया आप पर हँसे यह मुझे गवारा नहीं।

"आप सब कीजिये, लेकिन गाना छोड़ दीजिये। और भी बड़े पैमाने पर हत्याकांड रचिये, लेकिन कविता को छुट्टी दे दीजिये। लोगों को जहर दीजिये, लेकिन नृत्य का शौक छोड़ दीजिये। और शहर जलाइये, लेकिन बीन बजाना बन्द कर दीजिये। यही मेरी आखिरी इच्छा है और एक मित्र के रूप में आपको सलाह है।"

मेहमान यह सुनकर अवाक् रह गये। वे जानते थे कि इस चिट्ठी से जो चोट पहुँचेगी वह इतनी गहरी होगी कि उसकी तुलना में उसके पूरे साम्राज्य का नष्ट हो जाना भी कोई महत्व नहीं रखता। अब इसमें कोई संदेह नहीं था कि नीरो को ऐसा पत्र लिखनेवाला जीवित नहीं रह सकता। उनके चेहरे उतर गये।

यह देखकर पेट्रोनियस खिलखिलाकर हँस पड़ा जैसे उसने कोई हल्का-सा

मजाक किया हो और कहा, "तुम लोग इस तरह घबराओ मत। तुम्हारे डरने की कोई बात नहीं।" यह कहकर उसने अपनी बाँह फैला दी और हकीम को इशारा किया। उस यूनानी हकीम ने फौरन उसकी बाँह में सोने का एक पट्टा कस दिया और बड़ी कुशलता से कलाई की एक नस काट दी। बड़ी तेजी से खून बह निकला और उसका गद्दा भीगने लगा। खून की बौछार यूनिस पर भी पड़ी। वह उसके पास ही बैठी थी। उसके सिर को सहारा देकर वह कुछ झुक आई और बोली, "मालिक, क्या आप सोचते हैं कि मैं आपका साथ नहीं दूँगी? भला यह कैसे हो सकता है! चाहे नीरो मुझे अपना पूरा साम्राज्य सौंप दे लेकिन मैं आपके ही साथ जाऊँगी।" पेट्रोनियस मुस्कराया। कुछ उठकर उसने यूनिस के आठ चूम लिये और कहा, "तो आओ, चलो। इस जीवन में तुमने ही मुझे सच्चा प्यार दिया है।"

यूनिस ने भी हकीम की ओर अपनी गोरी बाँह बढ़ा दी। दूसरे ही क्षण उसका भी रक्त अपने प्रेमी के रक्त में मिलने लगा।

पेट्रोनियस ने गानेवालों को इशारा किया। तुरन्त एक मधुर संगीत शुरू हो गया। वे दोनों एक-दूसरे पर झुके हुए चुपचाप संगीत सुन रहे थे। उनके मुस्कराते हुए चेहरे धीरे-धीरे पीले पड़ रहे थे। पेट्रोनियस ने शराब और पकवानों का एक दौर और शुरू करने को कहा। फिर वह अपने पास बैठे हुए लोगों से तरह-तरह की बातें करने लगा। उसने हकीम से थोड़ी देर के लिए नस बन्द करने के लिए कहा, क्योंकि उसे कुछ नींद आ रही थी। नस बन्द होने के बाद वह सो गया। जब उसकी आँख खुली तो यूनिस एक सफेद फूल की तरह उसके सीने पर झुकी हुई थी। उसने उसे उठाकर गद्दे पर लिटा दिया और फिर से नस खुलवा ली।

संगीत अब भी जारी था। उसके आखिरी शब्दों को मेहमान ठीक से सुन सकें इसलिए बहुत धीमी आवाज में बाजे बज रहे थे। खून बह रहा था और पेट्रोनियस धीरे-धीरे पीला पड़ता जा रहा था। उसने मेहमानों की ओर घूमकर कहा, "यह तो आपको मानना पड़ेगा कि हमारे मरने के साथ—"

लेकिन वह अपनी बात पूरी नहीं कर सका। उसने बड़ी कोशिश से अपनी बाँह यूनिस के गले में डाली और दूसरे ही क्षण उसका सिर लुढ़क गया।

मेहमान लोग इन दो पीले शरीरों को देखते रहे जो सुन्दर मूर्तियों की तरह अब शान्त पड़े थे। उन्हें लगा कि इनके साथ-साथ रोम का सारा सौंदर्य, उसकी सारी कविता भी नष्ट हो गई।

## उपसंहार

शुरू में तो वींदे और गॉल सेनाओं का विद्रोह बहुत महत्वपूर्ण नहीं लगा। सीजर खुद उसे कोई महत्व नहीं देना चाहता था और इस मौके का लाभ उठाकर अपने विरोधियों को नष्ट करने में लगा था। लेकिन जब किसी ने उसे यह बताया कि वींदे और उसके साथी सीजर को एक निकृष्ट कलाकार मानते हैं तो उसे बहुत बुरा लगा और वह फौरन अपने दल-बल के साथ यूनाग की यात्रा अधूरी छोड़कर रोम की ओर चल पड़ा।

इस बार नीरो ने जिस ठाट-बाट के साथ रोम में प्रवेश किया वह इतिहास में बेजोड़ था। वह खुद उस रथ को हाँक रहा था जिसमें परम वीर आगस्टस अपनी विजय के बाद रोम आया था। छोटे-बड़े सरदार, सीनेट के सारे सदस्य और बहुत बड़ी तादाद में जनता ने उसका स्वागत किया। जय-जयकार के नारों से रोम की दीवारें काँप उठीं। उसके पीछे-पीछे दास उन मालाओं को लेकर चल रहे थे जिन्हें उसने कभी सम्मान के रूप में अपने विजित नगरों में प्राप्त किया था। जिन कलाकारों को उसने हराया था उनके नाम की तख्तियाँ उसके पीछे चल रही थीं। उसे यह विचार ही बड़ा अशिष्ट और मूर्खतापूर्ण मालूम पड़ रहा था कि कोई व्यक्ति उसके जैसे देवतुल्य शासक के विरुद्ध विद्रोह की बात करे। वह अपने को देवपुत्र मानता था और इसीलिए अपने आप को अजेय समझता था।

लेकिन इसी बीच पश्चिम के इलाकों में विद्रोह की आग धीरे-धीरे फैल रही थी। अन्याय का घड़ा भर चुका था। लोग विरोध के लिए उठ खड़े हुए थे। जब उसे यह खबर मिली कि गालबा स्पेन में स्थित अपनी सेनाओं के साथ विद्रोहियों से मिल गया है तो उसे बड़ा बुरा लगा। उसने गुस्से में आकर प्याले तोड़ डाले और भोजन से लदी हुई मेजों को उलट दिया और ऐसे-ऐसे हुक्म दिये जिन्हें टिजेलिनस तक पूरा करने में असमर्थ था। उसने हुक्म दिया कि रोम में रहनेवाले गाल जाति के सभी नागरिकों को मार डाला जाय। रोम में फिर से आग लगा दी जाय और भागते हुए लोगों पर जंगली जानवर छोड़े जायँ और राजधानी बदलकर सिकन्दरिया कर दी जाय। लेकिन अब वे दिन लद चुके थे जब वह सर्वशक्तिमान माना जाता था। यहाँ तक कि उसके दुष्ट और अत्याचारी मित्र भी उसके नये हुक्मों को सुनकर दहल जाते थे और उसे पागल मानने लगे थे।

वींदे की मृत्यु और विद्रोहियों के आपसी झगड़ों की खबर सुनकर ऐसा लगता था कि स्थिति अब नीरो के पक्ष में होती जा रही है। फौरन बड़े पैमाने पर दावतों और खेल-तमाशों का आयोजन होने लगा। लेकिन अचानक एक रात को उसे खबर मिली कि उसके शाही सैनिकों ने खुद रोम में विद्रोह का झंडा फहरा दिया है और गालबा को अपना सम्राट मान लिया है।

उस समय सीजर सो रहा था। वह चौंककर उठ पड़ा और अपने दरवाजे पर खड़े पहरेदारों को पुकारने लगा। तब तक महल करीब-करीब खाली हो चुका था। नौकर-चाकर और गुलामों ने लूट मचानी शुरू कर दी थी। नीरो को देखकर वे सामान लेकर भाग खड़े हुए और नीरो जोर-जोर से चीखता-चिल्लाता पूरे महल में दौड़ने लगा।

अन्त में उसके वे दो चार नौकर उसकी मदद के लिए आये जो पहले गुलाम थे और जिन्हें उसने आजाद करके अपने यहाँ नौकर रख लिया था। वे लोग उसे फौरन भाग चलने की राय दे रहे थे क्योंकि अब जरा भी समय नहीं था। लेकिन अब भी वह उनकी बात मानने को तैयार नहीं था। वह कहता था कि अगर मैं मातम मनाने की पोशाक पहनकर सीनेट के सामने एक भाषण दूँ तो कैसा रहे? क्या यह सम्भव है कि सिनेटरों पर उसकी वाक्यशक्ति और उसके कीमती आँसुओं का कोई असर ही न हो!

उसके नौकर उसकी खुशामद के आदी थे। इसीलिए इस समय वे उसका विरोध नहीं कर सके। लेकिन वे बार-बार उसे सावधान कर रहे थे कि अगर आप फोरम तक जायेंगे तो भीड़ आपके टुकड़े-टुकड़े कर डालेगी। फिर भी जब वह नहीं माना तो वे उसे अकेला छोड़कर भाग जाने की धमकी देने लगे। उनमें से एक नौकर फाओन ने उसे अपनी झोपड़ी में शरण देने का आश्वासन दिया।

वे लोग काले लबादों में अपने सिर छिपाकर नगरद्वार की ओर भाग निकले। सबेरा होने वाला ही था। सड़कों पर एक अजीब किस्म की चहल-पहल थी। सिपाही भीड़ के साथ मिलकर जगह-जगह गा रहे थे। एक जगह बहुत बड़ी भीड़ गालबा के नाम के नारे लगा रही थी और जय-जयकार कर रही थी। अब नीरो को विश्वास हो गया कि उसका अन्त आ गया है। वह भयभीत हो उठा। उसे लगता था जैसे उसकी आँखों के आगे एक घना काला बादल फैला हुआ है और उसमें उसकी माँ, पत्नी, और उसके भाई के चेहरे हँस रहे हैं।

लेकिन एक अभिनेता के रूप में उसे यह नाटकीय घड़ी कुछ दिलचस्प लग रही थी। संसार का सबसे शक्तिशाली सम्राट होते हुए भी इस समय वह बिल्कुल नेगेहि था। इस नाटकीय दुःखान्त में उसे एक कला दिखायी पड़ रही थी और सच-मुच वह इस पूरे नाटक का प्रमुख अभिनेता था। अचानक उसे भाषण देने की बड़ी

इच्छा हुई और कई प्रसिद्ध वाक्य उसे याद हो आये जो उसे लगता था कि आगे आनेवाली पीढ़ियों के लिए बहुत काम के सिद्ध हो सकते हैं। अब भी कभी-कभी उसे आशा की किरण दिखायी दे जाती थी। मन में वह जानता था कि उसकी अन्तिम घड़ी आ गई है। लेकिन इस पर वह विश्वास नहीं कर पाता था। सबेरा होते-होते वे फाओन के झोपड़े में पहुँचे।

वहाँ पहुँचने पर उसके नौकरों ने साफ-साफ बता दिया कि अब आपको अन्तिम यात्रा की तैयारी करनी चाहिए। उसने उन्हें एक कब्र खोदने का हुक्म दिया और जमीन पर लेट गया ताकि वे उसकी नाप की कब्र खोद सकें। लेकिन जब उसने अपनी आँखों से गड्ढा खुदते देखा तो वह डर गया। उसका भारी-भरकम चेहरा पीला पड़ने लगा और माथे पर पसीने की बूँदें छलक आयीं। अन्त में उसका निश्चय डगमगा गया और उसने अपनी आवाज को काँपने से रोकते हुए कहा, "अभी समय नहीं आया है!" और वह फिर से कुछ प्रसिद्ध वाक्य और पुराने कवियों के उद्धरण दोहराने लगा। अन्त में उसने कहा कि मेरी देह को जला दिया जाय और मूढ़ता से बोला, "कितना बड़ा कलाकार आज संसार से जा रहा है!"

इतने में फाओन के आदमी ने आकर खबर दी कि सीनेट ने अपना फैसला दे दिया है और नीरो को वही सजा दी जायगी जो किसी मातृ-हत्यारे को दी जाती है।

"उसे कैसी सजा दी जाती है?" नीरो ने अपने सूखे ओठों को चाटते हुए पूछा।

"वे आपकी गर्दन में एक भारी लट्ठा बाँध देंगे और कोड़ों से पीट-पीटकर जान ले लेंगे और फिर आपकी लाश को नदी में फेंक देंगे, एक नौकर ने दृढ़ स्वर में कहा।

नीरो ने अपना लबादा उतार फेंका और आसमान की ओर आँखें उठाकर कहा, "तब सचमुच वक्त आ गया।" फिर वह धीरे से बोला, "उफ्, कितना बड़ा कलाकार संसार से विदा हो रहा है!"

उसी समय दूर घोड़ों के दौड़ने की आवाज आने लगी। शायद यह सेना की टुकड़ी थी जो उन्हें पकड़ने के लिए आ रही थी। नौकरों ने घबराकर कहा, "जल्दी कीजिये, सरकार।"

नीरो ने एक चाकू अपने गले पर लगाया। लेकिन उसका हाथ काँप रहा था और उसे हिम्मत नहीं हो रही थी। नौकरों को लगा कि यह आखीर तक चाकू नहीं मार सकेगा। अचानक एक नौकर ने उसके हाथ को जोर से धक्का दे दिया और पूरा चाकू उसके गले में घुस गया। उसकी डरी हुई आँखें और भी निकल आयीं।

"आपको क्षमा कर दिया गया है!" एक सिपाही दूर से चिल्लाया।

"अब तो बहुत देर हो गई।" नीरो के मुँह से आवाज निकली और वह फिर धीरे से बड़बड़ाया "आह, यह है स्वामिभक्ति!"

दूसरे ही क्षण मृत्यु ने उसे अपनी काली चादर में छिपा लिया। उसके गले से खून का एक फ़व्वारा निकल पड़ा और बगीचे के फूलों को भिगोने लगा। वह जमीन पर एड़ियाँ रगड़ने लगा और थोड़ी ही देर में ठंडा हो गया।

दूसरे दिन उसकी पुरानी प्रेमिका एक्ने ने उसे सुगन्धित लकड़ियों की एक चिता पर कई बहुमूल्य वस्तुओं के साथ रखकर जला दिया।

इस तरह नीरो गुजर गया, जिस तरह आँधी और तूफान गुजरते हैं, आग और महामारियाँ और युद्ध गुजरते हैं। उसके बाद से वेटिकन पहाड़ों की ऊँचाइयों से रोम और पूरे संसार पर संत पीटर के भव्य स्मारक की छाया बनी हुई है।

* समाप्त *